



संख्या	विषय	पृष्ठ
१	मंगलाचरण	१
२	नवकार १०८ गुण सहित	१
३	सामायक लेणोकी पाटी	४
४	सामायक पारणे की पाटी	४
५	तिक्खुता की पाटी	४
६	पंचपद बंदणा	५
७	पच्चीस बोल	७
८	पानाकी चरचा	२३
९	तेरा द्वार	६२
१०	जाण पणा का पच्चीस बोल	६०
११	संजया रो थोकड़ो	६७
१२	नियंठा	१०५
१२	लघु दण्डक	११३

॥ मंगलाचरण ॥

दोहा ।

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवज्झाय ।
साधु सकल के चरण कूं, वन्दूं शीश नमाय ॥१॥
महामन्त्र ए सुध जपूं, प्रात समय सुखकार ।
विघ्न मिटै संकट कटै, बरतै जय जयकार ॥२॥
सुमरूं श्री भिक्षु गुरु, प्रबल बुद्धि भण्डार ।
तासु प्रसादे पामिये, समकित रत्न उदार ॥३॥

॥ श्लोक अरिहन्त ॥

नमस्कार थावो अरिहन्त भगवंतने ।

ते अरिहन्त भगवंत केहवा छै १२ बारे गुणै करी
सहित छै ते कहै छै अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २
अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भामण्डल
६ फटिक सिंहासण ७ आशोकवृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९
देव दुन्दुभी १० चमरबीजै ११ छत्र धारे १२

॥ श्लोक सिद्ध ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंत केहवा छै आठ गुणै करी सहित
छै ते कहै छै केवल ज्ञान १ केवल दर्शण २ आत्मिक

सुख ३ षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमु-
र्तिभाव ६ अगुरु लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ गाम्मो अफ्थरिक्काणं ॥

नमस्कार थावो आचाय महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ षट्त्रीस गुणो-
करी सहित छै ते कहै छै आरजदेश ना उपनां १ आरज
कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ धिर संघयण ५
धीरजवंत ६ आलोचना दूसरा पासे कहे नहीं ७ पोतेरा
गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक
पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना
जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तिक्षण बुद्धि
होवे १४ घणा देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार
सहित १६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे
१८ सूत्र अर्थ दोना रा जाण होवे १९ कपटकरी पूछै तो
छलावे नहीं २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा जाण
होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे
२४ सीखने समर्थ २५ प्रायश्चित्तना जाण होवे २६ धिर
परिवार २७ आदेज बचन बोले २८ परीषह जीते २९
समय परसमय ना जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत
होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमाजिसा
३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६ ।

(३)

पुनः

५ पांच इन्द्रि जीते ४ च्यार कषाय टाले, नववाड़
सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार
पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५, ५ पंच
सुमति पाले इर्या १ भाषा २ ऐषणा ३ अयाण भंडमत
नषेवणा ४ उचारपासवण ५, ३ तीन गुप्ति मन १ बचन
२ काय गुप्ति ३

इति षट्त्रोस गुण संपूर्ण ।

॥ रामो उक्कज्झय्यमाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस गुणे
करी सहित छै ते कहै छै १४ चवदे पूरब ११ इग्यारे
अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपंग भणे भणावे ।

॥ रामो लोए सव्वसाहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषै सर्व साधु मुनिराजोंने

ते साधु मुनिराज केहवा छै ससवीस गुणे करी
सहित छै ते कहे छै ५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते
४ च्यार कषाय टाले भाव संचय १५ करण संचय १६

जोग संचय १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवंत १९ मन समा
धारणिया २० बचन समा धारणिया २१ काय समा
धारणिया २२ नाण संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र
संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां
समो अहियासे २७

इति संपूर्णम् ।

॥ सामायक लेखोकी फाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि जाव
नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुंविहेणं तिबिहेणं
मणेणं बायाये कायाये न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते
पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ।

॥ सामायक फारखोकी फाटी ॥

नवमा सामायक ब्रतके विषै ज्यो कोई अतिचार
दोष लागो हुवे ते आलोजं सामायक में समता न
कीधी बिकथा कीधी हुवे अणपूरी पारी होय पारतां
बिसाखो होय. मन बचन काया का जोग भाठा परि-
वरताया होय सामायक में राज कथा देश कथा स्त्री
कथा भक्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तिकखुत्ता की फाटी ॥

तिकखुत्तो अयाहीणं पयाहीणं वन्दामि नमंसामि

सकारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देइयं चेइयं पज्झु
वासामि मत्थेण वन्दामि ।

अथ पञ्चपद वन्दना ॥

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य
२० (बीस) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एक
सह साठ) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी पञ्च महाविदेह खेत्रां
के विषै बिचरै छै अनन्त ज्ञान का धणी अनन्त दर्शण
का धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणा
का धारणहार चौसठ इन्द्रां का पूजनीक, चौतीस अति-
शय, पैंतीस बाणी, द्वादश गुण सहित विराजमान छै
ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से
मालूम होज्यो ।

दूजे पद अनन्ता सिद्ध पन्दरा भेदे अनन्ती चौबीसी
मोक्ष पहुँता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग
नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं
दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावास में आवै
नहीं इसा उत्तम सिद्ध भगवन्ता से मांहरी वन्दना
तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

तीजे पद जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव
कोड़ केवली पञ्च महाविदेह खेत्रां में विचरै छै केवल

ज्ञान केवल दर्शन का धारक लोकालोक प्रकाशक सब द्रव्य खेत्र काल भाव जाणै देखै छै ज्यां केवलीजी से मांहरी वन्दना तिकखुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविर जी ते गणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुणा विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै छत्तीस गुणा विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा छै पच्चीस गुणा विराजमान छै थविरजी महाराज केहवा छै धर्म से डिगता हुआ प्राणी ने थिर करी राखै शुद्ध आचार पालै पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी वन्दना तिकखुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पञ्चमें पद मांहरा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारज को नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड़ साधु साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरै खेत्रां में विचरै छै ते महा उत्तम पुरुष केहवा छै, पञ्च महाव्रत का पालणहार, छव काया ना पीहर, पञ्च सुमति सुमता, तीन गुप्ति गुप्ता, बारै भेदै तपस्या का करणहार, बावीस परीषह का जीतणहार, ब्यालीस दोष टाल आहार पाणी का लेवणहार, बावन अनाचार का टालणहार, सताबीस गुण संयुक्त निर्लोभी

निरलालची, सचित्त का त्यागी, अचित्त का भोगी, संसार से पूठा, मोक्ष से स्हामां, अस्वादी, त्यागी, बैरागी, तेडिया आवै नहीं, नोंतियां जीमें नहीं, बायरा नीं परै अप्रतिबन्ध बिहारी इसा महापुरुषां से मांहरी बन्दना तिव्वुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पञ्चसि बोल ।

१ पहले बोलै गति च्यार ४

नरकगति १ तिर्यचगति २ मनुष्यगति ३ देव-
गति ४

२ दूजै बोलै जाति ५

एकेन्द्री, बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री,

३ तीजै बोलै काया छव ६

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४
बनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोलै इन्द्रियां ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री ४
स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोलै पर्याय छव ६

आहार पर्याय १ शरीर पर्याय २ इन्द्रिय पर्याय ३
श्वासोश्वास पर्याय ४ ज्ञाया पर्याय ५ जग पर्याय ६

६ छठे बोलै प्राण १०

श्रोतइन्द्री बलप्राण १ चक्षुइन्द्री बलप्राण २ घ्राण-
इन्द्री बलप्राण ३ रसेन्द्री बलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री
बलप्राण ५ मन बलप्राण ६ वचन बलप्राण ७
काया बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आयुष
बलप्राण १०

७ सातमें बोलै शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ बैक्रिय शरीर २ आहारिक
शरीर ३ तेजस शरीर ४ कर्मण शरीर ५

८ आठवें बोलै जोग पन्द्रह १५

४ च्यार मनका

सत्य मन जोग १ असत्य मन जोग २ मिश्र
मन जोग ३ व्यवहार मन जोग ४

४ च्यार बचन का

सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३
व्यवहार भाषा ४

७ काया का

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ बैक्रिय ३
बैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक

~~मिश्र ६ कर्मण जोग ७~~

६ नवमें बोलै उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मन
पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभङ्ग अज्ञान ३

४ चार दर्शन

चक्षु दर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३
केवल दर्शन ४

१० दशमें बोलै कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शनावरणी कर्म २ वेदनी
कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नाम
कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोलै गुणस्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्यात्व गुणस्थान

२ दूजो सहस्वादन समदृष्टि गुणस्थान

३ तीजो मिश्र गुणस्थान

४ चौथो अब्रत समदृष्टि गुणस्थान

५ पांचमों देशब्रत श्रावक गुणस्थान

६ छठो प्रमादी साधू गुणस्थान

७ सातमो अप्रमादी साधू गुणस्थान

- ८ आठमों नियत बादर गुणस्थान
९ नवमों अनियत बादर गुणस्थान
१० दशमूं सूक्ष्म संपराय गुणस्थान
११ इग्यारमूं उपशान्त मोह गुणस्थान
१२ बारमूं क्षीणमोहनीय गुणस्थान
१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान
१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान
१२ बारमें बोलै पांच इन्द्रियां की तेबीस विषय
श्रोतइन्द्री की तीन विषय
जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३
चक्षु इन्द्री की पांच विषय
कालो १ पीलो २ नीलो ३ रातो ४ धोलो ५
घ्राणइन्द्री की दोय विषय
सुगन्ध १ दुर्गन्ध २
रसइन्द्री की पांच विषय
खटो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५
स्पर्श इन्द्री की आठ विषय
हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५
चिक्कणूं ६ ठण्डो ७ उन्हो ८
१३ तेरमें बोलै दश प्रकार की मिथ्यात्व
१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्यात्व

- २ अजीबनें जीव सरदह ते मिथ्यात्व
- ३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्यात्व
- ४ अधर्मनें धर्म सरदह ते मिथ्यात्व
- ५ साधूनें असाधू सरदह ते मिथ्यात्व
- ६ असाधूनें साधू सरदह ते मिथ्यात्व
- ७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्यात्व
- ८ कुमार्गनें मार्ग सरदह ते मिथ्यात्व
- ९ मोक्ष ग्यानें अमोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व
- १० अमोक्ष ग्यानें मोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोलै नव तत्व को जाणपणो तींका ११५
एक सौ पन्दरा बोल

चौदैं जीव का

सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्री का दोय भेद—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छठो पर्याप्तो

तेइन्द्री का दोय भेद—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चौइन्द्री का दोय भेद—

६ नवमं अपर्याप्तो १० दशमं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद—

११ इग्यारमं अपर्याप्तो १२ बारमं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्री का दोय भेद—

१३ तेरमं अपर्याप्तो १४ पर्याप्तो

१४ चौदे अजीव का भेद—

धर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

अधर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

आकाशास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

काल को दशमं भेद (ये दश भेद अरूपी छै)

पुद्गलास्तिकाय का च्यार भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

६ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लैणपुन्ने * ३ सयण

पुन्ने † ४ बत्थपुन्ने, ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७

कायापुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ९

१८ पाप आठारे प्रकार—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३
 मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ
 ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३
 पैसुन्य ‡ १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६
 मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० बीस आस्रव का—

मिथ्यात्व आस्रव १ अन्नत आस्रव २ प्रमाद
 आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणा-
 तिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७ अदत्तादान
 आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह आस्रव १०
 श्रोतइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री
 मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राणइन्द्री मोकली
 मेले ते आस्रव १३ रसइन्द्री मोकली मेले ते
 आस्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५
 मन प्रवर्तावै ते आस्रव १६ बचन प्रवर्तावै ते
 आस्रव १७ काया प्रवर्तावै ते आस्रव १८ भण्डो-
 पकरणमेलतां ¶ अजयणा करै ते आस्रव १९ सुई
 कुसाग्रमात्र सेवै ते आस्रव २०

वाद=बोलना

‡ पैसुन्य=चुगली

अजयण=यत्ना नहीं ।

२० बीस संबर का—

सम्यक् ते संबर १ व्रत ते संबर २ अप्रमाद ते संबर ३ अकषाय संबर ४ अजोग संबर ५ प्राणा-
तिपात न करे ते संबर ६ मृषावाद न बोलै ते संबर ७ चोरी न करे ते संबर ८ मैथुन न सेवै ते संबर ९ परिग्रह न राखे ते सम्बर १० श्रुतइन्द्री वश करे ते सम्बर ११ चक्षुइन्द्री वश करे ते संबर १२ घ्राणइन्द्री वश करे ते संबर १३ रसेन्द्री वश करे ते संबर १४ स्पर्शइन्द्री वश करे ते संबर १५ मन वश करे ते संबर १६ वचन वश करे ते सम्बर १७ काया वश करे ते संबर १८ भण्डउव-
गरणमेलतां अजयणा न करे ते संबर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते सम्बर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे

अणसण ❀ १ उणोदरी † २ भिक्षाचरी ३ रस परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्राय-
श्चित ७ विनय ८ बेयाबच्च ९ सिद्धिभाय १० ध्यान ११ बिउसग्ग ‡ १२

४ बंध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबंध ३ प्रदेशबंध ४

* अणसण=उपवासादिक

† उणोदरी=कम खाना

‡ बिउसग्ग=निवर्तवो तथा कायोत्सर्ग

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पन्दरमें बोलै आत्मा आठ—

द्रव्यआत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३
उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६
चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोलै दण्डक चौबीस—

१ सात नारकियां को एक दण्डक

१० दश दण्डक भवनपतिका—

असुरकुमार १ नागकुमार २ सोचन कुमार ३
विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीपकुमार ६
उदधि कुमार ७ दिसाकुमार ८ वायु कुमार ९
स्तनित कुमार १०

५ पांच थावरका पञ्च दण्डक—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४
वनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमों

१ वानव्यन्तर देवतां को बावीसमों

१ जोतिषी देवतां को तेबीसमों

१ वैमानिक देवतां को चौबीसमों

१७. सतरवें बोलै लेश्या छव ६—

कृष्णलेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३

तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोलै दृष्टि ३ तीन—

सम्यक्दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोलै ध्यान ४ च्यार—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोलै षटद्रव्य को जाणपणो

धर्मास्तिकायने पांचां बोला ओलखीजै—

द्रव्यथकी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल-

थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुणथकी

जीव पुद्गल ने हालवा चालवा को सहाय, अधर्मा-

स्तिकाय ने पांचां बोलां ओलखीजै—द्रव्य थी एक

द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे कालथकी आदि अन्त

रहित, भाव थी अरूपी गुण थी धिर रहवा नो

सहाय, आकाशास्तिकाय ने पांच बोल करी ओल-

खीजै—द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक अलोक

प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी

अरूपी, गुण थी भाजन गुण, काल ने पांचां बोलाई ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी वर्त्तमान गुण, पुद्गलास्तिकाय ने पांच बोल थी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित भाव थी रूपी, गुण थी * गले मले, जीवास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी चैतन्य गुण ।

२१ एकबीसमें बोलै रासि २ दोय—

जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ बाबीसमें बोलै श्रावक का १२ बारह ब्रत—

१ पहिला ब्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवा का सउपयोग त्याग करे ।

२ दूजा ब्रत में मोटकी भूठ बोलवा का सउपयोग त्याग करे ।

* गले, मले: घटै वधै: अथवा जुदा एकत्र होय ।

- ३ तीजा व्रतमें श्रावक राजदण्डे लोक भण्डे इसी मोटकी चोरी करवा का त्याग करे ।
- ४ चौथा व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त मैथुन सेवा का त्याग करे ।
- ५ पांचमां व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त परिग्रह राखवा का त्याग करे ।
- ६ छठा व्रतके विषय श्रावक दशों दिशि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे ।
- ७ सातवां व्रतके विषय श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छबीस छै जिणरी मर्याद उपरान्त त्याग करे तथा पन्द्रह कर्मादान की मर्याद उपरान्त त्याग करे ।
- ८ आठमां व्रत के विषय श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।
- ९ नवमां व्रत के विषय श्रावक सामायक की मर्याद करे ।
- १० दशमां व्रत के विषय श्रावक देसावगासी संबर की मर्याद करे ।
- ११ इग्यारमूं व्रत के विषय श्रावक पौषह करे ।
- १२ बारमूं व्रत के विषय श्रावक शुद्ध साधू निर्ग्रन्थ

ने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नो दान देवे ।

२३ तेबीसमें बोलै साधूजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं, करावै नहीं, करतां ने भलो जाणै नहीं, मनसे बचन से काया से ।

२ दूसरा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे भूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतां प्रते भलो जाणै नहीं, मन से बचन से काया से ।

३ तीजा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से ।

४ चौथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से ।

५ पांचवां महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से बचन से काया से ।

२४ चौबीसमें बोलै भांगा ४६ गुणचास—

करण ३ जोग ३ तीन से हुवै ।

करण ३ का नाम—करुं नहीं, कराऊं नहीं, अनु-

मोदूं नहीं, जोग ३ का नाम—मनसा, बायसा, कायसा ।

आंक ११ का भांगा ६—

एक करण एक जोग से कहणा, करूं नहीं, मनसा १, करूं नहीं बायसा २, करूं नहीं कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा ४, कराऊं नहीं बायसा ५, कराऊं नहीं कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा ७, अनुमोदूं नहीं बायसा ८, अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक १२ बारमां का भांगा ६—

एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा बायसा १, करूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं बायसा कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा बायसा ४, कराऊं नहीं मनसा कायसा ५, कराऊं नहीं बायसा कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ७, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ९

आंक १३ का भांगा ३—

एक करण तीन जोग से, करूं नहीं मनसा बायसा कायसा १, कराऊं नहीं मनसा बायसा कायसा २, अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ६—

दोय करण एक जोगसे, करुं नहीं कराऊं नहीं
मनसा १, करुं नहीं कराऊं नहीं बायसा २, करुं
नहीं कराऊं नहीं कायसा ३, करुं नहीं अनुमोदूं
नहीं मनसा ४, करुं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा ५,
करुं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६, कराऊं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं
नहीं बायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं
कायसा ९

आंक २२ बावीस का भांगा ६ नव—

दोय करण दोय जोग से, करुं नहीं कराऊं नहीं
मनसा बायसा १, करुं नहीं कराऊं नहीं मनसा
कायसा २, करुं नहीं कराऊं नहीं बायसा कायसा
३, करुं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ४,
करुं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ५, करुं
नहीं अनुमोदूं बायसा कायसा ६, कराऊं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ७, कराऊं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, कराऊं नहीं
अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ९

आंक २३ तेबीस का भांगा ३ तीन—

दोय करण तीन जोगसे, करुं नहीं कराऊं नहीं

मनसा बायसा कायसा १, करुं नहीं अनुमोदूं
नहीं मनसा बायसा कायसा २, कराजं नहीं अनु-
मोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ३

आंक ३१ का भांगा ३ तीन—

तीन करण एक जोगसे, करुं नहीं कराजं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा १, करुं नहीं कराजं नहीं
अनुमोदूं नहीं बायसा २, करुं नहीं कराजं नहीं
अनुमोदूं नहीं कायसा ३

आंक ३२ बत्तीस का भांगा ३ तीन—

तीन करण दोय जोग से, करुं नहीं कराजं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा १, करुं नहीं कराजं
नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा २, करुं नहीं
कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ३

आंक ३३ तेतीस को भांगो १ एक—

तीन करण तीन जोगसे करुं नहीं कराजं नहीं
अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा ।

२५ पच्चीसमें बोलै चारित्र पांच—

सामायिक चारित्र १ छेदोस्थापनीय चारित्र २
पड़िहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४
यथाख्यात चारित्र ५

॥ अथ पाना की चरचा ॥

- १ जीव रूपी के अरूपी. अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।
- २ अजीव रूपी के अरूपी, रूपी अरूपी दोनू हीं, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये चार तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।
- ३ पुन्य रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै ।
- ४ पाप रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी
- ५ आस्रव रूपी के अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीव का परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।
- ६ संबर रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

७ निर्जरा रूपी के अरूपी, अरूपी है, ते किणन्याय निर्जरा जीव का परिणाम है पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बन्ध रूपी के अरूपी, रूपी किणन्याय बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म है, कर्म ते पुद्गल है, पुद्गल ते रूपी है ।

९ मोक्ष रूपी के अरूपी, अरूपी है, ते किणन्याय समस्त कर्म से मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

लुट्ठी दूज्जी सावद्य निरवद्य की ।

१ जीव सावद्य के निरवद्य, दोनूं ही है, ते किणन्याय चोखा परिणामां निरवद्य, खोटा परिणामां सावद्य है ।

२ अजीव सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव है ।

३ पुन्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं अजीव है ।

४ पाप सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव है ।

५ आस्रव सावद्य के निरवद्य, दोनूं ही है किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव, अब्रूत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ये च्यार तो एकान्त सावद्य है, शुभ जोगां से निर्जरा होय जिण आसरी निरवद्य है अशुभ जोग सावद्य है ।

- ६ संबर सावद्य के निरवद्य. निरवद्य है, ते किण न्याय कर्म रोकवारा परिणाम निरवद्य है ।
- ७ निरजरा सावद्य के निरवद्य, निरवद्य है ते किण न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य है ।
- ८ बन्ध सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव है इणन्याय ।
- ९ मोक्ष सावद्य के निरवद्य, निरवद्य है, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य है ।

लुट्ठी तीज्जी आझा मांहि बाहर की ।

- १ जीव आझा मांहि के बाहिर, दोनूं है ते किणन्याय, जीव का चोखा परिणाम आझा मांहि है खोटा परिणाम आझा बाहिर ।
- २ अजीव आझा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं अजीव है ।
- ३ पुन्य आझा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव है इणन्याय ।
- ४ पाप आझा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव है ।
- ५ आस्रव आझा मांहि के बारे, दोनूं ही है, ते किण न्याय, आस्रव नां पांच भेद है तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए चार तो आझा बाहिर है,

अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै, अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै ।

- ६ संबर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।
- ७ निर्जरा आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।
- ८ बन्ध आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बन्ध तो अजीव छै इणन्याय ।
- ९ मोक्ष आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय, कर्म मुंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छै ।

लुट्ठी चौथी जीव चोर के साहूकार ।

- १ जीव चोर के साहूकार, दोनूं छै, किणन्याय चोखा परिणामां साहूकार छै, मांठा परिणामां चोर छै ।
- २ अजीव चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवै ये अजीव छै ।
- ३ पुन्य चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै ।
- ४ पाप चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै ।

- ५ आस्रव चोर के साहूकार, दोनों छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अने अशुभ जोग पण चोर छै, शुभ जोग साहूकार छै ।
- ६ संवर चोर के साहूकार, साहूकार छै, किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै ।
- ७ निर्जरा चोर के साहूकार, साहूकार छै, किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै ।
- ८ बन्ध चोर के साहूकार, दोनों नहीं अजीव छै ।
- ९ मोक्ष चोर के साहूकार, साहूकार, किणन्याय कर्म मूँकाय कर सिद्ध थया ते साहूकार छै ।

लड़ी पांचवीं जीव अजीव की ।

- १ जीव ते जीव छै के अजीव, जीव, ते किणन्याय सदाकाल जीव को जीव रहसे अजीव कदे हुवे नहीं ।
- २ अजीव ते जीव छै के अजीव छै, अजीव छै, अजीव को जीव किण ही काल में हुवे नहीं ।
- ३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै, ते किण न्याय शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।
- ४ पाप जीव छै के अजीव, अजीव छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

- ५ आस्रव जीव छै के अजीव छै, जीव छै, ते किण न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रह ते आस्रव छै कर्म ग्रह ते जीव ही छै ।
- ६ संबर जीव के अजीव, जीव छै, ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छै ।
- ७ निर्जरा जीव के अजीव, जीव छै, किणन्याय कर्म तोड़ै ते जीव छै ।
- ८ बन्ध जीव के अजीव छै, अजीव छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म को बन्ध अजीव छै ।
- ९ मोक्ष जीव के अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै ।

लुट्टी छुट्टी जिकि छांडवा जोग के आदरवा जोग ।

- १ जीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय पोते जीव नूं भाजन करे अनेरा जीव पर समत्व भाव नं करे ।
- २ अजीव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, किणन्याय अजीव छै ।
- ३ पुन्य छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छै, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै, कर्म ते छांडवा ही जोग छै ।

- ४ पाप छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग है, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल है जीव ने दुखदाई है ते छांडवा ही जोग है ।
- ५ आस्रव छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग है, किणन्याय आस्रव द्वारे जीव रे कर्म लागे है, आस्रव कर्म आवा नां बारणा है, ते छांडवा जोग है ।
- ६ संबर छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग है, किणन्याय कर्म रोके ते संबर है ते आदरवा जोग है ।
- ७ निर्जरा छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग है, किणन्याय देश थी कर्म तोड़ै देश थी जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा है ते आदरवा जोग ही है ।
- ८ बन्ध छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग है ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही है ।
- ९ मोक्ष छांडवा जोग के आदरवा जोग, आदरवा जोग है, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे, जीव निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा जोग है ।

षट्द्रव्य के लड़ी सात्तमी रूपी अरूपी की ।

- १ धर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।
- २ अधर्मास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।
- ३ आकाशास्तिकाय रूपी के अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।
- ४ काल रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।
- ५ पुद्गल रूपी के अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।
- ६ जीव रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय ।

छक् द्रव्य पर

लड़ी अठमी सावद्य निरवद्य की ।

- १ धर्मास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूँ नहीं, अजीव छै ।
- २ अधर्मास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूँ नहीं, अजीव छै ।

- ३ आकाशास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।
- ४ काल सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।
- ५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।
- ६ जीवास्तिकाय सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै ।

द्वय द्रव्य पर लड़ी ६ नवमी ।

- १ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, ते किणन्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै ।
- २ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै ।
- ३ आकाशास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै ।
- ४ काल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै ।
- ५ पुद्गल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किणन्याय अजीव छै ।
- ६ जीव आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं छै, किणन्याय

निरवद्य करणी आज्ञा मांदि छै सावद्य करणी
आज्ञा बाहर छै ।

लुङ्गी १० दृष्टमी ।

- १ धर्मास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, किण
न्याय, चोर साहूकार जीव छै, ए थर्मास्तिकाय
अजीव छै, इणन्याय ।
- २ अधर्मास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं,
अजीव छै ।
- ३ आकाशास्तिकाय चोर के साहूकार, दोनूं नहीं,
अजीव छै ।
- ४ काल चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै ।
- ५ पुद्गल चोर के साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै ।
- ६ जीव चोर के साहूकार, दोनूं छै, किणन्याय मांठा
परिणामां आंसरी चोर छै, चोखा परिणामां आंसरी
साहूकार छै ।

हुक् द्रव्य पर लुङ्गी ११ मी

जीव अजीव की ।

- १ धर्मास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै ।
- २ अधर्मास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै ।
- ३ आकाशास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव छै ।

- ४ काल जीव के अजीव, अजीव है ।
- ५ पुद्गलास्तिकाय जीव के अजीव, अजीव है ।
- ६ जीवास्तिकाय जीव के अजीव, जीव है ।

छव द्रव्य पर लड़ी १२ बारमी

एक अनेक की ।

- १ धर्मास्तिकाय एक है के अनेक है, एक है, किण न्याय द्रव्य थी एक ही द्रव्य है ।
- २ अधर्मास्तिकाय एक है के अनेक है, एक है, द्रव्य थी एक ही द्रव्य है ।
- ३ आकाशास्तिकाय एक के अनेक, एक है, लोक अलोक प्रमाणे एक ही द्रव्य है ।
- ४ काल एक है के अनेक है, अनेक है, द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य है, इणन्याय ।
- ५ पुद्गल एक है के अनेक है, अनेक है, द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य है, इणन्याय ।
- ६ जीव एक है के अनेक है, अनेक है, अनन्ता द्रव्य है इण न्याय ।

लड़ी १३ तेरमी ।

छव में नव में की चरचा ।

- १ कर्मों को कर्ता छव पदार्थ में कोण ? नव तत्त्व में कोण ?

उत्तर—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

२ कर्मों को उपार्जिता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

३ कर्मों को लगावता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

४ कर्मों को रोकता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

५ कर्मों को तोड़ता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

६ कर्मों को बांधता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

७ कर्मों को मूकावता छव में कोण ? नव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

लुङ्गी १४ चौदमी ।

१ अठारे पाप सेवे ते छव में कोण ? नव में कोण ?

छव में जीव, नव में जीव, आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवा का त्याग करे ते छव में कोण ?

नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा,

अने त्याग छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

३ सामायक छव में कोण ? नव में कोण ? छव में

जीव, नव में जीव, संबर ।

- ४ व्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, संबर ।
- ५ अव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, आस्रव ।
- ६ अठारे पाप को बहरमण छव में कोण ? नव में
कोण ? छव में जीव, नव में जीव, संबर ।
- ७ पञ्च भहाव्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
जीव, नव में जीव, संबर ।
- ८ पांच चारित्र छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
जीव, नव में जीव संबर ।
- ९ पांच सुमति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
जीव, नव में जीव, निर्जरा ।
- १० तीन गुप्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
जीव, नव में जीव, संबर ।
- ११ बारे व्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
जीव, नव में जीव, संबर ।
- १२ धर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, संबर, निर्जरा ।
- १३ अधर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव आस्रव ।

१४ दया छव में कोण ? नव में कोण ! छव में जीव,
नव में जीव, संबर निर्जरा ।

१५ हिंसा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, आस्रव ।

लुट्टी. १५ पंद्रहमी ।

१ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष ।

२ अजीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पांच
नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

३ पुन्य छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल
नव में अजीव, पुन्य, बन्ध ।

४ पाप छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल,
नव में अजीव, पाप बन्ध ।

५ आस्रव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, आस्रव ।

६ संबर छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, संबर ।

७ निर्जरा छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, निर्जरा ।

८ बन्ध छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल,
नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

६ मोक्ष छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव, मोक्ष ।

लुङ्गी १६ सोलमर्मी ।

- १ धर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
धर्मास्ति, नव में अजीव ।
- २ अधर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
अधर्मास्ति नव में अजीव ।
- ३ आकाशास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
आकाशास्ति, नव में अजीव ।
- ४ काल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में काल,
नव में अजीव ।
- ५ पुद्गल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल,
नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।
- ६ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव
नव में जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा मोक्ष ।

लुङ्गी १७ सक्तरमर्मी ।

- १ लेखण (कलम) पूठो कागद को पानो, लकड़ी की
पाटी, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में
पुद्गल, नव में अजीव ।
- २ पात्रो, रजोहरण, चादर, चोलपट्टो, आदि भण्ड

- २ धर्म सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य है ।
- ३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर ? श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि है ।
- ४ धर्म चोर के साहूकार ? साहूकार है ।
- ५ धर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी है ।
- ६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग है ।
- ७ धर्म पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म तो जीव है, पुन्य पाप अजीव है ।

लुङ्गी २१ इक्कीसमी ।

- १ अधर्म जीव के अजीव ? जीव है ।
- २ अधर्म सावद्य के निर्वद्य ? सावद्य है ।
- ३ अधर्म चोर के साहूकार ? चोर है ।
- ४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहर, बाहर है ।
- ५ अधर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी है ।
- ६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा जोग है ।
- ७ अधर्म पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय, पुन्य पाप अजीव है, अधर्म जीव है ।

लुट्टी २२ बाइसमी ।

- १ सामायक जीव के अजीव ? जीव छै ।
- २ सामायक सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य छै ।
- ३ सामायक चोर के साहूकार ? साहूकार छै ।
- ४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर ? आज्ञा मांहि छै ।
- ५ सामायक रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।
- ६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आद-
रवा जोग छै ।
- ७ सामायक पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, किणन्याय
पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै ।

लुट्टी २३ तेबीसमी ।

- १ सावद्य जीव के अजीव ? जीव छै ।
- २ सावद्य सावद्य छै के निर्वद्य ? सावद्य छै ।
- ३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै ।
- ४ सावद्य चोर के साहूकार ? चोर छै ।
- ५ सावद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।
- ६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा
जोग छै ।
- ७ सावद्य पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो
अजीव छै, सावद्य जीव छै ।

लुट्टी २४ चौबीसमी ।

- १ निर्वद्य जीव के अजीव ? जीव है ।
- २ निर्वद्य सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य है ।
- ३ निर्वद्य चोर के साहूकार ? साहूकार है ।
- ४ निर्वद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? मांहि है ।
- ५ निर्वद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी है ।
- ६ निर्वद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग है ।
- ७ निर्वद्य धर्म के अधर्म ? धर्म है ।
- ८ निर्वद्य पुन्य के पाप ? पुन्य पाप दोनों नहीं, किण-
न्याय ? पुन्य पाप तो अजीव है, निर्वद्य जीव
है ।

लुट्टी २५ पच्चीसमी ।

- १ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव
कितना पदार्थ ? जीव आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष
ये पांच तो जीव है, अने अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध,
ये चार पदार्थ अजीव है ।
- २ नव पदार्थ में सावद्य कितना निर्वद्य कितना ?
जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निर्वद्य दोनों
है, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये सावद्य निर्वद्य

दोनू नहीं । संबर, निर्जरा, मोक्ष, ये तीन पदार्थ निर्वच्य है ।

३. नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना ? जीव, आस्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै । अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार आज्ञ मांहि बाहर दोनू ही नहीं । संबर, निर्जरा, मोक्ष ये आज्ञा मांहि छै ।

४. नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना ? जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनू ही छै । अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये चोर साहूकार दोनू नहीं, संबर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन साहूकार छै ।

५. नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना ? जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बन्ध ये छव तो छांडवा जोग छै, संबर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन आदरवा जोग छै अने जाणवा जोग नवों ही पदार्थ छै ।

६. नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना ? जीव, आस्रव, संबर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनू छै पुन्य, पाप, बन्ध रूपी छै ।

७. नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना ?

उत्तर—अजीव दाली आठ पदार्थ तो अनेक है,
अने अजीव एक अनेक दोनूँ है, किणन्याय ?
धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ए तीनूँ द्रव्य
थकी एक एक ही द्रव्य है ।

लङ्की २६ छव्विसिमी ।

- १ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना ? एक
जीव पांच अजीव है ।
- २ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना ? जीव,
धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल ए पांच
तो अरूपी है, शुद्धल रूपी है ।
- ३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर
कितना ? जीव तो आज्ञा मांहि बाहर दोनूँ है,
बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर दोनूँ नहीं ।
- ४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना ? जीव
तो चोर साहूकार दोनूँ है, बाकी पांच द्रव्य चोर
साहूकार दोनूँ नहीं, अजीव है ।
- ५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निर्वद्य कितना ? एक
जीव द्रव्य तो सावद्य निर्वद्य दोनूँ है, बाकी पांच
द्रव्य सावद्य निर्वद्य दोनूँ नहीं ।
- ६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना ? धर्मास्ति
अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनों तो एक ही द्रव्य

छै, काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, इणा का अनन्ता द्रव्य छै ।

- ७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना ?
एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै ।

लड़ी २७ सत्ताइसमी ।

- १ पुन्य धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै ।
- २ पाप धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, पाप अजीव छै ।
- ३ बन्ध धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, बन्ध अजीव छै ।
- ४ कर्म अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।
- ५ पाप अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै ।
- ६ धर्म अने अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै ।
- ७ अधर्म अने धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै ।

- ८ धर्मास्ति अने अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अधर्मास्ति नो थिर रहवा नो सहाय छै ।
- ९ धर्म अने धर्मी एक के दोय ? एक छै, किणन्याय ? धर्म जीव का चोखा परिणाम छै ।
- १० अधर्म अने अधर्मी एक के दोय ? एक छै, किणन्याय ? अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै ।



प्रश्नोत्तर

१५

- १ थारी गति काई—मनुष्य गति ।
- २ थारो जाति काई—पंचेन्द्री ।
- ३ थारी काय काई—त्रस काय ।
- ४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच ।
- ५ पर्याय कितना पावे—६ छव ।
- ६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।
- ७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस, कर्मण ।
- ८ जोग कितना पावे—९ नव पावै च्यार मन का, च्यार बचन का, एक काया को, औदारिक ।
- ९ उपयोग कितना पावै—४ च्यार पावै मति ज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४ ।
- १० थारे कर्म कितना ८ आठ ।
- ११ गुणस्थान किसो पावै—व्यवहार थी पांचमूं, साधु ने पूछै तो छटो ।

- १२ विषय कितनी पावै—२३ तेबीस ।
- १३ मिथ्यात्व ना दश बोल पावै के नहीं, व्यवहार थी पावै नहीं ।
- १४ जीव का चौदा भेदां में से किसो भेद पावै, १
एक चौदमं पर्यासो सन्नी पंचेन्द्री को पावै ।
- १५ आत्मा कितनी पावै—आवक में तो ७ सात पावै,
अने साधु में आठ पावै ।
- १६ दण्डक किसो पावै—एक इकबीसमूं ।
- १७ लेश्या कितनी पावै—६ छव ।
- १८ दृष्टि कितनी पावै—व्यवहार थी एक सम्यक् दृष्टि
पावै ।
- १९ ध्यान कितना पावै—३ तीन, शुक्ल ध्यान टाल के ।
- २० छव द्रव्य में किसा द्रव्य पावै—१ एक जीव द्रव्य ।
- २१ राशि किसी पावै—एक जीव राशि ।
- २२ आवक का बारा व्रत आवक में पावै ।
- २३ साधू का पञ्च महाव्रत पावै के नहीं—साधू में पावै
आवक में पावै नहीं ।
- २४ पांच चारित्र आवक में पावै के नहीं—नहीं पावै,
एक देश चारित्र पावै ।
- १ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यञ्च गति ।
- २ एकेन्द्री की जाति कांई एकेन्द्री ।

काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

६ अग्नि तेउकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायुकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि

वनस्पतिकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	एकेन्द्री

काय कांई	बनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्या, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्या, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिण्डोला आदि बेन्द्री का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेन्द्री
काय कांई	असकाय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच, मन पर्याय दली
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्राण १ स्पर्श इन्द्री बल प्राण २ काय बल प्राण ३ श्वाशोश्वाश बल प्राण ४ आउषो बल प्राण ५ भ.षा बल प्राण ६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेन्द्री
काय कांई	असकाय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन स्पर्श १ रस २ प्राण १

पर्याय कितनी

५ पांच, मन पर्याय दली

प्राण कितना

७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे,

१ घ्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि

चौइन्द्री का

प्रश्न

उत्तर

गति कांई

तिर्यंच गति

जाति कांई

चौइन्द्री

काय कांई

त्रसकाय

इन्द्रियां कितनी

४ च्यार, श्रुत इन्द्री दली

पर्याय कितनी

५ पांच, मन पर्याय दली

प्राण कितना

८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे

एक चक्षु इन्द्रो बल प्राण

और बध्यो

१५ पचेन्द्री का

प्रश्न

उत्तर

गति कितनी पावै

४ च्यारुं ही पावै

जाति कांई

पंचेन्द्री

काय कांई

त्रसकाय

इन्द्रियां कितनी

पांचों ही

पर्याय कितनी

६ छवों ही पावै सन्नीमें, और

असन्नी में ५ पांच, मन दल्यो

प्राण कितना पावै

सन्नी मे तो १० दशों ही पावै

असन्नी मे ६ पावै मन दल्यो

१६ नारकी की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	असकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छः
प्राण कितना	१० दशों ही

१७ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	असकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचों ही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवनी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पृछा असनी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	असकाय
इन्द्रियां कितनी	पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नही

१६ सन्नी मनुष्य की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
गति काई	मनुष्य गति
जाति काई	पंचेन्द्री
काय काई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पाँच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दश

- १ तुमे सन्नी के असन्नी ? सन्नी, किणन्याय ? मन छै।
- २ तुमे सूक्ष्म के बादर ? बादर, किणन्याय ? दीखूं छूं।
- ३ तुमे त्रस के स्थावर ? त्रस, किणन्याय ? हालूं चालूं छूं।
- ४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी ? असन्नी, किणन्याय ? मन नहीं।
- ५ एकेन्द्री सूक्ष्म के बादर ? दोनूं ही छै, किणन्याय ? एकेन्द्री दोय प्रकार की छै, दीखै ते बादर छै, नहीं दीखै ते सूक्ष्म छै।
- ६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर ? स्थावर छै, हालै चालै नहीं।
- ७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, बनरुति
काय ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनू ही प्रकार की छै
त्रस के एावर	एावर छै ।

९ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के एावर	त्रस छै

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनू ही छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के एावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानक में उपजै

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के एावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिणरी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
अस के स्थावर	अस छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरियां की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
अस के स्थावर	अस छै

१४ देवता की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
अस के स्थावर	अस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पक्षी आदि

पशु जानवर की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनों ही प्रकार छै छमोछमके मन नहीं, गर्भज के मन छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै, नेत्र से देखवा में आवै छै
अस के स्थावर	अस छै, हालै चालै छै

- १ एकेन्द्री में बेद कितना पावै—एक नपुंसक बेद पावै ।
- २ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में बेद कितना पावै—१ एक नपुंसक ही छै ।
- ३ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में बेद कितना पावै—एक नपुंसक बेद ही पावै छै ।
- ४ पंचेन्द्री में बेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही बेद पावैछै, असन्नीमें एक नपुंसक बेद ही छै ।
- ५ मनुष्य में बेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जिणां में तो बेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजै जिणा में बेद तीनों ही पावै छै ।
- ६ नारकी में बेद कितना पावै—एक नपुंसक बेद ही पावै छै ।
- ७ जलचर, थलचर, उरपर, भुजपर, खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यचा में बेद कितना पावै—छमोछम उपजै ते असन्नी छै जिणा में तो बेद नपुंसक ही पावै छै, अने गर्भ में उपजै ते सन्नी छै जिणा में बेद तीनों ही पावै छै ।
- ८ देवता में बेद कितना पावै—उत्तर भवनपति, षाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दृजा देवलोक नाई

- तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध ताई वेद एक पुरुष ही छै।
- ६ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना—उम-णीस दण्डक का जीवां में तो कर्म आठ ही पावै छै, अने मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।
- १ धर्म ब्रत में के अब्रत में—ब्रत में ।
- २ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर—श्री वीतराग देव की आज्ञा मांहि छै ।
- ३ धर्म हिंसा में के दया में—दया में ।
- ४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै ।
- ५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै ।
- ६ गुरु मोल लियां मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै ।
- ७ साधूजी तपस्या करै ते ब्रत में के अब्रत में—ब्रत पुष्ट को कारण छै, अधिक निर्जरा धर्म छै ।
- ८ साधूजी पारणो करै ते ब्रत में के अब्रत में—अब्रत में नहीं, किणन्याय ? साधू के कोई प्रकार अब्रत रही नहीं सब सावद्य जोग का त्याग छै । तिणसूं निर्जरा थाय छै तथा ब्रत पुष्टको कारण छै ।

- ६ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में के अव्रत में—व्रत में ।
- १० श्रावक पारणू करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणो पीणो पहरणो ए सर्व अव्रत में छै श्री उववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छै ।
- ११ साधूजी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवै व्रत में के अव्रत में—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधै छै, १२ मूं व्रत छै ।
- १२ साधूजी ने असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवै तथा व्रत में के अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजै ठाणे में कह्यो छै अल्प आयु बंधै अकल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूजतो दीधो ते व्रत में नहीं, पाप कर्म बंधै छै ।
- १३ अरिहन्त देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।
- १४ साधू देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।
- १५ देवता साधू नीं बञ्छा करै के नहीं करै—करै साधू तो सबका पूजनीक छै ।
- १६ साधू देवता की बञ्छा करै के नहीं करै—नहीं करै
- १७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनों नहीं ।

- १८ सिद्ध भगवान् सूक्ष्म के बादर—दोनूँ नहीं ।
 १९ सिद्ध भगवान् त्रस के स्थावर—दोनूँ नहीं ।
 २० सिद्ध भगवान् सन्नी के असन्नी—दोनूँ नहीं ।
 २१ सिद्ध भगवान् पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूँ नहीं ।

॥ इति पाना की चरचा ॥

—

- १ असंयति अब्रूती ने दियां काई होवै—श्री भगवती सूत्र के आठमें शतक छठै उद्देशे कह्यो असंयति अब्रूती ने सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय ।
 - २ असंयति अब्रूती जीवां को जीवणो बांछणो के मरणो बांछणो—असंयति को जीवणो बांछणो नहीं, मरणो बांछणो नहीं, संसार समुद्र से तिरणो बांछणो ते श्री वीतरागदेव को धर्म छै ।
 - ३ कसाई जीवां ने मारै तिण बेल्यां साधू कसाई ने उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवै हिंसा का खोटा फल कहै ।
- प्रश्न—जीवां को जीवणो बांछ कर उपदेश देवै के कसाई ने तारवा निमित्त उपदेश देवै ।

उत्तर—कसाई ने तारवा निमित्त उपदेश देवै तैं वीत-
राग को धर्म छै ।

४ कोई बाड़ा में पशु जानवर दुखिया छै अने साधू
जिण रास्ते जाय रह्या छै तो जीवां की अनुकम्पा
आणी छोड़ै के नहीं छोड़ै—नहीं छोड़ै, किणन्याय,
उ०—श्रीनिशीथ सूत्र के १२ बारमें उद्देशो में कह्यो छै
अनुकम्पा करी त्रस जीव बांधै बंधावै अनुमोदै तो
चौमासी प्रायश्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवां
की सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य
त्याग दिया ।



॥ अथ तेरा द्वार ॥

प्रथम मूल द्वार ।

मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५
अरूपी ६ निर्वद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९
द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ गिनय १२ तलाव १३
ए तेरा द्वार जाणवा, प्रथम मूल द्वार कहै छै—जीव
ते चेतना लक्षण अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य
ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहै ते
आस्रव, कर्म रोकै ते संबर, देशथकी कर्म तोड़ी
देशथी जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते
शुभाशुभ कर्म बन्ध्या ते बन्ध, समस्त कर्मों से
मुकावै ते मोक्ष ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार ।

जीव चेतन का २ दोय भेद—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै,
संसारी कर्मां सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै,

सूक्ष्म अने बादर त्रसने स्थावर, सन्नी अने असन्नी
तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे
भेद जीवनां, चौबीस दण्डक इत्यादि अनेक भेद
जाणवा, चेतन गुण ओलखवा ने सोनारो दृष्टान्त
कहै छै, जिम सोनारो गहणो भांजी भांजी ने
और और आकारे घड़ावे तो आकार नो विनाश
थाय पण सोनारो विनाश नहीं, तैसे कर्मों का
उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन
गुण को विनाश नहीं ।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्ग-
लास्ति, तिणमें च्यारां की पर्याय पलटै नहीं एक
पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखवा ने सोनारो
दृष्टान्त कहै छै—जिम कोई सोनारो गहणो भांजी
भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों
विनाश होय सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की
पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं ।
पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म ने पुन्य पाप
ओलखवा ने पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहै
छै, कदेक जीवकै पथ्य आहार घटै और अपथ्य
आहार बधै, तो जीव के निरोगपणो घटै अने

सरोगपणो बधै कदे जीव रै अपथ्य आहार घटै
 पथ्य बधै तब जीव रै सरोगपणो घटै अने निरोग
 पणो बधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी
 मरण पामे, ज्यों जीव के पुन्य घटै अरु पाप बधै
 तो सुख घटै अने दुख बधै, कदे जीव रै पाप घटै
 अरु पुन्य बधै तो सुख बधै अने दुख घटै, पुन्य
 पाप दोनूं क्षय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रह
 ते आस्रव ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त पांच कहण
 कहै छै ।

१ प्रथम कहण (कथन)

- १ तलाव रे नालो ज्यों जीव रे आस्रव ।
- २ हवेली के बारणो ज्यों जीव रे आस्रव ।
- ३ नाव के छिद्र ज्यों जीव रे आस्रव ।

२ दूजो कहण (कथन)

- १ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक ।
- २ हवेली बारणो एक ज्यों जीव आस्रव एक ।
- ३ नाव अने छिद्र एक ज्यूं जीव आस्रव एक ।

३ कर्म आवै ते आस्रव ते ओलखवा ने तीजो कहण कहै छै ।

- १ पाणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव ।
- २ मनुष्य आवै ते बारणो ज्यों कर्म आवै ते

आस्रव ।

- ३ पाणी आवै ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव ।
४ इम कल्यां थकां कोई कर्म अने आस्रव एक सरधै
तेहने दोय सरधावा ने चौथो कहण कहै छै ।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव
दोय ।

२ मनुष्य अने बारणो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव
दोय ।

३ पाणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

- ५ विशेष ओलखवा ने पांचमूं कहण कहै छै ।

१ पाणी आवै ते नालो पण पाणी नालो नहीं ज्यों
कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवै ते बारणो पण मनुष्य बारणो
नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव
नहीं ।

३ पाणी आवै ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों
कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

कर्म रोकै ते संवर ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त
कहै छै ।

१ तलाव रो नालो रुंधै ज्यों जीव रे आस्रव रुंधै
ते संवर ।

२ हवेली रो बारणो रुंधै ज्यों जीव रे आस्रव रुंधै ते संबर ।

३ नाव रे छिद्र रुंधै ज्यूं जीव रे आस्रव रुंधै ते संबर ।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देश थो उज्ज्वल थाय ते निर्जरा ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तलाव रो पाणी मोरियांदिक करी ने काढ़ै ज्यों जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़ै ते निर्जरा ।

२ हवेली रो कचरो धूँजी २ ने काढ़ै ज्यों भला भाव प्रवर्तावी ने जीव कर्म रूपियो कचरो काढ़ै ते निर्जरा ।

३ नाव को पाणी उलेची २ ने काढ़ै ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी ने कर्म रूपियो पाणी काढ़ै ते निर्जरा ।

जीव संग्राते कर्म बंधिया हुया ते बन्ध,
ते ओलखवा ने छव बोल कहै छै ।

१ पहिले बोलै कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नी आदि छै ए बात मिले अथवा न मिले ? गुरु बोल्या न मिले । प्रश्न—क्यों न मिले, गुरु बोल्या ए उपनो नहीं ।

- २ दूजै बोलै कहो स्वामीजी पहली जीव और पाछै कर्म ए बात मिलै ? गुरु बोल्या नहीं मिलै ।
प्रश्न—क्यों न मिलै, उ०—कर्म बिना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवै नहीं यों न मिलै ।
- ३ तीजै बोलै कहो स्वामीजी पहली कर्म अने पछै जीव ए मिलै ? गुरु कहै नहीं मिलै । प्र०—क्यों न मिलै, गुरु कहै कर्म कियों बिना हुवै नहीं, तो जीव बिना कर्म कुण किया ।
- ४ चौथे बोलै कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिलै ? गुरु कहै न मिलै । प्र०—किण-न्याय ? उ०—जीव, कर्म यां दोयां ने उपजा-वण वालो कुण ।
- ५ पांचमें बोलै जीव कर्म रहित छै ए बात—मिलै ? गुरु कहै न मिलै । प्र०—किणन्याय ? उ०—ए जीव कर्म रहित होवै तो करणी करवा री खप (चंप) कुण करै मुक्ति गयो पाछो आवै नहीं ।
- ६ छठै बोलै कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नो मिलाप किण विधि थाय छै गुरु कहै अपच्छान पूर्व पणै अनादि काल से जीव कर्म रो मिलाप चलयो जाय छै तिण बन्ध रा च्यार भेद छै ।

प्रकृति बन्ध कर्म स्वभाव रे न्याय ? स्थिति

बन्ध काल व्यवहार रे न्याय २ अनुभाग बन्ध
रस विपाक रे न्याय ३ प्रदेश बन्ध जीव कर्म
लोलीभूत रे न्याय ४ ते ओलखवा ने तीन
दृष्टान्त कहै छै ।

१ तेल अने तिल लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोली-
भूत ।

२ घृत दूध लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोलीभूत ।

३ धातू माटी लोलीभूत ज्यों जीव कर्म लोली-
भूत ।

समस्त कर्मां से मूकावे ते मोक्ष ते ओलखवाने
तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ घाणीयादिक नूं उपाय करी तेल खल रहित
होवै ज्यों तप सज्जमादि करी जीव कर्म रहित
होवै ते मोक्ष ।

२ जेरणादिक को उपाय करी घृत छाछ रहित
होवै ज्यों तप सज्जम करी जीव कर्म रहित होवै
ते मोक्ष ।

३ अग्नियादिक नूं उपाय करी धातू माटी अलग
होवै ज्यों तप सज्जम करी जीव कर्म रहित होवै
ते मोक्ष ।

तीजो कुण द्वार कहै छै ।

जीव चेतन छव द्रव्यां में कोण नव पदार्थों में कोण ? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच ।
जीव १ आस्रव २ संबर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छव में कोण नव में कोण—छव में ५ नवमें ४ छव द्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४

पुन्य ते शुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—
छव में एक पुद्गल, नव में तीन, अजीव १ पुन्य २ बन्ध ३

पाप ते अशुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—
छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छव में कोण नव में कोण—
छव में जीव, नव में जीव १ आस्रव २

कर्म रोकै ते संबर छव में कोण नव में कोण—
छव में जीव, नव में जीव सम्बर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव १ निर्जरा २

बन्ध छव में कोण नव में कोण—छव में पुद्गल
नव में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४

मोक्ष छव में कोण नवमें कोण—छव में जीव नव
में जीव मोक्ष ।

चालै ते कोण चालवा नो सहाय किणरो—चालै
ते जीव पुद्गल, अने सहाय धर्मास्तिकाय नो ।

थिर रहै ते कोण थिर रहवा नो सहाय किणरो—
थिर रहै जीव पुद्गल, सहाय अधर्मास्तिकाय नो ।

बसे ते कोण भाजन किणरो—बसे तो जीव पुद्गल
भाजन आकाशास्तिकाय नो ।

बरतै ते कोण बरतै किण ऊपर—बरतै तो काल
अने बरतै जीव अजीव ऊपर ।

भोगवै ते कोण अने भोग में आवै ते कोण—
भोगवै ते जीव, भोग में आवै ते पुद्गल, दोय प्रकारे
एक तो शब्दादिक पणै दूजो कर्म पणै ।

कर्माँ रो करता कोण कीधा होवै ते कोण, करता
तो जीव कीधा हुवा ते कर्म ।

कर्माँ रो उपाय ते कोण उपना ते कोण—उपाय
तो जीव उपना ते कर्म ।

कर्माँ ने लगावै ते कोण लाग्या हुवा ते कोण—
लगावै ते जीव, लागै ते कर्म ।

कर्मां ने रोकै ते कोण रुक्या ते कोण—रोकै तो जीव, रुक्या ते कर्म ।

कर्मां ने तोड़ै ते कोण तूट्या ते कोण—तोड़ै ते जीव, अने तूट्या ते कर्म ।

कर्मां ने बांधै ते कोण बंध्या ते कोण—बांधै ते जीव बंधिया ते कर्म ।

कर्मां ने खपावै ते कोण अने क्षय थया ते कोण—खपावै ते जीव क्षय थया ते कर्म ।

॥ इति तृतीयं द्वारम् ॥

अथ चौथो आत्म द्वार कहै छै ।

जीव चेतन ते आत्मा छै अनेरो नहीं ।

अजीव अचेतन आत्मा नहीं अनेरो छै ।

आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं, कोण कोण काम आवै छै ते कहै छै:—

धर्मास्तिकाय अवलम्ब न चालै छै ।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब ने स्थिर रहै छै ।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने बसै छै ।

काल अवलम्ब ने कार्य करै छै ।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरे छै, ओढै छै, इत्यादि अनेक प्रकारे आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं ।

पुन्य ते शुभ कर्म आत्मा रै शुभ णै उदय आवै
छै पण आत्मा नहीं ।

पाप ते अशुभ कर्म आत्मा रै अशुभ णै उदय
आवै छै पण आत्मा नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव आत्मा छै अनेरो
नहीं ।

कर्म रोकै ते संबर आत्मा छै अनेरो नहीं ।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थकी जीव उज्ज्वल थाय
ते निर्जरा आत्मा छै अनेरो नहीं ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आत्मा नहीं
अनेरो छै आत्मा ने बांध राखी छै पण आत्मा नहीं ।

समस्त कर्मां से मूकावै ते मोक्ष आत्मा छै अनेरो
नहीं ।

॥ इति चतुर्थ द्वारम् ॥

अथ पांचमं जिव द्वार कहै छै ।

जीव ते चेतन तिण जीव ने जीव कहीजे, जीव ने
आस्रव कहीजे, जीव ने संबर कहीजे जीव ने निर्जरा
कहीजे, जीव ने मोक्ष कहीजे ।

अजीव अचेतन ने अजीव कहीजे, पुन्य कहीजे,
पाप कहीजे, बन्ध कहीजे ।

पुन्य ते शुभ कर्म तेहने पुन्य कहीजे, तेहने अजीव कहीजे, तेहने बन्ध कहीजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहने पाप कहीजे. अजीव कहीजे, बन्ध कहीजे ।

कर्म ग्रहै ते आस्रव कहीजे, तेहने जीव कहीजे, कर्म रोकै ते संबर कहीजे, जीव कहीजे ।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थकी जीव उज्ज्वल थाय तेहने निर्जरा कहीजे, जीव कहीजे ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहीजे, अजीव कहीजे ।

समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहीजे, जीव कहीजे हिवे एहनी ओलखणा न्याय सहित कहै छै ।

जीव ने जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामी काल जीव को जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव ने अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो, वर्त्तमान काल अजीव छै, आगामी काले अजीव को अजीव रहसी ।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

પાપ ને અજીવ કિણન્યાય કહીજે, પાપ તે અશુભ કર્મ છે કર્મ તે પુદ્ગલ છે, પુદ્ગલ તે અજીવ છે ।

આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, આસ્રવ તો કર્મ ગ્રહ છે, કર્માં રો કરતા છે, કર્માં રો ઉપાય છે, ઉપાય તે જીવ હી છે ।

૧ મિથ્યાત્વ આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, વિપરીત સરધાન તે મિથ્યાત્વ આસ્રવ જીવરા પરિણામ છે ।

૨ અબ્રત આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, અત્યાગ ભાવ તે જીવ રી આશા વાંછા અબ્રત આસ્રવ છે, તે જીવ રા પરિણામ છે ।

૩ પ્રમાદ આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, અણ-ઉત્સાહ પળો તે પ્રમાદ આસ્રવ છે, તે જીવરા પરિણામ છે ।

૪ કષાય આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, કષાય આત્મા કહી છે, કષાય તે જીવરા પરિણામ છે, તે જીવ છે ।

જોગ આસ્રવ ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, જોગ આત્મા કહી છે, જોગ તે જીવરા પરિણામ છે, તીનૂં હી જોગાં રો વ્યાપાર જીવરો છે ।

સંઘર ને જીવ કિણન્યાય કહીજે, સામાઈ પચ્ચલાણ,

संयम, संबर, विवेक, बिउसग, ए छजं आत्मा कही छै, बलि चारित्र आत्मा कही छै, चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय ।

निर्जरा ने जीव किणन्याय कहीजे, भला भाव प्रवर्तावी ने जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छै ।

बन्ध ने अजीव किणन्याय कहीजे, बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

मोक्ष ने जीव किणन्याय कहीजे, समस्त कर्म मूँकावै ते मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते जीव छै, इणन्याय मोक्ष ने जीव कहीजे ।

॥ इति पञ्चम द्वारम् ॥

अथ छुट्टो रूपी अरूपी द्वार कहै छै ।

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनू छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आस्रव अरूपी छै, संबर अरूपी छै, निरजरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मोक्ष अरूपी छै, हिवे एहनी ओलखना कहै छै ।

जीवने अरूपी किणन्याय कहीजे ? छव द्रव्य में जीव ने अरूपी कह्यो छै, पांच वर्ण पावै नहीं ।

अजीव ने अरूपी रूपी दोनों किण्व्याय कहीजे ?
अजीव का पांच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति,
काल, पुद्गल, इणमें च्यार तो अरूपी छै, यामें पांच वर्ण
पावै नहीं एक पुद्गल रूपी छै ।

पुन्य ने रूपी किण्व्याय कहीजे ? पुन्य तो शुभ
कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

पाप ने रूपी किण्व्याय कहीजे ? पाप ते अशुभ
कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै ।

आस्रव ने अरूपी किण्व्याय कहीजे ? कृष्णादिक
छजं भाव लेश्या अरूपी कही छै ।

मिथ्यात्व आस्रव ने अरूपी किण्व्याय कहीजे ?
मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै ।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किण्व्याय कहीजे ? अत्याग
भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै ।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किण्व्याय कहीजे ? अण-
उच्छाहणो ते प्रमाद आस्रव छै, जीवरा परिणाम छै, ते
जीव छै जीव ते अरूपी छै ।

कषाय आस्रव ने अरूपी किण्व्याय कहीजे ? श्री
ठाणांग दशमें ठाणे जीव परिणामी रा दश भेदां में
कषाय परिणामी कह्यो छै, अने ज्ञान दर्शन चारित्र परि-
णामी कह्या छै, ए जीव छै, तिम कषाय परिणामी जीव

छै, कषायपणे परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीव ते अरूपी छै ।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? तीनों ही जोगां रो उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै ।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? अट्टारे पाप ठाणा रो विरमण अरूपी छै ।

निरजरा ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? कर्म तोड़वा रो बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै ।

बन्ध ने रूपी किणन्याय कहीजे ? बन्ध ते शुभाशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? समस्त कर्मां ने मूकावे ते जीव छै, तेहने मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते अरूपी छै ।

॥ इति छट्ठो द्वारम् ॥

अथ सात्तमूं सावद्य निर्वद्य द्वार ।

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं । पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै । आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात्व आस्रव, अंज्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए चार

तो सावद्य है, अशुभ जोग सावद्य है, शुभ जोग निर्वद्य है। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं है। संवर निर्वद्य है। निरजरा निर्वद्य है। बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव है। मोक्ष निर्वद्य है।

॥ इति सप्तमं द्वारम् ॥

अथ आठमूं भाव द्वार कहै है ।

भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५।

उदय तो आठ कर्म नो अने उदय निपन्न रा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीव रे अजीव उदय निपन्न २, तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहै है, च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन बेद एवं २३ मिथ्याती २४, अब्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८, संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१, छद्मस्थ ३२, सजोगी ३३ ।

हिवै जीव रे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहै है, पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोगे परिणम्यां द्रव्य, ५ पांच वर्ण, २ दोय गन्ध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श, एवं तीस ।

उपशम रा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्मरो होय, उपशम निपन्न रा दोय भेद, उपशम समकित १, उपशम चारित्र २ ।

क्षायकरा दोय भेद—एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निपन्न रा १३ तेरा भेद, ते कहै छै ।

केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक सम्यक्त्व ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमुर्त्तिक पणो ७, अगुरु लघु पणो ८, दान लब्धि ९, लाभ लब्धि १०, भोग लब्धि ११, उपभोग लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३ ।

क्षयोपशम रा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १, दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २, क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अने क्षयोपशम निपन्न भाव रा ३२ बत्तीस बोल, ते कहै छै ।

ज्ञानावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पामै, केवल बरजी ४ च्यार ज्ञान, ३ तीन अज्ञान, १ एक भणवो गुणवो ।

दर्शनावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ

बोल पामै, ५ पांच इन्द्री, ३ तीन दर्शन केवल बरजी ।

मोहनीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामै, ४ च्यार चारित्र, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि ।

अन्तराय कर्म रो क्षयोपशम होवै तो आठ बोल पामै, ५ पांच लब्धि, ३ तीन वीर्य ।

परिणामिक रा दोय भेद सादिया परिणामी १, अनादिया परिणामी २, अनादिया परिणामिक रा १० दश भेद तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, ७ सातमूं लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी, १० दशमूं अभवी । अने सादिया परिणामी रा अनेक भेद जाणवा । गाम नगर गड़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिक रा जाणवा ।

जीव आसरी जीव परिणामिक रा १० दश भेद, ते कहै छै ।

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, कषाय परिणामी ३, लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी ५, उपयोग परिणामी ६, ज्ञान परिणामी ७, दर्शन परिणामी ८, चारित्र परिणामी ९, बेद परिणामी, दश १० ।

हिवै जीव आसरी अजीव परिणामी रा १० दश भेद कहै छै ।

बंधन परिणामी १, गई पारेणामी २, संठाण परिणामी, ३, भेद परिणामी ४, वर्ण परिणामी ५, गन्ध परिणामी ६, रस परिणामी ७, स्पर्श परिणामी ८, अगुरु लघु परिणामी ९, शब्द परिणामी १० ।

जीव में भाव पावै ५ पांच ही ।

अजीव पुन्य पाप बन्ध में भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक ।

संबर भाव ४ च्यार, उदय बरजी ने ।

निरजरा भाव ३ तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक ।

मोक्ष भाव दोय—क्षायक परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

अथ नवमं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ।

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण आठ, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुःख, एक एक गुणरी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञान करी अनन्ता पदार्थ जाणै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शन करी अनन्ता पदार्थ सरधै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तप करी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

वीर्य नी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणै देखै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेश सूं अनन्त पुद्गलिक सुख बेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय । बलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुख बेदै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

अजीव ना पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै ।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवा नो साभ पर्याय अनन्त पदार्थ ने चालवा नो सहाय तिणसूं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर रहवा नो सहाय, पर्याय अनन्ता पदार्थ ने थिर रहवा नो साभ तिणसं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति, गुण भाजन पर्याय
अनन्त पदार्थों नो भाजन तिणसूं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता
पदार्थों पर बरतै तिणसूं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो एक पुद्गल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै
तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवकै शुभ पणै उदय आवै,
पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणै उदय आवै सुख करै
तिणसूं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ
पणै उदय आवै, अनन्त दुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय ।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहै पर्याय अनन्ता कर्म
प्रदेश ग्रहै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो संबर गुण कर्म रोकवा रो, पर्याय अनन्ता
कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो निर्जरा गुण देश थकी कर्म प्रदेश तोड़ी
देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश
तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो बन्ध, गुण जीव ने बांध राखवा रो,
पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधै तिण सूं अनन्ती
पर्याय ।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त
कर्म प्रदेश क्षय हुआं अनन्त सुख प्रगटै तिणसूं अनन्ती
पर्याय ।

॥ इति नवमः, द्वारम् ॥

अथ दशमूं द्रव्यादिकरी ओलखना द्वार

जीवने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे,
काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी,
गुण थी चेतन गुण ।

अजीव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोकालोक
प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी
रूपी अरूपी दोनूं, गुण थकी अचेतन गुण ।

पुन्य ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी जीवां कने,
काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी
गुण थकी जीव के शुभ पणै उदय आवै ।

पाप ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल

थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी जीव रै अशुभ पणै उदय आवै ।

आस्रव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी रा ३ तीन भेद—एकेक आस्रव री आदि नहीं अन्त नहीं ते अभव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि नहीं पण अन्त छै ते भव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि छै अन्त छै ते पड़वाई आसरी, तेहनी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्टी देश ऊणी अर्ध पुद्गल परावर्तन, भाव थकी अरूपी गुण थकी कर्म ग्रहवा नो गुण ।

संवर ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थकी कर्म रोकवा रो गुण ।

निर्जरा ने पांच बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थकी अकाम निर्जरा का तो अनन्ता द्रव्य, सकाम निर्जरा का, असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म तोड़वा रो गुण ।

बन्ध ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल
थी आदि अन्त सहित, भाव थी रूपी, गुण
थी कर्म बांध राखवा रो ।

मोक्ष ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने,
काल थी एकेक सिद्धां री आदि अन्त नहीं,
एकेक सिद्धां री आदि छै पण अन्त नहीं, भाव
थी अरूपी गुण थी आत्मिक सुख ।

धर्मास्तिकायने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल
थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण
थी जीव पुद्गल ने चालवा रो साभ ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल
थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण
थी जीव पुद्गल ने थिर रहवा नो सहाय ।

आकाशास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी एक द्रव्य, खेत्र थी लोक अलोक
प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी
अरूपी, गुण थी भाजन गुण ।

काल ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढाई द्वीप
प्रमाणे, काल थी अदि अन्त रहित, भाव थी
अरूपी, गुण थी वर्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे ।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे,
काल थी आदि अन्त सहित, भाव थी रूपी,
गुण थी गलै मलै ।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहै छै ।

जीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय ?
सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै अने निर्वद्य
कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै ।

अजीव आज्ञा मांहि के बाहर ? अजीव आज्ञा
मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय ? अजीव छै,
अचेतन छै, जड़ छै ।

पुन्य, पाप, बंध, ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं
अजीव छै ।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय ?
आस्रव ना पांच भेद—मिथ्यात्व १, अब्रत २, प्रमाद ३

कषाय ४, ए च्यार तो आज्ञा बाहर छै । जोग आस्रव का दोय भेद—शुभ जोग वर्ततां निर्जरा हुवै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै । अशुभ जोग आज्ञा बाहर ।

संबर आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय ? संबर थी कर्म रुकै ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि छै ।

निर्जरा आज्ञा मांहि छै, किणन्याय ? कर्म तोड़वा रा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में छै ।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय ? सकल कर्म खपावारी श्री वीतराग की आज्ञा छै ।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथ बारमूं गिनय द्वार कहै छै ॥

जीव ने जीव जाणवो । अजीव ने अजीव जाणवो । पुन्य ने पुन्य जाणवो । पाप ने पाप जाणवो । आस्रव ने आस्रव जाणवो । संबर ने संबर जाणवो । निर्जराने निर्जरा जाणवो । बंधने बंध जाणवो । मोक्ष ने मोक्ष जाणवो । एह नब पदार्थ जाणवा योग कह्या छै । इणां में आदरवा जोग ३ तीन, संबर १, निर्जरा २, मोक्ष ३, बाकी ६ छांडवा जोग छै ।

जीवने छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? आपरा जीव को भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो ।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो ।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै ।

आस्रव ने छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? आस्रव कर्म ग्रहै छै । कर्माँरो उपाय छै । शुभाशुभ कर्म आवाना बाराणा छै । ते छांडवा जोग छै ।

कर्म रोकै ते संबर आदरवा जोग छै ।

देश थकी कर्म तोड़ी, देश थकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आदरवा जोग छै ।

बंध नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजै ? शुभा-शुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवा ही जोग छै ।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहीजै ? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै ।

॥ इति द्वादशम द्वायम् ॥

अथ तेरमूं तलाव द्वार कहै छै ।

तलाव रूपी जीव जाणवो । अतलाव ते तलाव
रूपी अजीव जाणवो । निकलता पाणी रूप पुन्य पाप
जाणवा । नाला रूप आस्रव जाणवो । नाला बंध
रूप संबर जाणवो । मोरी करीने पाणी काढ़ै ते निर्जरा
जाणवो । मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो । खाली
तलाव रूप मोक्ष जाणवो ।

॥ इति तेराद्वार-सम्पूर्णम् ॥

॥ जाणपणा का पच्चीस बोल ॥

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ, धर्म केवली प्रख्यो ।
ये तीन असूल्य रत्न छै ।

२ जीव, अजीव, पुन्य, पाप, धर्म, अधर्म, व्रत,
अव्रत, आज्ञा, अणआज्ञा, यथार्थ जाण्यां बिना समकित
नहीं, समकित बिना चारित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं,
उघाड़ै मुख बोल्यां धर्म नहीं ।

३ साधू का भेष पहन कर साधू नाम धराने से
साधू नहीं जैसे ही पञ्चम गुणस्थान स्पर्श बिना श्रावक
नहीं, छः द्रव्य, नव तत्व, च्यार गति, छः काय, देव गुरु
धर्म ओलख्यां से सम्यक्त्वी जाणवो ।

४ असंजती जीव को जीवणो बंछै ते राग, मरणो बंछै ते द्वेष, संसार समुद्र से तिरणो बंछै ते वीतराग देव को धर्म ।

५ जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते हिंसा नहीं, मारण वाला ने हिंसा, नहीं मारै ते दया ।

६ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि वायरो (हवा) त्रस-काय में बेन्द्री से पंचेन्द्री तक यह छज्जं काया ने मारै नहीं मरावे नहीं मारतां प्रते भलो जाणै नहीं, तेह दया छै, भय नहीं उपजावै ते अभय दान छै ।

७ श्रावक च्यारुं आहार भोगवै ते अब्रत छै तेहथी पाप कर्म लागै छै, देश थकी या सर्व थकी त्याग करै तेह ब्रत छै, संबर धर्म छै, मन बचन काया का शुभ जोग बरतावै ते निर्जरा धर्म तिण थी पुन्य कर्म लागै छै ।

८ गृहस्थ खावै पीवै, दूजा ने खुवावै पावै खावतां पीतां प्रते भलो जाणै ते अधर्म अब्रत आस्रवद्वार तेहथी अशुभ पाप कर्म लागै छै ।

९ सर्व सावद्य जोग का त्याग करी पञ्च महाब्रत पालै तेह साधू, नहीं पालै ते असाधू, देश थकी त्याग करी शुद्ध देवगुरु धर्म की आराधना करै संसार सगण अनित्य जाणै साधूपणा का भाव राखै श्रमण निग्रंथ की उपाशना करै, ते श्रमणोपासक ।

१० अठारे पाप सेवा का त्याग करै, तीन कर्ण तीन जोग से सावद्य जोग पचखै, साधू तणी पर गौचरी करै, पड़िमा आदरै, पादोगमनादि संधारो करै, साधू पणों नहीं पचखै, तो श्रावक ही छै गुणस्थान पांचमो हीं पावै उणने साधू नहीं कहीजै आनन्दजी ने संधारा में अन्तसमां ताईं उपासगदसा सूत्रमें गृहस्थ कह्यो छै ।

११ शुद्ध साधू मुनिराज ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कर्म निर्जरा होय, तथा कल्याणकारी कर्म ते पुन्य बंधै, प्रति संसार करै, शुभ दीर्घ आयु बांधै, ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रांमें घणी जगां कह्यो छै ।

१२ सर्व ब्रतधारी साधू ते संजती छट्टा गुणस्थान से चौदमां ताईं, अब्रती अपचखाणी ते असंजती पहिला गुणस्थान से चौथा ताईं, देश ब्रतधारी ब्रताब्रती श्रावक ते पञ्चम गुणस्थान जाणवो, त्याग करै ते ब्रत देश संबर, आगार राख्यो सो सेवे सेवावे भलो जाणै ते अब्रत आस्रव छै, सूयगडांग उववाई आदि घणां सूत्रां में विस्तार छै ।

१३ असंजती अब्रती अपचखाणी ने च्यारुं आहार सूजता असूजता निर्दोष तथा दोष सहित पडिलाभै तो एकान्त पाप, निर्जरा नथी । भगवती सूत्रके आठ में शतक छठे उद्देशो कह्यो छै ।

१४ साता दियां साता होय ए प्ररूपणां वाला ने भगवान सूत्र सूयगडांग अध्ययन ३ उद्देशो ४ में इम कह्यो छै आर्य मार्ग थी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन्न धर्म की हेलणारो करणहार ३, अल्प सुखां रे वास्ते घणां सुखांरो हारण हार ४ असत्य पक्ष थी अमोक्षरो कारण ५, लोहबाणीयांपरे घणो भूरंसी ६।

१५ त्रस जीवने साधू अनुकम्पा अरथे बांधै बंधावै बांधतानें भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो तथा बंधिया हुआ जीव ने अनुकम्पा आणी छोडै छुडावै छोडतां प्रते भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै सूत्र निशीथ उद्देशो १२ में कह्यो छै।

१६ चुलणी पिया आवक पोसामें ३ पुत्राने मारतो देखी बचाया नहीं माता ने छुड़ावण उख्यो तो पोसो भागो, उपासगदसा सूत्र अध्ययन तीजै कह्यो छै तथा अरणक आदि आवक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी।

१७ साधू मुनिराज ने लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजो लेश्या फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागै, इम बेक्रिय लब्धि आहारिक लब्धि फोड्यां क्रिया कही छै तथा भगवती शतक ३ उद्देशो ४ बेक्रिय लब्धि फोडै तिणमांहि कह्यो, बिना आलोथां मरै तो विराधक कह्यो छै।

१८ असंजती ने दान देवा दीवावा का त्याग आगे पण बडा २ श्रावक किया सूत्रां में चाल्या छै उपासग दसा में आनन्दजी अन्यतीर्थी ते असंजती ने देवा दीवावा का त्याग भगवंत पासै किया छै धर्म होय तो त्याग किम करै ।

१९ देवल प्रतिमा कारणे पृथ्वीकाय हणै तिण ने भगवान् आचारंग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्र में अहित अबोध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीव हण्यां दोष नहीं इस प्ररूपै ते अनारज नो बचन छै आचारंग में कह्यो छै, एहवी अशुद्ध प्ररूपणा वालो मिथ्याती मन्द बुद्धि छै ।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्व ने दुःख उपजावै नहीं, भय उपजावै नहीं, भुरावै नहीं, प्रतापना नहीं देवै, तो साता बेदनी नो बन्ध सूत्र भगवती शतक ७ उद्देशो ६ कह्यो छै परन्तु एकेन्द्री मार पंचेन्द्री पोष्यां धर्म किसी जगां नहीं कह्यो ।

२१ साता बेदनी, मनुष्य देवता नो आयुष, शुभ नाम, ऊंच गोत्र ए ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै, तेहनी करणी निर्वच्य जिन आज्ञा में छै, ए पुन्यनी करणी सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशो ६ में कही छै ।

२२ साधू मुनिराज आहार उपधादिक भोगवै तेह

निरवद्य है । दशवैकालिक अध्ययन ४ चौथे गाथा ८ मी में कहा है जयणा युत आहार करतां पाप नहीं तथा अध्ययन ५ में साधू नी गौचरी असावद्य मोक्ष साधवानो हेतु कही । सूत्र भगवती शतक १ उद्देशे ६ कह्यो है साधू शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म ढीला पाड़ै तथा दशवैकालिक सूत्रमें शुद्ध गति कही है ।

२३ मिथ्याती उपास बेलादिक तप करै अथवा साधू मुनिराज ने निर्दोष आहार पाणी बहिरावै तथा मन बचन काया का शुभ जोग बरतावै जेह निर्वद्य करणी जिन आज्ञा में है, तेह थी पाप क्षय होय पुन्य बंधै, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशे १० में ज्ञान बिना क्रिया करै तेह ने देश आराधक कह्यो है, मेघ-कुमार हाथी रा भव में सुसला जानवर नी दया करी आपणो पग ऊंचो राख्यो घणो कष्ट सह्यो तिणसूं प्रति संसार करी मनुष्य नो आऊखो बांध्यो, उत्तराध्ययन ७ सात में मिथ्याती ने निर्जरा आसरी सुब्रती कह्यो है भगवती शतक ६ में उद्देशे ३१ में असोचा केवली अधिकारे प्रथम गुणठाणारा घणीरा शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही है ।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष आहार भोगवै अने ठंडा बासी आहार पाणी में बेन्द्री आदि जीव हुवै

ते नहीं भोगवै परन्तु बेइन्द्रियादि तथा फूलणादि नहीं होवे तो ठंडो बासी आहार भोगवतां दोष नहीं उत्तराध्ययन ८ में गाथा १२मी में सीतल पिण्ड आहार लेणो कह्यो तथा आचारंग श्रुतखंध १ अध्ययन ६ में उद्देशो ४ चौथे गाथा १३ में भगवान ठण्डो आहार ओल्यो लियो कह्यो छै तिहां दीकामें बासी भात कह्यो तथा प्रश्न व्याकरण अध्ययन १० में सीतल बासी कह्यो, विणठोरन एहवो आहार करी द्वेष नहीं करवो इम कह्यो छै ।

२५ गृहस्थ ने सूत्र भणवा की जिन आज्ञा नहीं प्रश्न व्याकरण अध्ययन ७ में में महाऋषि ने हीं सूत्र भणवारी आज्ञा कही देवेन्द्र नरेन्द्र अरये भणे तथा अन्यतिथीं गृहस्थ ने बांचणी देवै देवावै देवता प्रते भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै निशाथ उद्देशो ६ में कह्यो छै, साधू ने भी कल्पआयां सूत्र भणवा सूत्र व्यवहार उद्देशो १० में कह्यो छै तिणरी विगत दीक्षा लियां ३ वर्ष हुयां निशीथ ४ वर्ष हुयां पछै सूयगडांग ५ वर्ष पछै बृहंत कल्प व्यवहार दसाश्रुतखंध ८ वर्ष ठाणांग समवयांग. १० वर्ष दीक्षा लियां पछै भगवती कल्पै इम कह्यो छै तथा उववाई प्रश्न २० में श्रावकां ने अर्थरा जाणकार कहा छै ।

॥ इति ॥

अथ संज्ञायाः शैकट्या ।

संज्ञा	पञ्चवणाद्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार	कल्पद्वार ४
सामायक चारित्र १	भेद २, इतर, आव । इतर पहले छेहले तीर्थद्वारके धारे । तेष्वनी स्थिति ज० ७ दिन मरुतम ४ मास उ० ६ मास । आव २२ तीर्थद्वारके धारे तथा महाविदेहमें, स्थिति जावजीव तर्हि ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम खीण	सरागी	ठिई कल्पपी अठिई कल्पपी जिन कल्पपी थिवर कल्पपी कल्पपातीत ।
छेदोत्थापनी चारित्र २	भेद २, अतिवार सहित, दोप लगावे १ अतिवार रहित, दोप न लगावे २ अतिवार रहित २३वां तीर्थद्वारना साधु २४वां में आवे तथा नय दीक्षित ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम खीण	सरागी	ठिई कल्पपी थिवर कल्पपी जिन कल्पपी ।
परिहारविशुद्ध चारित्र ३	भेद २, नियद्वमाण १ नियद्वकाय २ । नियद्वमाणन्तप करवा ने पेठो, नियद्वकायन्तप करी ने निकल्यो ।	सवेदी वेद २ पुरुष वेद, कृत नपुसक वेद	सारगी	ठिई कल्पपी थिवर कल्पपी जिनकल्पपी ।
सूक्ष्म सम्प-राय-चारित्र ४	भेद २, सकलेसमाण १ विशुद्धमाण २ सकलेसमाणन्तप-प्राम श्रेणी सू पवतो, विशुद्धमाणन्तपक श्रेणी चङ्गुतो ।	अवेदी उपशम खीण	सारगी	ठिई कल्पपी अठिई कल्पपी कल्पपातीत ।
यथाव्याप्त चारित्र ५	भेद २, छत्रास्थ १ केवली २ । छत्रास्थ ११, १२ गुणवाणे, केवली १३, १४ गुणवाणे ।	अवेदी उपशम खीण	वीतरागी उपशम खीण	ठिई कल्पपी अठिई कल्पपी कल्पपातीत ।

संज्ञा	नियंता द्वारा ५	प्रतिसेवी द्वारा ६	नाणद्वार ७	भणवो	तीर्थद्वार ८
सामायक चारित्र १	सामायक चारित्रिका नियंता ४ पुलाक, बुद्ध, पडिसे-सेवणा और कषाय कुशील ।	सामायक चारित्र सपडिसेवी हुवे तो मूल गुणमें दोष लगावे तथा उत्तरगुणमें दोष लगावे । अपडिसेवी हुवे तो दोष न लगावे ।	मति श्रुत ज्ञान । मति श्रुत अवधि । मति श्रुत समपर्याय । मति श्रुत अवधि समपर्याय ।	जघन्य ८ प्रवचन उत्कृष्टो १४ पूर्व	तीर्थ । अन्यतीर्थी । प्रत्येक बुद्ध । तीर्थंकर ।
छेदोस्थापनी चारित्र २	छेदोस्थापनीका नियंता ४ पुलाक, बुद्ध, पडिसेवणा और कषाय कुशील ।	एवं छेदोस्थापनी	एवं ४ ज्ञान	एवम्	तीर्थी
परिहारविशुद्ध चारित्र ३	पडिहार विशुद्ध चारित्र को नियंता १ कषाय कुशील ।	अपडिसेवी पडिबल्लती बेलों	एवं ४ ज्ञान	जघन्य ९ में पूर्वो तीजो आचार वत्सु उत्कृष्टो देशूणो दश पूर्व	तीर्थी
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	सूक्ष्म सम्पराय को नियंता १ कषाय कुशील ।	अपडिसेवी	एवं ४ ज्ञान	जघन्य ८ प्रवचन उत्कृष्टो १४ पूर्व	तीर्थ । अन्यतीर्थी । प्रत्येक बुद्ध । तीर्थंकर ।
यथाख्यात चारित्र ५	यथाख्यात का नियंता २ सनातक, निगन्थ ।	अपडिसेवी	एवं ४ ज्ञान तथा केवल ज्ञान	ज० ८ प्रवचन इ० १४ पूर्व तथा सूत्र वित्तिरिक्त	तीर्थ । अन्यतीर्थी । प्रत्येक बुद्ध । तीर्थंकर ।

संज्ञा	लिङ्गद्वार ६	शरीरद्वार १०	क्षेत्रद्वार ११	कालद्वार १२	गतिद्वार तथा पदवी १३
सामायक चारित्र ?	द्रव्यलिङ्गी १ सल्लिगी २ अन्यलिङ्गी तोपसादि ३ गृहलिङ्गी गृहस्थ के भेष ४ भावलिङ्गी ५	शरीर ५ पाँचै	जन्म १५ कर्मभूमि सारण अढ़ाई द्वीप में	अवसर्पणी जन्म छत्ता आश्री ३।१४ और उत्स- र्पणी जन्म आश्री २।३।४ छत्ता आश्री ३।४ और	जघन्य पहलै देवलोक उ० ५ अनुत्तर विमाण । पदवी ५ इन्द्र, सामानिक, लोकपाल, ताय त्रिसक, अहमिन्द्र । स्थिति ज० २ पल्य उ० ३३ सागर ।
वेदोस्थापनी चारित्र २	एवम् ५ पाँचै	शरीर ५ पाँचै	जन्म ५ भरत ५ हरवर्त । सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	एवं सामायक ज्यू
परिहार विमुद्ध चारित्र ३	३ पाँचै द्रव्यलिङ्गी १ भावलिङ्गी २ सल्लिगी ३	शरीर ३ पाँचै उदारिक, तेजस कारमाण	जन्म ५ भरत ५ हरवर्त । सारण नहों ।	अवसर्पणी जन्म आश्री ३।४ छत्ता आसरी ३।१४ उत्सर्पणी जन्म आसरी २।३।४ छत्ता आश्री ३।४ और	जघन्य पहलै देवलोक उ० ८ देवलोक । पदवी ४ अहमिन्द्र टाली । स्थिति ज० ३ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर ।
सूत्रन सम्प- राय चारित्र ४	सामायक ज्यू ५ पाँचै	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि सारण नहों पूर्व सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य उत्कृष्टी ५ अनुत्तर विमाण । पदवी १ अहमिन्द्र । स्थिति जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर ।
यथाख्यात चारित्र ५	सामायक ज्यू ५ पाँचै	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि सारण नहों पूर्व सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य ५ अनुत्तर विमाण उत्कृष्टी मोक्ष । पदवी २ अहमिन्द्र तथा सिद्ध । स्थिति जघन्य ३३ सागर उत्कृष्टी मोक्ष ।

संज्ञा	कर्म उद्दीरणा द्वार २३	उपशम पञ्चणा द्वार २४	संज्ञाद्वार २५	आहारिक द्वार २६	घणाभव द्वार २७	आकर्ष द्वार २८
सामायक चारित्र १	८ उदैरे तथा ७ उदैरे आउपो वर्जी ने तथा ६ उदैरे वेदनी आयु वर्जी	सामायक पणो छाडी ४ ठोड़ जाय । छेदोस्थापनी, सूत्रम सम्पराय, असंजम, संजमासजम ।	सबो बोहोत्ता नो सबी बोहोत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव करे उ० ७।८ भव करे	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ६०० वार
छेदोस्थापनी चारित्र ३	एवम् ८।७।६	छेदोस्थापनी छाडी ने ५ ठोड़ जाय । सामायक, पढिहार विशुद्ध सूत्रम सम्पराय, असंजम, संजमासजम	एवम्	आहारिक	एवम्	जघन्य १ वार उत्कृष्टा १२० वार
परिहार विशुद्ध ३	एवम्	परिहार विशुद्ध छाडी ने २ ठोड़ जाय । असंजम, छेदोस्थापनी ।	एवम्	आहारिक	जघन्य १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ३ वार
सूत्रम सम्पराय चारित्र ४	५ उदैरे आउपो मोहनी वेदनी वर्जी तथा ६ उदैरे आयु वेदनी वर्जी ने	सूत्रम सम्पराय छोटरी ने ४ ठोड़ जाय सामायक, छेदोस्थापनी, यथाख्यात, असंजम ।	मो सबी बोहोत्ता	आहारिक	ज० १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उत्कृष्टा ४ वार
यथाख्यात चारित्र ५	५ उदैरे ऊपर ज्युं तथा २ उदैरे नाम गोत तथा अण-उद्दीरणा हुवे	यथाख्यात छाडी ने ३ ठोड़ जाय । मोक्ष, सूत्रम सम्पराय, असंजम ।	नो सबी बोहोत्ता	आहारिक तथा अणाहारिक	ज० १ भव उ० ३ भव करे	जघन्य १ वार उत्कृष्टा २ वार

मन्त्रा	घणाभव आसरी	स्थितिद्वार २६	घणाभव आसरी	आंतराद्वार ३०	घणाभव आसरी	समुद्रघात द्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२
मामायक चारित्र्य १	जघन्य २ चार उ० ७२०० वार	जघन्य १ समो उत्कृष्टो देयूणो कोड पूर्व	सदाकाल	जघन्य अन्तर्महूर्त्त उ० देयूणो अर्द्ध पुद्गल	आंतरो पड़े नहीं	६ पावै	लोकै असं- ख्यातमें भाग
द्वेदोल्थापनी चारित्र्य २	जघन्य २ चार उ० ६६० वार	पुवम्	जघन्य २५० वर्ष उत्कृष्टा ५० लाख कोड सागर	पुवम्	ज० ६३ हजार वर्ष उ० १८ कोडाकोड सागर कोई ऊणो	६ पावै	पुवम्
परिहार विमुक्त ३	जघन्य २ चार उ० ७ वार	ज० १ समो उ० २६ वर्ष ऊणो कोड पूर्व	जघन्य देश ऊणा २०० वर्ष उत्कृष्टा देयूणा २ कोड पूर्व	पुवम्	ज० ८४ हजार वर्ष उ० १८ कोडाकोड सागर कोई ऊणो	३ पावै वेदनी, मरण, कपाय,	पुवम्
मूज्म सम्पराय चारित्र्य ४	जघन्य २ चार उ० ६ वार	जघन्य १ समो उ० अन्तर्महूर्त्त	जघन्य १ समो ऊपर अन्तर्महूर्त्त	पुवम्	जघन्य १ समो उत्कृष्टा ६ मास	मथी	पुवम्
यथान्यात चारित्र्य ५	जघन्य २ चार उ० ५ वार	जघन्य १ समो उ० देग ऊणो कोड पूर्व ८	सदाकाल	पुवम्	आंतरो पड़े नहीं	केवल समुद्र घात पावै तो	लोकै असल्यातमें भाग तथा आवै लोकमें केवल समुद्रघात करै जब

संज्ञा	पर्यायानाद्वार ३३	भावद्वार ३४	प्रवर्ण्यो द्वार ३५	पूर्व प्रवर्ण्यो	अल्पाबहुत्व ३६
सामायिक चारित्र १	लोकैरे असख्यातमें भाग	भाव २ क्षयोपशम, प्रणामिक	सीए अत्थी सीए नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टी प्रत्येक हजार	जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक १००० हजार कोड़	सख्याता ५
छेदोत्थापनी चारित्र २	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	जघन्य उत्कृष्टी प्रत्येक सौ कोड़	सख्याता ४
परिहार विशुद्ध ३	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	जघन्य १।२।३ उत्कृष्ट १००० प्रत्येक	सख्याता ३
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	एवम्	एवम्	सीए अत्थी सीए नत्थी जघन्य १।२।३ उ० १।६।२ त्यामें ५४ उपयाम श्रेणीरा क्षपक श्रेणीरा	सीए अत्थी सीए नत्थी जो हुवै जघन्य १।२।३ उ० प्रत्येक १००	सख्याता १
यथाख्यात चारित्र ५	लोकैरे असख्यात में भाग तथा आखी लोक फर्शों केवल समुद्रघात करै जब	भाव ३ उपशम, क्षायक प्रणामी	सीए अत्थी सीए नत्थी जघन्य १।२।३ उ० १।६।२ त्यामें ५४ उपयाम श्रेणीरा क्षपक श्रेणीरा	जघन्य उत्कृष्टी प्रत्येक कोड़	सख्याता २

अथ नियंत्तारो थोकडो ।

नियंता	पञ्चवणा द्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार ३	कल्पद्वार ४	चारित्र द्वार	प्रतिसेवी द्वार ६
पुलाक १	भेद ५ नाण पुलाक १ दर्शण पुलाक २ चारित पुलाक ३ लिग पुलाक ४ यथासुद्धम पुलाक ५	सवेदी वेद २ पुण्य वेद, कृत नपुंसक वेद	सरागी	ठिईकल्पी पहलै छेहलै तीर्थकर वारै, अठिईकल्पी २ तीर्थकरांके वारै, महाविदेहमें थिवरक० ३	२ सामायक, छेदोस्थापनी	मूल गुण उत्तर गुणमें दोष लगावै
बुक्तस २	भेद ५ जाणी अमोग १ अजाणी अणामोग २ सडुजे छाने ३ असडुडा प्रगट ४ आहासुद्धम किंचित ५	सवेदी वेद ३ पावै	सरागी	४ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, जिनकल्पी, थिवरकल्पी ४	२ सामायक, छेदोस्थापनी	उत्तर गुणमें दोष लगावै
पडिसेवणा ३	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिग ४ आहासुद्धम ५	सवेदी वेद ३ पावै	सरागी	४ ऊपर लयूं	२ सामायक, छेदोस्थापनी	मूल गुण उत्तरगुण दोनोमें दोष लगावै
कपाय कुशील ४	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिग ४ आहासुद्धम ५	सवेदी ३ तथा अवेदी उपसत खीण	सरागी	५	४ सामायक छेदोस्थापनी पडिहार विशुद्ध, सुद्धम सम्पराय	मूल गुण उत्तर गुण दोनो में दोष न लगावै पडिबज्जती बेलां जठा पछै
निग्रथ ५	भेद ५ पढम समै निग्रथ १ अपढम समै निग्रथ २ चरम ३ अचरम ४ आहासुद्धम निग्रथ ५	अवेदी उपसत खीण	वीतरागी उपसत खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ यथाख्यात	अपडिसेवी
सनातक ६	भेद ५ अखवी स्रुषा न करै १ असवले २ अकम्मे ३ निर्मल ज्ञान ४ अपडिसेवी ५	अवेदी खीण	वीतराग खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ क्षायिक	अपडिसेवी

नियंता	नाणद्वार ७	भणवो	तीर्थद्वार ८	लिंगद्वार ९	शरीरद्वार १०	क्षेत्रद्वार ११
पुलाक १	मतश्रुत मतश्रुत अवध	जघन्य ९ में पूर्वरी ३ वत्थु। उत्कृष्टो ९ पूर्व	तीर्थी	द्रव्यलिंग ५ पावै। द्रव्यलिंगी। सलिंगी। अन्यलिंगी। गृहलिंगी। भावलिंगी। माःलिः १ सःलिः	३ पावै। उदारिक। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५ कर्मभूमि साहारण नहीं
बुद्धस २	मतश्रुत मतश्रुत अवध	ज० ८ प्रवचन उत्कृष्टा १० पूर्व	तीर्थी	५ पावै	४ पावै उदारिक। वैक्रे। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५ कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
पडिसेवणां ३	मतश्रुत मतश्रुत अवध	ज० ८ प्रवचन उ० १० पूर्व	तीर्थी	५ पावै	४ पावै उदारिक। वैक्रे। तेजस। कार्मण	जन्मछता आश्री १५ कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
कपाय कुलील ४	मतश्रुत मतश्रुत अवध। मतश्रुत मन पर्या। मतश्रुत अवध मन पर्या।	ज० ८ प्रवचन उ० १४ पूर्व	४ तीर्थी। अन्य तीर्थी। प्रतेक बुद्ध। तीर्थकर	५ पावै	५ पावै	जन्मछता आश्री १५ कर्मभूमि साहारण अढाई द्वीप में
नियंथ ५	ज्ञान ४ पावै	ज० ८ प्रवचन उ० १४ पूर्व	४ तीर्थ पावै अपरल्यो	५ पावै	३ पावै	जन्मछता आश्री १५ कर्मभूमि सारन नहीं पूर्वे सारन अढाई द्वीप में
सनातक ६	केवल ज्ञान	सूत्र वित्तिरिक्त	४ तीर्थी पावै अपरल्यु	५ पावै	३ पावै	अपरल्यो

नियंठा	कालद्वार १२	गतिद्वार १३	पदवी	थिति	थानकद्वार १४
पुलाक १	अवसर्पणी कालमें जन्म ३ले चौथे आरे छता ३।४।५ आरे उत्सर्पणी जन्म २।३।४ आरे छता ३।४।५ आरे महाविदेहमें पिण	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टो ८ देवलोक	४ पदवी इन्द्र १सा मानिक २ लोकपाल ३ त्रायत्रिसक ४	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर	असंख्याता २
शुक्ल २	अवसर्पणी कालमें जन्म छता ३।४।५ आरे उत्सर्पणी कालमें जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी उपरज्युं	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ३
पविसेयणां ३	अवसर्पणी कालमें जन्म छता ३।४।५ आरे उत्सर्पणी जन्म २।३।४ छता ३।४ आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी उपरज्युं	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ४
कपाय कुशील ४	अवसर्पणी कालमें जन्म छता आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पणी काल में जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जघन्य १ देवलोक उत्कृष्टा ५ अनुत्तर विमान	५ पदवी इन्द्र १सा मानिक २ लोकपाल ३ त्रायत्रिसक ४ अहमिन्द्र ५	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी-३३ सागर	असंख्याता ५
निग्रन्थ ५	पुलाक ज्यु पूर्व सारण आश्री अढाई द्वीपमें	जघन्य उत्कृष्टो ५ अनुत्तर विमान	अहमिन्द्र १	जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर	१थानक सर्वसुं थोड़ा
सनातक ६	पुलाक ज्यु पूर्व साहरण अढाई द्वीपमें	मोक्षगति	सिद्धपदवी	मोक्षगति	१थानक सर्वसुं थोड़ा

नियता	निकासद्वार १५	जघन्य पञ्जवा	जोगद्वार १६	उपयोग द्वार १७	सकषाय द्वार १८
पुलाक १	पुलाक पुलाक साथे छठाण बलिया । कषाय कुशील साथे छठाण बलिया । और ४ सू अनत गुणहीण	पुलाक कषाय कुशील ना जघन्य पञ्जवा मांहो-मांहि तुछा है । तेहथी पुलाकरा उत्कृष्टा पञ्जवा अनत गुणा । बुकस पड़िसेवीरा जघन्य पञ्जवा मांहोमांहि तुछा है पुलाक रा उत्कृष्टा पञ्जवा सू अनन्त गुणा इधका । तेह थकी बुकस रा उत्कृष्टा पञ्जवा अनत गुणा इधका तेह थकी पड़िसेवीरा उत्कृष्टा पञ्जवा अनत गुणा अधिका । तेह थकी कषाय कुशील रा उत्कृष्टा पञ्जवा अनत गुणा अधिका तेह थकी निग्रथ सनातकरा पञ्जवा अनत गुणा अधिका आप-सरी में तुछा ।	जोग ३ पावै मन वचनकाया	२ सागार मणगार	सकषाय ४ सजलका पावै
बुकस २	बुकस बुकस पड़िसेवणा कषाय कुशील साथे छठाण बलिया । पुलाक सू अनत गुणा अधिका । निग्रथ सनातक सू अनत गुणहीणा	सजोगी ३ जोग पावै	२ पावै	२ पावै	सकषाय
पड़िसेवणा ३	पड़िसेवणा पड़िसेवणा बुकस कषाय कुशील साथे छठाण बलिया निग्रथ सनातक सू अनत गुणहीण । पुलाक सू अनत गुणा अधिका ।	सजोगी ३ जोग पावै	२ पावै	२ पावै	सकषाय
कषाय कुशील ४	बुकस ज्यू पड़िसेवण पहला ४ सू तो छठाण बलिया निग्रथ सनातक सू अनत गुणहीण	जोग ३ पावै	२ पावै	२ पावै	४।३।२।१ लोभ १
निग्रथ ५	निग्रथ माहोमांहि तुछा है । सनातक सू तुछा है । और च्यारां सू अनत गुणां अधिका ।	जोग ३ पावै	२ पावै	२ पावै	अकषाय उपसत खीण
सनातक ६	निग्रथ सनातक तुछा है मांहोमांहि तुछा है और च्यारहिं सू अनत गुणा अधिका ।	जोग ३ पावै अजोगी पिण हुवै	२ पावै	२ पावै	अकषाय खीण

नियता	लेश्याद्वार १६	परणाम द्वार २०	थिति	कर्मबध द्वार २१	कर्मवेदैद्वार २२	कर्म उदीरणां द्वार २३
पुलाक १	लेश्या ३ भलो पावै	३ पावै वट्टमाण हायमाण अबुठिया	वट्टमाण हायमाणकी जघन्य थिति १ समो उ० अन्त-मुहुत्त १ अबुठियाकी ज० १ समो उ० ७ समा	७वांघिआउषो वर्जी ने	८ कर्म वेदै	६ कर्म उदैरे आयु वेदनी वर्जी
बुक्कस ३	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरल्युं	७८ वांघै	८ वेदै	८७६ आयु वर्जी ७ उदैरे वेदनी आयु वर्जी ६ उदैरे
सपद्धिसेवणां ३	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरल्युं	७८ वांघै	८ वेदै	८७६
कपाय कुन्नील ४	६ लेश्या पावै	३ पावै	ऊपरल्युं	६७८आउषो मोहनी वर्जी ने	८ वेदै	८७६६ वेदनी । मोहनी । आयु वर्जी ५ उदैरे
नियन्थ ५	१ शुक्ल लेश्या पावै	१ पावै वट्टमाण अबुठिया	वट्टमाण की थिति ज० उ० अन्तमुहुत्त अबुठिया की ज० १ समो उ० अन्तमुहुत्त	साता वेदनी	७वेदै मोहनी टल्यो	२ उदैरे नाम ने गोत्र ५ उदैरे वेदनी मोहनी आयु वर्जी
सनातक ६	१ परम शुक्ल तथा अलेश्यो	२ पावै वट्टमाण अबुठिया	वट्टमाण का ज० उ० अंत-मुहुत्त अबुठियाकी ज० अंत-मुहुत्त उ० देशणीकोडपुर्व	साता वेदनी तथा अबध	४ वेदै वेदनी आउषो नाम गोत	२ उदैरे नाम गोत्र तथा अण उदीरणां हुवे ।

नियंठा	उपग्राम पञ्चवर्णां द्वार २४	संज्ञा द्वार २५	आहारिःद्वार २६	भवद्वार २७	आकर्षद्वार २८	घणां आश्री	स्थिति द्वार २९
पुलाक १	पुलाक पणो छोडीनें जावे तो २ ठोड़ा कषाय कुशील। असंजम	नोसन्ना बहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उत्कृष्टा ३ भव	जघन्य १ वार उ० ३ वार आवै	जघन्य २ वार उत्कृष्टा ७ वार	जघन्य अने उत्कृष्टी अंतर्महर्त्त
बुक्कस २	बुक्कस छोडीने ४ ठोड़ जाय पडिसेवणा। कषाय कुशील। असंजम। संजमासंजम।	२री भजनां सन्ना बहुत्ता नोसन्ना बहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उत्कृष्टा ८ भव	जघन्य १ वार उ० प्रत्येक १०० वार आवै	जघन्य २ वार उत्कृष्टा प्रत्येक १००० वार	जघन्य १ समो। उ० देशूणी कोड़ पूर्व
पडिसेवणा ३	पडिसेवणां छांडीने ४ ठोड़ जाय। बुक्कस। कषाय कुशील। असंजम। संजमासंजम।	२री भजनां नो सन्ना बहुत्ता सन्ना बहुत्ता	आहारिक	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
कषाय कुशील ४	कषाय कुशील छांडीनें ६ ठोड़ जाय। पुलाक। पडिसे० बुक्कस। निग्रथ। असंजम। संजमासंजम	२री भजनां सन्ना बहुत्ता नोसन्ना बहुत्ता	आहारिक	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
निग्रथ ५	निग्रथ छोडीनें ३ ठोड़ जाय कषाय कुशील। सनातक। असंजम	नोसन्ना बहुत्ता	आहारिक	जघन्य १ भव उ० ३ भव	जघन्य १ वार उ० २ वार	ज० १ वार उ० ५ वार	जघन्य १ समो उ० अंतर्महर्त्त
सनातक ६	मोक्ष जाय	नोसन्ना बहुत्ता	आहारिक अणाहारिक	मोक्ष	मोक्ष जाय	आवे नहीं	ज० अंतर्महर्त्त उ० देशूणी कोड़ पूर्व

नियम	घण्टा जीवां आश्री	आंतरा द्वार ३०	घणा आश्री	समुद्रघातद्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२	फर्शना द्वार ३३
पुलाक १	जघन्य १ समो उत्कृष्टो अन्तर्मूहूर्त्त	जघन्य अन्तर्मूहूर्त्त उ० देयुणो अर्द्धपुद्गल	जघन्य १ समो उत्कृष्टा सख्यातावर्ष	३ समुद्रघात पावै । वेदनी । कषाय । मरण	लोकै असख्यात में भाग	लोकै असख्यात में भाग फर्श
दुक्कस २	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देयुणो जघन्य अन्तर्मूहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	अपरज्यु
पविसेवणां ३	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देयुणो जघन्य अन्तर्मूहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	अपरज्यु
कपाय कुशील ४	सदाकाल	एवम्	आंतरो नथी	६ पावै	एवम्	अपरज्यु
नियम ५	जघन्य १ समो उ० अन्तर्मूहूर्त्त	एवम्	जघन्य १ समो उत्कृष्टो ६ मास	नथी	एवम्	अपरज्यु
सनातक ६	सदाकाल	आंतरो नहीं	आंतरो नथी	केवल समुद्रघात ।	लोकै असख्यात भाग तथा आखि लोक में	लोकै असख्यात में भाग तथा आखी लोक फर्श ।

नियंता	भावद्वार ३४	प्रवर्ण्यो द्वार ३५	पूर्व प्रवर्ण्यो	अल्पाबहुत्व द्वार ३६
पुलाक १	२ क्षयोपशम प्रणामी	सिण्ड अत्थो सिण्ड नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	संख्याता २
बुद्धस २	२ क्षयोपशम प्रणामी	युवम् १००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १०० कोड़	संख्याता ४
चविसेवणां ३	२ क्षयोपशम प्रणामी	युवम् १००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १०० कोड़	संख्याता ५
कषाय कुक्षील ४	२ क्षयोपशम प्रणामी	सिण्ड अत्थो सिण्ड नत्थी जे होवै तो जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १०००	जघन्य उत्कृष्टा प्रत्येक १००० कोड़	संख्याता ६
निग्रथा ५	३ उपशम १ क्षायक प्रणामी	सिण्ड अत्थो सिण्ड नत्थी जे होवै तो ज० १।२।३ उ० १६२ तेहमां क्षपक श्रेणीना १०८ उपशम श्रेणीना ५४	जघन्य १।२।३ उत्कृष्टा प्रत्येक १००	सर्वसुं थोड़ा १
सनातक ६	२ क्षापक प्रणामी	सिण्ड अत्थो सिण्ड नत्थी जे होवै तो १०८ क्षपक श्रेणीना	जघन्य उत्कृष्टो प्रत्येक १ कोड़	संख्यात गुणा ३

॥ इति नियमो योक्तो समाप्तः ॥

॥ अथ लघुदण्डक ॥

पहलो शरीर द्वार ।

शरीर ५—औदारिक १ बैक्रिय २ आहारिक ३ तेजस
४ कर्मण ५ ।

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर
पावै ३—बैक्रिय १ तेजस २ कर्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेंद्री में, तथा असन्नी
तिर्यश्च, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियां में शरीर पावै
३—औदारिक १ तेजस २ कर्मण ३ ।

चाउकाय, सन्नी तिर्यश्च पंचेन्द्री मनुष्यणी में शरीर
पावै ४ औदारिक १ बैक्रिय २ तेजस ३ कर्मण ४ ।

गर्भेज यनुष्यों में शरीर पावै पांचूही ॥

सिद्धां में शरीर पावै नहीं ॥

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

दूजो अवगाहना द्वार ।

जघन्य अवगाहना आंगुल को असंख्यातमो भाग,
उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी ।

उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्या-
तमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन जाक्षेरी ।

पहली नारकी की अवगाहना उत्कृष्टी ७॥ धनुष्य
६ आंगुल की ।

दूजी नारकी की अवगाहना साढ़ी पन्द्राह १५॥
धनुष और १२ आंगुल की ।

तीजी नारकी की अवगाहना ३१। धनुष की ।

चौथी नारकी की अवगाहना ६२॥ धनुष की ।

पांचवीं नारकी की अवगाहना १२५ धनुष की ।

छठी नारकी की अवगाहना २५० धनुष की ।

सातवीं नारकी की अवगाहना ५०० धनुष की ।

जघन्य सातूही नारकीकी आंगुल को असंख्यातमो
भाग, उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुल को संख्यात-
मो भाग उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी ।

देवतां की अवगाहना ।

१५ परमाधामी १० भुवनपति, बाणव्यन्तर, त्रिभू-
मखा, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोक, पहिला
किल्बिषी की अवगाहना ७ सात हाथ की ।

तीसरा तथा चौथा देवलोक दूजा किल्बिषी की ६
छव हाथ की ।

नवलोकांतिक, पांचवां तथा छठा देवलोक, तीजा कित्तिषी की अवगाहना ५ पांच हाथ की ।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवता की अवगाहना ४ च्यार हाथ की । नवमा, दशमा, इग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहना होय । ६ नव ग्रैवेयक का देवा की दोय हाथ की ।

पांच अनुत्तर विमान का देवा की अवगाहना १ एक हाथ की ।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहना जाणो ।

बारवां देवलोक के ऊपर का देव वैक्रिय करै नहीं ।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्य की जघन्य, उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवों भाग ।

बनस्पतिकाय की अवगाहना जघन्य तो आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जांभेरी कमल फूल की अपेक्षा ।

बेइन्द्री की अवगाहना १२ जोजन की, उत्कृष्टी ।

तेइन्द्री की अवगाहना ३ कोस की, उत्कृष्टी ।

चौरिन्द्री की अवगाहना ४ कोस की, उत्कृष्टी ।

अनं जघन्य आंगुल को असंख्यातवों भाग ।

तिर्यश्च पंचेन्द्री का ५ भेद—

- १ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की ।
- २ थलचर सन्नी की ६ कोस की असन्नी की प्रत्येक कोस की ।
- ३ उरपुर सन्नी की १००० जोजन की, असन्नी की प्रत्येक जोजन की ।
- ४ भुजपर सन्नी की प्रत्येक कोस की, असन्नी की प्रत्येक धनुष की ।
- ५ खेचर सन्नी असन्नी की प्रत्येक धनुष की तिर्यश्च पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुल के संख्यात में भाग उत्कृष्टी ६०० जोजन की करे, मोटी अवगाहना वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं ।

सन्नी मनुष्य की अवगाहना ।

५ भरत ५ ऐरभरत का मनुष्या की, अवसर्पणी के पहिले आरै लगतां ३ कोस की उतरतां २ कोस की, दूजै आरै लगतां २ कोस की उतरतां १ कोस की तीजै आरै लगतां १ कोस की उतरतां ५०० धनुष की, चौथे

आरै लगतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथकी, पांचवें आरै लगतां ७ हाथ की उतरतां १ हाथ की, छठे आरै लगतां १ हाथ की उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी ।

इस तरह उत्सर्पणी में चढ़ती कहणी । वेक्रे लाख जोजन की जाझेरी करे ५ हेमवय, ५ अरुणवयका युग-लियां की १ कोस की, ५ हरिवास ५ रम्यक वासका की २ कोस की, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुका की ३ कोस की, ५६ अन्तर द्वीपका की ८०० धनुष की ५ महा विदेह खेत्र का मनुष्यां की ५०० धनुष की ।

सिद्धां की जघन्य १ हाथ ८ आंगुल की उत्कृष्टी ३३३ धनुष, १ हाथ ८ आंगुल की ।

॥ इति अवगाहना द्वारम् ॥

तीसरा संघयन द्वार ।

संघयन ६ तेहना नाम बज्ज ऋषभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, केल को ५ छेवटो ६ एवं ।

नारकी देवता में संघयण पावै नहीं ।

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असत्री मनुष्य, असत्री तिर्यञ्च में संघयण १ छेवटो, गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च में

संघयण पावै ६ छहुं ही, सर्व युगलिया त्रेसठशलाका
पुरुषों में संघयण वज्र ऋषभ नाराच पावै ।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

चौथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६—तेहना नाम—समचौरंस १ निगव-
परिमंडल २, सादिज ३, बावन्य ४, कुब्ज ५, हुण्डक ६,
७ सात नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री असप्ती मनुष्य
तिर्यच में संठाण हुण्डक ।

तिणमें पांच थावर की विगत ।

पृथ्वीकाय को चंद मसूर की दाल ।

अप्पकाय को बुदबुदो ।

तेउकाय को सूई को करनालो ।

वाउकाय को ध्वजा पताका ।

सर्व देवता, सर्व युगलिया, तथा त्रेसठशला का
पुरुषां में समचौरंस संस्थान ।

गर्भेज मनुष्य तिर्यच में ६ छहुं ही सिद्धां में पावै
नहीं ।

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ ।

२४ दंडकां में कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाई पण होय सिद्धां में कषाय नहीं ।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

छष्टो संज्ञा द्वार ।

संज्ञा ४—आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४ । २४ दंडकां में संज्ञा ४ पावै, मनुष्य असंज्ञी बहुता पण होय, सिद्धां में संज्ञा नहीं ।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

सातमूं लेश्या द्वार ।

सात नारकी में पावै ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत ।

पहली दूसरी में पावै १ कापोत ।

तीजी में कापोत वाला घणा, नील वाला थोड़ा ।

चौथी में पावै १ नील ।

पांचमी में नील वाला घणा, कृष्ण वाला थोड़ा ।

छट्टी में पावै १ कृष्ण ।

सातमी में पावै १ महाकृष्ण ।

भवनपति वाणव्यन्तर देवतां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्य वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलियां में लेश्या पावै ४ प्रथम ।

तेज वाउकाय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यच में लेश्या पावै ३ माठी ।

जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्बिषी में लेश्या पावै १ तेज ।

तीजा चौथा पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्बिषी में पावै १ पद्म ।

तीजा किल्बिषी तथा छट्टा देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध ताई पावै १ शुक्ल । केतलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धां में लेश्या नहीं ।

सन्नी मनुष्य तिर्यच में लेश्या पावै ६ छहुं ही ।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

आठमूं इन्द्रिय द्वार ।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५, ७ नारकी, सर्व देवता, गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यच, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यच पंचेन्द्री सर्व युगलियां में इन्द्री ५ पावै । ५ थावर में इन्द्री १ स्पर्श पावै, बेइन्द्री में २ इन्द्री होय,—स्पर्श रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श रस घ्राण, चउरिन्द्री में ४ होय

श्रोतेन्द्री बिना । मनुष्य नो इन्द्रियां पण होय, सिद्धांके इन्द्रिय होय ही नहीं ।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

नवमं समुद्धात द्वार ।

समुद्धात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७ ।

सात नारकी वाउकाय में ४ पहिली समुद्धात पावै, भुवपनति वानव्यन्तर जोतषी बारवां देवलोक ताई का देवता गर्भेज तिर्यञ्च में समुद्धात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च सर्व युगलिया बारवां से ऊपर का देवता में समुद्धात ३ पावै, पहली । गर्भेज मनुष्यां में समुद्धात ७ सातों ही पावै । केवल्यां में १ केवल समुद्धात पावै । तीर्थङ्कर समुद्धात करै नहीं, सिद्धां के समुद्धात नहीं ।

॥ इति समुद्धात द्वारम् ॥

दशमं सन्नी असन्नी द्वार ।

सन्नी के मन, असन्नी के मन होय नहीं । ७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यञ्च युगलिया सन्नी होय । ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमुर्लिम मनुष्य, छमु-

छिंम तिर्यञ्च ये असन्नी होय । मनुष्य नो सन्नी नो
असन्नी पण होय, सिद्ध सन्नी असन्नी नहीं होय ।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

इग्यारमूं वेद द्वार ।

३—वेद, स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३ । ७ नारकी,
५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्चमें
वेद १ नपुंसक होय । भुवनपति वानव्यन्तर, जोतिषी
पहला दूजा देवलोक, पहला किल्बिषी, सर्व युगलिया
में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय । तीजा देवलोक सूं
सर्वार्थ सिद्धताई वेद १ पुरुष होय । मनुष्य अवेदी पण
होय । सिद्धां के वेद नहीं ।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

बारमूं पर्याय द्वार ।

पर्याय ६ आहार १, शरीर २, इन्द्रिय ३, श्वाशो-
श्वाश ४, भाषा ५, मन ६, पर्याय एवं ६ ।

सर्व देवता में पावै ५ पर्याय । मन भाषा भेली
लेखवी ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली । असन्नी
मनुष्य में पर्याय ३॥ तीन तो पहली आधी में श्वाश
लेवै उश्वाश नहीं लेवै ३ विकलेन्द्री, छमुछिंम तिर्यञ्च

पंचेन्द्री में पर्याय ५ पावै मन दल्यो । सिद्धां में पर्याय पावै नहीं । सन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलिया ७ नारकी में पावै छः ६ ।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

तेरमूं दृष्टि द्वार ।

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ सममिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय ।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक ताई देवता, गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यञ्च में दृष्टि तीनूं ही होय । ५ थावर में, असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावै । ६ ग्रैवेक का देवता में, ३ चिकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में, दृष्टि २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावै ५ अनुत्तर बिमान का देवता, सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावै ।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

चौदमूं दर्शन द्वार ।

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३, और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा ।

७ नारकी, सर्व देवता में गर्भेज तिर्यञ्च में दर्शन चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३ । गर्भेज मनुष्यां में दर्शन

४ हीय, ५ थावर बैइन्द्री, तेइन्द्री में, दर्शन १ अचक्षु पावै । चौइन्द्री छमुछिम तिर्यच, मनुष्य, सर्व युगलियां में दर्शन २—चक्षु १, अचक्षु २ सिद्धां में १ केवल दर्शन ही पावै ।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

पंदरमूं ज्ञान द्वार ।

ज्ञान ५—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मन पर्यंत ४, केवल ज्ञान एवं ५ ।

७ नारकी, सर्व देवता, गर्भेज तिर्यच में ज्ञान ३ पावै पहला । गर्भेज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै । ५ थावर असत्री मनुष्य, ५६ अन्तर द्वीप का युगलियां में ज्ञान नहीं पावै । ३ विकलेन्द्री, असत्री पंचेन्द्री तिर्यच में ३० अकर्म भूमिका युगलियां में ज्ञान २ पावै, मति, श्रुति । सिद्धां में १ केवल ज्ञान ही पावै ।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

सोलमूं अज्ञान द्वार ।

अज्ञान ३—मति अज्ञान १, श्रुति अज्ञान १, विभङ्ग अज्ञान एवं ३ ।

७ नारकी, ६ ग्रैवेक ताई का देवता गर्भेज तिर्यच, गर्भेज मनुष्यां में अज्ञान ३ ही पावै । ५ थावर, ३

विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यच पंचेन्द्री, सर्व युगलियां में अज्ञान २ ही पावै मति अज्ञान १, श्रुत अज्ञान २, ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धां में अज्ञान पावै नहीं ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

स्तरम् योग द्वार ।

योग १५-मन का ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचन का जोग ४—सत्य वचन १, असत्य वचन २, मिश्र वचन ३, व्यवहार वचन एवं ४ । काया का जोग ७—औदारिक १ औदारिक को मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय को मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिक को मिश्र ६ कर्मण ७, एवं १५ ।

७ नारकी सर्व देवता में जोग पावै ११ मन का ४, वचन का ४, वैक्रिय ६ वैक्रिय को मिश्र १० कर्मण ११ सर्व युगलियां में योग पावै ११ मन का ४, वचन का ४, औदारिक ६, औदारिक को मिश्र १० कर्मण ११। वायुकाय बरजीने, ४ स्थावर, असन्नी मनुष्य में योग ३ औदारिक औदारिक को मिश्र कर्मण । तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यच पंचेन्द्री, में पावे ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कर्मण ४ । वायुकाय में योग पावै ५—औदारिक

१, औदारिक मिश्र २, बैक्रे ३, बैक्रे मिश्र ४, कार्मण
 ५, गर्भेज तिर्यञ्च, मनुष्यणी में योग पावै १३
 आहारिक आहारिक को मिश्र टल्यो, गर्भेज मनुष्यों
 में पावे १५ ही, चौदमे गुणठाणें अजोगी होय ।
 सिद्धा में जोग पावे नहीं ।

॥ इति योग द्वारम् ॥

अठारहें उपयोग द्वार ।

७ नारकी, ६ नव ग्रैवेक ताई का देवता, गर्भेज
 तिर्यञ्च में उपयोग पावे ६ ज्ञान तो ३ मति श्रुति
 अवधि । अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुति अज्ञान विभंग
 अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि ।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा
 अचक्षु दर्शन ।

असन्नी मनुष्य, तथा ५६, अन्तरदीप का युग-
 लिया में उपयोग पावै ४ मति श्रुति अज्ञान तथा
 चक्षु अचक्षु दर्शन ।

वेइन्द्री तेइन्द्री में उपयोग पावै ५—मति श्रुति
 ज्ञान २, मति श्रुति अज्ञान २, तथा अचक्षु दर्शन ।

चौरिन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, ३० अकर्म भूमि
 का युगलिया में, उपयोग पावै ६—मति श्रुति ज्ञान ३

अज्ञान २, चक्षु, अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर
में पावै ६ तीन ज्ञान, तीन दर्शन ।

गर्भेज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धां में उपयोग
पावै २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १ ।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

उगणसिद्धं आहार द्वार ।

उन्नीस दंडक का जीव तो छह ही दिशा को
आहार लेवै ।

पांच वावर तीन चार पांच छव दिशि को आहार
लेवै ।

केतला मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध भगवंत
आहार लेवै नहीं ।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

बीसमूं उत्पत्ति द्वार ।

७ नारकी, आठवां देवलोक ताई का देवता, तेउ,
वाउ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व
युगलियां में उत्पत्ति पावै गति २ की, मनुष्य तिर्यञ्च ।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध ताई का देवता में
उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गति की ।

पृथ्वी अप्स वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावै ३ गति की (नारकी टली)

गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च में उत्पत्ति चारुं ही गति की ।

सिद्धां में १ मनुष्य गति की ।

॥ इति उत्पत्ति द्वारम् ॥

इकबीसमूं स्थिति द्वार ।

नारकी की स्थिति ।

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागर की ।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टी ३ सागर की ।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर की उत्कृष्टी सात ७ सागर की ।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्कृष्टी १० सागर की ।

५ पांचमीकी जघन्य १० उत्कृष्टी १७ सागर की ।

६ छठी नारकी की जघन्य १७ उत्कृष्टी २२ सागर की ।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२ उत्कृष्टी ३३ ।

भवन पति देवता की स्थिति—

दक्षिण दिशि का असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर की, यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्योपम की ।

दक्षिण दिशि का ६ नो निकाय का देवता की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्या की जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥ पौण पल्योपम की ।

उत्तर दिशि का असुर कुमारों की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साडा च्योर पल्योपम की ।

उत्तर दिशि का ६ निकाय का देवता की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणीं दोय पल्योपम की, देव्या की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणीं १ पल्योपम की ।

चानव्यन्तर देवता की स्थिति ।

जघन्य १० हजार वर्ष की उ० १ पल्योपम की, यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उ०

॥ आधा पल्योपम की, त्रिभूमका देवां की भी इतनी ही।

जोतषी देवां की स्थिति ।

चन्द्रमां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी आधा पल्य ५० हजार वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्टी ॥ आधी पल्य पांच सौ वर्ष अधिक । ग्रहां की जघन्य पाव पल्य की उ० १ पल्य की, यांकी देव्यां की ज० पाव पल्य, उत्कृष्टी ॥ आधी पल्योपम की ।

नक्षत्रां की ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्य की, यांकी देव्यां की ज० पाव पल्य, उ० पाव पल्य जाझेरी ।

तारां की ज० पल्य को आठमू' भाग उ० पाव पल्य की, यांकी देव्यां की ज० अधपाव पल्य उ० अधपाव पल्य जाझेरी ।

वैमानिक देवतां की स्थिति ।

१ पहला देवलोक में जघन्य १ पल्योपम उत्कृष्टी

- २ सागर की, यांकी परिग्रह देव्यां की ज० १ पत्थ उ० ७ पत्थ, अपरिग्रह देव्यां की ज० १ पत्थ उ० ५० पत्थोपम की ।
- २ दूसरा देवलोक में ज० १ पत्थ जाभेरी उ० २ सागर जाभेरी, यांकी देव्यां की जघन्य १ पत्थ जाभेरी उ० परिग्रही की ६ पत्थ की, अपरिग्रही की ५५ पत्थोपम की ।
- ३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागर की ।
- ४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाभेरी उ० ७ सागर जाभेरी ।
- ५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की ।
- ६ छठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।
- ७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।
- ८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।
- ९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की ।
- १० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की ।
- ११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की ।
- १२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की ।
- १३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।
- १४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की जघन्य २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की जघन्य २५ उ० २६ ।

१७ पांचमां ग्रैवेयक की जघन्य २६ उ० २७ ।

१८ छठा ग्रैवेयक की जघन्य २७ उ० २८ ।

१९ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमां ग्रैवेयक की जघन्य २९ उ० ३० ।

२१ नवमां ग्रैवेयक की जघन्य ३० उ० ३१ ।

२२ विजय १, विजयन्त २, जयन्त ३ ।

अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमान की जघन्य
३१ उत्कृष्टी ३३ सागर ।

२३ सरवार्थ सिद्धिका देवां की जघन्य ३३ उत्कृष्टी
३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवतां की स्थिति ८ सागर की,
पहिला किल्बिषी की ३ पत्न्य, दूजा की ३ सागर,
तीजा की १३ सागर की ।

पांच स्थावर की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की
उत्कृष्टी पृथ्वीकाय की २२ हजार वर्ष की, अप्यकाय
की ७ हजार वर्ष की, तेउकाय की ३ दिन रात की
वायु काय की ३ हजार वर्ष की वनस्पति काय की
१० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की

उत्कृष्टी बेइन्द्री की १२ वर्ष की, तेइन्द्री की ४६ दिन रात की, चौइन्द्री की ६ महीना की। तिर्यश्च पंचेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी जलचर की १ कोड़ पूर्व की, थलचर सन्नी की ३ पल्योपम की, असन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ५३ हजार वर्ष की, भुजपर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नी की पल्योपम के असंख्यातमं भाग, असन्नी की ७२ हजार वर्ष की। असन्नी मनुष्य की ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त की।

सन्नी मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त्त की उ० ५ भरत, ऐरभरत का मनुष्या की अवसर्पिणी के पहिलो आरो लागतां ३ पल्य की, उतरतां २ पल्य की, दूसरो लागतां २ पल्य की, उतरतां १ पल्य की, तीसरो लागतां १ पल्य की, उतरतां कोड़ पूर्वकी, चौथो आरो लागतां कोड़ पूर्व की उतरतां १२५ वर्ष की, पांचमूं लागतां १२५ वर्ष की, उतरतां २० वर्ष की, छटो लागतां २० वर्ष की, उतरतां १६ वर्ष की। उतसर्पिणी काल में इमहिज चढ़ती, कहणी पांच महाविदेह खेत्रां की १ कोड़ पूर्व की उत्कृष्टी स्थिति।

युगलियां की स्थिति:—

५ हेमवय, ५ अरुणवयकां की ज० देश ऊणी १

पत्य उ० १ पत्य की ।

५ हरिवास, ५ रम्यकवासकां की ज० देशऊणी २

पत्य उ० २ पत्य की ।

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरुकां की ज० देशऊणी ३

पत्य उ० ३ पत्य की ।

५६ अन्तर द्वीपकां की पत्योपम को असंख्यातमूं
भाग की ।

एक एक सिद्धां की आदि नहीं अन्त नहीं, एक
एक की आदि छै पण अन्त नहीं ।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

॥ २२ मूं समोह्या असमोह्या द्वार ॥

समोह्या तो समुद्रात फोडी ताणाबेजो करी मरै,
असमोह्या बिनां समुद्राते गोलीका भड़ाका वत् मरै ।

२४ दण्डकां का जीव दोनूं प्रकारका मरण करै ।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

॥ २३ मूं चवन द्वार ॥

६ नारकी, आठमां देवलोक ताई का देवता, पृथ्वी
अप्प वनस्पति काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी, मनुष्य,
में चवन दो गति की मनुष्य तिर्यञ्च ।

नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्ध ताई का देवतां में चवन १ मनुष्य की, सातमी नारकीमें तथा तेउ बाउ में चवन १ तिर्यच गति की ही ।

गर्भेज मनुष्य तिर्यच, असन्नी तिर्यच पंचेन्द्री में चवन व्याखं ही गति की, युगलियां में चवन १ देव गति की । सिद्धां में चवन पावै नहीं ।

॥ इति चवन द्वायम् ॥

॥ २४ मूं गतागति द्वार ॥

पहिली से छठी नारकी ताई गति २ दण्डक, आगति २ दण्डकां की मनुष्य, तिर्यच पंचेन्द्री ।

सातमीं नारकी में आगति २ दण्डकां की, गति तिर्यच पंचेन्द्री की, गत जाणवी ।

भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव लोक तथा पहिला किलिषी देवतां की, आगत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यच की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यच मनुष्य पृथ्वी अप्य वनस्पति की)

तीजा देवलोकसे आठमां देवलोक ताई गता गत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यच) नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्धि ताई गतागत १ मनुष्य की ।

पृथ्वी अप्य वनस्पति काय की आगत २३ दण्डकां की (नारकी टली) गति १०—दण्डकां की ५

स्थावर, ३ बिकलेन्द्री ८, मनुष्य ६, तिर्यञ्च एवं १० की।

तेज वायुकाय में आगत १० दण्डकां की, गति ६ दण्डकां की, मनुष्य दृश्यो, ३ बिकलेन्द्रीमें १० की आगत १० की गति ऊपर वत् ।

असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रीमें आगति १० दण्डकांकी ऊपर वत् गति २२ दण्डकां की जोतिषी वैमानिक दृश्यो ।

सन्ना तिर्यञ्च पंचेन्द्री में आगति २४ की गति २४ की ।

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डकां की, पृथ्वी अप्य वनस्पति तीन बिकलेन्द्री मनुष्य तिर्यञ्च एवं ८, अनें गति १० दण्डकां की पूर्ववत् ।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दण्डकां की तेज वाज दृश्यो, गति २४ दण्डकां की, ३० अकर्म भूमि का युगलियां में आगति २ दण्डकां की मनुष्य तिर्यञ्च गति १३ दण्डकां की १० तो भवनपतिका वानव्यन्तर ११ जोतिषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अन्तर द्वीप का युगलियां में आगति २ दण्डकां की ऊपरवत् गति ११ दण्डकां की १० तो भवनपति का १ वानव्यन्तर को ११ ।

सिद्धां में आगति मनुष्य की गति नहीं ।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

॥ २५ मूँ प्राण द्वार ॥

७ नारकी सर्व देवता गभेंज मनुष्य तिर्यश्च सर्व युगलिया में प्राण १० दशू ही पावै, ५ स्थावर में प्राण ४ पावै, स्पर्श इन्द्री बल १, काय २, श्वाशोश्वाश ३, आऊषो ४ एवं ।

बेइन्द्री में पावै ६, तेइन्द्री में पावै ७, चौइन्द्री में पावै ८ प्राण ।

असत्री मनुष्य में पावै ७॥ श्वाश लेवै तो उश्वाश नहीं असत्री तिर्यश्च पंचेन्द्री में पावै ६ मन टल्यो ।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियां का टल्या ।

१४ में गुणठाणे पावै १ आऊषो बलप्राण, सिद्धां में प्राण पावै नहीं ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

॥ २६ मूँ योग द्वार ॥

नारकी देवता मनुष्य सत्री तिर्यश्च युगलियां में योग पावै ३ मन वचन काय का ।

पांच स्थावर असत्री मनुष्य में १ काय को पावै ।

तीन बिकलेन्द्री असत्री पंचेन्द्री में योग पावै २ वचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय, सिद्धांमें योग पावै नहीं ।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥

॥ पच्चीस बोल की चरचा ॥

१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे ।

२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में—मनुष्य,
तिर्यञ्च ।

३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में
(देवता दृश्यो) ।

४ चार गति किण में पावे ? समचै जीव में ।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में ।

२ दोय जात किण में पावे ? बैक्रिय शरीर में—
एकेन्द्री, वंचेन्द्री ।

३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री
में ।

४ चार जात किण में पावे ? त्रसकाय में
(एकेन्द्री दृष्टी) ।

५ पांच जात किण में पावे ? समचै जीव में ।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में—त्रसकाय ।

१ दोय काय किण में पावे ? बैक्रिय शरीर में—
वायुकाय, त्रसकाय ।

३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या एकेन्द्री
में—पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ।

४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे
(तेउ, वाउ, टली) ।

५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे
(त्रस टली) ।

६ छव काय किण में पावे ? समचै जीव में ।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—स्पर्श ।

२ दोय इन्द्री किण में पावे ? लट, गिंडोला
में—रस, स्पर्श ।

३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी, मक्कोड़ा
में—घ्राण, रस, स्पर्श ।

४ चार इन्द्री किण में पावे ? माखी, मच्छर में
(श्रुत-इन्द्री टली) ।

५ पांच इन्द्री किण में पावे समचै जीव में ।

५ पांचवें बोले पर्याय छव ६—

१ एक पर्याय किण में पावे ? शरीर पर्यायरे
अलधिया में—आहारपर्याय ।

- २ दो पर्याय किण में पावे ? इन्द्री पर्यायरे अल-
धिया में—आहार, शरीर ।
- ३ तीन पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता
में—आहार, शरीर, इन्द्री ।
- ४ चार पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री में (मन,
भाषा टली) ।
- ५ पांच पर्याय किण में पावे ? माखी में पावे
(मन पर्याय टली) ।
- ६ छव पर्याय किण में पावे ? समचै जीव में ।
- ६ छठे बोले प्राण दश १०—
 - १ एक प्राण किण में पावे ? चउदमें गुणस्थान
में—आयुष बल प्राण ।
 - २ दोय प्राण किण में पावे ? बाटे बहता जीवमें—
काया, आयुष ।
 - ३ तीन प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता
में—स्पर्श, काया, आयुष ।
 - ४ चार प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री में—स्पर्श,
काया, श्वाशोश्वाश, आयुष ।
 - ५ पांच प्राण किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान
में (पांच इन्द्रियां का टल्या) ।
 - ६ छव प्राण किण में पावे ? बेइन्द्री में—

रस, स्पर्श, वचन, काया श्वाशोश्वाश,
आयुष ।

७ सात प्राण किण में पावे ? तेइन्द्री में (श्रुत
चक्षु, मनं दलया) ।

८ आठ प्राण किण में पावे ? चौइन्द्री में (श्रुत,
मन दलया) ।

९ नव प्राण किण में पावे ? असन्नी पंचेन्द्री में
(मनं दल्यो) ।

१० दश प्राण किण में पावे ? समचै जीव में ।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे ? एक शरीर किण
ही में नहीं पावे ।

२ दोय शरीर किण में पावे ? बाटे बहता जीव
में—तेजस, कर्मण ।

३ तीन शरीर किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—
औदारिक, तेजस, कर्मण ।

४ चार शरीर किण में पावे ? वायुकाय में
(आहारिक दल्यो) ।

५ पांच शरीर किण में पावे ? समचै जीव
में ।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

- १ एक योग किण में पावे ? दीसता धान के दाणा में—औदारिक ।
- २ दोय योग किण में पावे ? उड़ती माखी में—
औदारिक, व्यवहार भाषा ।
- ३ तीन योग किण में पावे ? तेउकाय में—
औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण ।
- ४ चार योग किणमें पावे ? बेइन्द्री में—
औदारिक औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण ।
- ५ पांच योग किण में पावे ? वायुकाय में—
औदारिक, औदारिक मिश्र, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र, कार्मण ।
- ६ छव योग किण में पावे ? असत्ती में—औदारिक
औदारिक मिश्र, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण ।
- ७ सात योग किण में पावे ? केवल्यों में—
सत्यमन, व्यवहार मन, सत्यभाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण ।
- ८ आठ योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थान में—नियमा ४ मन, ४ वचन की ।

- ६ नव योग किण में पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र में—४ मन का, ४ वचन का, १ औदारिक ।
- १० दश योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थानमें—
४ मन का, ४ वचन का, औदारिक, बैक्रिय ।
- ११ इग्यारह योग किण में पावे ? नारकी में—४ मन का, ४ वचन का, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र कर्मण ।
- १२ बारह योग किण में पावे ? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कर्मण दृष्ट्यो) ।
- १३ तेरह योग किण में पावे ? तिर्यच में (आहारिक, आहारिक मिश्र, दृष्ट्या) ।
- १४ चउदह योग किण में पावे ? मन योगी में (कर्मण दृष्ट्यो) ।
- १५ पन्द्रह योग किण में पावे ? समचै जीव में ।
- ६ नवमें बोले उपयोग बारह १२—
- १ एक उपयोग किण में पावे ? बाटे बहता सिद्धां में—केवल ज्ञान ।
- २ दोय उपयोग किण में पावे ? सिद्धां में—केवल ज्ञान, केवल दर्शन ।

- ३ तीन उपयोग किण में पावे ? एकेन्द्री में—
मति, श्रुति, अज्ञान, अचक्षु दर्शन ।
- ४ चार उपयोग किण में पावे ? दशवें गुणस्थान
में—४ ज्ञान (केवल बरजीने) ।
- ५ पांच उपयोग किण में पावे ? बेइन्द्री में—
मति, श्रुति, ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान,
अचक्षु दर्शन ।
- ६ छव उपयोग किण में पावे ? मिथ्याती में—
—३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल बरजीने) ।
- ७ सात उपयोग किण में पावे ? छट्टे गुणस्थान
में—केवल बरजी ने ४ ज्ञान ३ दर्शन ।
- ८ आठ उपयोग किण में पावे ? अचर्म में—
३ अज्ञान, ४ दर्शन, केवल ज्ञान ।
- ९ नव उपयोग किण में पावे ? देवता में (मन-
पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या) ।
- १० दश उपयोग किण में पावे ? स्त्रीवेद में
(केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या) ।
- ११ द्वादश उपयोग किण में पावे ? अभाषक
में (मन पर्यव टल्यो) ।
- १२ बारह उपयोग किण में पावे ? समचै जीव
में ।

१० दशवे' बोले कर्म आठ द--

१, २, ३ कर्म किणमे' पावे ? किण ही मे' नहीं।

४ चार कर्म किण मे' पावे ? केवल्यां मे'--

बेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र ।

५, ६ कर्म किण मे' पावे ? किण ही में नहीं पावे ।

७ कर्म किण में पावे ? बारवे' गुणस्थान में
(मोहनी टल्यो) ।

द कर्म किण में पावे ? समचै जीव में ।

११ इग्यारवे' बोले गुणस्थान चउदह १४--

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री मे'
—पहलो ।

२ दोय गुणस्थान किण मे' पावे ? बेइन्द्री मे'—
पहलो, दूजो ।

३ तीन गुणस्थान किण मे' पावे ? अपर्याप्ता मे'
—१, २, ४ ।

४ चार गुणस्थान किण मे' पावे ? देवता मे'—
४ प्रथम ।

५ पांच गुणस्थान किण मे' पावे ? तिर्यञ्च सन्नी
पंचेन्द्री मे'— ५ प्रथम ।

६ छव गुणस्थान किण मे' पावे ? कृष्ण लेश्या
मे' ६ प्रथम ।

(१४६)

७ सात गुणस्थान किण में पावे ? तेजू लेश्या में सात प्रथम ।

८ आठ गुणस्थान किण में पावे ? अप्रमादी में —आठ छेहला ।

९ नव गुणस्थान किण में पावे ? स्त्रीवेद में — नव प्रथम ।

१० दश गुणस्थान किण में पावे ? लोभ कषाय में —दश प्रथम ।

११ इग्यारह गुणस्थान किण में पावे ? चक्षु दर्शन में (१०, १३, १४ टल्या) ।

१२ गुणस्थान किण में पावे ? सम्यक्ती में — (१, ३ टल्या) ।

१३ तेरह गुणस्थान किण में पावे ? संयोगी में (चउदमों टल्यो) ।

१४ चउदह गुणस्थान किण में पावे ? समचै जीव में ।

१२ बारहवे बोले पांच इन्द्री की २३ विषय—

८ विषय एकेन्द्री में—८ स्पर्श इन्द्री की ।

१३ विषय बेइन्द्री में—५ रस, ८ स्पर्श इन्द्रीकी ।

१५ विषय तेइन्द्री में—२ घ्राण, ५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री की ।

२० विषय चौइन्द्री में—(श्रुत इन्द्री की तीन टली) ।

२३ विषय पंचेन्द्री में ।

१३ तेरहवें बोले १० प्रकार की मिथ्यात किण में पावे ? मिथ्याती में पावे ।

१४ चउदहवें बोले नवतत्त्व ना ११५ भेद तिणमें जीवना १४—

१ एक भेद किण में पावे ? केवल ज्ञानी में पावे चउदमों ।

२ दोय भेद किण में पावे ? देवतां में पावे —१३, १४ ।

३ तीन भेद किण में पावे ? मनुष्य में पावे —११, १३, १४ ।

४ चार भेद किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे —४ प्रथम ।

५ पांच भेद किण में पावे ? भाषक में पावे— ६, ८, १०, १२, १४ ।

६ छव भेद किण में पावे ? सम्यक्ती में पावे —५, ७, ९, ११, १३, १४ ।

७ सात भेद किण में पावे ? पर्यासा में पावे— ७ पर्यासा का ।

८ आठ भेद किण में पावे ? अणाहारिक में पावे—७ अपर्याप्ता, १ चउदमों ।

९ नव भेद किण में पावे ? औदारिक मिश्र में पावे—(२, ६, ८, १०, १२ टल्या)

१० दश भेद किण में पावे ? त्रसकाय में पावे (एकेन्द्री का ४ टल्या) ।

११ इग्यारह भेद किण में पावे ? कोरा तिर्यचरे भेदां में (११, १३, १४ टल्या) ।

१२ बारह भेद किण में पावे ? असन्नी में पावे (१३, १४ टल्या) ।

१३ तेरह भेद किण में पावे ? कोरा असंयती में पावे—(चउदमों टल्यो) ।

१४ चउदह भेद किण में पावे ? समचै जीव में ।

१५ पन्द्रवे बोलै आत्मा आठ ८—

१ एक आत्मा किण में पावे ? द्रव्य जीव में पावे—द्रव्य आत्मा ।

२ दोय आत्मा किण में पावे ? उपशम भाव में पावे—दर्शन चारित्र ।

३ तीन आत्मा किण में पावे ? उदय भाव में पावे—कषाय, योग दर्शन ।

४ चार आत्मा किण में पावे ? सिद्धां में पावे—
द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन ।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे
(द्रव्य, कषाय, चारित्र, टली) ।

६ छव आत्मा किण में पावे ? मिथ्याती में पावे
(ज्ञान, चारित्र, टली) ।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे
(चारित्र टली) ।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे ।

१६ सोलहवें बोले दण्डक चौबीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे सात नारकी में पावे
१ प्रथम ।

२ दोय दण्डक किण में पावे ? श्रावक में पावे—
२०, २१,

३ तीन दण्डक किण में पावे ? शुक्ल लेश्या में
पावे—२०, २१, २४,

४ चार दण्डक किण में पावे ? तिर्यच त्रसकाय
में पावे—१७, १८, १९, २०,

५ पांच दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे—
१२, १३, १४, १५, १६,

- ६ छव दण्डक किण में पावे ? असकाय नपुंसक
में पावे—१, १७, १८, १९, २०, २१,
- ७ सात दण्डक किण में पावे कोरा अचक्षु दर्शन
में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८,
- ८ आठ दण्डक किण में पावे ? कोरा असत्री में
पावे--१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९
- ९ नव दण्डक किण में पावे ? तिर्यञ्च में पावे--
१२ से २० ताई ।
- १० दश दण्डक किण में पावे ? असत्री में पावे--
१२ से २१ ताई ।
- ११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंसक वेद
में पावे (१३ देवता का टल्या) ।
- १२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ बिना सत्री
कृष्ण लेश्या में पावे-१ से ११ ताई तथा
बाईसमों ।
- १३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवतां में
पावे--२ से ११ ताई, २२, २३, २४,
- १४ चउदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सत्री में
पावे--१३ देवतांरा १ नारकी रो ।
- १५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्रीवेद में पावे--
१३ देवतांरा, २०, २१,

- १६ सोलह दण्डक किण में पावे ? सन्नी में पावे
(५ थावर, ३ विकलेन्द्री टल्या) ।
- १७ सतरह दण्डक किण में पावे ? चक्षु दर्शन में
पावे (५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)
- १८ अठारह दण्डक किण में पावे ? तेजू लेश्या में
पावे (३ विकलेन्द्री, नारकी, तेउ, वाउ
का टल्या) ।
- १९ उगणीस दण्डक किण में पावे ? सम्यक्ती में
पावे (५ थावर का टल्या) ।
- २० बीस दण्डक किण में पावे ? अढाई द्वीप
बारे नीचा लोक में (२१, २२, २३, २४,
टल्या)
- २१ इक्कीस दण्डक किण में पावे ? नीचा लोक
में पावे (२२, २३, २४ टल्या) ।
- २२ बाईस दण्डक किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में
पावे (२३, २४ टल्या) ।
- २३ तेईस दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री की
आगत में (नारकी रो एक दण्डक पहलो
टल्यो) ।
- २४ चौबीस दण्डक किण में पावे ? अन्ननी में
पावे ।

१७ सतरहवें बोले लेश्या छव—

१ एक लेश्या किण पावे ? तेरहवें गुणस्थान में
पावे—१ शुक्ल ।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तीजी नारकी में
पावे—कापोत, नील ।

३ तीन लेश्या किण में पावे ? तेउकाय में पावे—
कृष्ण, नील, कापोत ।

४ चार लेश्या किण में पावे ? पृथ्वी काय में
पावे (पद्म, शुक्ल टली) ।

५ पांच लेश्या किण में पावे ? सन्यासी री गत
देवता में पावे (शुक्ल टली) ।

६ छव लेश्या किण में पावे ? समचै जीव में ।

१८ अठारवें बोले दृष्टि तीन ३—

१ एक दृष्टि किण में पावे ? चौथे गुणस्थान में
पावे सम्यक दृष्टि ।

२ दोय दृष्टि किण में पावे ? बेइन्द्री में पावे—
सम्यक, मिथ्या ।

३ तीन दृष्टि किण में पावे ? समचै जीव में ।

१९ उगणीशसवें बोले ध्यान चार ४—

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवल्यां में पावे—
१ शुक्ल ।

(१५३)

२ दोयं ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान में पावे—धर्म, शुक्ल ।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? आवक में पावे (शुक्ल दृश्यो) ।

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचै जीव में ।

२० बीसवें बोले ६ द्रव्य रा ३० बोल ।

१ एक द्रव्य अलोकमें पावे—आकाशास्तिकाय ।

६ छव द्रव्य लोक में पावे ।

२१ इकवीसवें बोले रास दोय २—

१ एक रास किणमें पावे ? जीवमें पावे—१ जीव रास ।

२ दोय रास किण में पावे ? लोक में पाव ।

२२ बाईसवें बोले आवकरा १२ व्रत—ते आवकमें पावे ।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना पांच महाव्रत—साधुजी में पावे ।

२४ चौवीसवें बोले भांगा ४६—आवक में पावे ।

२५ पच्चीसवें बोले चारित्र पांच ५—

१ एक चारित्र किण में पावे ? केवल्यामें पावे—यथाख्यात ।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय ।

३ तीन चारित्र किण में पावे ? छठे गुणस्थान में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय, परिहार विशुद्ध ।

४ चारित्र किण में पावे ? लोभकषाय में पावे (१ यथाख्यात दल्यो) ।

५ पांच चारित्र किण में पावे ? साधु में पावे ।

॥ अथ बावन बोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोलै द आत्मा में कर्मारी करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शण । रोकता २ दोय आत्मा—दर्शण, चारित्र । तोड़ता एक जोग आत्मा ।

२ दूजै बोलै द आत्मा में द्रव्य जीव केती ? भावजीव केती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा ।

७ भाव जीव सात आत्मा ।

३ तीजै बोलै आठ आत्मा में उदय भाव केती ? यावत परिणामिक भाव केती आत्मा ?

- ३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग, दर्शन ।
 २ उपशम भाव दोय—दर्शन, चरित्र ।
 ६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य, कषाय टली
 ८ परिणामिक भाव आठ आत्मा ।
 ४ चौथे बोलै आठ आत्मा में शाश्वती केती ?
 अशाश्वती केती ?
 १ शाश्वती तो एक द्रव्य आत्मा ।
 ७ अशाश्वती सात आत्मा ।
 ५ पांच में बोलै आठ आत्मा में सावद्य केती ?
 निर्वद्य केती ?
 १ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं,
 १ कषाय आत्मा सावद्य छै ।
 २ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।
 ४ ज्ञान, चरित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा
 निर्वद्य छै ।
 ६ छठै बोलै आठ आत्मा में जाणे किसी ? देखै
 किसी ? सरधै किसी आत्मा ?
 जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखै उपयोग
 आत्मा, सरधै दर्शन आत्मा, कला जाणै उपयोग
 आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोकै चारित्र आत्मा,
 तोड़ै जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा की ।

७ सात में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोलों में
सावद्य केता ? निर्वद्य केता ?

१६ सोलै बोल तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, ते
कहै छै च्यार गति ४, छव काय १०, असनी
११, अन्नाणी १२, संसारता १३, असिद्ध
१४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६ ।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै ।

१२ वारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार
कषाय ७ तीन वेद १०, मिथ्याती ११,
अब्रती १२ ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य
दोनूं ही छै ।

८ आठ में बोलै जीव पदार्थ किसे भाव ? यावत
मोक्ष पदार्थ किसे भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पांचो ही पावै ।

४ अजीव, पुन्य, पाप बन्ध ए च्यार पदार्थ भाव
१ एक परिणामिक ।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय, परिणामिक ।

१ संबर पदार्थ भाव च्यार उदय बरजी ने ।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम,
परिणामिक ।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

६ नव में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोल किसे किसे, कर्म के उदय से तथा किसी आत्मा ?

१३ तेरा बोल तो नाम कर्म के उदय से, तिणमें च्यार गति ४, छव काय १०, तीन भली लेश्या १३ ।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय ४, तीन वेद ७, तीन माठी लेश्या १०, मिथ्याती ११, अब्रती १२, एवं

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म के उदय से—
असन्नी अन्नाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्म ना उदय से ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म के उदय से ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म के उदय से, हिवे आत्मा कहै छै ।

१७ सतरे बोल तो अनेरी आत्मा —

च्यार गति ४, छव काय १०, अब्रती ११,

असन्नी १२, अन्नाणी १३, संसारता १४,
असिद्ध १५, अकेवली १६, छद्मस्थ १७ ।

८ आठ बोल जोग आत्मा —

छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८ ।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा ।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै ।

१ मित्थ्याती दर्शन आत्मा ।

१० दश में बोलै जीव ने जीव जाणै यावत मोक्ष ने
मोक्ष जाणै ते किसे भाव ? क्षायक, क्षयोपशम,
परिणामिक, ए तीन भाव ।

११ इग्यार में बोलै जीव ने जीव जाणै, यावत मोक्ष
ने मोक्ष जाणै, ते किसी आत्मा ? उपयाग अने
ज्ञान आत्मा ।

१२ बारमें बोलै जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत मोक्ष
पदार्थ केती आत्मा ? जीव में आत्मा पावै आठों
ही अजीव, पुन्य, पाप, बंध, आत्मा नहीं । आस्रव
३ (तीन) आत्मा-कषाय जोग दर्शन । संबर २
(दोय) आत्मा-दर्शन तथा चारित्र । निर्जरा ५
(पांच) आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र टली । मोक्ष
पदार्थ अनेरी आत्मा ।

१३ तेरमें बोलै छव में नव में कोण ? उदय छव में

कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

उपशम छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।

क्षायक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव पुन्य, पाप, बन्ध ।

क्षयोपशम छव में कोण, नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध ।

परिणामिक छव में कोण, नव में कोण ?—छव में छव, नव में नव ।

१४ चौदमें बोलै उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छव में नव में कोण—

उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव । उपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, संबर । क्षायक निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण—छवमें जीव, नव में ४ जीव, संबर, निर्जरा मोक्ष । क्षयोपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण—छव में जीव, नव में ३ जीव, संबर, निर्जरा ।

परिणामिक निपन्न छव में कोण ? नवमें कोण ?—

छव में छव, नव में नव ।

१५ पंदरमें बोलै आठ कर्म नों उदय, छव में, नव में कोण ? ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म नों उदय तो छवमें पुद्गल, नव में तीन,—अजीव, पाप, बंध ।

बेदनी, नाम, गोत, आयु, ए च्यार कर्म नों उदय छव में पुद्गल, नव में च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

१६ सोलमें बोलै मोहनीय कर्म नों उपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन, अजीव, पाप, बन्ध । बाकी सात कर्म नों उपशम होवै नहीं ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय, ए च्यार कर्मनो क्षायक, छवमें कोण नवमें कोण ?—

छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।

बेदनी नाम गोत ए तीन कर्म नों क्षायक, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

आयुष को क्षायक छव में कोण ?—नव में कोण ?

छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पुन्य, बन्ध ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय
ए चार कर्म नो क्षयोपशम, छव में कोण ?
नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—
अजीव, पाप, बन्ध । बाकी चार कर्म रो क्षयो-
पशम, होवे नहीं ।

१७ सतरमें बोलै आठ कर्म ना निपन्न नीं विगत ।
छव कर्म नों उदय निपन्न, छव में कोण ? नव में
कोण ?—छव में जीव, नव में जीव ।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उदय निपन्न,
छव में जीव नव में जीव, आस्रव ।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे, नहीं,
एक मोहनीय कर्म नों उपशम निपन्न होवे, ते
छव में जीव, नव में जीव, संबर ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन
कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव
निर्जरा । एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निपन्न
छव में जीव, नव में जीव, संबर निर्जरा ।

बाकी चार अघातिक कर्म को छव में जीव,
नव में जीव, मोक्ष । चार अघातिक कर्म रो
तो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं । ज्ञानावरणी
दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयो-

પશમ નિપત્ત તો છવ મેં જીવ, નવ મેં જીવ,
નિર્જરા । મોહનીય કર્મ કો ક્ષયોપશમ નિપત્ત
છવ મેં જીવ, નવ મેં જીવ, સંબર, નિર્જરા ।

૧૮ અઠાર મેં બોલૈ આઠ કર્મ નોં બન્ધ આદિસત્તા કિસે
કિસે ગુણ ઠાળૈ—

જ્ઞાનાવરણી, દર્શનાવરણી, અન્તરાય, નામ, ગોત્ર
૫ પાંચ કર્મ નોં બન્ધ પહિલા ગુણ ઠાળાં સે દશમાં
ગુણ ઠાળાં તાંઈ ।

મોહનીય કર્મ નોં બન્ધ પહિલા ગુણ ઠાળાં સે
નવમાં ગુણ ઠાળાં તાંઈ ।

આર્યુ કર્મ નોં બન્ધ પહિલા ગુણ ઠાળાંસે સાતમાં
તાંઈ । તીજો ગુણ ઠાળોં ટાલી ।

વેદની કર્મ નોં બંધ તેરમાં ગુણ ઠાળાં તાંઈ
જ્ઞાનાવરણી, દર્શનાવરણી, અન્તરાય, ૫ ત્રીન
કર્મ નોં ઉદય અને ઉદય નિપત્તની સત્તા ચારમાં
ગુણ ઠાળાં તાંઈ ।

વેદની, નામ, ગોત્ર, આયુષ, ૫ ચ્યાર કર્મ નોં ઉદય
અને ઉદય નિપત્તની સત્તા ચૌદમાં ગુણઠાળાં તાંઈ ।

મોહનીય કર્મ નોં ઉદય નિપત્ત પહિલા ગુણ ઠાળાં
૧૬ દશમાં ગુણઠાળાં તાંઈ । અને સત્તા ઇગ્યારમાં
ગુણ ઠાળાં તાંઈ ।

१६ उगणीस में बोलै चौदे गुणठाणां को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न कहै छै, ज्ञाना-बरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय ए' तीन कर्म नों उदय निपन्न तो पहिला से बारमां ताई ।

दर्शन मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से सातमा ताई ।

चारित्र मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से दशमा ताई ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्म नों उदय निपन्न पहिला से चौदमा ताई ।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों होय तिण में दर्शन मोहनीय नों उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमा ताई । चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणै हीं । ज्ञानाबरणी, दर्शनाबरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निपन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणै तथा श्री सिद्ध भगवान में । दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा ताई । अने चारित्र मोहनी को बारमा से चौदमा ताई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि ।

वेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक

निपन्न गुण ठाणों में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावै ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणों ताई ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणों ताई ।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणों ताई ।

च्यार अघाति कर्म नो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं ।

२० बीस में बोलै आठ कर्मों में पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागै पाप कितना से लागै ?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै ।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागै अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्म से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागै ।

२१ इक्कीस में बोलै आस्रवना बीस भेद तथा संबर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणे कितना कितना पावै ?

आस्रव के २० बीस भेदों की विगत । पहिले तथा तीजे गुणठाणे तो बीस पावै, दूजे चौथे पांचमें गुणठाणे १६ उगणीस पावै मिथ्यात दल्यो । छठै गुणठाणे १८ अठारै पावै, मिथ्यात्व तथा अव्रत आस्रव दल्यो । सातमा से दशमा गुणठाणां ताई ५ पांच आस्रव पावे कषाय, जोग, मन, वचन, काया, ए पांच जाणवा । इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय दली । चौदमें आस्रव पावे नहीं । हिवे संबर के बीस बोलां की विगत—पहिलासे चउथा गुणठाणां ताई तो संबर पावै नहीं, पांच में गुणठाणे एक समकिते संबर पावै, सम्पूर्ण व्रत ते संबर पावै नहीं । देश व्रत पावै ते लेखव्यो नहीं ।

छठै गुणठाणै २ (दोय) पावै समकिते व्रतते, सातमा से दशमा गुणठाणां ताई १५ (पंद्रह) संबर पावै । अकषाय, अजोग, मन, वचन, काया, ए पांच दल्यो ।

इग्यारमें से तेरमें गुणठाणां ताई १६ सोलहें
संबर पावै, अजोग, मन, बचन, काया, ए च्यार
टल्या ।

चौदह गुणठाणे २० बीसूंही संबर पावै ।

२२ बाईस में बोलै चौदां गुणठाणां किस्सो भाव
किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय—
क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा दर्शन । चौथो
गुणठाणो भाव च्यार—उदय, बरंजीनें, आत्मा
दर्शन ।

पाचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परि-
णामिक, आत्मा देशचारित्र ।

छट्ठा से दशमा गुणठाणां ताई भाव दोय—
क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र । इग्या-
रमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम परिणामिक,
आत्मा उपशम चारित्र ।

बारमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक
आत्मा क्षायक चारित्र ।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक
आत्मा उपयोग ।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी ।

२३ तेबीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन, दर्शन, चारित्र, जोग । अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन ।

२४ चौबीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा ।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग ।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छव में नवमें का बोल कहणा ।

२५ पच्चीसमें बोले शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव, किसी आत्मा ?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम, बरजी ने, आत्मा जोग ।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग । छव में नव में का बोल कहणा ।

२६ छवबीसमें बोलै व्रत अव्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय, बरजी ने आत्मा,

चारित्र । अब्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामी
आत्मा अनेरी ।

२७ सत्ताबीसमें बोलै पञ्च महाब्रत पञ्च सुमति तीन
गुप्त किसो भाव किसी आत्मा ?

पञ्च महाब्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय
वरजी, आत्मा, चारित्र ।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपशम, परि-
णामिक, आत्मा जोग ।

२८ अठाबीसमें बोलै १२ (बारै) ब्रत किसो भाव
किसी आत्मा ?

भाव, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश चारित्र ।

२९ उगणतीसमें बोलै समकित मिथ्यात्व किसो भाव
किसी आत्मा ? समकित भाव च्यार—उदय,
वरजी ने, आत्मा, दर्शन । मिथ्यात्व भाव उदय
परिणामी, आत्मा दर्शन ।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसी
आत्मा ?

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परि-
णामी, आत्मा, उपयोग, ज्ञान । अज्ञान भाव ३
(दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उप-
योग ।

३१ इंकतीसमें बोलै द्रव्य जीव, भाव जीव, किसे भाव किसी आत्मा ?

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य भाव जीव भाव पांचों ही, आत्मा द्रव्य घरजी ने सात । छव में नव में का बोल कहणा ।

३२ बत्तीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छव में कोण नव में कोण ?

छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।

३३ तेतीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न छव में कोण नव में कोण ?

उदय निपन्न छव में जीव नव में जीव आस्रव ।

उपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर ।

सतरा (१७) को तो क्षायक निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को छव जीव नव में जीव संबर निर्जरा क्षयोपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संबर निर्जरा ।

३४ चौतीसमें बोलै बारह व्रत को द्रव्य खेत्र काल भाव राखै तेहनी बिगत ।

पहिला व्रत से आठमा व्रत ताई तो द्रव्य थकी

आधार रखै ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थी जाव जीव, भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थी संबर निर्जरा । नव में ब्रत द्रव्य खेत्र ऊपर परिमाणे काल थी एक मुहूर्त्त भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थी संबर निर्जरा । दशमूं ब्रत द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे, काल थी राखै जितनो काल । इग्यारमों ब्रत को द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे काल थी अहोरात्रि परिमाण ।

बारमूं ब्रत को द्रव्य थी साधूजी नें कल्पे ते चौदह प्रकार नो द्रव्य, खेत्र थी कल्पै ते खेत्रमें काल थी कल्पै ते काल में, भाव थी रागद्वेष रहित, गुण थी संबर निर्जरा ।

३५ पैतीस में बोलै नव पदार्थ में निजगुण कितना परगुण कितना ?

निजगुण तो पांच । जीव, आस्रव, संबर निर्जरा, मोक्ष ।

परगुण ४ (च्यार) । अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

३६ छत्तीसमें बोलै दर्शन मोहनीय कर्म को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुण ठाणां

पावै । दर्शन मोहनीय को उदय निपन्न पहिला गुणठाणा से सातमां ताई, चारित्र मोहनीय को उदय निपन्न पहिलासे दशमा ताई ।

चारित्र मोहनीय को उपशम निपन्न एक इग्यारमें ही गुणठाणे॥

दर्शन मोहनीय को उपशम निपन्न चौथा से इग्यार में गुणठाणा ताई ।

दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धां में ।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निपन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमां गुणठाणे ताई ।

चारित्र मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमां गुणठाणां ताई ।

३७ सेंतीसमें बोलै आठ आतमां में मूल गुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा । बाकी दोनूं नहीं ।

३८ अड़तीस में बोलै आठ आत्मा किसे आव किसी आत्मा—आत्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा

तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय
उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम
बरजी ने उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव
तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा
भाव पांचों ही ।

चारित्र आत्मा भाव च्यार उदय बरजी ।

३६ गुण चालीस में बोलै आठ आत्मा छव में कोण
नवमें कोण ।

द्रव्य आत्मा छव में जीव नवमें जीव, कषाय
आत्मा छव में जीव, नवमें जीव आस्रव । योग
आत्मा छव में जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा ।
उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छव में जीव
नव में जीव निर्जरा ।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव
संवर निर्जरा ।

चारित्र, आत्मा, छव में जीव नव में जीव संवर ।

४० चालीस में बोलै आस्रव का (बीस) २० बोल
कैसे भाव किसी आत्मा ?

भाव तो उदय परिणामिक बीस ही बोल । मिथ्याती
दर्शन आत्मा, अब्रत प्रमाद अनेरी आत्मा । कषाय
कषाय आत्मा बाकी सोलै आस्रव योग आत्मा ।

४१ एकचालीसमें बोलै संबर ना २० (बीस) बोल
कैसे भाव किसी आत्मा ।

अकषाय संबर भाव तीन उपशम क्षायक परिणामिक, आत्मा अनेरी ।

अजोग, मन बचन काया ए च्यार संबर भाव
एक परिणामिक आत्मा अनेरी । सम्यक ते
संबर भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा
दर्शन । अप्रमादी संबर भाव च्यार उदय-
बरजी आत्मा अनेरी । बाकी १३ (तेरा) संबर
का बोल भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने आत्मा
चारित्र ।

४२ बयालीस में बोलै पंदरह जोग कैसे भाव किसी
आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की
विगत ।

भाव को विगत ।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार
भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उप-
शम बरजीने ।

औदारिक को मिश्र, कर्मण ए दोय जोग भाव
तीन उदय क्षायक परिणामिक ।

असत्यमनजोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा

मिश्र भाषा वैक्रियनोमिश्र. आहारिकनूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक बेकै ए दोय जोग भाव ३ उदय क्षयो-पशम परिणामी ।

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्र मन योग मिश्र भाषा, आहारिक नूं मिश्र, वैक्रिय नूं मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै ।

पन्द्रह योग जीव के अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव । पन्द्रह योग रूपी के अरूपी द्रव्ये रूपी भावे अरूपी ।

४३ तयांलीस में बोलै पांच इन्द्रियां की पूछा पांच इन्द्री जीव के अजीव ?

द्रव्ये अजीव भावे जीव । पांच इन्द्री रूपी के अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पांच इन्द्रियां में कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रिया में क्षेत्री कितनी अक्षेत्र कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री तो क्षेत्री बाकी च्यार इन्द्रियां अक्षेत्री

द्रव्य थी इन्द्री कितनी भाव थी कितनी ? द्रव्य थी तो आठ ते कहै छै दोय कान, दोय आंख, नाक, जीह्वा, स्पर्श । भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छव में कोण नव में कोण ? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा, ते किणन्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इणन्याय ।

४४ चमालीस में बोलै जीव परिणामी रा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा ?

गति परिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी । कषाय परिणामी भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा, कषाय । वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी । योग परिणामी लेश परिणामी भाव च्यार उपशम बरजी ने आत्मा योग । इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग । ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी । दर्शन परिणामी भाव पांचों ही, आत्मा दर्शन । चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय बरजी ने आत्मा, चारित्र ।

४५ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० (दश)

बोल छव में कोण नव में कोण ?

गति परिणामी छव में जीव नव में जीव जाणवो

वेद परिणामी कषाय परिणामी छव में जीव नवमें

जीव आस्रव । योग लेश परिणामी छव में जीव

नव में जीव आस्रव निर्जरा । दर्शन परिणामी

छव में जीव नव में जीव आस्रव संबर निर्जरा ।

इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी छव में जीव

नव में जीव निर्जरा । चारित्र परिणामी छव में

जीव नव में जीव संबर ।

४६ छयालीसमें बोलै चौदह गुणठाणा वाला में शरीर

कितना पावै ?

पहिला से पांच गुणठाणा ताई तो शरीर ४ च्यार .

पावै आहारिक टल्यो, छठै गुणठाणे शरीर पावै

पांचों ही, सातमा गुणठाणा से चौदमा गुणठाणा

ताई शरीर पावै ३ (तीन) औदारिक तेजस कर्मण ।

पांच शरीर चौ स्पर्शी के आठ स्पर्शी ? च्यार

शरीर तो आठ स्पर्शी छै कर्मण चौ स्पर्शी छै ।

पांच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छै ।

४७ सातचालीसमें बोलै २४ (चौबीस) दण्डक में

लेस्या कितनी पावै ?

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री
५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८
यां में तो ३ माठी लेश्या पावै ।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ घनस्पतिकाय १ भवन
पतिका १० बानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां
में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल बरजी ने । जोतषी
अने पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या
पावै १ तेजू । तीजा से पांचमां ताई पद्म । छट्ठा
देवलोक से सरवार्थ सिद्ध ताई पावै १ शुक्ल ।
सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावै छव ।

सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली ।

४८ अड़चालीसमें बोलै अजीव ना चौदह भेद ऊंचा
नीचा तिरछा लोक में कितना ? ऊंचो लोक अने
अढ़ी द्वीप चारै १० पावै । धर्मास्ति अधर्मास्ति
आकाशास्ति को खन्ध अने काल ए च्यार टल्या ।
नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावै
काल और बध्यो । ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे)
पावै नीची दिशि में १० पावै ।

४९ उणपचास में बोलै च्यार गति ४ पांच जाति
६, छव काय १५, चौदह भेद जीव का २६
चौबीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस

५६ स्थावर ५७ पर्याप्तो ५८ अपर्याप्तो ५९ ए गुण-
सठ बोल किसो भाव किसी आत्मा ? भाव उदय
परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में कोण नव में
कोण ? छव में जीव नव में जीव । तथा सावद्य
निर्वद्य दोनूं नहीं ।

५० पचासमें बोलै २२ (बाईस) परीषह किसे किसे
कर्म के उदय तथा छव में नव में कोण ?

११ इग्यारे परीषह तो बेदनी कर्म ना उदय से ।

२ दोय ज्ञानावरणी कर्म ना उदय से ।

८ आठ मोहनीय कर्म ना उदय से ।

१ अन्तराय कर्म का उदय से ।

५१ इक्यावन में बोलै तेबीस पदवी किस्थो भाव
किसी आत्मा ?

१६ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय
परिणामिक, आत्मा अनेरी ।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक
परिणामिक आत्मा उपयोग ।

१ साधूजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार)
उदय बरजी आत्मा चारित्र ।

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम
परिणामी, आत्मा, देश चारित्र ।

१ समदृष्टि की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय
बरजी आत्मा, दर्शन ।

उगणीस पदवी तो छव में जीव नव में जीव
समदृष्टि की अने केवली की पदवी छव में
जीव नव में जीव निर्जरा । साधू आचक की
पदवी छव में जीव नव में जीव संबर ।

५२ बावनमें बोलै नव तत्व का ११५ (एकसह पंदरह)
बोल की ।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी बिगत
जीव का १४, आस्रव का २०, संबर का २०,
निर्जरा का १२, मोक्ष का ४, एवं ७० ।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४, पुन्य का ६,
(नव) पाप का १८ (अठारा) बंध का ४ (च्यार)
एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ?

निर्वद्य तो ३६, तिणमें निर्जरा का १२, संबर का
२०, मोक्ष का ४, ए ३६ छवतीस ।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन वचन
काया योग ए च्यार दह्या) ।

दोनूं नहीं ५६ तिणमें ४५ अजीव का चौदह जीव
का ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

च्यार आस्रव मन बचन कायां जोग ए सावद्य
निर्वद्य दोनूं छै ।

आज्ञा मांही कितना—१६ ऊपर परमाणे ।

आज्ञा बाहर कितना—१६ आस्रव का ।

आज्ञा मांही बाहर कितना—४ (च्यार) मन
बचन काया योग ए च्यार आस्रव का ।

५६ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनूं नहीं ।

रूपी कितना अरूपी कितना ?

अरूपी तो ८० (अस्सी) तिणमें ७० (सत्तर) तो
जीव का १०, अजीव का (पुद्गल का च्यार टल्या)
६ (नव) पुन्य का, १८ (अठारा) पाप का, ४
(च्यार) बंध का ४ पुद्गलका । यह ३५ रूपी छै ।

एकसह पंदरह बोलां में छांडवा आदरवा जाणवा
योग कितना ?

जाणवा योग तो ११५ एकसह पंदरह, आदरवा
योग ३६ (छवतीस) निर्वद्य कहा सो अने छांडवा
योग ७६ तिणमें अजीव का ४५, जीव का १४,
आस्रव का २० एवं ७६ थया ।

॥ किसे भाव ॥

५५ अजीव का तो भाव एक परिणामिक १४

जीव का २० आस्रव का ए चौतीस बोल भाव
दोय उदय परिणामिक ।

संवर का २० (बीस) बोला में से १५ पंदरह तो
भाव च्यार उदय बरजी ने, अने अकषाय संवर
भाव ३ (तीन) उपशम क्षायक, परिणामिक,
अयोग मन बचन काया ए च्यार भाव एक परि-
णामिक ।

निर्जरा का १२ बोल भाव ३ तीन क्षायक, क्षयो-
पशम परिणामिक ।

४ मोक्ष का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव
तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी, अने दर्शन
चारित्र ए दोय भाव च्यार उदय बरजी ने ।

॥ इति सम्पूर्ण ॥



॥ अथ अल्पा बोहत ॥

- १ सर्व थोड़ा गर्भेज मनुष्य
- २ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।
- ३ „ बादर तेजकाय का पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
- ४ „ पांच अनुत्तर का देवता असंख्यात गुणा ।
- ५ „ ऊपरला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा ।
- ६ „ बीचला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा ।
- ७ „ नीचला त्रिक का संख्यात गुणा ।
- ८ „ १२ मां देवलोक का संख्यात गुणा ।
- ९ „ ११ मां देवलोक का संख्यात गुणा ।
- १० „ १० मां का संख्यात गुणा ।
- ११ „ ९ मां का संख्यात गुणा ।
- १२ „ सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- १३ „ छद्दी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- १४ „ आठमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- १५ „ सातमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- १६ „ पांचमीं नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- १७ „ छद्दा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

- १८ तेहथी चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- १९ ” पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- २० ” तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- २१ ” चौथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- २२ ” तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- २३ ” दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- २४ ” छमूर्छम मनुष्य असंख्यात गुणा ।
- २५ ” दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।
- २६ ” दूजा की देव्यां संख्यात गुणी ।
- २७ ” पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणा ।
- २८ ” पहला की देव्यां संख्यात गुणी ।
- २९ ” भवनपति देवता असंख्यात गुणा ।
- ३० ” भवनपति की देव्यां संख्यात गुणी ।
- ३१ ” पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।
- ३२ ” खेचर पुरुष असंख्यात गुणा ।
- ३३ ” खेचरणी संख्यात गुणी ।
- ३४ ” थलचर पुरुष संख्यात गुणा ।
- ३५ ” थलचरणी संख्यात गुणी ।
- ३६ ” जलचर पुरुष संख्यात गुणा ।
- ३७ ” जलचरण संख्यात गुणी ।
- ३८ ” वानव्यन्तर देवता संख्यात गुणा ।

- ३६ तेहथी वानव्यन्तर देवी संख्यात गुणी ।
 ४० „ जोतिषी देवता संख्यात गुणा ।
 ४१ „ जोतिषीणी देवी संख्यात गुणी ।
 ४२ „ त्वेचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।
 ४३ „ थलचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।
 ४४ „ जलचर नपुन्सक संख्यात गुणा ।
 ४५ „ चौइन्द्री का पर्यासा संख्यात गुणा ।
 ४६ „ पंचेन्द्री का पर्यासा विशेषाईया ।
 ४७ „ बेन्द्री पर्यासा विशेषाईया ।
 ४८ „ तेन्द्री पर्यासा विशेषाईया ।
 ४९ „ पंचेन्द्री अपर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५० „ चौइन्द्री अपर्यासा विशेषाईया ।
 ५१ „ तेन्द्री अपर्यासा विशेषाईया ।
 ५२ „ बेन्द्री अपर्यासा विशेषाईया ।
 ५३ „ बादर प्रत्येक बनस्पति पर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५४ „ बादर निगोद पर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५५ „ बादर पृथ्वी का पर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५६ „ बादर अप्पकाय पर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५७ „ बादर वायुकाय पर्यासा असंख्यात गुणा ।
 ५८ „ बादर तेजकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

५६ तेहथी बांदर प्रत्येक शरीरी बनस्पति अपर्याप्ता
असंख्यात गुणा ।

- ६० " बांदर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ६१ " बांदर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ६२ " बांदर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ६३ " बांदर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ६४ " सूक्ष्म तेजकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ६५ " सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेषाईया ।
 ६६ " सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया ।
 ६७ " सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया ।
 ६८ " सूक्ष्म तेज पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
 ६९ " सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्ता विशेषाई ।
 ७० " सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया ।
 ७१ " सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया ।
 ७२ " सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।
 ७३ " सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
 ७४ " अभव्य जीव अनन्त गुणा ।
 ७५ " पड़वाई समदृष्टि अनन्त गुणा ।
 ७६ " सिद्ध भगवन्त अनन्त गुणा ।
 ७७ " बांदर बनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा ।
 ७८ " बांदर पर्याप्ता विशेषाईया ।

७६ तैहथी बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

८० ॥ बादर अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८१ ॥ सर्व बादर विशेषाईया ।

८२ ॥ सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

८३ ॥ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८४ ॥ सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणा ।

८५ ॥ सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया ।

८६ ॥ सर्व सूक्ष्म विशेषाईया ।

८७ ॥ भव्य जीव विशेषाईया ।

८८ ॥ निगोदिया विशेषाईया ।

८९ ॥ वनस्पति विशेषाईया ।

९० ॥ एकेन्द्री विशेषाईया ।

९१ ॥ तिर्यञ्च विशेषाईया ।

९२ ॥ मिथ्याती विशेषाईया ।

९३ ॥ अज्रती विशेषाईया ।

९४ ॥ सकषाई विशेषाईया ।

९५ ॥ छद्मस्थ विशेषाईया ।

९६ ॥ संयोगी विशेषाईया ।

९७ ॥ संसारी जीव विशेषाईया ।

९८ ॥ सर्व जीव विशेषाईया ।

॥ अथ श्रावक प्रतिक्रमण ॥

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं	णमो सिद्धाणं	णमो
नमस्कार थावो अरि-	नमस्कार थावो	नमस्कार
हन्त भयवन्त नें	श्रीसिद्ध भगवान नें	थावो
आयरियाणं	णमो उवज्झायाणं	णमो लोए
श्रीआचारज	नमस्कार थावो श्री	नमस्कार थावो
महाराज ने	उपाध्याय महाराज ने	लोक के विषे
सर्व साहूणं ।		
सर्व साधु सुनिराजों नें		

॥ अथ तिखुत्ता की पाटी ॥

● अर्थ सहित ●

तिखुत्तो	आप्पाहिणं	पयाहिणं	चंदामि	ममं
तीन बार	दाहिणापा-	प्रदक्षिणा	चंदना	नमस्कार
	सार्थी	देई	करुं	
सामी	सकारेमि	समाणेमि	कल्लाणं	मंगलं
करुं	सत्कार करुं	सम्मान करुं	कल्याणकारी	मङ्गलकारी
देवयं	चेइयं	पज्जुवांसामी	मत्तएण	चंदामि
धर्म देव	चित्त प्रसन्न	सेवना करुं	मस्तकेकरी	चंदना
	कारी ज्ञानवंत			नमस्कार करुं

॥ इच्छामि पडिक्कमिउ ॥

इच्छामि	पडिक्कमिउ	हरिया	वहीयाये
इच्छूं, बांछूं	प्रतिक्रमवोते निवर्त्तवो	मार्गमें	विषै चलतां

विराहणाए	गमणागमणे	पाणक्कमणे
विराधनां हुई होय	जातांआतां	प्राणी बेइन्द्रियादिनो आक्रमण करणूं दाबणूं

बीयक्कमणे	हरियक्कमणे	उसा	उत्तिङ्ग	पणग
बीज जीव दाबणूं	हरि लीलीको दाबणूं	ओसको	कीड़ाका चिल	नीलण फूलण

दग्ग	मट्टी	मक्कडासंताणा	संकमणे
पाणीका	माट्टीका जीव	मक्कड़ीका जाला	मईवो संक्रमवो
जेमे जीवा	विराहिया	एगेंदिया	बेइन्द्रिया
मैं ज्यो जीव	विराध्या होय	एकेन्द्री जीव	बेइन्द्री जीव
तेईदिया	सउरिन्दिया	पंचेंदिया	अभि
तेइन्द्री जीव	चौइन्द्री जीव	पंचइन्द्री जीव	सनमुख

हया	वत्तिया	लेसिया	संघाइया	संघट्टीया
धाता हण्यां	धूलसे ढक्या	रगड़या	घात कसा	संघटैकरी
परियाविया	किलामिया	उहविया	ठाणा	
परिताप्या	किलामना उपजाई	उपद्रव किया	एक स्थान से	
उट्टाणा	संक्रामिया	जीवियाउ	ववरोवियां	
दूसरे स्थान	पटक्का	जीवत से	नाश किया	

तस्स मिच्छामि
तेइनो मिच्छामि

दुक्कडं ॥ १ ॥
दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सुत्तरी	करणेणं	पायच्छित्त	करणेणं
तेहना उत्तर प्रधान	करवा	प्रायश्चित्त	करवो
विसोही	करणेणं	विसल्ली	करणेणं
विशुद्धि	करवो	सत्य रहित	करवो
पावाणं	कम्माणं	निग्घाय	णट्ठाए
पाप	कर्म का	नाश करवा	निमित्त
ठामि	करेमि	काउस्सगं	अनत्थ
सिर दुई	करुं छुं	काय उत्सर्ग	इण मुजब आधार
		ध्यान	

ऊससिएणं	नीससिएणं	खासिएणं	छीएणं
ऊंचा श्वास	नीचा श्वास	खांसी	छोंक
जंभाइएणं	उड्डुएणं	वायनिसग्गेणं	भमलीए
उबासी	ढकार	अधोवायु	भँवल

पित्त मुच्छाए	मुहुमेहिं	अङ्ग संचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा	सूक्ष्मपणे	शरीर को हालवो
मुहुमेहिं	खेल संचालेहिं	मुहुमेहिं
सूक्ष्मपणे	श्लेष्मको संचार	सूक्ष्म
		दृष्टि चलावो

एवमाइएहिं	आगारेहिं	अभग्गो	अविराहीड
इत्यादिक यह स्हारे	आगार से	ध्यान भागे नहीं	विराधना नहीं
हुज्ज	में	काउसगो	जाव
होज्यो	मने	काउसग ते ध्यान	जिहां तक
			अरि

ताणं	भगवन्तोणं	नमुक्कारेणं	नपारेमि
हन्त	भगवन्त ने	नमस्कार करी ने	नहीं पारूँ
ताव	कायं	ठाणेणं	मोणेणं
तथात्ताई	शरीर से	स्थान से	मौन करी
अप्पाणं	वोसरामि ॥ इति ॥		
आत्मा ने	पापथकी बोसराऊँ		

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स	उज्जयोयगरे	धम्म	तित्थयरेजिणे
लोक के विषे	उद्योतकारी	धर्म	तीर्थ करता जिण
अरिहन्ते	कित्तइस्सं	चउवीसंपि	केवली ॥१॥
अरिहन्ता की	कीरति करूँ	चौबीस वे	केवली
उसभ	मजीयं च	वंदे	संभवमभिनन्दणं च
श्रवण	अजित पुनः	धंदू	संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः
सुमहं	च पउमर्प्पहं	सुपासं	जिणं च चंदप्पहं
सुमति	पुनः पण प्रभः	सुपास्व	जिन पुनः चंदा प्रभू
वंदे ॥२॥	सुविहिं च	पुप्फदंतं	सीयल सिज्जंस
धंदू	सुविधनाथ पुनः	दूसरो नाम	शीतल अयेांस
		पुष्पदंत	

वासुपुज्जं	च विमल	मणंत च	जिणं धम्मं
वासुपुज्य	पुनः विमलनाथ	अनन्तनाथ पुनः	जिन धर्मनाथ

शान्तिं च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च महिं
 शान्ति पुनः वंदू कुंथु अर पुनः महिनाथ
 नाथ नाथ

वंदे मुणिसुब्धयं नमि जिणं च वंदामि
 वंदू मुनिसुब्धत नमि जिन पुनः वंदू
 रिद्धिनेमि पासं तद् वद्धमाणं च ॥४॥ एवं
 भरिष्टनेमि पास्वनाथ तथारूप वद्धमान वंदू पुनः यह
 मये अभिथुया विह्वयरथमला पहीण जर
 मैं स्तुति करी दूर किया कर्मरूप स्त्रीण भया जनम
 रज मेल

भरणा चऊविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे
 भरण जिन्होंका ये चौथीस जिनराज तिथंकर म्हारे ऊपर
 पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
 प्रसन्न थावो कीर्ति करी वंदू मोटा प्रते ने ये
 पूज्या ध्याय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं
 लोक के विषे उत्तम सिद्ध छै रोग रहित समकित
 योध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दितुं ॥६॥ चंदेसु निम्मल
 समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमां थां निर्मल
 यरा आइच्चेसु अहियं पयासयारा सागर वर
 कारी सूर्य थी अधिक प्रकाशकारी समुद्र समान
 गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥
 गंभीर एहपा सिद्ध मिद्धि मने देवो

॥ अथ नमुत्थुणं ॥

नमोत्थुणं	अरिहंताणं	भगवन्ताणं	आइगराणं
नमस्कार थावो	अरिहन्त	भगवन्त ने	धर्म की आदि करता ने

तित्थयराणं	सयंसंबुद्धाणं	पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता	बिना गुरु पोते प्रति बोध पास्या	पुरुषों में उत्तम

पुरिस	सिंहाणं	पुरिसवरपुण्डरीयाणं	पुरिस
पुरुषों में	सिंह समान	पुरुषोंमें पुण्डरीक कमल समान	पुरुषों में

वर गंध	हत्थीणं	लोगुत्तमाणं	लोगनाहाणं
गन्ध	हाथी समान	लोक में उत्तम	लोक का नाथ

लोगहियाणं	लोगपईवाणं	लोगपज्जोय	गराणं
लोक में हितकारी	लोक में प्रदीप समान	लोक में उद्योतकारी	

अभयदयाणं	चक्खुदयाणं	मग्गदयाणं	सरणदयाणं
अभय दानदाता	ज्ञान चक्षुदायक	सुमार्गदायक	शरणदायक
जीवदयाणं	बोहिदयाणं	धम्मदयाणं	धम्मदेश
संयम जीवदायक	बोधदायक	धर्मदायक	धर्म देशना

याणं	धम्मनायगाणं	धम्मसारहीणं	धम्मवर
दायक	धर्मका नायक	धर्म का सारथी	उत्तम धर्म कर

चाउरंत	चक्खवटीणं	दीवोत्ताणं	सरणगईपईट्ठा
च्यार गति का	चक्रवर्त समान	द्वीपा समान	शरणागत
अन्तकारी			

अप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्टछड
 अप्रतिहत प्रधान ज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो
 माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
 छगस्थपणो पोते जीत्या अने दूजाने जीतावे पोते तिसा दूसराने तारे
 बुद्धाणं बोह्याणं मुत्ताणं मोअगाणं सब्बन्नूणं
 पोते प्रति दूजा ने प्रति कर्म थी दूजा ने सर्वज्ञ
 बोधे पौम्या बोधे मुकाव्या मुकावे
 सब्बदरिसीणं सिवमयल मरुअ मणंतं
 सर्व दर्शो कल्याणकारी अचल अरुज अमन्त
 भक्खय मव्वावाह मप्पुणरावित्ति सिद्धिगइ
 भक्षय अव्याव्याधि फेरुं आवे नहीं इसी सिद्धगति
 नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं । इति ॥
 नामवाला स्थान प्राप्त हुवा जिनेश्वरा ने नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुंभेहिं अब्भणुं
 अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवन्त तुम्हारी आज्ञा से
 नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणुं ठाएमि देवसी
 दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
 सम्बन्धी सम्बन्धी
 ज्ञान दर्शण चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थ
 ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अर्थ
 करेमि काउस्सगं ॥१॥
 करूं छूं मैं काउसग ते ध्यान

॥ इच्छामि ठामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सगं जो में देवसिओ अइ
 इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो में दिवस में अति
 यारो कओ काईओ वाईओ माणसिओ उस्सुत्तो
 चार कीनों शरीर से बचन से मन्न से भूंडा सूत्र
 उमगो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुब्बि
 उन मार्ग अकल्पनीक नही करवा जोग दुर ध्यान खोटी
 चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
 चिन्तवना अणाचार नहीं इछवा जोग
 असावगपाउगो नाणे तहदंसणे चरित्ताचरित्ते
 भावक के नहीं करवा ज्ञान दर्शन देशव्रत
 जोग पाप ते व्रत भंगादि
 सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
 श्रुत सामायक तीन गुत्ति च्यार कसाय
 पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
 पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार
 सिक्खावयाणं बारस विहस्स सावग धम्मस्स
 शिक्षा व्रत बारै विध आचक धर्म के
 जं खंडिअं जं विराहिअं तस्समिच्छामि
 ज्यो खण्डना करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि
 दुक्कडं ॥ २ ॥

दुक्कडं

॥ अथ क्षमावंत श्रमणोको वंदना ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए

इच्छूं छूं हे क्षमावन्त साधू वंदवा सचित्तादि छांडुं निपाप
आपने शरीर पणे हुई निर्जराअथ

निसीहिआए अणु जाणह मे मिउग्गहं निस्सीहि

शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा अशुभ जोग
मांही निवर्तवो

अहो कायं । कायसंपासं खमणिज्जो मे किलामो

चर्ण स्पर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान् किलामनां
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण फरसतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवईकं तो

थोड़ी किलामन्ता बहुत समाधि भावकर दिवस धीत्यो
हुई हुवे सो । तुमारे

जत्ता मे जवणिज्जंचमे । खामेमि खमासमणो

संयम रूप यात्रा इन्द्री नो इन्द्री आपकूं खमाऊं हे क्षमावंत
की विषय उपशमावी ते जपणी छूं साधू

देवसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि ।

दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिकामूं छूं ।
अतिचार थकी

खमास्समणाणं देवसिआए आसायणाये

हे क्षमावन्त श्रमण दिवस सम्बन्धी असातना

तित्तीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तीसीस मांहेली ज्यो कोई किञ्चित् मिथ्या मनसे दुक्क
क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए मागाए
 वचन से दुकृत काया से दुकृत किया, क्रोध थी मान थी
 मायाए लोभाए सब्बकालियाए सब्बमिच्छोवयाराए
 माया कपट लोभ करी सर्व काल में सर्व मिथ्या उपचार किया
 सब्बघम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
 सर्व धर्म क्रिया का उलंघन एहवी ज्यो में दिवस ने
 किया असातना विषै

अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
 अतिचार किया तेहनो हे क्षमा श्रमण निवतूँ छूँ
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥इति ॥
 निन्दूँ छूँ गरहूँ छूँ आतमां थी वोसराजं छूँ।

॥ ज्ञानातिचार आलोवा की पाटी ॥

आगमे तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागमे
 आगम तीन प्रकारे प्ररूप्या ते कहै छै सूत्र आगम
 अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्री ज्ञान ने
 अर्थ आगम, सूत्र अर्थ दोनूँ आगम

विषै अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोऊं—

जंवाइधं १ वचामेलियं २ हिनक्खरं ३ अचक्खरं ४ पयहीणं ५

जे कोई वचन मिलाया हीण अक्षर अधिक पदहीण ५
 अधिक १ होय २ कहा ३ अक्षर ४

विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्टु दिन्नं

विनय हीण ते संयोग हीण ७ उच्चारण श्रेष्ठ सूत्र ते दीनो
 अविनय ६ हीण ८ अवनीत ने ६

दुष्टदुपडिच्छियं १० अकालेकज सिज्भाए ११ काले ण
 खोटा सूत्र की इच्छा करी १० बिनाकाले सिभाय करी ११ सिभायना
 कज सिज्भाज १२ असिज्भाये सिज्भाए १३ सिज्भाए
 कालमें सिभाय न असिज्भाय में सिज्भाय सिज्भाय में
 करी १२ करी १३ सिज्भाय न
 करी १४

न सिज्भाय १४ भणतां गुणतां चितारतां
 चोखतां ज्ञानकी ज्ञानवन्त की आसातना करी होय
 तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सम्यक्त्व के अतिचार ॥

दंसण श्रीसमकित	अहंतो महदेवो	जावज्जीव
सुध सरधना ते समकित	ते अरिहन्त मांहरे	जाव जीव लग
दर्शन	देव	
सुसाहुणो गुरुणो	जिणपन्नतं तत्तं	इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरु	जिन प्ररुप्यो ते धर्म तत्त्वं	यह समकित
मए गहियं		
में ग्रहण कियो ।		

एहवा समकित ने विषै जे कोई अतिचार लाग्या
 होय ते आलोजं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १;
 न प्रतीत्या होय २, न रुच्या होय ३, पर पाखण्डी की
 प्रशंसा करी होय ४, संस्तवो (परिचय) कीधो होय ५,
 समकित रूपी रत्न ऊपरे मिथ्यात्व रूप रज मैल खेह
 लागी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ बारह व्रत ॥

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
 प्रथम देशथी व्रत मोट को प्राणातिपात को
 वेरमणं व्रत पांच बोलै करी ओलखीजे, द्रव्यथकी
 निवर्त्तवो ।

अस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री विन
 अपराधे आकुटी हणवानी विधि करी ने सउपयोग हणूं
 नहीं हणाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा । द्रव्य थकी
 एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मांहि काल थकी जाव
 जीवलग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित
 गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हांरे पहला व्रत ने विषै
 जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोजं ।

अस जीव ने गाढ़ै बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव
 घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार
 घाल्यो होय ४ भात पाणीनां बिच्छोहा कीनां होय ५ ।
 तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थूलाउ मूसावायाउ विरमणं
 बीजो अणुव्रत स्थूल थी झूठ बोलवा निवर्तवो
 पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी कनगलिक १
 कन्या के ताई झूठ

गोवालिक २

भौमालिक ४

थापण मोसो ४

गाय भैसादि

भूमि निमित्त

लेकर नटवों ते

कारण झूठ

झूठ

अमानत में खयानत

कूडीसाख ५

झूठी साक्षी

इत्यादि मोटको झूठ मर्यादा उपरान्त बोलूं नहीं
 बोलाऊं नहीं मनसा बायसा कायसा, द्रव्य थी एहिज
 द्रव्य क्षेत्र थी सर्व क्षेत्रों में, काल थी जाव जीव
 लगे, भाव थी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण
 थी संबर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषै अति-
 चार दोष लागा होय ते आलोऊं ।

किणी प्रते कूड़ो आल दियो होय २

रहस्य छानी बात प्रकट करी होय २

स्त्री पुरुष ना मरम प्रकाश कीधा होय ३

मृषा उपदेश दीधो होय ४

कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
 तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं
 पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थी क्षेत्र खणी । गांठ
 खोली तालो . पड़कुञ्जी करी बाट पाड़ी पड़ी बस्तु
 मोटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादि मोटकी चोरी
 मर्यादा उपरान्त करूं नहीं कराऊं नहां मनसा बायसा

कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां
में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष,
रहित, उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा
म्हारै तीजा व्रत में ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते
आलोजं ।

चोर की चुराई वस्तु लीधी होय ५ चोर ने सह्यायें
दीधी होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधी होय ३ कूड़ा
तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तु में भेल संभेल
कीधी होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स
मिच्छामि दुंक्कडं ।

॥ इति ॥

चउत्थे अणुव्वए थूलाउ मेहुणावो विरमणं
चौथो भणुव्वत स्थूलथकी मैथुनथकी निव्वर्त्तवो

पांच बोलां करी ओलखीजे द्रव्य थकी तो देवता
देवांगनां संम्बन्धिया मैथुन सेजं नहीं सेवाजं नहीं
तिर्यच तिर्यचणी सम्बन्धी मैथुन सेजं नहीं सेवाजं
नहीं, मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेजं नहीं सेवाजं नहीं,
मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवा की मर्यादा कीधी छै
तिण उपरान्त सेजं नहीं सेवाजं नहीं मनसा वायसा
कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां
में, काल थकी जावज्जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे
चौथा व्रत में ज्यो अतिचार दोष लागो होय ते
आलोजं ।

धोड़ा कालकी राखी परिग्रहीसूं गमन कीधो होय १
अपरिग्रहीतासूं गमन कीधो होय २ अनेक क्रीड़ा
कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४ काम
भोग तीव्र अभिलाषा से सेया होय ५ तस्स मिच्छामि
दुक्कडं ।

॥ इति ॥

पंचमें अणुव्वर थूलाउ परिगहाउ विरमणं
पंचमूं धणुव्वत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्त्तवो
पांचां धोलां करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्तु
उघाड़ी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो, चांदी सोनाका जे प्रमाण कीधो
धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण ।
द्रव्य नाज जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ादिक चौपद
जे प्रमाण कीधो ।

कुम्भी धातु यथा प्रमाण,
तांयो पीतल लोहादिनो जेह प्रमाण कीधो,

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, त्वेन्न थकी सर्व खेत्रों में,
काल थकी जावज्जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवां अणु व्रत में ज्यो अतिचार लागा होय ते आलोकं, खेतु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १, हिरण्य सुवर्ण रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय २, धन धान्य रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३, द्विपद चउपद रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४, कुम्भी धातु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ५, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

छट्टो दिशि व्रत पांचां थोला ओलखिजे द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारे यथा प्रमाण, नीची दिशा रो यथा प्रमाण, तिरछी दिशा रो यथा प्रमाण, यां दिशा रो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जाय कर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी तो एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा एहवा मांहरे छट्टा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोकं ।

- | | |
|-------------------------------------|---|
| ऊंची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय | १ |
| नीची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय | २ |
| तिरछी दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय | ३ |
| एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय | ४ |

पंथ में सन्देह सहित अधिक चाख्यो चलायों होय ५

तहस मिच्छामि दुक्कड़

॥ इति ॥

सातमं उपभोग परिभोग ब्रत पांचां बोलां ओलखिजे, द्रव्य
थकी छब्बीस बोलांकी मर्याद ते कहै छै

उलणिया विहं १ दंतण विहं २ फल विहं ३

अङ्ग पूछणादि विधि दांतण विधि फल विधि

अभिगण विहं ४ उवटण विहं ५ मंजण विहं ६

तेलमिंगादि विधि उवटणादि की विधि खान की विधि

ते तेल मालिस विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुष्प विहं ९

वत्थ विधि विलेपण विधि पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२

पहरवाका गहणां विधि धूप की विधि दूध आदि
पीवा की विधि

भक्खण विहं १३ उंदन विहं १४ सूप विहं १५

सूखड़ी आदि चावल की विधि दाल की विधि

भक्षण की विधि

बिगय विहं १६ साग विहं १७ मधुर विहं १८

बिगय की विधि साग की विधि मधुर की विधि

जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१

जीमण की विधि पाणी की विधि मुखवास ताँबूलादि की
विधि

बाहण विहं २२ सयण विहं २३ पत्नी विहं २४

गाड़ी प्रमुख की बैठवा सोवा की विधि पगरखी की
विधि पाटा कुरसी विछौनादि पर विधि

सचित्त विहं २५ द्रव्य विहं २६

सचित्त की विधि द्रव्य की विधि

ए छाबीस बोलों की मर्याद करी, जिण उपरान्त
भोगजं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज
द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में काल थकी जाव जीव
लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण
थकी संबर निर्जरा. एहवा मांहरा सातमां व्रत के विषे
जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ॥
पचक्खाणां उपरान्त सचित्त रो आहार कीनो होय ॥१॥
पचक्खाणां उपरान्त द्रव्य रो आहार कीनो होय ॥२॥
पचक्खाणां उपरान्त गहिणां अधिक पहन्या होय ॥३॥
पचक्खाणां उपरान्त कपड़ा अधिक पहन्या होय ॥४॥
पचक्खाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोग्या
होय । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पंदरह करमां दान जाणवा जोग छै पण आदरवा
जोग नहीं ते कहै छै ।

इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साड़ी कम्मे ३

अग्निकारी लुहा— . बन कर्म ते बनमें घास सफ़ट कर्म ते
रादि कर्म दरखतादि काटवो गाड़ी प्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४

भाड़ै ते किराया

देवाका कर्म

फोड़ी कम्मे ५

लूपादि कर्म

ते नारेल सुपारी

पत्थर आदि फोड़वो

दंतवाणिज्जें ६

दांतको बिणज

ते व्योपार

लकरवाणिज्जें ७

लाखको बाणिज्य

रस बाणिज्जें ८

रस व्यापार ते

घी, तेल सहतादि

केस बाणिज्जें ९

बाल

चमरादि

व्योपार

विषबाणिज्जें १०

जहरको व्यापार

जन्तु

कल घाणी

पिलण्या

प्रमुख

कम्मे ११

कर्म

निलच्छणिया कम्मे १२

कसी वधियादि कर्म

ज्यानवरोंने बाधी कर्म

द्वगिदावणियां कम्मे १३

दावानलदेवो

कर्म ते

घन प्रमुखमें लायलगायवो

सर द्रह तालाब सोसणियां कम्मे १४ असई

सरोवर द्रह तालाब आदिने सोषावो ते कर्म असती ते असंजती जननें

पोषणिया कम्मे १५ इति ॥

पोषवा नों कर्म

ए पंदरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया

होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

॥ इति ॥

आठमूं अनर्थं दंड विरमण व्रत पांच बोलां ओलखिजे,

द्रव्य थकी अवज्झाणचरियं १

पम्मायचरियं २

भूंडा ध्याननो आचरवो

प्रमाद करवो

हंसपयाणं ३

पाव कम्मोवएसं ४

प्राण हिसा

पाप कर्म को उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकार का ओंगार
उपरान्त सेजं नहीं ते कहै छै ।

आएहिउवा १	नाएहिउवा २	आधारिहिउवा ३
आपणें हित	न्यातीला के हित	घर के हित
परिवारे हिउवा ४	मित्तहिउवा ५	नागहिउवा ६
परिवार के हित	मित्र के हित	नाग देवता निमित्त
भूत हिउवा ७	जक्ख हिउवा ८	
भूत देवता	जक्ष देवता	
निमित्त	निमित्त	

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में,
काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित
उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारं
आठमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे
ते आलोऊं ।

कन्दर्पनी कथा कीधी होय १	भंड कुचेष्टा कीधी होय २	
काम क्रीड़ाकी कथा को करवो	भांडनीपरै कुचेष्टा करि होय	
मुखसे अरि वचन बोलया होय ३	अधिकरण	
मुखसे खोटा वचन बोलया होय	नाता जोड़ कर	
जोड़ा मुकाया होय ४	उपभोग	परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार	एक बार भोग	बार बार भोग
नो विरह कियो	में आवै ते	में आवै ते

अधिकां भोग्या होय ५

मर्यादा उपरान्त अधिक
भोग्या होय ते

तस्मिन् मिच्छामि दुःखं

तो मिच्छामि दुःखं

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोला ओलखिजे
करेमि भन्ते सामाह्यं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पच्चखाण
जाव नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहेणं
यावत नियम एक मुहूर्त्त ते सेऊं छूं दोय कर्ण से
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा-
लीन योगसे, सावद्य नहीं करूं नहीं कराऊं मनसे वचन से
कायसा तस्सभन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीर से तिणसूं हे पडिकमूं छूं निन्दू छूं गर्हणा ते
भगवान निषेधूं छूं

अप्पाणं बोसरामि ॥

पाप से आत्मां ने बोसराऊं छूं

द्रव्य थीकी सामायक द्रव्य, क्षेत्र थीकी सर्व क्षेत्रां में
काल थीकी एक मुहूर्त्त ताई, भाव थीकी राग द्वेष रहित
उपयोग सहित, गुण थीकी संवर निर्जरा, एहवा नवमा
व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते
आलोऊं ।

॥ इति ॥

मन वचन कायका माठा जोग प्रवर्तया होय १
पाड़वा ध्यान प्रवर्तया होय २ सामायक में समता
नहीं करी हुवे ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो
विसाखो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

दशमो देशावगासो व्रत पांचां बोलां ओलखिजे
द्रव्य थकी दिन प्रते प्रभात थी प्रारंभीनें पूर्वादि छब,
दिसिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव
द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका
आगार राख्या तिण में द्रव्यादिक री मर्याद करी जिस
उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा बायसा कायसा
द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल
थकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित
उपयोग सहित, गुणथकी संबर निर्जरा, एहवा म्हारै
दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते
आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणार्ई होवे १ मुकलाई
होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी
आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हांखी आपो जणायो होय
५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं । इति

इग्यारमूं पौषध व्रत पांचां बोलां करि ओलखिजे
द्रव्य थकी ।

असाण पाण खादिम खादिम ना पंचखाण
 आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण
 अबम्भना पचखाण उमकमणी सुवन्नना पचखाण
 मैथुन सेवाका त्याग बोसराया हुआ रत्न सोना का त्याग
 माला वणम विलेपन ना पचखाण
 पुष्पमाला गुलाल रंगादि चन्दनादिनो विलेपन का त्याग
 सस्थमुसलादि सावजभ जोगरा पचखाण
 शस्त्र मुसलादि सावद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पचखाण करी ने कने द्रव्य राख्या जिणा
 उपरान्त पंच आखब द्वार सेजं नहीं सेवाजं नहीं मनसा
 बायसा कायसा, द्रव्य थी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व
 खेत्रां में, काल थी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण,
 भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुण थी
 संवर निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यारमा व्रतके विषे जे कोई
 अतिचार दोष लागो होवे ते आलोजं ।

सेज्जा संथारो अपडिलेह्यो होय दुप्पडिलेह्या
 सोवाकी जगां विस्तर पडिलेहा नहीं होय आछीतरह नहीं
 होय १ अप्रमाज्या होय दुप्रमाज्या होय २
 पडिलेहना करी नहीं प्रमाज्या आछीतरह नहीं प्रमाज्या
 उचारपाषवण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
 छोटी बड़ी नितकी जमीन पडिलेही न होय अथवा
 लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४

आछी तरें नहीं पूंज्या नहीं तथा रीत प्रमाणे नहीं पूंज्या होय
पड़िलेही होय

पोषह में निन्दा विकथा कषाय प्रमाद करी होय ५ तस्स
मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमू अतिथि संविभाग व्रत पांचां बौलां
ओलखिजे द्रव्य थकी ।

समणे निगंथे फासू एषणीज्जेणं असणं १
श्रमण निगंथ ने प्रासूक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ सादिमं ४ वत्थ ५ पढग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वत्थ पात्रो
कांबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ९ पीढ
कांबलो पगपूछणों जाचीने पाछा पाट
भोलावे ते अमानत्

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ ओषद १३
बाजोटादि जमीन जग्गं तृणादिक १ दवाई
भेषद १४ पडिलाभमाणै विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभतोथको विक्खं

इत्यादिक चौदह प्रकारनू दान शुद्ध साधुने देऊं
देवाऊं देवता प्रते भलो जाणू मनसा वायसा कायसा,
द्रव्य थकी एहिज कलपतो द्रव्य, खेत्र थकी कलपै जिण
खेत्रां में, काल थकी कलपै जिण काल में, भाव थकी राग

द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा,
एहवा म्हारा बारमां जत के विषैं जे कोई अतिचार दोष
लागे होवे ते आलोकं सृजती वस्तु सचित्त पर मेली
होय १ सचित्त थी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय
३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय
४ भाणैं बैठ साधू साध्वियां की भावनां नहीं भाई
होय तेहनूं मिच्छामि दुक्कड़ं ।

॥ इति ॥

॥ अथ संलेखणा की पाटी ॥

इह लोका संसह प्पउगो १

परल्लोकासंसह

यह लोककी जशकी सथा

परलोक में सुखकी

द्रव्यादि की इच्छा

प्पउगो २ जीविखा संसह प्पउगो ३ मरणा संसह

बांछा जीवित की इच्छा मरण की

प्पउगो ४ काम भोगा संसह प्पउगो ५ मा मुंज्झ

इच्छा काम भोग की इच्छा उपरोक्त ए विचार मुझमें

हुज्ज मरणन्ते ।

मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अठारे पापः—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन
४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १०

द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४ पर
परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या
दर्शन सल्य १८ ॥ इति ॥

तस्स सब्बस्स की पाटी ।

तस्स सब्बस्स देवसी अस्स आचारस्स दुच्चित्तियं दुब्भासियं
ते सर्वं अतिवार खोटी चिन्तवना खोटी
दुच्चिट्ठियं आलोयं तं पडिक्कमामि
भाषा खोटी चेष्टा काया की आलोऊं तेह पडिक्कमण में
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं बोसरामि ॥
निन्दू ग्रहणा करूं पाप कर्म थी आतमाने बोसराऊं
॥ इति ॥

तस्स धम्मस्स की पाटी ।

तस्स धम्मस्स केवलिपत्तत्तस्स अब्भुट्ठि ओमि
तेह धर्म केवलीपरूप्यो तेहने विषे उठ्यो छूं
आराहणाए विरओमि विराहणाए सब्बेतिविहेणं
अराधना निमित्त निवर्तू छूं विराधनाथी अतिवार सर्व
विविध करी
पडिक्कन्तो, वंदामि जिन चउव्वीसं
पडिक्कमूं छूं, वांदूं छूं जिन राजने चौबीसनें
आलोयना करिके

॥ इति ॥

॥ अथ मंगलीक की पाटी ॥

चत्तारि मङ्गलं अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मंगलीक अरिहन्त मङ्गल छै सिद्ध मङ्गलकारी छै
साहू मङ्गलं केवली पन्नत्तो धम्मो मङ्गलं ॥
साधू मंगलीक केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगलीक

चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्तालोगुत्तमा

ए च्यार लोक में उत्तम जाणवा अरिहन्त लोक में उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधू लोक में उत्तम केवली
पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोकमें उत्तम च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवली
शरणा लेता हूं साधूका शरण है केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं
ए सगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी आदरें अक्षय
अमर पद होय ।

॥ देवसी प्रायश्चित की पाटी ॥

देवसी प्रायश्चित्त विसोद्धनार्थं करेमि काउस्सगं ।

॥ इति प्रतिहमणं ॥

॥ अथ पडिकमणो करने की विधि ॥

प्रथम चौबीसस्थो करणो जिणा में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी । तस्सोत्तरी की पाटी

२ । ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में
चितारकर एक नवकार गुणनों ३ ॥ लोगस्सउज्जोगरे
की पाटी ३ । नमोत्थुणं की पाटी ४ ।

१ प्रथम आवसग्ग सामाइक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भन्ते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भन्ते सामाइयं ।

४ इच्छामिठामि काउस्सग्गं ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें ६६ निन्नाणवे अतिचार—

आगमें ति विहे पन्नन्ते की पाटी तिणमें ज्ञान का
चवदह अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिण में समकित का ५
अतिचार ।

बारे ब्रतांका अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान ।
इह लोगा संसह प्पउगे की पाटी । (तिण में) अति-
चार ५ सलेखणांका । यह सर्व ६६ अतिचार । अठारह
पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोजं जो में देवसी अइयारोकड
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्न समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्न की आज्ञा ॥

एक लोगस्स की पाटी ।

॥ इति द्विजो आवसग्न समाप्त ॥

॥ तीजा आवसग्न की आज्ञा ॥

दोय खमा समणां कहणा

॥ इति तीजा आवसग्न समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्न की आज्ञा ॥

ऊमाथकां ध्यानमें कहा सो प्रगट कहणा

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणां की विगत ।

१ तस्स सब्बस की पाटी

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिकमेउ जो में देवस्सी ।

६ इच्छामि पडिकमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिबिहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समत्ते की पाटी ।

ए आठ पाटी कहकर बारह व्रत अतिचार सहित कहणा
पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पड़िकमेउ जो मैं देवसी की पाटी
कहणी ।

तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स की पाटी ।

दोय खमासमणां कहणां ।

पांच पदां की वन्दना कहणी ।

सात लाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि

खमत खामणां की पाटी ।

॥ इति चौथो आवसग समाप्त ॥

॥ पंचमा आवसग की आज्ञा लेई कहै ॥

१ देवसी प्रायच्छित्त बिसोद्धनार्थ करेमि काउसगं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भन्ते सामाइयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसगं की पाटी ।

५ तस्सोत्तरी की पाटी ।

ध्यान में लोगस्स कहणां की परम्पराय रीति—

(२१७)

प्रभाते तथा सांभ वेत्त ४ च्यार लोगस्स को ध्यान
पक्खी ने १२ बारै लोगस्स को ध्यान ।
त्रौमासी पक्खी ने २० लोगस्स को ध्यान ।
छमछरी ने चालीस लोगस्स को ध्यान ।
ध्यान पारी लोगस्स की पाटी प्रगट कहणी ।
२ दोय खमास नणां कहणा ।

॥ इति पंचमं आवसग्ग समाप्त ॥

छट्ठा आवसग्ग की आंजा लेई कहणां तेहनी विंगत ।

गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्त्तमान कालमें समतां,
आगामियां कालका पचखाण यथाशक्ति करणा ।

सामाई १ चौबीस्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४
काउसग्ग ५ पचखाण ६ धां छऊं आवसग्गां में ऊंची
नीची हौंणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि
दुक्कड़ ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिण में पहिला में तो
सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थुणं में सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संप-
वेकामी नमो जिणाणं ।

॥ इति ॥

अथ बासठिया को थोकड़ों ।

इकबीस द्वार का १०२ बोल ।

जीव गई इन्द्रिय काए जोगे वेए कसाय लेस्साय ॥
सम्मत् णाण दंसण संजय उवओग आहारे ॥१॥
भासग परित्त पज्जत्त सुहुम सण्णी भवित्थि चरिमेय ॥

(१) जीव १, (२) गति ८, (३) इन्द्रिय ७, (४) काय ८, (५) योग ५, (६) वेद ५, (७) कषाय ६, (८) लेश्या ८, (९) सम्यक्त्व ८, (१०) ज्ञान १०, (११) दर्शन ४, (१२) संयति ६, (१३) उपयोग २, (१४) आहार २, (१५) भाषक २, (१६) परित्त ३, (१७) पर्याप्ता ३, (१८) सूक्ष्म ३, (१९) सन्नी ३, (२०) भवि ३, (२१) चर्म २, ।

इण थोकड़े ने बासठियो काई कारण कह्यो ते लिखे छे—१४ जीव, १४ गुणस्थानं, १५ योग १२ उपयोग, ६ लेश्या, १ अल्पाबोद्धत सर्व मिल बासठ हुवा इण कारण इण ने बासठियो कह्यो, तिण पीछे इण थोकड़े माहें बोल बढ़ाया छे ।

भवि और चर्म के बीच में अस्तिकायरो द्वार छे ते द्वार इन थोकड़ा माहें दियो नहीं ।

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१-१	सर्व जीव में	१४	१४	१५	१२	६
२-१	नारकी में	२ (१३, १४)	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	६ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	३ प्रथम
२	तिर्यच में	१४	५ प्रथम	१३ आहारिक आ- हारिक मिश्र टल्या	६ ऊपर प्रमाणे	६
३	तिर्यचणी में	२ (१३, १४)	५ प्रथम	१३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	६
४	मनुष्य में	२ (११, १३, १४)	१४	१५	१२	६
५	मनुष्यणी में	२ (१३, १४)	१४	१३ आहारिक, आहा रिक मिश्र टल्या	१२	६
६	देवता में	२ १३, १४	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	६ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
७	देवांगणामें	२ (१३, १४)	४ प्रथम	११ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
८	सिद्धां में	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	०

ભાવ	આત્મા	લબ્ધિ	ધૌર્ય	દ્રુષ્ટિ	મત્રિ અમત્રિ	દણ્ડક	પક્ષ	અલ્પા બહુત
૫	૮	૫	૩	૩	૨	૨૪	૨	૧
૫	૮	૫	૩	૩	૨	૨૪	૨	
૫	૭ ચારિત્ર ટલી	૫	૧ બાલ,	૩	૨	૧ પ્રથમ	૨	૩ અસંખ્યાત ગુણી
૫	૭ ચારિત્ર ટલી	૫	૨ પંડિત ટલી	૩	૨	૬ પાંન ધાવર, ૩ વિકલેન્દ્રી બીસમો	૨	૮ અનન્ત ગુણી
૫	૭ ચારિત્ર ટલો	૫	૨ પંડિત ટલી	૩	૨	૧ બીસમો	૨	૪ અસં૦ ગુણી
૫	૮	૫	૩	૩	૨	૧ ફકધીસમો	૨	૨ અસંખ્યાત ગુણી
૫	૮	૫	૩	૩	૨	૧ ફકધીસમો	૨	૧ સર્વ સું થોડી
૫	૭ ચારિત્ર ટલો	૫	૧ બાલ	૩	૨	૧૩ દશા મગ્નપતિકા (૨સૂં૧૧ત.૬) ૨૨, ૨૩, ૨૪	૨	૫ અસં- ખ્યાત ગુણી
૫	૭ ચારિત્ર ટલી	૫	૧ બાલ	૩	૨	૧૩ ઉપર પ્રમાણે	૨	૬ સંખ્યાત ગુણી
૨ ક્ષાયક પરિણા૦	૪ દ્રવ્ય, ઉપયોગ, જ્ઞાન, દર્શન	૦	૦	૧ સમદ્રુષ્ટિ	૦	૦	૦	૭ અનન્ત ગુણી

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्य न १४	योग १५	उपयोग १२	लेख्य ६
३-१	सहन्द्रिया मे	१४	१२ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	एकेन्द्री में	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, बौद्धिक, बौद्धिक मिश्र, कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
३	द्वेन्द्री मे	२ (५, ६)	२ (१, २)	४ औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण	५ मति, श्रुति ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
४	तेइन्द्री में	२ (७, ८)	६ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	५ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
५	चौइन्द्री में	२ (९, १०)	२ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	६ मति, श्रुति ज्ञान, मति श्रुति अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
६	पंचेन्द्री में	४ छेहला	१२ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
७	अनेन्द्री में	१ चउदमो	२ (१३, १४)	९ सत्यमन, व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	१ शुद्ध
४-१	सकाया मे	१४	१४	१५	१२	६
२	पृथ्वी काया में	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	४ प्रथम

भाव ५	आत्मा ८	लब्धि ५	वीर्य ३	हृष्टि ३	भवि अभवि २	दण्डक २४	पक्ष २	अल्पा बहुत १
५	८	५	३	३	२	२४	२	७ विशेष- वाधिक
३ उदय क्षयोप- शम परि- णामिक	६, ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	५ थावर का १२, १३, १४, १५, १६	२	६ अनन्त गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	७, चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ सतरमों	२	४ विशेष- वाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ अठारमों	२	३ विशेष- वाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१ उगणीसमों	२	२ विशेष- वाधिक
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर तीन विकलेन्द्रो का टल्या	२	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय क्षायक, परिणा- मिक	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	८ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	८ विशेष वाधिक
३ उदय क्षयोप- शम, परि- णामिक	६, ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ बारमों	२	३ विशेष- वाधिक

अंक	बोल	जीवना मेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेख्या ६
३	अपकायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र, कर्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
४	तेउकायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	ऊपर प्रमाण	३ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
५	वायुकायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र, कर्मण	३ ऊपर प्रमाण	३ प्रथम
६	वनस्पति कायामे	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र, कर्मण	३ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
७	ब्रसकायामे	१० छेहला	१४	१५	१२	६
८	अकायामे	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
५-१	संयोगीमें	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
२	मनयोगीमें	१ चउदमो	१३ प्रथम	१४ कर्मण टल्यो	१२	६
३	बचनयोगीमें	५ ब्रसका पर्यासा	१३ प्रथम	१४ कर्मण टल्यो	१२	६
४	काया योगी में	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
३ उदय, क्षयोप- शम परि- णामिक	६ ज्ञान चारित्र टेली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ तेरमों	२	४ विशेष- वाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ चउदमों	२	२ असं० गुणी
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ पन्द्रहमों	२	५ विशेष- वाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	१ सोलमों	२	७ अनन्त गुणी
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर, का टल्या	२	१ सर्व सुं थोड़ी.
३ क्षायक, परिणा- मिक	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम,	०	०	०	६ अनन्त गुणी
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशेष- वाधिक
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर तीन विकलेन्दी का टल्या	२	१ सर्व सुं थोड़ी
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर का टल्या	२	२ असं० गुणी
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ अनन्त गुणी

અંક	બોલ	જીવના મેટ ૧૪	ગુણસ્થાન ૧૪	યોગ ૧૫	ઉપયોગ ૧૨	લેશ્યા ૬
૫	અયોગી મેં	૧ ચડદમોં	૧ ચડદમોં	૦	૨ કેવલ જ્ઞાન, કેવલ દર્શન	૦
૬-૧	સવેદી મેં	૧૪	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ કેવલ જ્ઞાન, કેવલ દર્શન ટલ્યા	૬
૨	સ્ત્રી વેદી મેં	૨ છેહલા	૬ પ્રથમ	૧૩ આહારિક ને આહારિક મિશ્ર ટલ્યા	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૩	પુરુષવેદી મેં	૨ છેહલા	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૪	નપુંસક વેદી મેં	૧૪	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૫	અવેદી મેં	૧ ચડદમોં	૬ છેહલા	૭ અનેન્દ્રીય જિમ	૬ ત્રીન અજ્ઞાન ટલ્યા	૧ શુક્લ
૭-૧	સકષાયીમેં	૧૪	૧૦ પ્રથમ	૧૫	૧૦ કેવલ જ્ઞાન, કે વલ દર્શન ટલ્યા	૬
૨	ક્રોધ કષાયી મેં	૧૪	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૩	માન કષાયીમેં	૧૪	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૪	માયા કષાયી મેં	૧૪	૬ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૫	લોભકષાયી મેં	૧૪	૧૦ પ્રથમ	૧૫	૧૦ ઊપર પ્રમાણે	૬
૬	અકષાયી મેં	૧ ચડદમોં	૪ છેહલા	૭ અનેન્દ્રીય જિમ	૬ ૩ અજ્ઞાન ટલ્યા	૧ શુક્લ

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
३ उदय, क्षायक परिणा०	६ कषाय योग टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	३ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशेष- बाधिक
५	८	५	३	३	२	१५ पांच थावर ३ विकलेन्द्री, ना रकी का टल्या	२	२ सं० गुणा
५	८	५	३	३	२	१५ ऊपर प्रमाणे	२	१ सर्व सूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	११ तेरह देवता का टल्या	२	४ अनन्त गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम,	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	३ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	६ विशेष- बाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	३ विशेष- बाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ असं० गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ विशेष- बाधिक
५	८	५	३	३	२	२४	२	५ विशेष- बाधिक
५	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	१ सर्व सूं थोड़ा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
८-१	सलेश्यी में	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
२	कृष्णलेश्यी में	१४	६ प्रथम	१५	१० केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या।	१ कृष्ण
३	नीललेश्यो में	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ नील
४	कापोत लेश्यी में	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ कापो.
५	तेजूलेश्यी में	३ (३, १३, १४)	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	३ तेजू
६	पद्मलेश्यो में	२ छेहला	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ पद्म
७	शुक्ललेश्यी में	२ छेहला	१३ प्रथम	१५	१२	१ शुक्ल
८	अलेश्यी में	१ चउदमों	१ चउदमों	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
६-१	सम्यक्त्वी में	६, ५ त्रसका अपयाता, १ चउदमों	१२ टल्या १, ३	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
२	साखदान सम्यक्त्वी में	६ ऊपर प्रमाणे	१ दूजो	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	६ प्रथम तीन ज्ञान, तीन दर्शन	६
३	उपशम सम्यक्त्वी में	२ छेहला	८ (४ स ११ ताई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान, तीन दर्शन	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा
५	८	५	३	३	अभवि २	२४	२	बहुत १
५	८	५	३	३	२	२४	२	८ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ टल्या २३, २४	२	७ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ ऊपर प्रमाणे	२	६ विशे०
५	८	५	३	३	२	२२ ऊपर प्रमाणे	२	५ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	१८, टल्या १, १४, १५, १७, १८, १९	२	३ संख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	३ (२०, २१, २४)	२	२ संख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	३ (२०, २१, २४)	२	१ सर्व सूं थाड़ा
३ उदय क्षायक, परिणा०	६ कषाय, योग टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्र	४ अनन्त गुणा
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर का टल्या	१ शुक्र	७ विशे०
३ उदय क्षयोप० परिणा०	७ चारित्र टली	५	१ बाल	१ सम	१ भवि	१६ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्र	१ सर्व सूं थाड़ा
४ क्षायक टल्यो	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	१ शुक्र	२ संख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
४	वेदक सम्यक्त्वो में	२ (१३, १४)	४ (४ सं ७ ताई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान, तीन दर्शन	६
५	क्षयोपशम सम्यक्त्वो में	२ (१३, १४)	४ (४ सं ७ ताई)	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	क्षायक सम्यक्त्वो में	२ (१३, १४)	११ ४ सं १४ ताई	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
७	मिथ्यात्वो में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक आ- हारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
८	सम मिथ्यात्वो में	१ चउदमो	१ तीजो	१० ४ मन, ४ वचन औदारिक, बैक्रिय	६ ऊपर प्रमाणे	६
१०-१	सन्नानी में	३, ५ त्रस का अप- र्यासा, १ चउदमो	१२ टल्या १, ३	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
२	मतिज्ञानी में	६ ऊपर	१० टल्या १, ३, १३, १४	१५	७ प्रथम ज्ञान ४, दर्शन ३	६
३	श्रुतिज्ञानी में	६ ऊपर प्रमाणे				
४	अर्वाचि ज्ञानी में	२ (१३, १४)	१० ऊपर प्रमाणे	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
५	मन पर्यव ज्ञानी में	१ चउदमो	७ (६ सं १२ ताई)	१४ कर्मण टल्यो	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	केवलज्ञानी में	१ चउदमो	२ (१३, १४)	७ अनेन्द्री जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन.	१ शुक्ल

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
३ उदय क्षयोप० परिणा०	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का दल्या	१ शुक्ल	४ असंख्यात गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	५ विशेष- षाधिक
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१० ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	६ अनन्त गुणा
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान चारित्र्य दली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	२४	२	८ अनन्त गुणा
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	१ सम- मिथ्या	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का दल्या	१ शुक्ल	३ असं० गुणा
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर का दल्या	१ शुक्ल	७ विशेष- षाधिक
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ ऊपर प्रमाणे	१ शुक्ल	३, ४ तुल्य विशे०
५	८	५	३	१ सम	१ भवि	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का दल्या	१ शुक्ल	२ असंख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमो	१ शुक्ल	१ सर्व सूं थोड़ा
३ उदय, क्षायक, परिणा०	७ कषाय दली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्ल	६ अनन्त गुणा

अंक	बोल	जीवना मेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
७	अज्ञानी में	१४	२ (१, ३)	१३ आहारिक आ- हारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
८ ६	मतिअज्ञानी में श्रुतिअज्ञानी में	१४	२ (१, ३)	१३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	६
१०	विमङ्ग अज्ञानो में	२ (१३, १४)	२ (१, ३)	१३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	६
११-१	चक्षुदर्शनो में	६ (६ सूं १४ टल्या ताई)	११ (१३, १४)	१४ कार्मन टल्यो	१० केवलज्ञान, के वल दर्शन टल्या	६
२	अचक्षु दर्शनो में	१४	११ ऊपर प्रमाणे	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	अवधि दर्शनी में	२ (१३, १४)	११ ऊपर प्रमाणे	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	केवल दर्शनी में	१ चउदमों	२ (१३, १४)	७ अनेन्द्रीय जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुरू
१२-१	संयती मे	१ चउदमों	६ (६ सूं १४ ताई)	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
२	सामायक संयतो में	१ चउदमो	४ (६ सूं ६ ताई)	१४ कार्मण टल्यो	७ प्रथम-ज्ञान ४, दर्शन ३	६
३	छेदोपस्थाप- नोय संयती मे	१ चउदमों	४ (६ सूं ६ ताई)	१४ ऊपर प्रमाणे	७ ऊपर प्रमाणे	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम टली	२	२४	२	१० विशे- षाधिक
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	२ सम टली	२	२४	२	८ ६ तुल्य विशे०
३ ऊपर प्रमाणे	६ ऊपर प्रमाणे	५	१ बाल	२ सम टलो	२	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	२	५ असं० गुणा
५	८	५	३	३	२	१७ पांच थावर, बेन्द्री, तेन्द्री का टल्या	२	२ असंख्यात गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	४ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर, ३ विकलेन्द्री का टल्या	२	१ सर्व सूं थोडा
३ उदय, क्षायक, परिणा०	७ कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्र	३ अनन्त गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्र	६ विशे- षाधिक
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्र	५ संख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकबीसमों	१ शुक्र	४ संख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवन्ता भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेख्या ६
४	परिहार विशुद्ध संयती में	१ चउदमों	२ (६, ७)	६ चार मन, चार वचन, औदारिक	७ प्रथम-ज्ञान ४, दर्शन ३	३ भली
५	सूक्ष्म संपराय संयती में	१ चउदमों	१ दशमों	५ सत्यमन, व्यव- हार मन, मत्त भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक	४ प्रथम चार ज्ञान	१ शुक्ल
६	यथाख्यात संयती में	१ चउदमों	४ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	६ तीन अज्ञान टल्या	१ शुक्ल
७	संयता संयतीमें	१ चउदमों	१ पांचमों	१२ आहारिक, अ हारिक मिश्र, कर्मण टल्या	६ प्रथम ज्ञान ३, दर्शन ३	६
८	असंयती में	१४	४ (१ सुं ४ ताई)	१३ आहारिक, आहा- रिक मिश्र टल्या	६ केवल ज्ञान, केवलदर्शन, मन पर्यव ज्ञान टल्या	६
९	नोसंयती नो असंयती में	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
१३-१	सागरो वउत्ता में	१४	१४	१५	१२	६
२	अणगारो वउत्ता में	१४	१३ दशमों ट०	१५	१२	६
१४-१	आहारिक में	१४	१३ चउदमों टल्या	१४ कर्मण टल्या	१२	६
२	अणाहारिक में	८ (७ अप- र्याता, १ चउदमों	५ (१, २ ४, १३, १४)	१ कर्मण	१० मन पर्यव ज्ञान चक्षु दर्शन टल्या	६

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा बहुत
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्र	२ संख्यात गुणा
५	८	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्र	१ सर्वसूं थोड़ा
५	९, कषाय टली	५	१ पंडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्र	३ संख्यात गुणा
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल पंडित	१ सम	१ भवि	२ बीसमों इकवीसमों	१ शुक्र	७ असं० गुणा
५	७ चारित्र टली	५	१ बाल	३	२	२४	२	६ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उप- योग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	८ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ सं० गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ सर्वसूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	२४	२	२ असं० गुणा
५	८	५	२ बाल, पंडित	२ सम, मिथ्या	२	२४	२	१ सर्वसूं थोड़ा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण एव न १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१५-१	भाषक में	५ (६, ८, १० १२, १४)	१३ चउदमो टल्यो	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
२	अभाषक में	१० (७ अप- र्यासा, २, ४, १४)	५ (१, २, ४, १३, १४)	५ औदारिक, औदा- रिक मिश्र, बैक्रिय बैक्रिय मिश्र, कार्मण	११ मन् पर्यव ज्ञान टल्यो	६
१६-१	परित में	१४	१४	१५	१२	६
२	अपरित में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहा- रिक मिश्र टल्यो	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो परित नो अपरित	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	०
१७-१	पर्यासा में	७ पर्यासा	१४	१५	१२	६
२	अपर्यासा में	७ अपर्यासा	३ (१, २, ४)	५ औदारिक, औदा- रिक मिश्र, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र, कार्मण	६ केवल ज्ञान, मन् पर्यव ज्ञान, केवल दर्शन टल्यो	६
३	नो पर्यासा नो अपर्यासा में	०	०	०	२ केवल ज्ञान केवल दर्शन	०
१८-१	सूक्ष्म में	२ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदा- रिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम

भाव	आत्मा	लब्धि	वीर्य	दृष्टि	भवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा
५	८	५	३	३	अभवि २	२४	२	बहुत १
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर टल्या	२	१ सर्व सुं थोड़ा
५	८	५	२ बाल, पंडित	२ सम मिथ्या	२	२४	२	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ सर्व सुं थोड़ा
३ उदय क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टल्या	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	२४	२	३ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	२	२४	२	३ संख्यात गुणा
५	० चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम मिथ्या,	२	२४	२	२ अनन्त गुणा
२ क्षायक परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	१ सर्व सुं थोड़ा
३ उदय, क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	२	५ पांच थावर,	२	३ असंख्यात गुणा

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेख्या ६
२	बादर में	१२ छेहला	१४	१५	१२	६
३	नो सूक्ष्म नो बादर में	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
१६-१	सन्नी में	२ छेहला	१२ प्रथम	१५	१० केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	असन्नी में	१२ प्रथम	२ प्रथम	६ औदारिक, औदा- रिक मिश्र, बैक्रिय, बैक्रिय मिश्र, व्यव- हार भाषा, कामेण	६ प्रथम ज्ञान २, अज्ञान २, दर्शन २,	४ प्रथम
३	नो सन्नी नो असन्नी में	१ चउदमो	२ छेहला	७ अनेन्द्रिय जिम	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुक्ल
२०-१	भवि में	१४	१४	१५	१२	६
२	अभवि में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक ने आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो भवि नो अभवि	०	०	०	३ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
२१-१	चर्म में	१४	१४	१५	१२	६
२	अचर्म में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहा- रिक मिश्र टल्या	८ प्रथम चार ज्ञान टल्या	६

भाव	आत्मा	लाभ	वीर्य	दृष्टि	भवि अभवि	दण्डक	पक्ष	अल्पा वहुन
५	८	५	३	३	२	२४	२	१
५	८	५	३	३	२	२४	२	१ अनन्त गुणा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	१ सर्वं सूं थोड़ा
५	८	५	३	३	२	१६ पांच थावर, तीन विकलेन्द्री का दल्या	२	१ सर्वं सूं थोड़ा
३ उदय, क्षयोप०, परिणा०	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	२	१० पांच थावर, तीन विकलेन्द्री २०, २१	२	३ अनन्त गुणा
३ उदय, क्षायक परिणा०	७ कपाय टली	५	१ पांडित	१ सम	१ भवि	१ इकवीसमों	१ शुक्ल	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	१ भवि	२४	२	३ अनन्त गुणा
३ उदय, क्षयोप० परिणा०	६ ज्ञान, चारित्र टली	५	१ बाल	१ मिथ्या	१ अभवि	२४	१ कृष्ण	१ सर्वं सूं थोड़ा
२ क्षायक, परिणा०	४ द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन	०	०	१ सम	०	०	०	२ अनन्त गुणा
५	८	५	३	३	१ भवि	३४	२	२ अनन्त गुणा
४ उपशम टल्यो	७ चारित्र टली	५	१ बाल	२ सम, मिथ्या	१ अभवि	२४	१ कृष्ण	१ सर्वं सूं थोड़ा

॥ अथ गतागत का थोकड़ा ॥

जीवका ५६३ भेद की विगत—

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तिर्यच का ।

४ सूक्ष्म वादर पृथ्वीकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्ष्म वादर अप्पकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्ष्म वादर वाडकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्ष्म वादर तैडकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

६ सूक्ष्म (वादर) प्रत्येक साधारण वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यञ्च
सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

३०३ मनुष्य का—

२०२ सन्नी मनुष्य १५ कर्म भूमि, २० अकर्म भूमि, ५६ अन्तरद्वीप ए
१०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि चडवह स्थानक में
उपजै ते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्था में मरे ।

१६८ देवता का—

भुवनपति १०, पर्माधर्मी ५, बाणव्यन्तर १६, त्रिशूलका १०,
जोतषी १०, किल्विषी ३, लोकान्तिक ६, देवलोक १२, ग्रैवेयक ६,
देवलोक १२, ग्रैवेयक ६, अनुत्तर विमान ५, एवं ६६ जाति का
पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

भरत क्षेत्रमें ५१ पावै—

तिर्यञ्च ४८ मनुष्य का ३

जम्बुद्वीप में ७५ पावै—

२७ भरत क्षेत्र १, ऐरभरत १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १
रम्यकवास १, हेमवय १, अरुणवय १, महाविदेह १, यह नव
क्षेत्रका सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ६
४८ तिर्यञ्च का ।

लवण समुद्रमें २१६ पावै—

अन्तरद्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यञ्च का ।

धातकी खंड में १०२ पावै—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुणा ४८ तिर्यञ्च का ।

कालोदधि में ४६ पावै—

तिर्यञ्च का ४८ में से बादर तेज का २ टल्या ।

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में १०२ पावै—

धात की खण्डवत् जाणवो ।

ऊंचा लोक में १२२ पावै—

७६ देवता का ४६ तिर्यञ्च का ।

नीचा लोक में ११५ पावै—

भवनपति २० पर्माधामी ३० नारकी १४ तिर्यञ्च का ४८ मनुष्य
का ३ सर्व ११५ ।

तिर्छा लोक में ४२३ पावै—

३०३ मनुष्य का ४८ तिर्यञ्च का ३२ वाणव्यन्तर का
२० त्रिद्रुमका २० जोतिष्यां का ।

१	पहली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता भुजपर दल्यो
		गति ४०	ऊपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ दल्यो)
		गति ४०	ऊपरवत्
५	पांचवीं नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
६	छठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी को पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्

७	सातमी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता स्त्री बिना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ पर्माधामी १६ बानव्यंतर १० त्रिभूमका ५१ जातिकामें	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यच पृथ्वी १ अप्प १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण बिना
६	जोतपी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यच का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच, अकर्म भूमि का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरुण- वय, दह्या)
		गति ४६	ऊपरवत्
११	पहिला कल्विषिकमें	आगति ३०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच, ५ देव- कुरु ५ उत्तर कुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	ऊपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिकतीजा से आठवाँ ताँई का देवता में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच अपर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि ताँई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्म भूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यञ्च, १५ कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७६ लड़ी का और ६४ जातिका देवता एवं सब २४३ थया
		गति १७६	लड़ी का
१५	तेऊ बोउकाय में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ३६५	१७६ तो लड़ीका, ५६ अंतरद्वीप ५१ जाति- का देवता, १ पहलो नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलो ३६५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७६ तो लड़ी का, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्ध ताँई टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध ताँई का टल्या)

१६	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका में से तेज वाउ का ८ टट्या
		गति १७६	लड़ी का
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से, ६६ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ पर्माधामी १६ वाण- व्यन्तर, १० त्रिङ्गमका, १० जोतषी २ पहिलो दूजोदेवलोक, १ पहिलो कल्वि- षिक एवं ६४ का पर्यासा अपर्यासा
२२	हरीवास रस्यकवासका युगलिया में	आगति २०	अपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवतां में से १ पहिलो कल्विषिक टट्यो
२३	हेमवय अरुणवय का युगलिया में	आगति २०	अपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवतां में कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टट्यो
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी ५ असन्नी तिर्यञ्च
		गति १०२	५१ जाति का देवांका पर्यासा अपर्यासा

२५	केवल्यार्थ में	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा धर्म १५ कल्पिषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि ४ पहली से चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप्प बनस्पति
		गति ०	मोक्ष की
२६	तीर्थकरा में	आगति १११	३५ देवता बैमानिक ३ नरक पहली से
		गति ४६	मोक्ष की
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता ऊपरवत् १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी में जाय पदवी में मरे तो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नव ग्रैवेयक, ६ लोका- न्तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकीमें जाय
२९	बलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता ऊपरवत् नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर छै
३०	सम्यक दृष्टिमें	आगति ३६३	१७१ लड़ी का (तेउ वाउ का टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्मभूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी ३ बिकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मिथ्यादृष्टि में	आगति ३७१	१७६ लड़ी का, ६६ देवता, ८६ युगलिया नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता द्युया
३२	सममिथ्या दृष्टि में	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तीजे गुणठाणे मरे नहीं
३३	साधु में	आगति २७०	१७१ लड़ी का ६६ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, ६ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ी का ६६ देवता ६ नारकी एवं
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्याती जिम जाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद में	आगति २८५	६६ देवता, १७६ लड़ी का, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७६ तो लड़ी का, ६६ देवता ८६ युग- लिया, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी में	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तर का अपर्याप्ता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	ऊपरवत्
		गति ५५३	ऊपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का टल्या
६	पंडित वीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ी का में से, ६६ देवता का, ५ नारकी पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ६ नवग्रेवैयक ५ अनुत्तर वैमान का पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल परिणत वीथ में	आगति २७६	१७१ लड़ीका में से ६६ देवता, नारकी ६ पहली से
		गति ४२	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, का पर्याप्ता अपर्याप्ता
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लड़ीका में से, ६६ देवता, ८६ युगलियाँ, ७ नारकी एवं ३६३
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्मभूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २५० और ५ असन्नी तिर्यञ्च ३ विकलेन्द्री का पर्याप्ता ८ सर्व २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	ऊपरवत्
		गति २५०	६६ देवता, १५ कर्मभूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च ६ नारकी एवं १२५ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१०	मति श्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
११	विमङ्ग अज्ञान में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २४२	६४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ७ नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता
१२	चक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७६ लड़ी का, ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७६	लड़ी का
१४	समुच्चै अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २५२	६६ देवता, १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच ७ नारकी एवं १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७६ लड़ीका ६४ देवता
		गति १७६	लड़ी का
१८	संयोगी अणाहारिक	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ०	

१६	तेजस कारमाण में	आगति ३७१	ऊपरवत्.
		गति ५६३	सर्व
२०	बेके शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५ कर्मभूमि, ५ सन्नी, पृथ्वी १ पाणी २ वनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता रूक्ष्म साधारण दिना
२१	समुच्चै बेके शरीर में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८५	१७६ लङ्गी का ६६ देवता ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्णलेश्याको कृष्णलेश्यामें जावे तो	आगति ३१६	१७६ लङ्गीका ५१ जाति का देवता ८६ युगलिया ३ नारकी पाँचवीं छठी सातवीं
		गति ४५६	५१ जातिका देवता, ८६ युगलियाँ, ३ नारकी, इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८७ लङ्गीका १७६ सर्व ४५६
२४	नीललेश्याको नील में जावे तो	आगति ३१६	१७६ लङ्गी का, ५१ देवता, ८६ युगलियाँ ३ नारकी तीजी चौथी पाँचवीं
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी तीजी चौथी पाँचवीं)

२५	कापोत लेश्या को कापोत में जावे तो	आगति ३१६	ऊपरवत् पण नारकां पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी पहली से तीजी)
२६	तेजू लेश्याको तेजू में जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्यासा और १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच का पर्यासा अपर्यासा
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, तिर्यच ६४ जाति देवता का पर्यासा अपर्यासा पृथ्वी, अप्प, वनस्पति का अपर्यासा
२७	पद्म को पद्म लेश्यामें जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यच का पर्यासा अपर्यासा, नवग्रैवेयक १ दूजो किल्बिषि ३ देवलोक (पहिला से) का पर्यासा
		गति ६६	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच नव लोकान्तिक, ४ देवलोक (तीजे से) का पर्यासा अपर्यासा
२८	शुक्ल लेश्या को शुक्ल में जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच का पर्यासा अपर्यासा ४० और २१ देवलोक (छटा से सर्वार्थ सिद्धताई) १ किल्बिषिक का पर्यासा
		गति ८४	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यच, २१ देव- लोक ऊपरवत् १ तीजा किल्बिषी का पर्यासा अपर्यासा

इति दूजो गतागत को थोकड़ो

आठ कर्मों की १५८ प्रकृति को थोकड़ी

सूत्र श्री पद्मवर्णाजी पद तेष्वीत में कर्मबंध पद चाल्यो
ते अनुसार कर्म प्रकृति कहे छे ।

ज्ञानावरणीय की ५ दर्शनावरणीय की ६, वेदनीय
की २, मोहनीय की २८, आयुष्य की ४, नाम की १०३,
गोत्र की २, अन्तराय की ५, सर्व १५८ प्रकृति थयी ।

प्रथम—ज्ञानावरणीय कर्म ।

ज्ञानावरणीय कर्म की ५, प्रकृति—१ मति ज्ञाना-
वरणीय, २, श्रुति ज्ञानावरणीय, ३ अवधि ज्ञानावर-
णीय, ४ मनपर्यव ज्ञानावरणीय, ५ केवल ज्ञाना-
वरणीय ।

जीवरे छव बोलां करी ज्ञानावरणीय कर्म किम बंधे
ते कहे छै—१ ज्ञान नो तथा ज्ञानवन्त नो प्रत्यनीक
होवे, २ ज्ञान ने तथा ज्ञानवन्त ने निन्दवे, गोपवे तथा
हेलना करे, ३ ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी अन्तराय पाड़े,
४ ज्ञान ऊपरे तथा बहुश्रुति साधां ऊपरे द्वेष करे, ५
ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी आशातनां करे, ६ ज्ञान नो
तथा ज्ञानवन्त नो विसमवाद योग ते व्यभिचार

दिखावे । ए छव बोलां करी जीव के ज्ञानावरणीय कर्म बंधे । ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्महूर्त उत्कृष्टी ३० कोडाकोड़ सागरोपम । ए कर्म थकी जीव संसार मांहि हले । ए कर्म पाटी नी दृष्टान्त जाणवो । जिम आंख्यां आड़ी कपड़ा नी पाटी बांध्यां थी दीसे नहीं, तिम ज्ञानावरणीय कर्म करी जीवने ज्ञान उपजे नहीं ।

द्वितीय—दर्शनावरणीय कर्म ।

दर्शनावरणीय कर्म की ६ प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रा-निद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचलाप्रचला, ५ थीणोद्धी, ६ चक्षु दर्शनावरणीय, ७ अचक्षु दर्शनावरणीय, ८ अवधि दर्शनावरणीय, ९ केवल दर्शनावरणीय ।

सुख सूं आवे सुख सूं जागृत होवे ते निद्रा, दुःख सूं आवे दुःख सूं जागृत होवे ते निद्रानिद्रा, ऊभा बैठा निद्रा आवे ते प्रचला, चालतां निद्रा आवे ते प्रचला-प्रचला, थीणोद्धी निद्रा बलदेव सरीषो बल जागता मन में चिन्तवे ते निद्रा में करे, हाथी का दांत निद्रा मांहि उपाड़ कर ले आवे तेहने थीणोद्धी निद्रा कहीजे, ए निद्रा नो धणी मरी ने उत्कृष्टो सातवीं नारकी तेतीस सागर ने आयुष्ये जाय ने ऊपजे ।

जीवरे छव बोलां करी दर्शनावरणीय कर्म किम बंधे ते कहे छे—१ दर्शन नो तथा दर्शनवन्त नो प्रत्य-

नीक होवे, २ दर्शन ने तथा दर्शनवन्त ने निन्दवे, गोपवे तथा हेलनाकरे, ३ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी अन्तराय पाडे, ४ दर्शननी तथा दर्शनवन्तनी आशातना करे, ५ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी विसमवाद योगते व्यभिचार दिखावे ६ दर्शन तथा दर्शनवन्त ऊपरे द्वेष करे । ए छव बोलां करी जीव दर्शनावरणीय कर्म बांधे । ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्महूर्त उत्कृष्टी ३० कोड़ा-कोड़ सागरोपम । ये कर्म थकी जीव संसार मांही रूले । जीव जिहां जावे तिहां केडै लाग्यो आवे । ए कर्म मोक्ष जाता जीवने प्रतिहार (पोलियो) समान छै । जिम राजा सूं भेंटवा जातां प्रतिहार जावा न देवे तिम ए कर्म थकी जीव ने दर्शन ऊपजे नहीं, मोक्ष पावे नहीं ।

तृतीय—वेदनीय कर्म ।

वेदनीय कर्म की दोय प्रकृति—१ शाता वेदनीय २ अशाता वेदनीय । शाता वेदनीय-तिणसूं सुख भोगवे । अशातावेदनीय-तिणसूं दुःख भोगवे ।

पहले जीवरे शातावेदनीय कर्म किम बंधे ते कहे छे ।

प्राण, भूत, जीव, सत्त्व नी अनुकम्पा करे । अनुकम्पा किम करे ते ओलखावा भणी छव बोल कहे छै ।

घणा प्राण, भूत, जीव, सत्त्व ने दुःख उपजावे नहीं १, शोग उपजावे नहीं २, भुरावे नहीं ३, आंसूं नखावे

नहीं, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे नहीं ५, परितापना उपजावे नहीं ६, ए छव बोलां करी जीव शातावेदनीय कर्म बांधे संसार ना सुख भोगवे ।

शातावेदनीय कर्म ना दोय भेद छे-१ इर्यावही, २ सम्पराय ।

इर्यावही नी स्थिति, जघन्य ने उत्कृष्टी २ समा नी ।
सम्पराय नी स्थिति जघन्य १२ मुहूर्त्त उत्कृष्टी १५
कोड़ाकोड़ सागरोपम ।

जीवरे अशातावेदनीय कर्म किम बंधे ते कहे छै ।

प्राण, भूत, जीव, सत्व नी अनुकम्पा न करे ।
अनुकम्पा किम न करे ते ओलखावा भणी छव बोल
कहे छे-—

पर जीवां ने दुःख उपजावे १, शोग उपजावे २,
भुरावे ३, आंसू नखावे ४, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे
५, परितापना उपजावे ६, ए छव बोलां करी जीव
अशातावेदनीय कर्म बांधे ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य एक सागरा रा सातिया
तीन भाग तिण मांहे एक पत्थ रो असंख्यातवों भाग
ऊणो, उत्कृष्टो ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम ताई जीव ने
रुलावे । ए कर्म मधु खरड्या खड्ग नी धारा सरीपा
जाणवो । धारा चाटतां मधु ना स्वाद आवे ते शाना-

वेदनीय कर्म, जीभ कट जावे ते अशातावेदनीय कर्म जाणवो ।

चतुर्थ—मोहनीय कर्म ।

मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति—संजल नो क्रोध, मान, माया, लोभ ४, प्रत्याक्षानी क्रोध, मान, माया, लोभ ४, अप्रत्याक्षानी क्रोध, मान, माया, लोभ ४, अनन्तानु बंधीय क्रोध, मान, माया, लोभ ४, ए १६ कषाय कही छै ।

हिवे नव नोकषाय कहे छै—हास्य १७, रति १८, अरति १९, भय २०, शोग २१, दुर्गच्छा २२, पुरुष वेद २३, स्त्री वेद २४, नपुंसक वेद २५, ए पच्चीस प्रकृति चारित्र मोहनीय नी जाणवी । हिवे तीन प्रकृति दर्शनमोहनीय नी कहे छै—सम्यत्व मोहनीय २६, मिश्रमोहनीय २७, मिथ्यात मोहनीय २८, ए अठ्ठाईस मोहनीय कर्म नी जाणवी ।

हास्य कहतां हंसे ते, रति कहतां असंयम में राजीपणो, अरति कहतां संयम में विराजीपणो असुख पावे, भय कहतां जीव जिहां तिहां डरपावे, शोग कहतां जे सुवा गया नो जीव घणो दुःख बिसरे नहीं, दुर्गच्छा कहतां जीव माठी वस्तु देखीने निन्दा दुर्गच्छा करे, पुरुष वेद स्त्री ऊपरे अभिलाषा उपजे, स्त्री वेद ते पुरुष

ऊपरे अभिलाषा उपजे, नपुंसक वेद ते स्त्री पुरुष दोनूँ
ऊपरे अभिलाषा उपजे । पुरुष नी अभिलाषा घास ना
पूला नी अग्नि समान जाणवी । स्त्री नी अभिलाषा
छाली ना मींगणा की उन्ही अग्नि समान जाणवी ।
नपुंसक नी अभिलाषा नगर नी दाह नी अग्नि समान
जाणवी ।

मोहनीय कर्म किम बांधे ते कहे छै—तीव्र क्रोध
करी १, तीव्र मानं करी २, तीव्र माया करी ३, तीव्र
लोभ करी ४ (ए तीव्र चौकडी कषाय रूप चारित्र मोह-
नीय की कही) । नव नोकषाय रूप तीव्र चारित्र मोहनीय
करी ५, तीन तीव्र दर्शन मोहनीय करी ६, ए छव
प्रकारे जीव मोहनीय कर्म बांधे । चारित्र मोहनीय कर्म
नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ४० कोड़ाकोड़
सागरोपम । दर्शन मोहनीय कर्म नी स्थिति जघन्य
अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ७० कोड़ाकोड़ सागरोपम ताई जीव
ने संसार मांही रुलावे ।

ए कर्म मदिरापान समान जाणवो, जिम मदिरा
पियां थी जीव ने भली भूंडी वस्तु नो विवेक विचार न
होवे तिम मोहनीय कर्म ने उदय थी जीव म्हारो म्हारो
करतो जग मांहीं फिरे, बलि ऊंधो सरधे ।

पंचम—आयुष्य कर्म ।

आयुष्य कर्म नी ४ प्रकृति—नरकायु १, तिर्यचायु २, मनुष्यायु ३, देवायु ४,

नरकायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—महाआरम्भ १, महापरिग्रह २ पंचेन्द्री जीवां री घात ३, मांस नो आहार ४

तिर्यचायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—माया कपटाई करे १, माया ढांकवा ने माया ले गूढ़ माया करे २, झूठा बचन बोले ३, कूड़ा तोला कूड़ा मापा करे ४

मनुष्यायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—प्रकृति स्वभाव भद्रिक होवे १, प्रकृति स्वभाव विनीत होवे २, मानु-क्रोशते दया रा परिणाम राखे ३, अमच्छर भाव जे दूसरां रो गुण सहन करे ४ ।

देवायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—सराग संयम पाले १, आवक पणो पाले २, बाल तप करे ३, अकाम निर्जरा करे ४ ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्भूहूर्त उत्कृष्टो ३३ सागर कोड़ पूर्वरे तीजे भाग अधिक नो जाणवो । ए कर्म खोड़ा सरीषा जाणवो, जिम खोड़ा मांही घाल्यो मनुष्य निकल सके नहीं तिम आयुष्य कर्म बिन भोग्यां मरे नहीं, खयायां बिन संसार छूटे नहीं ।

षष्ठम्—नाम कर्म ।

नाम कर्म नी मूल प्रकृति ४२, भेदान्तरे ६७, भेदान्तरे ६३, भेदान्तरे १०३ ।

प्रथम मूल प्रकृति ४२ कहै छै—१४ पिण्ड, ८ प्रत्येक, १० व्रस, १० थावर एवं सर्व ४२ प्रकृति ।

तिष्ठ में १४ पिण्ड प्रकृति कही, पिण्ड कहतां एक प्रकृतिमें घणा भेद थाय ते पिण्ड कहीजे ते कहे छै—
(१) गति नाम ४, (२) जाति नाम ५, (३) शरीर नाम ५, (४) शरीर के अङ्गोपाङ्ग नाम ३, (५) शरीर का बन्धन ५, (६) शरीर संघातन नाम ५, (७) संघयन नाम ६, (८) संठाण नाम ६, (९) वर्ण नाम ५, (१०) गंध नाम २, (११) रस नाम ५, (१२) स्पर्श नाम ८, (१३) अनुपूर्वि नाम ४, (१४) विहायगति नाम २, हिवे आठ प्रत्येक प्रकृति कही, प्रत्येक कहतां एक प्रकृति में एक भेद थाय ते प्रत्येक प्रकृति ते कहे छै—१५ परा-घात नाम (आप जीते पेलो घात पावे), १६ उश्वास नाम (श्वाशोश्वाश सुख से लेवे), १७ आताप नाम (आप शीतल स्वभावी होवे दूसरो आपने देखने तपाय-मान् होवे) १८ उद्योत नाम (शरीर की क्रान्ति-ज्योति उज्ज्वल होवे), १९ अगुरु लघु नाम (अधिक हलको वा अधिक भारी नहीं होवे, २० तीर्थकर नाम (तीर्थकर

पद नै प्राप्त करने वालो), २१ निर्माण नाम (शरीर फौड़ा फुणगला रहित होवे), २२ अपघात नाम (आप हार पावे दूसरो जीते), ए आठ प्रत्येक प्रकृति कही । हिवे त्रस दशक ना दश नाम कहे छै—२३ त्रस नाम (हालन चालन होवे ते) २४ बादर नाम (नेत्रद्वारा देखने में आवे), २५ प्रत्येक नाम (एक शरीर में एक जीव होवे), २६ पर्याप्ता नाम (पूरी प्रजा पावे ते), २७ स्थिर नाम (शरीर ना अवयव दृढ़ होवे), २८ शुभ नाम (सुन्दर शरीर होवे). २९ सौभाग्य नाम (सर्व ने बल्लभकारी), ३० सुस्वर नाम (मधुर स्वर होवे), ३१ आदेय नाम (बचन प्रिय और प्रमाणिक होवे), ३१ यशोकीर्ति नाम (जग में यश कीर्ति होवे) । थावरदशक ना दश नाम कहे छै—३३ स्थावर नाम (हालन चालन की शक्ति नहीं होवे), ३४ लक्ष्म नाम छोटी शरीर होवे चक्षु इन्द्री के दृष्टिगोचर नहीं होवे), ३५ साधारण नाम (एक शरीर में अनन्ता जीव होवे), ३६ अपर्याप्ता नाम (अपूर्ण पर्याय नो धारक), ३७ अस्थिर नाम (ढीलो शरीर होवे), ३८ अशुभ नाम (खराब शरीर होवे), ३९ दुर्भाग्य नाम (अप्रियकारी), ४० दुस्वर नाम (खराब स्वर होवे), ४१ अनादेय नाम (उस बचन ने कोई माने नहीं), ४२ अयशोकीर्ति नाम (जग में अजश अकीर्ति

होवे भलो काम करे तो भी अपजश होवे), ए० ४२ मूल प्रकृति कही ।

हिवे नाम कर्म नी ६३ प्रकृति कहे छै ।

पूर्वे १४ पिण्ड प्रकृति कही तिणरा ६५ मेद थया ते कहे छै—गति नाम चार—नरक, तिर्यच, मनुष्य, देवता ४, जाति नाम पांच—एकेन्द्री, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री; पंचेन्द्री ६, शरीर नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक, तैजस, कर्मण १४, अङ्गोपांग नाम तीन—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक (तैजस, कर्मण शरीरः सूक्ष्म छै तिण कारणसे अङ्गोपांग होवे नहीं), शरीर का बंधन नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक तैजस, कर्मण २२, संघातन नाम पांच—औदारिक, बैक्रिय, आहारिक, तैजस कर्मण (जैसे बुहारी सुं बिखरोड़ा घास ना तृणा ने एकत्र करे ते संघातन) २७, संठाण नाम छव—समचतुरस संठाण (सर्वाङ्गोपांग पूर्ण प्रमाणोपेत शरीर), न्यग्रोध परिमण्डल संठाण. (बड़ के समान नाभी ऊपर अच्छो और नीचे खराब शरीर होवे), सादि संठाण (प्रथम नीचे को शरीर अच्छो ऊपर को शरीर खराब), बामन संठाण (ठिंगन शरीर), कुब्ज संठाण कुबडो), हूण्डक संठाण (आधे जले मुरदे जैसा शरीर) ३३, संघयण नाम छव—वज्र ऋषभ नाराच

संघयन (वज्र खीली ऋषभपादियो नाराच बंधन इसो शरीर नो बंधन होवे तो वज्र ऋषभ नाराच संघयन) ऋषभ.नाराच संघयन (जिन में खोली नहीं होवे), नाराच संघयन (जिन में पादियो नहीं होवे), अर्धनाराच संघयन (आधो मरकट बंध), केलको संघयन (फक्त कीली रूप अटको होवे), ३६ छेवटो संघयन (अलग अलग हड्डियां होवे) ३६, वर्ण नाम पांच—कालो, पीलो नीलो, रातो, धोलो, ४४, गंध नाम दोय—सुगंध, दुर्गंध ४६, रस नाम पांच—खट्टो मीठो, कड़वो, कषायलो, तीखो ५१, स्पर्श नाम आठ—हलको, भारी, खरदरो, सुहालो, लूखो, चोपड्यो, ठण्डो, ऊन्हो ५६, अनुपूर्वि नाम चार—नरक, तिर्यच, मनुष्य, देवता ६३ विहाय गति (आकाश में गति करने योग्य शरीर-वालो) नाम दोय—प्रशस्त विहाय गति, अप्रशस्त विहाय गति ६५,

पूर्वे २८ प्रकृति कही—१० त्रस की, १० थावर की, ८ प्रत्येक एवं सर्व ६३,

हिवे नाम कर्म नी १०३ प्रकृति ना भेद कहे छै—

ग्रन्थान्तरे ५ बन्धनरे ठिकाणो बन्धन १५ कहा छै तिण रा नाम (१) औदारिक बन्धन, (२) औदारिक तैजस बन्धन, (३) औदारिक कार्मण बन्धन, (४)

औदारिक तैजस कर्मण बन्धन, (५) बैक्रिय बैक्रिय बन्धन, (६) बैक्रिय तैजस बन्धन, (७) बैक्रिय कर्मण बन्धन, (८) बैक्रिय तैजस कर्मण बन्धन, (९) आहारिक आहारिक बन्धन, (१०) आहारिक तैजस बन्धन, (११) आहारिक कर्मण बन्धन, (१२) आहारिक तैजस कर्मण बन्धन, (१३) तैजस तैजस बन्धन, (१४) तैजस कर्मण बन्धन, (१५) कर्मण कर्मण बन्धन । ए १५ बन्धन रा भेद कह्या तिवारे १० प्रकृति बधी, पूर्वे ६३ कही, सब मिल १०३ हुई ।

हिवे ६७ प्रकृति ना भेद कहे छै—

चार गति नाम ४, पांच जाति नाम ६, पांच शरीर नाम १४, तीन शरीर अङ्गोपांग नाम १७, छव संघयण नाम २३, छव संठाण नाम २६, वर्ण नाम ३०, गंध नाम ३१, रस नाम ३२, स्पर्श नाम ३३, चार अनुपूर्वि नाम ३७, दोय विहाय गति नाम ३६, आठ प्रत्येक प्रकृति ४७, दश त्रस की ५७, दश थावर की ६७, उदय उदेरणा ने विषे सामान्य थी वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, वर्णादिक ना २० प्रकृति नी ४ प्रकृति कही, बंधन ना १५, संघातन ना ५, ए वीस बोल पांच शरीर मुद्धे गिनिया, ६७ प्रकृति हुई ऊपर प्रमाणे ।

नाम कर्म ८ प्रकारे किस बंधे ते कहे छै—

नाम कर्म ना दोय भेद—१ शुभ नाम, अशुभ नाम । शुभ नाम कर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो सरल [काया करि दूसरां ने बंचै (ठगै) नहीं,] २ भाव सरल ३ भाषा नो सरल, ४ अविसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो बोले विपरीत पणो न करे) ।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो असरल (काया करि बीजा ने बंचै), २ भावनो असरल, ३ भाषा नो असरल, ४ विसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो नहीं बोले विपरीत पणो करे) ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य द मुहूर्त उत्कृष्टी २० कोड़ाकोड़ सागरोपम ताई जीव ने रूलावे, ए कर्म चितारा सरीषा जाणवो जिम चितारो अनेक प्रकार ना चित्राम करे तिम नाम कर्म ने उदय थी नया नया रूप करे ।

सप्तम—गोत्र कर्म ।

गोत्र कर्म नी दोय प्रकृति—१ ऊंच गोत्र, २ नीच गोत्र । जीवरे द प्रकारे ऊंच गोत्र किम बंधे ते कहे छै—

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुरई, ९ आठ बोलां नो मद अहंकार नहीं करे तो जीवरे ऊंच गोत्र बंधे ।

जीवरे द प्रकारे नीच गोत्र कर्म किम बंधे ते कहे छै—

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ६ तप, ६ सूत्र,
७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां नो मद अहंकार,
करे तो जीवरे नीच गोत्र कर्म बंधे ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य ८ सुहूर्त उत्कृष्टी २०
कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म कुम्हार सरीषा जाणवो
जिम कुम्हार मडीना पिण्ड थकी नाना प्रकार ना जिसा
चिन्तवे तिसा भाजन करे, तिम ए जीव चारुं गति मांहे
नया नया भव (जंच नीच गोत्र) करे ।

अष्टम—अन्तराय कर्म ।

अन्तराय कर्म नी ५ प्रकृति—१ दानान्तराय, २
लाभान्तराय ३ भोगान्तराय, ४ उप भोगान्तराय; ५
वीर्यान्तराय ।

जीवरे ५ प्रकारे अन्तराय कर्म किम बंधे ते
कहे छै—

१ दाननी, २ लाभनी, ३ भोगनी, ४ उपभोगनी,
५ वीर्यनी ए पांच बोलां नी जीव अन्तराय देवे तो
अन्तराय कर्म बंधे ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त
उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म राजाना
भण्डारी सरीषा जाणवो जिम राजा भण्डारी ने आदेश
देवे, अमुक वस्तु दो, तिचारे भण्डारी देवे तो राजा
पामें, तिम अन्तराय कर्म गाढो विषम जाणवो । ए

अन्तराय कर्म ना उदय थी सर्व भली वस्तु नी प्राप्ति नहीं होवे ।

ए आठों कर्म नी १५८ प्रकृति जाणवी । प्रकृति सर्व खपायां सूं जीव मुक्ति पहुंचे । एहवो आपना कर्म ना विपाक कडुवा, कठोर, भारी जाणी ने सदाई चिंतवना मुक्ति पन्थ पहुंचवा भणी बारह भावना भावे, पंच महाव्रत, बारह व्रत, दया पाले, दान देवे, देव गुरुनी सेवा भक्ति करे, तो जीव थोड़ा काल मांहि घणा भवस्थिति खपाय ने निर्मल सम्यक्त्व चारित्रादि अराधी केवल ज्ञान उपजावी मुक्ति गति पहुंचे । ते भणी रे जीव सदा काल धर्म ने विषै उद्यम करवो ।

॥ इति ॥



आठ कर्म कितनी प्रकारे भोगवे ।

(१) ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकारे भोगवे—१ श्रुत इन्द्री को आवरण (कानां सूं शब्द सुणीजे नहीं), २ श्रुत विज्ञानावरण (शब्दमें समझ सके नहीं), ३ चक्षु इन्द्री को आवरण (आंखा सूं रूप देख सके नहीं), ४ चक्षु विज्ञानावरण (रूप में समझ सके नहीं), ५ घ्राण इन्द्री को आवरण (गंध ग्रहण कर सके नहीं), ६ घ्राण विज्ञानावरण (गंध में समझ सके नहीं), ७ रस इन्द्री को आवरण (रस ग्रहण कर सके नहीं), ८ रस विज्ञानावरण (रस में समझ सके नहीं), ९ स्पर्श इन्द्री को आवरण (स्पर्श ग्रहण कर सके नहीं), १० स्पर्श विज्ञानावरण (स्पर्श का भेद शीतोष्णादि में समझ सके नहीं) ।

(२) दर्शनावरणीय कर्म ६ प्रकारे भोगवे—१ निद्रा २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, प्रचलाप्रचला, ४ थीणोद्धी, ५ चक्षु दर्शनावरणीय (आंखां सूं अच्छी तरह देखे नहीं), ७ अचक्षु दर्शनावरणीय (आंखां बिना चारों इन्द्रिय मन सूं सम्यक् प्रकार देख सके नहीं), ८ अवधि दर्शनावरणीय (अवधि दर्शन उपजे नहीं), ९ केवल दर्शनावरणीय (केवल दर्शन उपजे नहीं) ।

(३) वेदनीय कर्म १६ प्रकारे भोगवें—वेदनीय कर्म का दोय भेद—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय ।

शाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे—१ मन गमता शब्द, २ मन गमता रूप, ३ मन गमता गंध, ४ मन गमता रस, ५ मन गमता स्पर्श, ६ मन रो सुख, ७ भलो वचन, ८ कायारो सुख ।

अशाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे—१ अमनोज्ञ शब्द, २ अमनोज्ञ रूप, ३ अमनोज्ञ गंध, ४ अमनोज्ञ रस, ५ अमनोज्ञ स्पर्श, ६ मन रो दुःख, ७ खोटा वचन, ८ काया रो दुःख ।

(४) मोहनीय कर्म २८ प्रकारे भोगवें, मोहनीय कर्म का दोय भेद—१ दर्शन मोहनीय, २ चारित्र मोहनीय ।

दर्शन मोहनीय का ३ भेद—१ सम्यक्त्व मोहनीय, २ मिथ्यात्व मोहनीय, ३ मिश्र मोहनीय ।

चारित्र मोहनीय का दोय भेद—१ कषाय, २ नो कषाय ।

कषाय का १६ भेद—

अनन्तानु बंधीय को चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ ।

क्रोध को स्वभाव=पत्थर की तेड़, २ मान को स्वभाव=पत्थर को थांभो, ३ माया को स्वभाव=वांस की जड़, ४ लोभ को स्वभाव=किरमची रेशम को रङ्ग, इन चारों की गति नरक की, स्थिति जाव जीव की, घात करे सम्यक्त्व की ।

अप्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ ।

१ क्रोध को स्वभाव=तलाव की तेड़, २ मान को स्वभाव=हाथी दांत को थांभो, ३ माया को स्वभाव=मिठें को सींग, ४ लोभ को स्वभाव=नगर को कीच, इन चारों की गति तिर्यच की, स्थिति एक वर्ष की, घात करे श्रावक का वारा व्रत की ।

प्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ ।

१ क्रोध को स्वभाव=रेत में लकीर, २ मान को स्वभाव=बैत को थांभो, ३ माया को स्वभाव=चालना बैल को मात्रो, ४ लोभ को स्वभाव=गाडा को खञ्जन, इन चारों की गति मनुष्य की, स्थिति चार महीना की, घात करे साधपणे की ।

संजल को चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ ।

१ क्रोध को स्वभाव=पानी में लकीर, २ मान को स्वभाव=घास को थांभो, ३ माया को स्वभाव=बांस की छाल, ४ लोभ को स्वभाव=हल्दी पतंग को रङ्ग, इन चारों की गति देवता की, स्थिति पन्द्रह दिन की, घात करे यथाख्यात चारित्र की ।

नौकषाय का ६ भेद—१ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोग, ६ दुर्गच्छा, ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, ९ नयंसक वेद ।

(५) आयुष्य कर्म ४ प्रकारे भोगवे—१ नारकी रो नारकी पणे, २ तिर्यच रो तिर्यश्च पणे, ३ मनुष्य रो मनुष्य पणे, ४ देवता रो देवता पणे ।

(६) नाम कर्म २८ प्रकारे भोगवे, नाम कर्म का दोय भेद—१ शुभ नाम कर्म, २ अशुभ नाम कर्म ।

शुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे—१ इष्टकारी शब्द, २ इष्टकारी रूप, ३ इष्टकारी गंध, ४ इष्टकारी रस, ५ इष्टकारी स्पर्श, ६ इष्टकारी गति, (चलने की), ७ इष्टकारी स्थिति (आयुष्य), ८ इष्टकारी लावण्यता, ९ इष्टकारी यशोकीर्ति, १० इष्टकारी उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, ११ इष्टकारी स्वर, (बोली) १२ कान्तकारी स्वर, १३ प्रियकारी स्वर, १४ मनोज्ञ स्वर ।

अशुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे—१ अनिष्टकारी शब्द, २ अनिष्टकारी रूप, ३ अनिष्टकारी गंध, ४ अनिष्टकारी रस, ५ अनिष्टकारी स्पर्श, ६ अनिष्टकारी गति, ७ अनिष्टकारी स्थिति, ८ अनिष्टकारी लावण्यता, ९ अनिष्टकारी कीर्ति, १० अनिष्टकारी उत्थान कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, ११ हीन स्वर, १२ दीन स्वर, १३ अनिष्ट स्वर, १४ अकन्त स्वर ।

(७) गोत्र कर्म १६ प्रकारे भोगवे, गोत्र कर्म का दोय भेद—१ ऊंच गोत्र २ नीच गोत्र ।

ऊंच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई (बड़ापन) ए आठ बोलां को मद नहीं करे तो ऊंच गोत्र भोगवे ।

नीच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां को मद करे तो नीच भोगवे ।

(८) अन्तराय कर्म ५ प्रकारे भोगवे—१ दान, २ लाभ, ३ भोग, ४ उपभोग, ५ वीर्य, ए पांच बोलां की अन्तराय देवे तो अन्तराय पावे, अन्तराय नहीं देवे तो नहीं पावे ।

आठ कर्मरों १५८ प्रकृति ऊपर लिखी है, तिणमें नाम कर्म नी ६३ प्रकृति लेखव्यां १४८ प्रकृति थाय है, ए १४८ प्रकृति ना जघन्य उत्कृष्टी स्थिति ने अबाधा काल नो यन्त्र लिखिये है ।

ज्ञानावरणीय कर्म की ५ तथा अन्तराय कर्म की ५

अंक	प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आवे)
१०	ज्ञानावरणीय कर्म की ५ अन्तराय कर्म की ५	अन्तर्मुहूर्त	३० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	३००० वर्ष

दर्शनावरणीय कर्म की ६

अंक	दर्शनावरणीय कर्म की ६	अपरवत्	अपरवत्	अपरवत्
१४	चक्षु दर्शनावरणाय १, अचक्षु दर्शनावरणीय २ अवधि दर्शनावरणीय ३, केवल दर्शनावरणीय ४	अपरवत्	अपरवत्	अपरवत्
१५	निद्रा १, निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४, थीणोद्धि ५	अपरवत्	अपरवत्	अपरवत्

वेदनीय कर्म की २

२०	१	अशातावेदनीय १	उपरवत्	उपरवत्	उपरवत्
२१	१	शातावेदनीय का २ भेद— (१) इययिही (२) सम्प्राय	दोय समानी	दोय समानी	१५०० वर्ष

मोहनीय कर्म की २८

२२	१	सम्यक्त्व मोहनीय	अन्तर्मूहर्त	६६ सागर जाफेरी	...
२३	१	मिथ्यात्व मोहनीय	एक सागर तिणमें एक पत्यरो असंख्यातमों भाग उणो	७० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	७००० वर्ष
२४	१	मिश्र मोहनीय	अन्तर्मूहर्त	अन्तर्मूहर्त	...
२५	१२	प्रत्याक्षानी—क्रोध, मान, माया, लोभ, अपत्याक्षानी—क्रोध, मान, माया, लोभ, अन्तानुबंधीय— क्रोध, मान, माया, लोभ	एक सागर सातिया चार भाग तिणमें एक पत्यरो असं- ख्यातमों भाग उणो	४० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	४००० वर्ष

अङ्क	प्रकृति वा नाम	लघन्य स्थिति	वस्तुस्थि स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नदों आवे)
५०	संजलनो क्रोध, मान, माया, लोभ,	क्रोधरी २ मास, मानरी १ मास, मायारी ॥ मास, लोभरी अन्तर्मुहूर्त	५० क्रोडाक्रोड़ सागर	४००० वर्ष
५१	स्त्री वेद	एक सागररा सातिया डोढ भाग तिणमें एक पत्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१५ क्रोडाक्रोड़ सागर	१५०० वर्ष
५२	पुरुष वेद	आठ वर्ष	१० क्रोडाक्रोड़ सागर	१००० वर्ष
५३	नपुंसक वेद, अरति, भय, शोक दुर्गच्छा	एक सागररा सातिया दोय भाग तिणमें एक पत्यरो असंख्यातमों भाग उणो	२० क्रोडाक्रोड़ सागर	२००० वर्ष
५४	हास्य, रति	एक सागररो सातियो एक भाग तिणमें एक पत्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१० क्रोडाक्रोड़ सागर	१००० वर्ष

आयुष्य कर्म की ४

५१	नरकायु, देवायु	दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक	३३ सागर क्रोड़ पूर्वरो तीजो भाग अधिक (हारलो भव आश्रय)
५२

५३	२	तिर्यचायु मनुष्यायु	अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य क्रोड़ पूर्वरो तीजो भाग अधिक
नाम कर्म की ६३				
५६	६	नरकगति, नरकानुपूर्वि, वैक्रिय नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन)	एक हजार सागररा सातिया क्षोथ भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	२० क्रोड़ाक्रोड़ सागर २००० वर्ष
६१	२	तिर्यचगति तिर्यचानुपूर्वि	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो
६३	२	मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वि	सर्व	स्त्री वेद जिम जाणवो
६५	२	देवगति, देवानुपूर्वि	एक हजार सागररो सातियो एक भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	१० क्रोड़ाक्रोड़ सागर १००० वर्ष
७७	१२	एकेन्द्री जात, पंचेन्द्री जात, औदारिक नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन) तैजस, कार्मण दोनां नो तुक (शरीर, बंधन, संघातन)	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो
८०	३	बेइन्द्री जात, तेइन्द्री जात, चौइन्द्री जात	एक सागररा पैंतीसा नव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	१६ क्रोड़ाक्रोड़ सागर १८०० वर्ष

अंक	प्रकृति ना नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधा काल (इतने काल उदय नहीं आये)
८५	आहारिक नो चोक (शरीर, बंगोषांग, बंधन, संघातन), तीर्थंकर नाम	अन्तो क्रोड़ाक्रोड़ सागर	अन्तो क्रोड़ाक्रोड़ सागर	...
८७	वज्रभूषण नाराच संघयन, समचतुरस संठाण	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
८६	भूषण नाराच संघयन न्यग्रोध परिमण्डल संठाण	एक सागररा पेतीसा छव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	१२ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१२०० वर्ष
८१	नाराच संघयन, साविज्य संठाण	एक सागररा पेतीसा सात भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	१४ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	२४०० वर्ष
८३	अर्ध नाराच संघयन, चामन संठाण	एक सागररा पेतीसा आठ भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग उणो	१६ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१६०० वर्ष
८५	किलक संघयन कुब्ज संठाण	सर्व तीन	त्रिकलेन्द्री जिम जाणवो	
८७	छेवटो संघयन हुण्डक संठाण	सर्व	नपुंसक चेद जिम जावणो	

सं०	सं०	शुद्ध वर्ण, मधु रस	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१०१	२	पीलो वर्ण, खाटो रस	एक सागररा अठाइसा पांच भाग तिणमें एक पल्यरो असां-ख्यातमों भाग उणो	१२॥ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१२५० वर्ष
१०३	२	लाल वर्ण, कपायलो रस	एक सागररा अठाइसा छव भाग तिणमें एक पल्यरो असां-ख्यातमों भाग उणो	१५ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१५०० वर्ष
१०५	२	नीलो वर्ण, कड़वो रस	एक सागररा अठाइसा सात भाग तिणमें एक पल्यरो असां-ख्यातमों भाग उणो	१७॥ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१७५० वर्ष
१०७	२	कालो वर्ण, तीखो रस	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
१०८	२	सुगन्ध, प्रशस्त विहाय गति	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१११	२	दुर्गन्ध, अप्रशस्त विहाय गति	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११५	४	खरदरो, भारी, ठण्डो, लूखो	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११६	४	सुंहालो, हलको, उन्हो चोपड्यो	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१२६	७	पराघात, उखास, आत्ताप, उद्योत, अगुरुलघु, निर्मान, उपघात	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	

अङ्क	प्रकृति ना नाम	जवन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अवाधाकालः (इतने काल उदय नहीं आवे)
१२६	३ सुक्ष्म, साधारण, अपर्याप्ता	सर्व तीन	विकलेन्द्री जिम जा णवो	
१४०	११ तप्त, बाधर, प्रत्येक पर्याप्ता स्थावर, अस्थिर, अशुभ दुर्भाग्य दुःखर, असादेय, अयशःकीर्ति	सर्व	नपुंसक वेद जिम जा णवो	
१४५	५ स्थिर, शुभ, शौभाग्य, सुखर, आदेय	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१४६	१ यशःकीर्ति	८ मुहूर्त	१० क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१००० वर्ष

गोत्र कर्म को २

१४७	१ उच्च गोत्र	ऊपरवत्	ऊपरवत्	ऊपरवत्
१४८	१ नीच गोत्र	सर्व	नपुंसक वेद जिम जा णवो	

नोट—ऊपरे यन्त्र दियो तिकेमें सर्व स्थिति समुच्चय जीव आश्री छे । कर्म प्रकृति के शोकहे के ऊपर में लिख्यो छे कि “श्री पञ्चवर्णाजी पद २३में के अनुसारो कहे छे” ते कितनोक बातां दूसरा सूत्र तथा ग्रन्थांसे संग्रह करने लिखी छे ।

॥ यह उत्कृष्टो अवाधाकाल छे । कर्म बन्ध कियों बाद उदय में आवे तिकेरे बिचला काल ने अवाधाकाल कस्यो ।

अथ काय स्थिति ।

न०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
१	जीवको जीव रहै तो	सदाकाल रहै	सदाकाल रहै	०	०
२	नारकी को नारकी रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
३	तिर्यच को तिर्यच रहै तो	अतर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सागर जाभेरो
४	तिर्यचणी की तिर्यचणी रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
५	मनुष्यरो मनुष्य रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
६	मनुष्यणी री मनुष्यणी रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
७	देवता को देवता रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	एवम्	अनन्तो काल
८	देवीरी देवी रहै तो	१० हजार वर्ष	५५ पल्य	एवम्	अनन्तो काल
९	सिद्धा को सिद्धा रहै तो	साइया	अपञ्चसिया	०	०

नारकी सँ लगाय ने देव्यां ताई ए ७ बोल अपर्याप्ता रहै तो ज० ३० अन्तर्मुहूर्त्त । नारकी देवता रो पर्याप्ता रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ३० ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

देव्यां को पर्याप्ता रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ३० ५५ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी को पर्याप्ता रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टी ३ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

न०	कायस्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य अंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
१०	सइन्द्रियै को सइन्द्रियो रहै तो	अणाइअप-जवसिया	अणाइया सपजवसिया	०	०
११	एकेन्द्री रो एकेन्द्री रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन	अन्तर्मुहूर्त्त	२ हजार सागर जाभेरो
१४	बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ए ३	एवम्	संख्यातो काल	एवम्	अनन्तो काल
१५	पंचेन्द्री को पंचेन्द्री रहै तो	एवम्	१ हजार सागर जाभेरो	एवम्	अनन्तो काल
१६	अणेन्द्री को अणेन्द्री रहै तो	साइया	अपजवसिया	०	०

सं इन्दि जाव पंचेन्दिया ताई अपर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो अन्तर्मुहूर्त्त ।

सं इन्दिया पंचेन्दिया को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० प्रत्येक एक सौ सागर जाभो ।

एकेन्दिया को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टा, संख्यातां हजार वर्ष ।

बेइन्दिया को पर्याप्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता वर्ष ।

तेइन्दिया को पर्याप्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता दिन रात

चौइन्द्री को पर्याप्तो रहै तो ज० अन्तर्मुहूर्त्त उ० संख्याता मास ।

न०	कायस्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य आंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
१७	सकायी रो सकायी रहै तो	अणाइया अपजवसिया	अणाइया सपजवसिया	०	०

२१	पृथ्वी । अप्प । तेउ । वाउ ए४	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अंतर्मुहूर्त्त	अनतो काल
२२	वनस्पति को वनस्पति रहै तो	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असख्यातो काल
२३	तस को तस रहै तो	एवम्	२ हजार सागर जाभेरो	एवम्	अनतो काल
२४	अकायी रो अकायी रहै तो	आद छि	अंत नहीं	०	०

सकाई जाव तसकाय ताई अपर्याप्तो रहै तो ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त ।

सकाय तसकाय को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो प्रत्येक-
सौ सागर जाभो ।

पृथ्वी अप्प वायु वनस्पति को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त
उत्कृष्टो संख्याता हजार वर्ष ।

तेउ काय को पर्याप्तो रहै तो ज० अंतर्मुहूर्त्त उ० संख्याता दिन रात ।

२६	समचै सूक्ष्म १ सूक्ष्मवनस्पति २	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अतर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३०	सूक्ष्म पृथ्वी । सूक्ष्म अप्प । सूक्ष्म तेउ । सूक्ष्म वायु ए४	एवम्	असख्यातो काल	एवम्	अनन्तो काल

ऊपर सूक्ष्म रा ६ बोल कहां तैह नो पर्याप्तो अपर्याप्तो रहै तो जघन्य
उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त ।

३२	समचै वादर १ वादर वनस्पति २	अंतर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३७	वादर पृथ्वी । वादर अप्प । वादर तेउ । वादर वाउ । प्रत्येक शरीरी वनस्पति ए५	एवम्	७० कोड़ाकोड़ सागर	एवम्	अनन्तो काल

३८	वादर निगोद	अन्तर्मुहूर्त्त	७० कौंदाकोड़ सागर	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३९	समवै निगोद	एवम्	१॥ पुद्गल परावर्त्तन	एवम्	असख्यात काल
४०	वादर तल	एवम्	२ हजार सागर जाभेरा	एवम्	अनन्तो काल

पहनां पर्याप्ता नें अपर्याप्ता पूर्वे कहा छै तिम जाणवा ।

न०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
४१	सजोगी रोस-जोगी रहै तो	अणाइया अपज्ज-वसिया	अणाइया सपज्जवसिया	०	०
४२	मन जोगी १ वचन जोगी २	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अनतो काल
४४	काय जोगी	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त
४५	अजोगी रो अ-जोगी रहै तो	साइया अपज्जवसिया		०	०
४६	सवेदी रो स-वेदी रहै तो	अणाइया अपज्जवसिया अणाइया सपज्जवसिया साइया सपज्जवसिया तेहनी थित जघन्य तो अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट देशणो अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन			
४७	कोवेदी को छी वेदी रहै तो	१ समो	११०।१००।१८।१४ प्रत्येक पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	अन्तर्मुहूर्त्त	अनतो काल
४८	पुरुष वेद को पुरुष वेद रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर जाभेरो	१ समो	अनतो काल

न०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
४६	चपुसक वेद	१ समो	अनंतो काल	अन्तर्मूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर
५०	उपशम अवेदी	१ समो	अन्तर्मूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणी
५१	क्षीण अवेदी	साह्या अपज्जवसिया		०	०
५२	सकषाई रो सकषाई	३ भेद सवेदीनी परै		०	०
५५	क्रोध। मान मा या कषाई ए३	अन्तर्मूर्त्त	अन्तर्मूर्त्त	१ समो	अन्तर्मूर्त्त
५६	लोभ कषाई रो लोभ कषाई	१ समो	एवम्	अन्तर्मूर्त्त	एवम्
५७	उपशम अकषाई	१ समो	एवम्	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणी
५८	क्षीण अकषाई	साह्या सपज्जवसिया		०	०
५९	सलेशी रो सलेशी	२ भेद सज्जमीनी परै		०	०
६०	किशन लेशी रा किशन लेशी	अन्तर्मूर्त्त	३३ सागर अन्तर्मूर्त्त अधिक	अन्तर्मूर्त्त	३३ सागर अन्तर्मूर्त्त अधिक
६१	नील रो नील	एवम्	१० सागर पल्य रो १ सख्यातमो भाग	एवम्	एवम्
६२	कापोत रो कापोत	एवम्	३ सागर पल्य रो असख्यात भाग	एवम्	एवम्
६३	तेजु रो तेजु	एवम्	२ सागर पल्य रो असख्यातमो भाग	एवम्	अनंतो काल
६४	पदम रो पदम	एवम्	१० सागर अंतःअधिक	एवम्	अनन्तो काल

नं०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
६५	शुक्र रो शुक्र	अन्तर्मुहूर्त्त	३३ सागर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त	अनतो काल,
६६	अलेशी रो अलेशी	साह्या अपजवसिया		०	०
६७	समदृष्टि रो समदृष्टि रहै तो	साह्या अपजवसिया साह्या सपजवसिया तेहनी थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० ६६ सागर जाभेरी		अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
६८	सास्वादन सम किती	६ आवलि	६ आवलिका	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
६९	उपशम सम किती	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	एवम्
७०	वेदक समकिती	१ समो	१ समो	९	९
७१	क्षायक सम किती	साह्या अपजवसिया		०	९
७२	क्षयोपशम समकिती	अन्तर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाभेरी	अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
७३	मिथ्याती को मिथ्याती	३ भेद सवेनीनी परै		एवम्	६६ सागर जाभेरी
७४	सममिथ्याती	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
७५	सजानी रो सजानी	२ भेद समदृष्टि ज्यू		एवम्	एवम्
७७	मतजानी श्रुतजानी	अन्तर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाभेरी	एवम्	एवम्
७८	अवधजानी	१ समो	६६ सागर जाभेरी	एवम्	एवम्

न०	काय धिति	जघन्य धिति	उत्कृष्टी काय धिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
७६	मनपर्यवज्ञानी	१ समो	कोड पूर्व देशूणो	अ तमु हूत्त	अर्द्ध पुद्गल दंशूणो
८१	केवलज्ञान १ केवल दर्शन २	साङ्ख्या अपजवसिया		०	०
८४	सअज्ञानी । मत अ० श्रुतअ० ए३	३ भेद सवेदी नी परे		अ तमु हूत्त	६६, सागर जाभेरो
८६	विभग अज्ञानी रो विभग०	१ समो	३३ सागर कोड पूर्व	एवम्	अनतो काल
८६	चक्षु दर्शन	अन्तमु हूत्त हजार सागर जाभेरो		एवम्	अनतो काल
८७	अचक्षु दर्शन	२ भेद सहद्वियानी परे		०	०
८८	अवधि दर्शन	१ समो	२ छासट सागर जाभो	अ तमु हूत्त	अनतो काल
८९	सजती सामा- यक छेदोस्थाप- नी चारित्र ३	१ समो	कोड पूर्व देश ऊणो	एवम्	अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त देश ऊणो
९२	पडिहार विशुद्धि चारित्र	१ समो	२६ वर्ष ऊणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल दंशूणो
९३	सूक्ष्म सपराय चारित्र	१ समो	अन्तमु हूत्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल दंशूणो
९४	यथाख्यात चारित्र	१ समो	दंशूणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल दंशूणो
९५	सजता सजती	अन्तमु हूत्त	दंशूणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल दंशूणो
९६	असजती रो असजती	३ भेद सवेदी ज्यू कहणां		१ समो	दंशूणो कोड पूर्व
९७	नो सजती नो असजती	साङ्ख्या अपजवसिया		०	०

क्र०	कायस्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य अंतरो	उत्कृष्ट अंतरो
६६	सागार बहुत्ता १ अण्णागार बहुत्ता २	अंतर्मुहूर्त्त	अंतर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
१००	द्वयस्थ आहारिक	२ समाजणो बुलक भव	असंख्यातो काल	१ समो	२ समा
१०१	केवली आहारिक	अन्तर्मुहूर्त्त	कोट् पूर्व देशणो	३ समा	३ समा
१०२	द्वयस्थ अण्णाहारिक	१ समो	२ समा	२ समानो खुडागभव	असंख्यातो काल
१०३	सजोगी केवली अण्णाहारिक	३ समा	३ समा	०	०
१०४	अजोगी केवली अण्णाहारिक	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	०	०
१०५	सिद्ध अण्णाहारी	साह्या अपजवसिखा		०	०
१०६	भासक रो भासक	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
१०७	ससारी अभासक	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त
१०८	सिद्ध अभासक	साह्या अपजवसिया		०	०
१०९	संसार परत	अन्तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुत्रल देशणो	०	०

नं०	कायस्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कार्यास्थिति	जघन्य आंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
११०	ससार अपरत	दो भेद सजोगी नी परै		०	०
१११	काय परत	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अ'तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
११२	काय अपरत	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असख्यातो काल
११३	पर्याप्तो रो पर्याप्तो	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभो	एवम्	अ'तर्मुहूर्त्त
११४	अपर्याप्तो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभेरों
११५	नो पर्याप्तो नो अपर्याप्तो	साह्या अपजवसिया		०	०
११६	सूक्ष्म रो सूक्ष्म	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्या काल	अ'तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
११७	वादर रो वादर	एवम्	असख्या काल	एवम्	असख्यातो काल
११८	नो सूक्ष्म नो वादर	साह्या अपजवसिया		०	०
११९	सन्नी रो सन्नी	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर जाभो	अ'तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
१२०	असन्नी रो असन्नी रहै तो	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाभो
१२१	नोसन्नी नो असन्नी	साह्या अपजवसिया		०	०

नं०	काय थिति	जघन्य थिति उत्कृष्टी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट अन्तरा
१२२	भोई रो भोई रहै तो	आद नहीं अन्त छै	०	०
१२३	अभोई रो अभोई रहै तो	आद नहीं अन्त नहीं	०	०
१२४	नो भोई नो अभोई	आद छै अन्त नहीं	०	०
१२५	चरम रो चरम रहै तो	आद नहीं अन्त छै	०	०
१२६	अचरम रो अचरम रहै तो	आद नहीं अन्त नहीं ते अभोई आद तो छै अन्त नहीं ते सिद्ध		

इति कायस्थिति रों थोकड़ो -पञ्चवणा पद १८ मां थी

आंतरा जीवाभिगम थी समाप्तम् ॥

श्री जयाचार्य कृत—
भ्रम विध्वंसन की हुण्डी ।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः ।

- १ बाल तपस्वी ने सुपात्र दान, दया, शीलादि करी
मोक्ष मार्ग नो देश थकी आराधक कह्यो ।
(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)
- २ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति,
सुदत्त नामा अणगार ने सुपात्र दान देई परिह
संसार करी मनुष्य नो आउषो बांध्यो ।
(साख सूत्र सुखविषाक अ० १)
- ३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव
में सुसला री दया पाखी परित संसार कीधो ।
(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)
- ४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवाव ने त्रिण
प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी ।
(उपाशक दशांग अ० ७)
- ५ मिथ्याती भली करणी लेखै सुव्रती कह्यो छै ।
(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यच) एक वैमानिक टाल और आऊपो न बांधै ।

(साग्र सूत्र भगवती श० ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करै तथा सुई नी अग्र पै आवै तेतलाज अन्न नो पारणो करे, पिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावै तेहनो न्याय ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, पिण माया थी अनन्त संसार कलै ।

(सृगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

९ जीव अजीव जाणै नहीं तेहना पचखाण दुपचखाण कह्या तेहनो न्याय ।

[भगवती श० ७ उ० २]

१० भगवत दीक्षा लियां पहली, २ वर्ष भाभा (अधिका) : घर में विरक्त पणै रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो ।

[प्रथम आचाराङ्ग अ० ६ उ० १ गा० ११]

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध प्राक्रम छै ते संसार नो कारण छै । पिण निर्जरा नो

कारण नहीं । (पिण शुद्ध प्राक्तम तो निर्जरा नोहिज कारण छै, संसार नो कारण नहीं ।

[सूयगडांग श्रु० १ अ० ८ गा० २३]

(क) सम्यग्दृष्टि नो शुद्ध प्राक्तम छै, ते सब निर्जरा नो कारण पिण संसार नो कारण नहीं (पिण-अशुद्ध प्राक्तम तो संसार नोहिज कारण, निर्जरा नो कारण नहीं ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४]

१२ भगवत दीक्षा लेतां इम कह्यो—आज थी सर्वथा प्रकारे मोने (मुझ ने) पाप करबो कल्पै नहीं । इम कही सामायक चारित्र आदखो ।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५]

१३ एक बेला रा कर्म बाकी रह्यां अनुतर विमाण में जाई उपजै ।

[भगवती श० १४ उ० ७]

१४ प्रथम गुणस्थान नी शुद्ध करणी छै, ते आज्ञा मांय छै । तेहनो न्याय ।

१५ प्रथम गुणस्थान ने निर्वच कर्म नो क्षयोपशम कह्यो ।

[समवायांग समवाय १४]

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कहा ।

[भगवती श० १ उ० १]

१७ असोचाकेवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्यादिक
थी समदृष्टि पामै ।

[भगवती श० ६ उ० ३१]

१८ सूरयाभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांच्या
तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो
पूराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै
२ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वंदना करवा योग्य
छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वंदना नी म्हारी
आज्ञा छै ६ ।

[रायप्रसेणी देवताधिकार]

१९ खन्धक सन्यासी, गौतम ने पूछ्यो, हे गौतम !
तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदां यावत् सेवा
करां । तिवारे गौतम कह्यो, हे देवानुप्रिय ! जिम
सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो ।

[भगवती श० २ उ० १]

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहं
सुहं' पाठ कह्यो ।

[पुष्प चालया]

२० भगवत श्री महावीर, खन्धक ने पड़िमा बह्वानी
आज्ञा दीधी ।

[भगवती श० २ उ० १]

२१ तामली तापसनी अनित्य चिन्तवना ।

[भगवती श० ३ उ० १]

२२ सोमल ऋषिनी शुद्ध चिन्तवना ।

[पुष्पयोपांग अ० ३]

२३ छद्मस्थ भगवान श्रीमहावीर नी अनित्य चिन्तवना ।

[भगवती श० १५]

२४ अनित्य चिन्तवना ने धर्म ध्यान को भेद कह्यो ।

[उववाई]

२५ च्यार प्रकारे देवायु बांधै—सराग सञ्जम पाली १
आवक पणो पाली २ बाल तप करी ३ अकाम
निर्जरा करी ४ तथा च्यार प्रकारे मनुष्यायु बांधै—
प्रकृति भद्रिक १ प्रकृति विनीत २ दया परिणाम
३ अमत्सर भाव ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

२६ गोशाले के शिष्यां के च्यार प्रकार नो तप कह्यो—
उग्र तप १ घोर तप २ रस परित्याग ३ जीभ्या
इन्द्री वश कीधी ४ ।

[ठाणांगठाणै ४ उ० २]

२७ अन्य दर्शणी पिण सत्य बचन ने आदह्यो ।

[प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २]

२८ बाणव्यन्तर ना देवता देवी बनखण्ड ने विषै बैसे,

सूवै जाव क्रीड़ा करै । पूर्व भवे भला प्राप्न.मफोडव्या
तेहना फल भोगवै ।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

२६ मिथ्याती प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर
देवता थाय ।

[उववाई प्रश्न ७]

द्वान्नाऽधिकारः ।

- १ असंयती ने दीक्षां पुन्य पाप को न्याय ।
- २ आणन्द श्रावक इह विधि अभिग्रह लीधो—जे
हूं आज थकी अन्य तीर्थी ने अन्य तीर्थी ना देख
ने तथा अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य
साधु भ्रष्ट थया । ए तीनां प्रति बांदूं नहीं, नम-
स्कार करूं नहीं, अशनादिक देऊं नहीं, देवाजं
नहीं, बिना बतलायां एक बार तथा घणी बार
बोलाजं नहीं, तथा अशनादिक च्यार आहार देऊं
नहीं । अनेरा पास थी दिराजं नहीं । पिण एतलो
आगार—राजा ने आदेशो आगार १ घणा कुटुम्ब
नें समुवाय ना आदेशो आगार २ कोई एक बल-
वन्त ने परवश पणे आगार ३ देवता ने परवश

पणे आगार ४ कुटुम्ब में बढेरो ते' गुरु कहिये
नेहने आदेशे आगार ५ अटवी कन्तार ने विषै
आगार ६ ए छव छण्डी आगार राख्या तो पोता
री कचाई जाणी ने राख्या ।

[उपाशक दशांग अ० १]

३ तथा रूप जे असंयती ने फासू अफासू सुभक्तो
असूभक्तो अशनादिक दीधां एकान्त पाप निर्जरा
नथी ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारै । जे अरिहन्त
भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म
खपावा ने उदेरी ने तप करै । तो हूं लोच ब्रह्म-
चर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न
सहूं । एतले सुभक्त ने वेदना सम भावे न सहतां,
एकान्त पाप कर्म हुवै तो वेदना समभावे सहतां
निर्जरा हुवै ।

[ठाणांगठाणे ४ उ० ३]

५ साधु नी बेला निन्दा करतो अशनादि देवै तिहां
“पड़िलभित्ता” पाठ कस्यो ।

[भगवती श० ५ उ० ६]

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको

अशनादिक देवै तिहां पिण “पड़लिभित्ता”
पाठ कह्यो ।

[भगवतो श० ५ उ० ६]

- ६ पोद्विला आर्या महासतीने अशनादिक दीधा तिहां
“पडिलाभे” पाठ कह्यो । ते माटे “पडिलाभेइ”
नाम देवा नों छै पिण साधु असाधु जाणवा रो
नहीं ।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

- ७ साधु ने अशनादिक बहिरावै तिहां “दलएज्जा”
पाठ कह्यो छै । ते माटे “दलएज्जा” कहो भावे
“पडिलाभेज्जा” कहो दोनों एक अर्थ छै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

- ८ सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो
तिहां “पडिलाभमाणे” पाठ कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

- ९ ‘पडिलाभ’ नाम देवानोहिज छै ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

- १० आर्द्र मुनि ने विप्रां कह्यो—जो बे हजार कहतां
दो हजार ब्राह्मण जिमावै ते महा पुन्य स्कन्ध
उपार्जी देवता हुइं । एहवो हमारे वेद में कह्यो
छै । तिचारै आर्द्र मुनि बोल्या, हे विप्रों ! जे

मांस ना गृद्धी घर घर ने विषै मार्जार नी परै भ्रमण
 करणहार एहवा बे हजार कुपात्र ब्राह्मणां ने नित्य
 जिमाड़ै ते जिमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु
 वेदना छै जेहने विषै एहवी महा असह्य वेदना युक्त
 नरक ने विषै जाइं । अने दया रूप प्रधान धर्म नी
 निन्दाना करणहार हिंसादिक पञ्च आस्रव नी प्रशंसाना
 करणहार एहवो जो एक पिण दुःशीलवन्त निव्रती
 ब्राह्मण जिमाड़ै ते महाअन्धकारयुक्त नरक में जाइं ।
 तो जे एहवा घणा कुपात्र ब्राह्मणा ने जिमाड़े तेहनो
 स्युं कहिवो । अने तमे कहो छो जे जिमाड़णहार देवता
 हुइं तो हमें कहां छां जे एहवा दातार ने असुरादिक
 अधम देवता नी पिण प्राप्ति नहीं, तो जे उत्तम वैमा-
 णिक देवता नी गति नी आशा एकान्त निराशा छै ।

(सुयगडाँग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३, ४४, ४५)

११ भग्गु ने पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां त्राण शरण न हुवै
 तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय । (तमतमा
 ते अंधारा में अंधारो) एहवी नर्क ।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

१२ भ्रावक पिण विप्र जिमाड़ै तेहनो न्याय च्यार
 प्रकारे नर्कायु बांधे तिणेंकरी ओलखायो ।

(भगवती शतक ८ उ० ६)

(क) बलि श्रावक पिण विप्र जिमाडै तिण ऊपर
बालमर्ण थी अनन्ता नर्क ना भाव । तेहनो
न्याय ।

(भगवती शतक २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसै तेहने छःकाय नो बध नो
बंछणहार कह्यो । अने वर्तमान काले निषेधे त्यानि
अन्तराय नो पाड़णहार कह्यो । ते माटे साधु ने
वर्तमान में मौन राखिवे कही ।

(सूर्यगडाँग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवै लेवै, इसो वर्तमान देखी गुण दूषण
कहणो नहीं ।

(सूर्यगडाँग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ
करी मरीने पोतारी बावड़ी मेंज डेडको थयो ।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान प्ररूप्या । (सावद्य
निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निरवद्य ओल-
खणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक
लोकोत्तर विहुं जाणवा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१८ नव विधि पुण्य कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे ६)

१९ च्यार प्रकार ना मेह तिमहिज च्यार प्रकार ना पुरुष, कुपात्र ने कुक्षेत्र जिसा कहा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४)

२० शकडालपुत्र गोशाला प्रते कह्यो—हे गोशाला ! तूं मांहरा धर्माचार्य श्री महावीर ना गुण कीर्तन कहा । ते माटे देऊं छूं तुमने पीढ, फलग, सेज्यादि । पिण धर्म तप ने अर्थे नहीं ।

(उपाशकदशा अ० ७)

२१ मृगालोढा प्रति देखने गौतम, भगवान ने पूछ्यो—हे भगवन्त ! इण पूर्व भवे कांई कुपात्र दान दीधा ? कांई कुशीलादि सेव्या ? अने कांई मांसादि भोगव्या ? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवै छै । तो जेवोनी कुपात्र दान ने चौड़े भारी कुकर्म कह्यो ।

(दुःखविपाक अ० १)

२२ ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र कहा ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ मा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मादान ने व्यापार कहा ।

(उपाशकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोछ्यां धर्माधर्म नो न्याय ।

(उपाशकदशा अ० १)

२५ तुंगिया नगरी ना आवकां ना उघाड़ा वारणा रो
न्याय ।

(मगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ आवक ना त्याग ते ब्रत अने आगार ते अब्रत ।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडांग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिणमें अब्रत ने भाव
शस्त्र कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे आवक देशथकी निवर्त्यो अने देशथकी पच्च-
खाण कीधा तिणे करी देवता थाय । पिण अब्रत
थी देवता न हुवै ।

(मगवती श० १ उ० ८)

२९ साधु ने सामायक में वहिरायां सामायक न भांगै
तेहनो न्याय ।

(मगवती श० ८ उ० ५)

३० आवक जिमावै तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना
साधु नो न्याय मिलै नहीं ।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १७)

३१ असोचा केवली, अन्यलिङ्गी थकां पोते तो दीख्या

ન દેવૈ । પિણ અનેરા પાસે દીરૂયા લેવા નો ઉપદેશ
કરૈ ।

(ભગવતી શ૦ ૬ ઉ૦ ૩૧)

૩૨ અભિગ્રહધારી અને પરિહાર વિશુદ્ધ ચારિત્રિયો
કારણ પહ્યાં અનેરા સાધુ ને અશનાદિ દેવૈ ।

(બૃહત્કલ્પ ઉ૦ ૪ બોલ ૨૭)

૩૩ ગૃહસ્થાદિક ને દેવો , સાધુ સંસાર ભ્રમણ નો હેતુ
જાણી છોડ્યો ।

(સૂયગડાંગ શ્રુ૦ ૧ અ૦ ૬ ગા૦ ૨૩)

૩૪ ગૃહસ્થી ને દાન દિયાં અને દેતાં ને અનુમોદ્યાં
ચૌમાસી પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યો ।

(નિશીથ ઉ૦ ૧૫ બોલ ૭૪-૭૫)

૩૫ આણન્દ ને સંથારા મેં પિણ ગૃહસ્થ કહ્યો ।

(ઉપાશકદશાંગ અ૦ ૧)

૩૬ ગૃહસ્થી ની વ્યાવચ કિયાં, કરાયાં, બલિ અનુમોદ્યાં
૨૮ મો અણાચાર કહ્યો ।

(દશર્વૈકાલિક અ૦ ૩ ગા૦ ૬)

૩૭ ઇગ્યારમી પઢિમા મેં પિણ પ્રેમ બંધન ત્રૂક્યો નથી ।

(દશા શ્રુતસ્કન્ધ અ૦ ૬)

૩૮ પઢિમાધારી રે કલ્પ ડપર અમ્બડ સન્યાસી ના
કલ્પ નો ન્યાય

(સ્વવાર્દ પ્રશ્ન ૧૪)

३६ अनेरा सन्यासी नो कल्प ।

(उववाई-ग्रन्थ १२)

४० वर्ण नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवो
अभिग्रह धाखो—कल्पै मुझने जे पूर्वे हणै तेहने
हणवो । जे न हणै तेहने न हणवो ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

४१ जे एकेक अन्य तीर्थी थकी गृहस्थ आवक देश
ब्रते करी प्रधान अने सर्व आवक थकी साधु सर्व
ब्रते करी प्रधान ।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ आवक नी आत्मा अधिकरण कह्यो छै । अधिकरण
ते छवकाय नो शस्त्र जाणवो ।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी के घोड़े ने ऋषि की उपमा दीधी ।
तिमहिज आवक ने 'समण भुया' कह्यो पिण
ते देशथकी उपमा जाणवी ।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ चार व्यापार कह्यो—मन, बचन, काया और
उपकरण । ए चारुं व्यापार सन्नी पंचेन्द्रियरे
कह्यो । ए चारुं भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक
सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्यो । अने ए चारुं भला
व्यापार तो संयती मनुष्यारेइज कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० १)

अनुकम्पाधिकारः ।

१. असंयती जीवां रो जीवणो बांछणो घणे ठामे
वज्यो ते साख रूप बोल ।

२ पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा (आर्य क्षेत्र ना
मनुष्य) तारिवा निमित्त भगवान धर्म कहै । पिण
असंयती जीवां ने बचावा अर्थे नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

३ पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा
फिरा ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१९)

४ मेघकुमार नो जीव हाथी ने भवे सुसलानी अनु-
कम्पा कीधी, सुसला ने च्यार नाम करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मेढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो ।

(भगवती श० २ उ० १)

५ षडिमाधारी नो कल्प 'बहाय गहाय' पाठ नो
अर्थ ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० ७)

६ राग द्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो
वज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

७ गृहस्थां ने मांहो मांही लड़ता देखी—एहने हण

तथा एहने मत हण एहवो मन में पिण विचार
न करै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ गृहस्थी ने, साधु 'अग्नि प्रज्वाल तथा बुभ्भाव' इम
न कहै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ दश प्रकार नी बांछा कही ।

(ठाणांग ठाणै १०)

१० असंयम जीवितव्य बांछणो बज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

११ असंयम जीवणो मरणो बांछणो बज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ साधु असंयम जीवितव्य ने पूठ देई विचरै ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ असंयम जीवणो बांछणो बज्यो ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ असंयम जीवणो बांछै तिणने बाल अज्ञानी कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

१५ साधु आपणी आत्मा ने असंयम जीवितव्य को
अर्थी न करै ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० ३)

१६ असंयम जीवणो बांछणो बज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ संयम जीवितव्य बधारवो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७]

१८ संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो ।

[सूर्यगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १]

१९ मिथिला नगरी बलती देखी, नमिराजर्षि साहमों
न जोयो । बलि कह्यो म्हारै राग द्वेष करवा माटै
बाहलो दुबाहलो एक पिण नहीं । ए मिथिलापुरी
बलतां थकां मांहरो किञ्चितमात्र पिण बलै नथी ।
मैं तो (संयम में सुख से जीऊं अने सुख से
बसूं छूं) ।

[उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२-१३-१४-१५]

२० देवता, मनुष्य, तिर्यच ए तीनां नूं माहों मांही
विग्रह देखी अमुक नी जय होवो अने अमुक नी
अजय होवो एहवो बचन साधु ने बोलणो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५६]

२१ वायरो, बर्षा, सीत, तावड़ो, राज विरोध रहित,
सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल
हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१]

२२ समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी
चारित्र लीधो पिण चोरनी अनुकम्पा करि छोड़ायो
नथी ।

[उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६]

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करै पिण अनेरा नी
अनुकम्पा न करै ।

[ठाणांग ठाणे ४ उ० ४]

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलाने साधु मार्ग
बतावै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै ।

[निशीथ उ० १३ बोल २५]

२५ हिंसादिक अकर्म्म करता देखी, धर्म उपदेश देई
समभावणो तथा अणबोल्यो रहे तथा उठी एकान्त
जावणो कह्यो ।

[ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ३]

२६ साधु अनेरा जीवां ने भय उपजावै, तो प्रायश्चित्त
कह्यो ।

[निशीथ उ० १६ बोल ६४]

२७ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते मन्त्रादिक क्रियां बलि-
अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो ।

[निशीथ उ० १३ बोल १४]

२८ चुलणी पिया, पोषा में माता ने कचायिवा उठ्यो
तो व्रत नियम भाग्या कह्या ।

[उपाशक दशा अ० ३]

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रते
बतावणो नहीं ।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १]

૩૦ સાધુ અનુકમ્પા આળી ત્રસ જીવ ને બાંધે બંધાવ
તથા બાંધતે પ્રતે ભલો જાણે તથા બંધિયા જીવાં
ને અનુકમ્પા આળી છોડે, છુડાવે છોડતે ને ભલો
જાણે તો પ્રાયશ્ચિત કહ્યો ।

[નિશીથ ૩૦ ૧૨ વોલ ૧-૨]

૩૧ સાધુ કુતૂહલ નિમિત્ત ત્રસ જીવ ને બાંધે બંધાવે
અને છોડે છુડાવે તો પ્રાયશ્ચિત કહ્યો ।

[નિશીથ ૩૦ ૧૭ વોલ ૧-૨]

૩૨ જે સાધુ પન્નલાળ ભાંગે અને ભાંગતા ને અનુમોદે
તો દણ્ડ કહ્યો ।

[નિશીથ ૩૦ ૧૨ વોલ ૩-૪]

૩૩ ગૃહસ્થ સાધુ ની અનુકમ્પા આળી તૈલાદિ મર્દન
કરે તિહાં 'કોલુળ વડિયાણ' પાઠ કહ્યો ।

[આચારાઙ્ગ શ્રુ ૨ અ ૨ ૩૦ ૧]

૩૪ હરિણગવેષી સુલસાં ની અનુકમ્પા કીધી ।

[અન્તગદ્ વર્ગ અ ૩ ૮]

૩૫ કૃષ્ણજી ઢોકરાની અનુકમ્પા કરી ફેંટ ઉપાડી ।

[અન્તગદ્ વર્ગ ૩ અ ૮]

૩૬ હરિકેશી ની અનુકમ્પા આળી ચક્ષે વિપ્રાં ને કંધા
પાડ્યા ।

[ઉત્તરાધ્યયન અ ૧૨ યા ૮ સે ૨૫ વાંદ]

(३०८)

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमती
अशनादिक खाया ।

[ज्ञाता अ० १]

३८ अभयकुमार नी अनुकम्पा आणी देवता मेह वर-
सायो ।

[ज्ञाता अ० १]

३९ जिन ऋषि करुणा आणी रयणादेवी रे साहमो
जोयो ।

[ज्ञाता अ० ६]

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो ।

[प्रश्न व्याकरण अ० १]

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित
परिणामे करि हण्यो ।

[ज्ञाता अ० ६]

४२ सूर्याभ देवतारी नाट्य रूप भक्ति कही ।

[राय प्रसेणी]

४३ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरिकेशीनी व्यावच
कही ।

[उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२]

४४ भगवान् शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने
बचायो तिहां 'अणुकम्पणद्वाए' पाठ कह्यो ।

[भगवती श० १५]

लब्धि अधिकारः ।

- १ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी
५ क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

- २ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५
क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

- ३ आहारिक लब्धि फोडै तिणने प्रमाद आश्री अधि-
करण कह्यो ।

[भगवती श० १६ उ० १]

- ४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोडी बिना
आलोयां मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० २० उ० ६]

- ५ वैक्रिय लब्धि फोडै तिणने मायी कह्यो अने
आलोयां बिना मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० ३ उ० ४]

- ६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली
जाणीजै ।

[छाणांग छाने ७]

- ७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोडी, सौ घरां

पारणो कीधो ते लोकां ने विस्मय उपजायवा
भणी ।

[उववाई प्रश्न १४]

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावै तो चौमासी प्राय-
श्चित कह्यो ।

[निशीथ उ० ११]

फाय्दिकताऽधिकारः ।

१ सीहो अणगार मोटे मोटे शब्दे रोयो ।

[भगवती श० १५]

२ अइमुत्ते साधु पाणी में पात्री तराई ।

[भगवती श० ५ उ० ४]

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोदयो ।

[उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८]

४ धर्मघोषना साधां नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में
हेली निन्दी ।

[ज्ञाता अ० १६]

५ सेलक ऋषि ने उसन्नो पासत्थो कह्यो ।

[ज्ञाता अ० ५]

६ गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमङ्गल नामे अणगार, तेज लब्धि करी हणस्ये ।

[भगवती श० १५]

७ मन्धक नामे अणगार मन्थारो कीभो निहां 'आलोड्य पट्टिफन्ते' पाठ कयो ।

[भगवती श० २ उ० १]

८ निमक मुनि ने छेहहं निहां 'आलोड्य पट्टिफन्ते' पाठ कयो ।

[भगवती श० ३ उ० १]

९ कार्तिक सेठ ने छेहहं निहां 'आलोड्य पट्टिफन्ते' पाठ कयो ।

[भगवती श० १८ उ० २]

१० कषाय कुशील नियण्डा नो वर्णन ।

[भगवती श० २५ उ० ६]

११ दृष्टिवाद् नो भणी पिण वचन ग्लान्ति ।

[दशरूपकालिक अ० ८ गा० ५०]

१२ अनुत्तर विमाण ना देवता उद्रीर्ण मोह नथी, अने क्षीण मोह नथी, उपशान्त मोह छै ।

[भगवती श० ५ उ० ४]

१३ हाथी अनं कुंथुआ के अपचग्राण की क्रिया समान कही ।

[भगवती श० ७ उ० ८]

१४ सर्व भवी जीव मोक्ष जास्ये ।

[भगवती श० १२ उ० २]

१५ पुद्गलास्तिकाय में ऽस्पर्श कह्या ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

गोशालाऽधिकारः ।

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम ! गोशालै मोने कह्यो तुम्हें मांहरा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तेवासी शिष्य । तिवोरे में अङ्गीकार कीधुं ।

[भगवती श० १५]

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला ! तोने भगवान मंडूयो । तोने भगवान प्रवर्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूंज मिथ्यात्व पडिवज्जै छै ?

[भगवती श० १५]

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! मैं तोने प्रवर्या दीधी ।

[भगवती श० १५]

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ।

[भगवती श० १५]

(३१३)

गुणवर्णनाधिकारः ।

- १ गणधरां भगवान् ना गुणं कियौ ।
(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गा० ८)
- २ भगवान्, साधां ना अनेकं गुणं कियौ ।
(उववाई प्रश्न २१)
- ३ कौणक ने माता पिता नो विनीत कियौ ।
(उववाई)
- ४ आचकां ने धर्म ना करणहार कियौ ।
(उववाई प्रश्न २०)
- ५ गौतम ना गुण कियौ ।
(भगवती शतक १ उ० १)

लेश्याधिकारः ।

- १ छद्मस्य तीर्थकर में कषाय कुशील नियण्ठो कियौ ।
(भगवती श० २५ उ० ६)
- २ कषाय कुशील नियण्ठा में छः लेश्या कही ।
(भगवती श० २५ उ० ६)
- ३ सामायक चारित्र छेदोस्थापनीय चारित्र में छः लेश्या पावै ।
(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छः लेश्या ना लक्षण ।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु में पिण कृष्ण लेश्या कही छै ।

(पञ्चवर्ण पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापौत लेश्या में च्यार ज्ञान नी भजना कही ।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवै ।

(पञ्चवर्ण पद १७ उ० १)

वैद्यावृत्ति अधिकारः ।

१ यक्षे छात्रां ने जंघा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

३ ' भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइ' करा दूधता ग्रहण करै ।

(जम्बूद्वीप प्रवृत्ति)

४ बीस बोल करी तीर्थकर गौत्र बंधै ।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवै इम कहै ते आर्य मार्ग थी अलगो । समाधि मार्ग थी न्यारो । जिन धर्म री हेलणा रो करणहार । अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार । ए असत्य पक्ष अण छांडवे करी मोक्ष नहीं । लोह बाणिया नी परै घणो भूरसी ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६-७)

६ पांच स्थान के करी श्रमण निग्रंथ ने महा निर्जरा हुवै । तिहां कुल गण संघ साधमीं साधु ने कहा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

८ पुनः दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही ।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

૧૦ સાવચં વ્યાવચ પર ભિક્ષુગણિરાજ કૃત વાર્તિકા
કહે છે ।

૧૧ સાધુ ની અર્શ છેદે તિણ વેદ ને ક્રિયા કહી ।

(ભગવતી શતક ૧૬ ઉ૦ ૩)

૧૨ સાધુ અન્ય તીર્થી તથા ગૃહસ્થ પાસે અર્શ છેદાવે
તથા કોઈ અનેરા સાધુની અર્શ છેદતાં અનુમોદે
તો માસિક પ્રાયશ્ચિત આવે ।

(નિશીથ ઉ૦ ૧૫ બોલ ૩૧)

૧૩ સાધુ રો ગૂમડો ગૃહસ્થ છેદે તો સાધુ ને મને કરી
અનુમોદનો નહીં તથા વચન અને કાયા કરી
કરાવે નહીં ।

(આચારાંગ શ્રુ૦ ૨ અ૦ ૧૩)

વિનયકાઠધિકારઃ ।

૧ દોય પ્રકાર નો વિનય મૂલ ધર્મ કહ્યો સાધુ ના
પન્થ મહાવ્રત તે સાધુ નો વિનયમૂલ ધર્મ અને
શ્રાવક ના ૧૨ વ્રત તથા ૧૧ પઢિમા તે શ્રાવક
નો વિનયમૂલ ધર્મ ।

(જ્ઞાતા અ૦ ૫)

२ पांडुराजा अने पांच पांडव माता कुन्तां सहित
नारद से त्रिप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो ।
घणो विनय कियो ।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिन पांडु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण
पिण नारद नो विनय कियो ।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वादतो थको अशनादिक
जाचै नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड़ ने चेला धर्माचार्य कही नमोत्थुणं गुण्यो ।

(उक्ताई अ० १३)

६ धर्माचार्य साधु ने कहा ।

(राय प्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थकर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थकर ने इन्द्र नमोत्थुणं
गुण नमस्कार करै ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

९ इन्द्र एहवूं कह्यो जे तीर्थकर नी जन्म महिमा
करूं ते म्हारो जीत आचार छै पिण ए महिमा
धर्म हेतु करूं इम नथी कह्यो ।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

१० तीर्थंकर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करै ।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

११ अरिहन्तादिक पांच पदानेज नमस्कार करवो कह्यो ।

[चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २]

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो हिज विनय करवा कह्यो ।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्ते तेहने माहण कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधुरोहिज कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणै तेहने माहण कह्यो
तथा और भी अनेक लक्षण माहणना बताया ।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १६ से २६ ताई)

१६ समण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१७ आवक ने एतला नामे करी बोलाणो कह्यो—
हे आवक ! हे उपाशक ! हे धार्मिक ! हे धर्म-
प्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो ।

(अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

आस्रवः अधिकारः ।

१ पञ्च आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ तथा समवायाङ्ग स० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि ने अरूपी कहो ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पञ्च आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक् अने मिथ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मिथ्यात्व कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्ते तेहिज जीव अने तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

७ कषाय, जोग, दर्शन ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १२ उ० १०)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

९ उत्थानादिक ने अरूपी कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

(३२१)

१० क्रोधादिक ने भाव संयोगी कहा ।

[अनुयोग द्वार]

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो ।

[अनुयोग द्वार]

१२ अकुशल मनने रुंधवो कह्यो ।

[उववाई]

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक स्वपै ।

[अनुयोग द्वार]

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कहा ।

[ठाणांग ठाणा ६]

सम्बरऽधिकारः ।

१ पंच सम्बर द्वार प्ररूप्या ।

[ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५]

२ जीव रा ज्ञानादिक छव लक्षण कहा ।

[उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२]

३ चारित्र ने जीव गुण परिणाम कहा ।

[अनुयोग द्वार]

४ सम्बर ने आत्मा कही ।

[भगवती श० १ उ० ६]

५ अठारह पाप ना विरमण ने अरुणी कह्यो ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

६ अठारह पाप ना विरमण ने जीव द्रव्य कह्यो ।

[भगवती श० १८ उ० ४]

जीव भेदाधिकारः ।

१ विशिष्ट अवधि रहित ने असंज्ञीभूत कह्यो ।

[पञ्चवणा पद १५ उ० १]

२ नन्हा बालक तथा बालिका ने असंज्ञीभूत कह्या ।

[पञ्चवणा पद ११]

३ आठ सूक्ष्म कह्या ।

[दशवैकालिक अ० ८ गा० १५]

४ तेउ बाउ ने त्रस कह्या ।

[जीवामिमम प्रश्न १]

५ सम्मूर्च्छिम मनुष्य ने पर्याप्ता अपर्याप्ता बिहुं नामे
करी बोलाव्यो ।

[अनुयोग द्वार]

६ असुर कुमार ने उपजती बैलां बे बैद कह्या ।

[भगवती श० १३ उ० २]

आज्ञाधिकारः ।

१ वीतराग ना पग थकी जीव मुवां ईर्यावहि क्रिया कही ।

[भगवती श० १८ उ० ८]

२ सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइ ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ५]

(क) तीन उदक ना लेप लगाबै तिप्पने सबलो दोष कह्यो ।

[दशाश्रुतस्कन्ध अ० २]

३ पांच मोटी नदी एक मास में वे बार अथवा तीन बार उतरवो कल्पे नहीं ।

[बृहत्कल्प उ० ४]

४ साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २]

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघै नहीं ।

[बृहत्कल्प उ० ६]

६ रात्रि में सिन्हायदिक ने अर्थ बाहिर जावणो कल्पै ।

[बृहत्कल्प उ० १]

शीतल आहारऽधिकारः ।

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२]

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४]

३ धन्ने अणगार न्हाखितो आहार लियो ।

[अनुत्तर उववाई]

४ अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो ।

साधु ने द्वेष न करिवो ।

[प्रश्न व्याकरण अ० १०]

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

१ साधुनेइज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी ।

[प्रश्न व्याकरण अ० ७]

२ साधु सूत्र भणै तिण री मर्यादा कही ।

[व्यवहार उ० १०]

३ अन्य तीर्थी ने तथा गृहस्थी ने साधु सूत्र रूप बांचणी देवै तथा देता ने अनुमोदै तो प्रायश्चित कह्यो ।

[निशीथ उ० १६]

४ आचार्य उपाध्याय नी अणदीधी बांचणी ग्रहै तो प्रायश्चित्त कह्यो ।

[निशीथ उ० १६]

५ तीन जणा बांचणी देवा अयोग्य कह्या ।

(ठाणांग ठा० ३ उ० ४)

६ श्रावकां ने अर्थ रा जाण कह्या ।

[उववाई प्रश्न २०]

७ निग्रंथ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या ।

[सूर्यगडाङ्ग श्रु० २ अ० २]

८ साधुनेइज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणहार कह्या ।

[सूर्यगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २४]

९ अभाजन ने सूत्र सिखावै त्यांने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलंघनहार कह्या ।

[सूर्य प्रज्ञप्ति पाटु० २०]

१० अर्थ ने पिण 'सूर्य धर्म' कह्यो ।

[ठाणांग ठा० २ उ० १]

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

[मगवती श० ८ उ० ८]

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

[पन्नवणा पद २३ उ० २]

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

निरवद्य क्रियाधिकारः ।

१ अठारह पाप सून निवर्त्या कल्याणकारी कर्म बंधै ।
[भगवती श० ७ उ० १०]

२ वन्दना करतां नीचा गोत्र खपावै ।
[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल १०]

३ धर्मकथा सून शुभ कर्म बंधे ।
[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल २३]

४ व्यावच्च क्रियां तीर्थकर गोत्र बंधै ।
[उत्तराध्ययन अ० २६ बोल ४३]

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधै ।
[भगवती श० ५ उ० ६]

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधै ।
[छाणांग ठाणै १०]

७ अठारह पाप सेयां कर्कश वेदनीय कर्म बंधै अने
१८ पाप सून निवर्त्या अकर्कश वेदनीय कर्म बंधै ।
[भगवती श० ७ उ० ६]

८ बीस बोलां करी तीर्थकर गोत्र बंधै ।
[ज्ञाता अ० ८]

९ प्राण, भूत, जीव, सत्त्व ने दुःख न दियां साता
वेदनी कर्म बन्धै ।

[भगवती श० ७ उ० ६]

१० आठ कर्म निपज्जावा नी करणी जुदी २ कही ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

११ धर्म रुचि अणगार ने तुम्बो परठवा नी आज्ञा दीधी ।

[ज्ञाता अ० १६]

१२ भगवान साधां ने गोशाले सू चर्चा करने की आज्ञा दीधी तथा सर्वानुभूति ने विनीत कह्यो ।

[भगवती श० १५]

१३ गुरु नी आज्ञा आराधै तिण ने विनीत कह्यो ।

(उत्तराश्रयन अ० १ गा० २)

—:—

निश्चय्याहाराऽधिकारः ।

१ साधु प्राशुक आहार भोगवै तौ ७ कर्म दीला पाड़ै ।

[भगवती श० १ उ० ६]

२ ज्ञान दर्शन चारित्र बहवा ने अर्थे साधु आहार करै ।

[ज्ञाता अ० २]

३ साधु मौक्ष ने अर्थे आहार करै ।

[ज्ञाता अ० १८]

४ साधु जयणा सूं आहार करै तो पाप कर्म बंधै नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ४ गा० ८]

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही ।

[दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ६२]

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावै ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ छव स्थानके करी साधु आहार करे तो आज्ञा उलंघै नहीं ।

[ठाणांग ठा० ६]

—:—

निग्रन्थ निद्राऽधिकारः ।

१ साधु रै यत्नाई करी सोवतां पाप बन्धै नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै ।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ काइक सुतो काइक जागतो स्वप्न देखै ।

(भगवती श० १६ उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पौरसी में निद्रा मूकै ।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

(३२६)

५ पाणी ने किनारै निद्रादिक कार्य करना कल्पै नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० १ बोल १६)

६ अन्तर घर में निद्रा लेणी कल्पै नहीं ।

[बृहत्कल्प उ० ३ बोल २१]

७ साधु ने भाव निद्राई करी जागतो कह्यो ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

एकाकि साधु-अधिकारः ।

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवै तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै ।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सरायादिक ने विषै घणा निकाल पैसार हुवै तिहां अगडसुया ते निशीथ ना अजाण त्याने एकाकि पणै न कल्पै ।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जूदा २ निकाल हुवै तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै ।

[बृहत्कल्प उ० १ बोल ११]

४ एकलो रहै तिण में आठ दोष कहा ।

(अचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेह ने एकाकि पणो कल्पै नहीं । तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै तिण ने पिण गुरु नी आज्ञा सूं एकाकि पणो कल्पै पिण आज्ञा बिना कल्पै नहीं ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

६ आठ गुणसहित ने एकल पड़िमा योग्य कह्यो ।
श्रद्धा में सेंठो १ देव डिगायो डिगै नहीं २ सत्य-
वादी ३ मेधावी (मर्यादावान) ४ बहुस्सुये (नवमा
पूर्वनी तीन वत्थु नो जाण) ५ शक्तिवान ६ कलह-
कारी नहीं ७ धैर्यवन्त ८ उत्साह वीर्यवन्त ।

(ठाणाङ्ग ठाणे० ८)

७ साधु अने श्रावक विहुं ने धर्मना करणहार कहा
बलि साधु अने श्रावक ने 'सुव्वया' कहा ।

(उववाई प्रश्न २०-२१)

८ घणा साधा में पिण विकाले तथा रात्रि में एकला
ने दिशा न जाणो ।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल ४७)

९ जे ज्ञानादिक ने अर्थे गुरुवादिक नी सेवा करै तो
गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण सुखाइयो बांछै ।

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

१० राग द्वेष ने अभावे एकलो ऊभो रहै पिण
भिख्यात्यां ने उल्लंघी न जाय ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३३)

११ राग द्वेष ने अभावे एकलो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

१२ जे हूं राग द्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो
विचरस्यूं इम बिचारी दीक्षा लेवै ।

(स्यगडांग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

१३ घर छांडी राग द्वेष ने अभावे एकलो विचरै ।

(उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६)

१४ तीन मनोरथ में चिन्तवै जे किंवारे हूं एकलो
थई दशविधि यति धर्मधारी विचरस्यूं तेह नो
न्याय ।

१५ गुरु कह्यो-हे शिष्य ! तोने एकलपणो म होज्यो ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार फासकणाधिकारः ।

१ बड़ी नीति या लघु नीति परठी ने बस्त्रे करी पंछै
नहीं तथा पंछता ने अनुमोदै नहीं, तो प्रायश्चित
कह्यो ।

(निशीथ उ० ४ चोत् ३७)

અલ્પપાપ વહુ નિર્જરાધિકારઃ ।

૧ જે શ્રાવક સાધુ ને સચિત અને અસ્ખૂન્નતો દેવૈ તો
અલ્પ પાપ વહુ નિર્જરા હુવૈ તેહ નો ન્યાય ।

(ભગવતી શ૦ ૮ ઉ૦ ૬)

૨ સાધુ ને અપ્રાશુક અણેષણીક આહાર દીધાં અલ્પા-
યુષ બાન્ધૈ ।

(ભગવતી શ૦ ૫ ઉ૦ ૬)

૩ સાધુ રે અશુદ્ધ આહાર અમક્ષ કહ્યો ।

(ભગવતી શ૦ ૧૮ ઉ૦ ૧૦)

૪ શ્રાવક ને પ્રાશુક ઇષણીક ના દેવળહાર કહ્યા ।

(ઉવવાઈ પ્રશ્ન ૨૦)

૫ આનન્દ શ્રાવક કહ્યો કલ્યૈ સુખ ને શ્રમણ નિગ્રંથ
ને પ્રાશુક ઇષણીક અશનાદિક દેવો ।

(ઉપાશક દશા અ૦ ૧)

(ક) આધા કર્મી અને અસ્ખૂન્નતો આહાર એ નિર્વચ્ય
છૈ એહવો મન મેં ધારૈ તથા પ્રરૂપૈ તે વિના
આલોચ્યાં મરે તો વિરાધક કહ્યો ।

(ભગવતી શ૦ ૫ ઉ૦ ૬)

(સ્વ) જે શ્રાવક પ્રાશુક ઇષણીક અશનાદિક સાધુ
ને દેઈ સમાધિ ઉપજાવે, તો પાછો સમાધિ
પાવૈ ।

(ભગવતી શ૦ ૭ ઉ૦ ૧)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागै ।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-६)

(क) वीतराग जोयर चालै तेहथी कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजै तेह ने पिण पाप न लागै । पुण्य नी क्रिया लागै शुद्ध उपयोग माटै ।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइं करी चालतां जीव हणीजै तो तेह ने पिण पाप न लागै । हणवारो कामी नहीं ते माटै ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो ।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छै तिहां ते स्थान के साधु ने आहार करवो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

९ अल्प प्राण बीजादिक होवै तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवै तो महा-सावद्य क्रिया लागै । दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

लोंकेजी की हुण्डी ।

॥ दोहा ॥

ॐ नमः परमेष्टि पद, पांचूं महा सुखकार ॥
दुरित विघ्न दूरा टले, वत्ते जय जयकार ॥१॥
हुण्डी जेह लोंका तणी, अच्छे पुरातन तेह ।
तिणमें आगम साक्षि थी, बोल उनहत्तर जेह ॥२॥
सकल सुगुण शिर सेहरा, श्री कालू गणि राय ।
तासु पसाये गुलाब कहे, दोहा रूप बनाय ॥३॥

॥ सद्गुरु विनती ॥

(खम्माच दादरा)

सद्गुरु सद्बुद्धि बढ़ाना मुझे, मेरे स्वामीन् चरणों
लगाना मुझे ॥ टेक ॥ महाव्रत पञ्च पञ्च समिति वर,
तीन गुप्ति धर चाहना मुझे ॥ स० ॥१॥ आज्ञा में धर्म
अधर्म आण विन, यही पाठ पढ़ाना मुझे ॥ स० ॥२॥
आत्म ऋद्धि सिद्धि सुख पावे, सोही मारग बताना मुझे
॥ स० ॥३॥ अनादि से भ्रमण कियो भवारयें, अब
शिवराह दिखाना मुझे ॥ स० ॥४॥ जिन बाणी सुन

जान लियो अब, सब पापों से छुड़ाना मुझे ॥ स० ॥५॥
 भाव दया यही स्वपरकी, सुध निज घर की लगाना
 मुझे ॥ स० ॥६॥ उलभ रह्यो मोह कर्म जाल में, सुमति
 दे सुलभाना मुझे ॥ स० ॥७॥ समकित व्रत पायो
 हुलासायो, आयो शरण निभाना मुझे ॥ स० ॥ ८ ॥
 गुलाबचन्द आनन्द भयो अति, सुख में सुख अब पाना
 मुझे ॥ स० ॥९॥

॥ सोरठा ॥

शहर जैतारण मांहिरे, लोंका गुजराती बली ।
 सरूप रूपचन्द ताहिरे, तेहना उपाश्रय थकी ॥१॥
 विक्रम संवत् जान रे, अठारह शत गुणतीस में ।
 शुद्ध प्ररूपण मान रे, देखी पूर्व तिहां तिम लिखी ॥२॥
 तिण अनुसारे देख रे, सूत्र तणा जेह पाठ युत ।
 न्याय सहित सुविशेष रे, कहूं जिज्ञासु कारणे ॥ ३ ॥

॥ अथ हुण्डो का बोल ॥

तीनूं ही काल रा भाव केवल ज्ञानी दीठा, कोई
 जीव ने नव तत्त्व रा जाण पणा बिना संसार समुद्र
 सूं तिरतो दीठो नहीं । साख सूत्र सूयगडांग अध्य-
 यन १२ गाथा १६ वीं ।

॥ दोहा ॥

तीन काल रा भावना, जाणक केवली सोय ।
नव तत्व जाण्यां बिना, तिख्या न देखा कोय ॥१॥
यथा अवस्थित वस्तु ना, ज्ञाता नेता तन्त ।
ते बुद्धा पर तार कर, करै कर्म नो अन्त ॥२॥
धुर सूयगडांगे कह्यो, अध्ययन बारमा मांहि ।
तत्व यथा तथ्य जानिये, सोलमी गाथा ताहि ॥३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तेतीय उपच मया गयाइ, लोगस जाणन्ति तहा गयाइं ।
येतारो अनेसि अणन येया, बुद्धा हु ते अन्तकडा भवन्ति ॥

प्र० श्रुतस्कंध सूत्र कृताङ्क अ० १२ गाथा १६

॥ भावार्थ ॥

भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान इन तीनों काल के भाव को जानने वाले, यथा अवस्थित वस्तुओं के और नव तत्वों के ज्ञाता नेता हों, स्वयं तरे और दूसरों को तारे वे बुद्ध स्वतः तत्वों को जानते हुए कर्मों के अन्त करता बनते हैं । अर्थात् तत्वों को जानने से मुक्ति होती है ।

॥ बोल दूसरा ॥

राशि दो कही १ जीव राशि २ अजीव राशि ।
तीसरी राशि कहै जिण ने सात निन्हवां में छट्ठो
निन्हव कह्यो । सा० सू० उववाई प्रश्न १६ वें ।

को देख के कहै साधूपना है या नहीं [अपाङ्गाचार्य के शिष्यवत्]
 ४ नरकादि चारों गति का क्षण २ में बिनाश होता है [अश्व मित्रवत्]
 ५ एक समय में दो किरिया लगती है ऐसा मानने वाला [गर्गाचार्य-
 वत्] ६ जीव राशि १ अजीव राशि २ जीवाजीव राशि ३ यों तीन
 राशि मानने वाला [गोष्ट महिलावत्] ७ जैसे सर्प के कंचुकी है वैसे
 जीव के कर्म लगते हैं ऐसा मानने वाला [] इस प्रकार
 जिन मत के छिपाने वाले प्रवचनों के निम्नवत् होते हैं ।

॥ बोल तीसरा ॥

जीव अजीव त्रस स्थावर जाणो नहीं तिण रा
 पच्चक्खाण दुःपच्चक्खाण कहा, साख सूत्र भगवती
 शतक ७ वां उद्देश्य २ रा ।

॥ दोहा ॥

जीव अजीव जाणो नहीं, त्रस स्थावर नहीं जाण ।
 त्याग कहै मारण तणा, तेहना छै दुःपच्चक्खाण ॥१०॥
 सप्तम शतके भगवती द्वितीय उद्देशे पेख ।
 जाण्यां विन व्रत किम हुवै संबर आश्रयी लेख ॥११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्मणं सव्व पाणेहि, जाव सव्व सत्तेहि, पच्चक्खायं मितिदमा-
 णस्स न एवं, अभी समयणा गयं भवइ, इमे जीवा इमे अजीवा इमे
 तस्स इमे थावरा, तस्सणं सव्व पाणेहि जाव सव्व सत्तेहि पच्चक्खायं
 मितिदम'णस्स णो सुपच्चक्खायं, दुपच्चक्खायं भवइ ॥

सूत्र श्री भगवती शतक ७ वां उद्देश्य २ रा ।

॥ भावार्थ ॥

जो सर्व प्राणी यावत् सर्व सत्त्वों के मारने का प्रत्याख्यान कहे, किन्तु ऐसा नहीं जाने कि यह जीव है, यह अजीव है, यह त्रस है, यह स्यावर है, ऐसा अज्ञानी सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व मारने के त्याग किये कहे तो उसके दुःपञ्चक्खाण है, किन्तु सुप्रत्याख्यान नहीं।

॥ बोल चौथा ॥

जीव अजीव ने जाणै नहीं, जीव अजीव दोनों ने जाणै नहीं तिण ने संयम री ओलखणा नहीं।
साख सू० दशवैकालिक अध्ययन ४ गा० १२ वीं।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, तूर्य अध्ययने ताहि।
जीव अजीव जाणै नहीं, बारवीं गाथा मांदि ॥१२॥
जीव अजीव अजाणतो, तसु संयम किम होय।
जाणी त्याग कियां थकां, चारित्र गुण अवलोय ॥१३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणाइ।

जीवा जीवो अयाणांतो, कहं सो नाहीय संयमं ॥१२॥

दशवैकालिक अ० ४ गाथा १२

॥ भावार्थ ॥

जो जीव को भी नहीं जाने, अजीव को भी नहीं जाने। जाँवो अजीवो को ही नहीं जाने उसके संयम कहाँ है। अर्थात् जीवाजीव जाने बिना संयम नहीं है।

॥ बोल पांचवां ॥

सम्यक्त्व बिना चारित्र नहीं समकित बिना ब्रत नहीं । सा० सू० उत्तराध्ययन २८ वें गा० २६ वीं ।

॥ दोहा ॥

मसकित बिन चारित्र नहीं, नहीं समकित बिन ब्रत ।
उत्तराध्ययन अठबीसमें, गुणतीसमी गाथा सत्त ॥१४॥
दर्शन ज्ञान थकी हुवै, समकित चारित्र धर्म ।
तिण सूं पूर्व समकित लह्यां, पामें चारित्र पर्म ॥१५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

नतिथ चरितं सम्मत्त विदुषां दंसणे उभयव्वं ।

सम्मत्त चरिताइं जुगवं, पुव्वं च सम्मत्तं ॥२६॥

सूत्र उत्तराध्ययन अ० २८ गा० २६

॥ भावार्थ ॥

सम्यक्त्व अर्थात् शुद्ध श्रद्धा बिना चारित्र नहीं होता है । ज्ञान से यथार्थ ज्ञान के शुद्ध श्रद्धा से सम्यक्त्वी होता है और सम्यक्त्वी होने से चारित्र गुण उत्पन्न होता है । इसलिये सम्यक्त्व चारित्र में पहिले सम्यक्त्व मुख्य है ।

॥ बोल छट्ठा ॥

ज्ञान बिना दया नहीं दया चारित्र एक ही कह्यो ।
सा० सू० दशवैकालिक अ० ४ गा० १० वीं ।

॥ दोहा ॥

दया नहीं है ज्ञान बिन, चारित्र दयाज एक ।
ज्ञान सहित संयम हुवै समझो आण विवेक ॥१६॥
प्रथम ज्ञान पाछे दया, हम सर्व संयती होय ।
अज्ञानी जाणै किस्युं, पाप छेदै किम जोय ॥१७॥
चौथे अध्ययने कह्यो, दशवैकालिक वाय ।
दशमी गाथा ने विषै, भाख्यो श्री जिनराय ॥ १८ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

षट्मं नाशं तन्नो दया, एवं चिह्नं तन्न संयम ।
अवाप्सी कि काही, किवा, नाहीय छेय पावगं ॥१९॥

॥ भावार्थ ॥

प्रथम ज्ञान और पीछे दया, अर्थात् ज्ञान द्वारा जीव अजीवादि को जानने से षट् जीव निकायो को मारने का त्याग करेगा तब दया होगी । इसी तरह सर्व संयती होते हैं । अज्ञानी को जब यथार्थ ज्ञान ही नहीं तब वह दया किसकी करेगा और कैसे पाप कर्म छेदेगा ।

॥ बोल सातवां ॥

असंयती अब्रती अपञ्चखाणो ने सूभक्तो असू-
भक्तो, प्राशुक, अप्राशुक देवै तिए ने एकान्त पाप
कह्यो । सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ दोहा ॥

तथारूप जे असंयती बलि अविरति जेह ।

च्यार प्रकारे आहार तसु, श्रावक प्रति लाभेह ॥१६॥

सचित अचित प्राशुक बली, अप्राशुक अवधार ।

देवै दोष सहित वा, दोष रहित निरधार ॥२०॥

दियां हे प्रभु ! शुं करइ, इम गौतम पूछन्त ।

जिन कहै एकान्त पाप करै, नहीं कांई निर्जरा हुन्त ॥२१॥

अष्टम शतके भगवती, षष्ठम उदेशा मांहि ।

एकान्त पाप कह्यो प्रभु, निर्जरा किञ्चित नांहि ॥२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

समणो वासगरसणं भन्ते तहारूपं असंजय अविरय अपडिहय
पच्चवखाय पाव कम्मे, फासु एणवा अफासु एणवा एसणिज्जेण वा
अणेसणिज्जेणवा असण पाण खाइम साइभेणं, पडिलाभे माणस किं
कज्जइ, गोयमा ! एगन्त सोसे पावे कम्मे कज्जइ णत्थि से काइ निज्जरा
कज्जइ ।

सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ भावार्थ ॥

श्रावक है भगवान तथा रूप असंयतो, अब्रती और जिसके पाप-कर्म के त्याग नहीं ऐसे अप्रत्याख्यानी को प्राशुक, अप्राशुक सदोष वा निर्दोष आहार पाणी खादिम खादिम प्रतिलामता हुआ क्या करता है। तब भगवान ने कहा है गौतम ! एकान्त पाप कर्मोपार्जन करता है वह किञ्चित निर्जरा नहीं करता है ।

॥ सोरठा ॥

एह पाठ नूं अर्थ रे, केई जन इहां इम करै ।
 जो देखे मोक्षार्थ रे, तो तसु एकान्त पाप हुवै ॥२३॥
 अथवा तसु गुरु जान रे, दियां मिथ्यात्व नूं पाप है ।
 यदि अनुकम्पा आन रे, देवै तो तसु पाप नहीं ॥२४॥
 इम निज मत अनुसार रे, सूत्र विरुद्ध जे को कहै ।
 पिण तसु उत्तर सार रे, बुद्धिवन्त न्याय विचारिये ॥२५॥
 न कह्यो सूत्रे एम रे, मोक्षार्थी वा गुरु समझ ।
 तो निज मन थी कहो केम रे, भावार्थ समझयां बिना । २६।
 तथा रूप छै जेह रे, असंयती नां भेषयुत ।
 तसु गुरु किम जाणेह रे, आवक जेह भगवान रा । २७।
 बलि दोष सहित किम देय रे, आवक गुरु जाणी करी ।
 न्याय विचारि लेय रे, पक्षपात चित्त छांड करि ॥२८॥
 अल्प आयु बन्धाय रे, असूक्तनो दियां साधु ने ।
 तीजा ठाणा मांय रे, बलि ठाम २ सिद्धान्त में ॥२९॥
 दोष सहित दियां ताहि रे, पाप हुवै पिण धर्म नहीं ।
 देखो आगम मांहि रे, असूक्तता थी पुण्य नहीं । ॥३०॥
 जो गुरु जाणी तास रे, कदा निर्दोष देवै तसु ।
 तो पाप एकान्त विमास रे, इहां कहो किण कारणें । ३१।
 न देऊं अण तीर्थी प्रतेह रे, बलि देवाऊं नहीं ।

इम ससम अंगेह रे, आनन्द श्रावक अभिग्रह लियो ॥३३॥
 पुनः सम्यक् दृष्टि जेह रे, असंयती नां दान ने ।
 मोक्ष अर्थ श्रद्धेह रे, जो कहा देवै जान करि ॥३४॥
 तो पिण पाप ही लाग रे, तुम लेखे मिथ्यात्व नूं ।
 नहीं मुक्ति रो माग रे, सांसारिक जे दान छै ॥३५॥
 मोक्ष अर्थ दिय़ा तेह रे, तेहने एकान्त पाप कहो ।
 तो अनुकम्पा एह रे, मुक्ति काज नहीं जाणवी ॥३६॥
 अनुकम्पा संसार रे, स्नेह राग युत जे हुवै ।
 आख्या पाप अठार रे, तिण में राग नबभूं कह्यो ॥३७॥
 असंयती नूं जोय रे, अथवा अविरति तणो ।
 पुद्गलीक सुख बंधे सोय रे, ते जिन आज्ञा बाहिरै ॥३८॥
 करणी जे करै कोय रे, पुण्य पुद्गल सुख कारणै ।
 तिण में धर्म न होय रे, पुण्य बन्ध पिण हुवै नहीं ॥३९॥
 भगवती वृत्ति मस्कार रे, अर्थ कियो इण पाठ नूं ।
 मुक्ति अभिलाषा धार रे, दीक्षां पाप एकान्त हुवै ॥४०॥
 तिण लेखै पिण तंत रे, असंयती वा अविरति नूं ।
 दान पाप एकान्त रे, मोक्ष मार्ग नहीं जाणबो ॥४१॥
 एकान्त पाप नूं अर्थ रे, अष्टादशमूं जो करे ।
 तो ठाम २ सूत्रार्थ रे, एकान्त पाठ कह्या बहु ॥४२॥
 सुख शय्या कही च्यार रे, ठाणांगे चौथा स्थान में ।
 एकान्त निरजरा धार रे, मुनि सम भावे वेदन सहै ॥४३॥

जो सम भावे न सहेह रे, तो पाप एकान्ते हुवै ।
 इहां मुनि रे किस्यूं गिणेह रे, एकान्त पाप मिथ्यात्व नूं ।४४
 बलि धुर शतक निहाल रे, अष्टम उद्देशे कह्यूं ।
 अब्रती ने एकान्त बाल रे, एकान्त पण्डित साधु ने ।४५
 अष्टम शतक रे मांहि रे, छठे उद्देशे भगवती ।
 तथा रूप संयती ताहि रे, दियां एकान्त निर्जरा हुवै ।४६।
 जो एकान्तक नूं जेह रे, छेहलो भेद एक ही कहै ।
 तो ठाम २ सूत्रेह रे, एकान्त अर्थ छेहलूं किस्यूं ॥४७॥
 तिण सूं एकान्त पाप रे, असंयती अविरति ने ।
 दीयां जिन कह्यो आप रे, पाठ मांहि प्रकट पणै ॥४८॥
 एक अन्त दो शब्द रे, तेहना अर्थ छै जुजूआ ।
 एक तेह केवल लब्ध रे, अन्त तेह निश्चय जाणवो ॥४९॥
 छट्ठा काण्ड मझार रे, नवम श्लोके देखलो ।
 अन्त तेह निश्चय धार रे, हेम नाम माला विषे ॥५०॥
 तिणसूं भगवती मांहि रे, दियां असंयती अविरति ने ।
 एकान्त पाप हिज थाय रे, प्रभु आख्यो तेह सत्य है ।५१।

॥ बोल आठवां ॥

शाश्वता अशाश्वता रो खबर नहीं, तिणने बोधं
 रहित कह्यो । सा० सू० सुयगडांग अ० १ उ० २
 गाथा ४ थी ।

॥ दोहा ॥

शाश्वत अने अशाश्वता, तेहनी खबर न कांय ।
बोध रहित तिण ने कह्यो, प्रथम सूयगडांग मांय ॥५२॥
बाल थकां पंडित पणो, माने तेह अयाण ।
नियत अनियत जाणै नहीं, द्वितीयाध्ययने चौथी जाण ॥५३॥

सूत्र पाठ ॥

एव मेयासि जयन्ता, बाल पंडिय माणिणो । नियया निययं
संतं, अयासांता अबुद्धिया ॥४॥

प्र० सू० कृतांग अ० १ उ० २ गा० ४

॥ भावाथं ॥

बाल अर्थात् मूर्ख अपने को पण्डित मान रहे हैं। परंतु उन्हें नियत
अनियत यानी शाश्वत अशाश्वत की खबर नहीं है वे अज्ञान बोध
रहित हैं ।

बोल नवमां ॥

साधू थोड़ा असाध घणां । सा० सू० दशवैका-
लिक अ० ७ गा० ४८ वीं ।

॥ दोहा ॥

साधु थोड़ा लोक में, घणा असाधू जान ।
ते असाधु थका बहु इम कहे, अमे साधु गुणखान ॥५४॥
दशवैकालिक सात में, अड़तालीसवीं गाथा ताहि ।
असाधुने साधु कहणो नहीं, साधुने साधु कहाहि ॥५५॥

(३५१)

॥ सूत्र पाठ ॥

बहवे इमे असाधु, लोये बुचन्ति साधुणो ।

न लवे असाधु साधुत्ति, साधु साधुत्ति आलवे ॥४८॥

दशवैकालिक अ० ७ गा० ४८

॥ भावार्थ ॥

बहुत से ऐसे असाधु लोक में हैं जो कहते हैं हम साधु हैं । परंतु विज्ञानों को असाधुओं को साधु नहीं कहना चाहिये ।

॥ बोल दशनां ॥

साधु रे सर्व थकी प्राणातिपात रा त्याग छे तिण
रे अपच्चक्खाण री अपरिग्रह री किरिया नहीं । सा०
सू० पन्नवणा पद २२ वें ।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे साधु रे, प्राणातिपात रा त्याग ।
अपच्चक्खाण ने परिग्रह तणी, तसु किरिया नहीं लाग ॥५६॥
बाबीसम पद आखियो, पन्नवणा रे मांहि ।
प्राणातिपात निवृत्ति ने, अब्रत परिग्रह नांहि ॥५७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

प्राणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवरस परिग्रहिया किरिया
कज्जति ? गोयमा णो इण्णट्ठे समट्ठे, प्राणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवरस
अपच्चक्खाण वत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा णो इण्णट्ठे समट्ठे ।

पन्नवणा पद २२ वाँ ।

प्ररूपणा करे तिण ने किञ्चित् मात्र जाणपणो नहीं ।
सा० सू० सुयगडांग अ० १ उ० २ गाथा १४ वीं ।

॥ दोहा ॥

केवली प्ररूप्या धर्म बिन, अपनी मति अनुसार ।
करै प्ररूपण जेहने, जाण पणो न लिगार ॥६२॥
इक २ माहण श्रमण बलि, कहै म्हे छां सर्व जाण ।
पिण प्राणी सहु लोक में, तेहना जेह अजाण ॥६३॥
ते किञ्चित नहीं जाणता, धुर सुयगडांग मांहि ।
प्रथस अध्ययने जाणिये, द्वितीय उद्देशे ताहि ॥६४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

माहणा समणा एगे, सब्बे नाण सयं वए ।
सब्ब लोगे वि जे पास्सा, न ते जाणं किञ्चणे ॥१४॥

॥ भावार्थ ॥

जगत में एक २ श्रमण ब्राह्मण ऐसे हैं सो कहते हैं हम सर्व जान-
कार हैं परन्तु लोक में सर्व प्राणी हैं उन्हें वे किञ्चित् मात्र नहीं जानते
हैं । अर्थात् निज मतानुसार एक २ श्रमण ब्राह्मण कहते हैं हम सर्व
जान हैं परन्तु उन्हें किञ्चित् मात्र जाणपना नहीं है ।

॥ बोल चौदमां ॥

श्रावक ने केवल ज्ञानी प्ररूप्या धर्म बिना दूजो
धर्म मानणो नहीं । सा० सू० उववाई प्र० २० वां ।

॥ दोहा ॥

श्रावक सत्य करि जानता, केवली भाषित धर्म ।
 दूजो धर्म न मानणो, एह जिन शासन मर्म ॥६५॥
 निर्ग्रन्थ बचनज अर्थ है, निर्ग्रन्थ प्रवचन परमार्थ ।
 अन्य जन ने पिण हम कहे, प्रवचन बिना अनर्थ ॥६६॥
 लाध्या ग्रह्या अर्थ पूछ कर, धास्या विनय सहित ।
 अस्थि अस्थि मज्जा तसु, प्रेम राग रङ्ग रत्त ॥६७॥
 सूत्र उववाई में कह्यो, प्रश्न बीसवें ठीक ।
 शंक रहित जिन बचन में, त्याने मुक्ति नजीक ॥६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निगगन्थे पावणे निस्संक्रिया, शिकंस्सिया, निव्वित्तिगिच्छा,
 लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, अभिगट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठि मिज
 पेमाणु राग रत्ता, अयमाउसो निगगन्थे पावय णो अट्ठे अयं परमट्ठे,
 सेसे अयट्ठे ।

सू० उववाई प्र० २० वाँ

॥ भावार्थ ॥

वे श्रावक निर्ग्रन्थ प्रवचन में निःशङ्क है अर्थात् शङ्का रहित हैं
 आकांक्षा रहित है अर्थात् पाखण्डियों का ढोंक देख के उनकी वांछा नहीं
 करते । विचिकिच्छा रहित है यानी स्वयं जो जिनाज्ञा माँहि की करणी
 करते हैं उसके फल में सन्देह नहीं रखते । वे सूत्रों का अर्थ पाये है,
 ग्रहण किये हैं, अर्थ पूछे हैं, प्रवचनो के अर्थों के सन्मुख हुए हैं, और
 विनय सहित ग्रहण किये हैं, जिनकी अस्थि और अस्थि की मज्जा जिन

वचनों से रंगी हुई हैं, अर्थात् निग्रन्थ प्रवचनों में लवलोन हो रहे हैं, और दूसरों को भी ऐसा ही कहते हैं कि “आयुष्मानों” निग्रन्थ वचन है सो ही अर्थ है, सो ही परमार्थ है। इनके अतिरिक्त शेष सब अनर्थ हैं।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१।

॥ बोल पन्द्रवां ॥

समकिती ने निसङ्क निकङ्क विदगंछा रहित
रहणो कह्यो सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २८ वां गा०
३१ वीं।

॥ दोहा ॥

शंक नहीं जिन वचन में, कंखा अनमत नाहि ।
करणी फल संदेह नहीं, ते नि विदगंछ कहाहि ॥६६॥
अमूढ दिट्ठी परमत तणी, देख प्रशंसा आदि ।
अन्य मत दृष्टि करे नहीं, चित में धरे समाधि ॥७०॥
उवबूह गुणी ना गुण करै, स्थिरि कारण स्थिर होय ।
वत्सल भाव सहु थकी, धर्म प्रभाव न जोय ॥७१॥
उत्तराध्ययन अठवीस में, समकित ना आचार ।
आराधे तेह समकिती, हकतीसवीं गाथा धार ॥७२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निसंखिय निकंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठिय उवबूह थिरी
करणे वच्छल पभावणे अट्ट ।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१

॥ भावार्थ ॥

- १ जिन वचनों में शङ्का नहीं करे अर्थात् भगवान ने एक शरीर में अनन्ते जीव आदि अनेक बातें कही है सो सत्य हैं ।
- २ निकंखिय अर्थात् जो अन्य मत वाले कहते हैं वह भी ठीक होगा ऐसी बांछा न करे ।
- ३ निव्वितिगिच्छा यानी जो तप नियमादि करणी करता हूं सो फल-दायक होगी या नहीं ऐसी विचारणा नहीं करे ।
- ४ अमूढ दिड्ढीय अर्थात् अन्य मत वालों की अनेक प्रकार प्ररूपणा को देखके उनकी तरफ खयाल न करे ।
- ५ उववूह यानी गुणवन्त पुरुषों के गुणगान करे ।
- ६ थिरि करणे अर्थात् सम्यक्त्व में स्थिर रहै ।
- ७ वत्सल यानी षट् कार्यों के जीवों पै वात्सल्य भाव रखें ।
- ८ प्रभावना अर्थात् जैन धर्म की प्रभावना करे । यह सम्यक्त्व के आठ आचार कहे हैं ।

॥ बोल सोलमां ॥

केवल ज्ञानी रा वचनां री खबर नहीं जिकां रे
घणो बाल मरण अकाम मरण होसी । सा० सू०
उत्तराध्ययन अ० ३६ गा० २६० वीं ।

॥ दोहा ॥

जे जिन वचन जाणे नहीं, बाल मरण तसु जाण ।
घणा अकाम मरणे मरे, उत्तराध्ययने छत्तिसमें पिछाण । ७३।

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि बहुसो, अकाम मरणाणि वैवय बहुसो ।
मरिहिं ति ते बराया, जिन वयण जे न यायंति ॥२६०॥

(३५८)

॥ भावार्थ ॥

बहुत बाल मरण और बहुत से अकाम मरण मरै जो जिन वचनों को नहीं जानता है ।

॥ बोल सतरहवां ॥

प्रवचन सोही अर्थ, प्रवचन सोही परम अर्थ,
सा० सू० उववाई प्र० २० वां ।

॥ दोहा ॥

प्रवचन सोही अर्थ है. प्रवचन सो परमार्थ ।
उववाई प्रश्न बीसवें बाकी सर्व अनर्थ ॥ ७४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अवमाउसो शिगंगे पावयगे अड्ठे, अयं परमड्ठे, सेसे अण्डठे ।
[उववाई प्र० २० वें]

॥ भावार्थ ॥

हे आयुष्मानों निर्ग्रन्थ प्रवचन ही अर्थ है यही परमार्थ है । इनके सिवाय सर्व अनर्थ है ।

॥ बोल अठारहवां ॥

केवलियां रो आचार सोही छद्मस्थ रो आचार,
केवलियां रो अनाचार सोही छद्मस्थ रो अनाचार ।
साख सूत्र आचारांग प्र० २ उ० ६ ठो ।

॥ दोहा ॥

केवलियां रो आचार सो, छद्मस्थ रौ आचार ।
 केवलियां रो अनाचार ते, छद्मस्थ रो अनाचार ॥७५॥
 कुशल पुरुष जे केवली, नहीं बन्धाय मूकाय ।
 जे आरम्भ्यो तिम आरम्भे, ते बुद्धिवन्त कहाय ॥७६॥
 प्रथम आचारङ्गे कह्यो, दूजे अध्ययन उदार ।
 छट्ठा उद्देशा विषे, निपुण न्याय अवधार ॥७७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कुसले पुण्य णो वर्द्धे णो मुक्ते से जं च आरम्भे जे च अणारम्भे
 अणो रहइं च ण आरम्भे छणं छणं परिचाय लोग सन्नं च सव्वसो ।

[आचाराङ्ग अ० २ उ० ६ ठा०]

॥ भावार्थ ॥

“ केवली भगवान् बन्धे हुवे नहीं, छूटे हुवे नहीं, जैसे वे वर्त्ते होय वैसे ही करना और जैसा उनका आचरण नहीं है वैसा नहीं आचरे । अर्थात् संयम क्रिया जैसी केवलियों की है वैसी ही अकेवलियों की है । हिंसा तथा लोक संज्ञा को जान कर उनका परिहार करना ।

॥ बोल उन्नोसमां ॥

वत्तव्वया २ कही १ स्व समय वत्तव्वया, २ पर समय वत्तव्वया । स्व समय वत्तव्वया की तो साधु आज्ञा दे तथा मानण योग छै, पर समय वत्तव्वया में सात अवगुण कहा—१ अनर्थ, २ अहित, ३

असंयम, ४ अक्रिया, ५ उन्मार्ग, ६ उपयोग रहित,
७ मिथ्यात्व सहित । सा० सू० अनुयोग द्वार सात
नयां को समास पूरो हुवो जठै ।

॥ दोहा ॥

दोय वक्तृता जाणवी, स्वपर समय विचार ।
उभय मिथ्यां तीजी हुवे, आखी अनुयोग द्वार ॥७८॥
वक्तृता स्व समय जे, श्री जिन आगम सार ।
पाखण्ड रचिता पर समय, तेह नी.बात असार ॥७९॥
मुनि आज्ञा स्व समय नी, पर समय अवगुण सात ।
अहित अनर्थ असद्भाव बलि, अक्रिया उन्मार्गे जात ॥८०॥
ते उपदेशवा योग्य नहीं, दरशन जे मिथ्यात ।
यह सातों अवगुण कह्या, नहीं गुण छै तिलमात ॥८१॥
कांडक जिन सिद्धान्त नी, कांडक पर सिद्धान्त ।
बिहु मिल तीजी पिण हुवे, वत्तव्वया आख्यात ॥८२॥
स्व तेह स्व मां प्रक्षेपवो, पर तेह पर मां जोय ।
तिण सूं दोय वत्तव्वया, न्याय हिये अवलोय ॥८३॥
जिन प्रणीत सिद्धान्त ते, संक्षेपें आख्यात ।
बलि विस्तार प्ररूपणा, कहै दृष्टांत विख्यात ॥८४॥
विशेष करि दर्शावतां, परिषध में उपदेश ।
मुनि स्व समय दढ़ावता, जिनोक्त वचन हमेश ॥८५॥

आगम वच ते स्व समय, तेहिज मानण योग ।
 वक्तृता पर शास्त्र नी, जाणो तांस अयोग ॥८६॥
 नैयम संग्रह व्यवहार जे, इच्छै वक्तृता तीन ।
 स्व पर मिश्र इम त्रण हुवे, ऋजु सूत्र दोय लीन ॥८७॥
 शब्दादिक त्रण नयतिका, इच्छे वक्तृता एक ।
 स्व समय तेहिज सत्य है, पर ते सहु अचिवेक ॥८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं वक्तव्यम् ? वक्तव्यम् त्रिविधं पञ्चता, तंजहा—
 १ ससमय वक्तव्यम्, २ पर समय वक्तव्यम्, ३ ससमय पर समय
 वक्तव्यम्, से किं तं ससमय वक्तव्यम् ? ससमय वक्तव्यम्—जत्थयां
 ससमय आद्य विज्जंति पण्ण विज्जंति पल्लविज्जंति इंसइ नि दंसिज्जइ
 उवदंसिज्जइ से तं ससमय वक्तव्यम् । से किं तं पर समय वक्तव्यम् ?
 जत्थयां पर समय आद्यविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति से तं पर समय
 वक्तव्यम् । से किं ते ससमय पर समय वक्तव्यम् ? जत्थयां ससमय
 पर समय आद्यविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति से तं ससमय पर समय
 वक्तव्यम् इयासिको न ओ कं वस्तव्यं इच्छंति ? तत्थ योगम संगह
 व्यवहारो त्रिविहं वस्तव्यं इच्छंति तंजहा—ससमय वक्तव्यं पर समय
 वक्तव्यं ससमय पर समय वस्तव्यं । उज्जु सुओ दुविहं वस्तव्यं
 इच्छई तंजहा—ससमय वक्तव्यं पर समय वस्तव्यं तत्थयां जासा
 ससमय वक्तव्यम् सा ससमय परिट्ठाजा, सा परसमय वक्तव्यम् सा पर
 समय परिट्ठाजा, तम्हा दुविहा वक्तव्यम् एत्थि त्रिविहा वस्तव्यम् ।

तिथि सदा नया राग ससमय वक्तव्यं इच्छन्ति श्रुति पर समय वक्तव्या, कम्हा ? जम्हा परसमय ? अण्डे, २ अहेउ, २ असम्भावे, ४ अकिरिए, ५ उम्मग्गे, ६ अणुवएसे, ७ मिच्छा दंसण, मितिकट्टु तम्हा सव्व ससमय वक्तव्या श्रुति पर समय वक्तव्या, से तं वक्तव्या ।

अनुयोग द्वार सूत्र ।

॥ भावार्थ ॥

प्रश्न - वक्तव्यता कितने प्रकार की है। उत्तर—वक्तव्यता तीन प्रकार की हो कहते हैं:—१ स्व समय, २ पर समय, ३ और स्वपर समय वक्तव्यता । स्वसमय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? “स्वसमय अर्थात् स्वमत जिन प्रणीत सूत्रों को संक्षेप से कहे, विस्तार पूर्वक कहे, प्ररूपणा करे, दृष्टान्तादि कर दर्शावे, प्रषधामें उपदिशें, विशेष कर दर्शावे, सो स्वसमय वक्तव्यता ।” अहो भगवान् पर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? “जो अन्य मत के शास्त्र उक्त प्रकार सामान्य प्रकार कहे, ग्रहणे, दृष्टान्त से कहे, विस्तार से कहे, विशेष कर दर्शावे, और उपदिशे, वह पर समय वक्तव्यता है ।” स्वपर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? “जो स्वमत के शास्त्रों और परमत के शास्त्रों को शामिल करके कहे यावत् उपदिशे सो स्वपर समय वक्तव्यता है ।” अब नयों का समास कहते हैं—नैगमसंग्रह और व्यवहार यह तीन नय वस्तु वक्तव्यता को माने, और ऋजु सूत्र नय दो प्रकार को वक्तव्यता को माने, स्वसमय और पर समय वक्तव्यता । परन्तु दोनों को मिला के मिश्र वक्तव्यता को नहीं माने क्योंकि जो स्व समय वक्तव्यता है उसे स्वमत में स्थापन करे, और जो पर समय वक्तव्यता है उसे पर मतमें स्थापन करे, इसलिये दोनों ही प्रकार की वक्तव्यता है । शब्द और समामिरुद्ध और एवं भूत नय केवल एक स्वसमय वक्तव्यता को ही माने, परन्तु पर समय वक्तव्यता को नहीं इच्छे;

क्योंकि जो पर समय वक्तव्यता है उसमें अनर्थ है, अहेतु है, अस्तद्धाय है, क्रिया रहित है, उन्मार्ग है, कुलपदेश है, मिथ्या दर्शन है। यह सात दोष पर शास्त्र में है। अतः एक स्त्र समय वक्तव्यता ही है पर समय वक्तव्यता नहीं।

॥ बोल बीसमां ॥

केवली प्ररूपियां धर्म एकान्त प्रधान कह्यो सा०
सू० प्र० सूर्यगडांग अ० ६ गा० ७।

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानी भाषियो, तेहिज धर्म एकान्त ।
धुर सूर्यगडांगे छढे, सप्तमी गाथा तंत ॥८६॥
प्रधान धर्म श्री जिन कह्यो, तसु नेता वर्द्धमान ।
गोमे हुए देवां विचे, इन्द्र समा गुण ग्वान ॥८७॥
सब नेतां में श्रेष्ठ है, काश्यप गोत्र उत्पन्न ।
दिव्य धर्म जिनवर कह्यो, तेहिज धर्म सुमन्न ॥८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणुतरं धम्म मिशं जिग्घासा, गेसा मुणी कासव आमुगन्ने ।
इन्देव देवाणा महानुभावे, महन्त गेता दिवसां विगिह्ठे ॥८९॥

प्र० सूर्यगडांग अ० ६ गा० ८।

॥ भावार्थ ॥

प्रधान धर्म है जिनेश्वरों का कान हुआ। उनके नेता मुनीश काश्यप
गौत्रोत्पन्न श्री महावीर स्वामी हैं। वे हजारों नेताओं में सुप्रसिद्ध हैं।

॥ बोल इक्कीसवां ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया
कपटाई रहित कह्यो । सा० सू० सूयगडांग अ० ६
गाथा १ ।

॥ दोहा ॥

धर्म यथा तथ्य आखियो, जेह माहणं मतिवन्त ।
कपट रहित तेह सरल छै, जिनोक्त धर्म सुन तन्त ॥६२॥
प्रथम सूयगडांगे कह्यो, नवम अध्ययन रे माहि ।
पहिली गाथा ने विषै, जिन कह्यो धर्म कहाहि ॥६३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कयरे धर्म अकसाये, माहणै मति मत्त ।

अजुं धर्म जहा तच्चं, जिणाणं तं सुणेह मे ॥१॥

प्र० सूत्र कृतांगे नवम अध्ययने १ गाथा

॥ भावार्थ ॥

माहण अर्थात् मत हर्नो २ ऐसा उपदेश जिन का वै मुनि कैसा
धर्म कहै—अतु अर्थात् सरल माया कपटाई रहित जैसा जिनेश्वरों से
सुना है वैसा ही धर्म कहै ।

॥ बोल बाबीसवां ॥

जिस करणी में किंचित मात्र हिंसा नहीं ते
करणी ज्ञान रो सार कही । सा० सू० प्र० सूयगडांग
अध्ययन १ उ० ४ गाथा १० वीं ।

॥ दोहा ॥

किञ्चित्तमात्र हिंसा नहीं, ते करणी करे आर्य ।
धुर सूयगडांगे कह्यो, ज्ञान सार तेह कार्य ॥६४॥
अहिंसा समता धरै, ज्ञान तणो यह सार ।
एहिज जाणपणो सिरे, भाष्यो श्री जगतार ॥६५॥
प्रथमाध्ययने चतुर्थे, उद्देशे दशमी गाह ।
अहिंसा में वर्तता, ते विज्ञानी कहाहि ॥६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

एवं नायिण्यो सारं, जेन हिंसइ किञ्चिणं ।

अहिंसा समयं चैव, एतावतं वियायिणा ॥१०॥

प्र० सूत्र कृतांगे १ अध्ययने ४ उद्देशे १० गाथा ।

॥ भावार्थ ॥

ज्ञान पाने का, निश्चय कर के यही सार है कि किञ्चित्तमात्र भी हिंसा नहीं करे अहिंसा और समता धरै यही ज्ञान विज्ञान है ।

॥ बोल तेवीसवां ॥

केवली ज्ञानी भाष्यो धर्म सन्देह रहित कह्यो ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १० वें गा० ३ री

॥ दोहा ॥

संदेह रहित सु आखियो, केवली भाषित धर्म ।
आत्म वत् पर प्राणी गिण, न करे हिंसा कर्म ॥६७॥

(३६६)

शुद्ध आहार लेवे, सदा, संचय न करे लिगार ।
सूयगडांग दशमें कह्यो, तीजी गाथा सार ॥६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सुयपत्न्याय धम्मे वित्तिगिच्छ तिरणे ।

त्ताढे चरे धाय तुत्ते 'पयासु ॥

आयं न कुज्जा इह जीवियट्ठी ।

त्रय न कुज्जा सु तवस्सि भिवखू ॥३॥

॥ भावार्थ ॥

समाधिवन्त पुरुष केवली भाषित धर्म को सन्देह रहित मान कर
सर्व जीवों को आत्म सुल्य मानता हुआ निर्दोष आहार की गवेषणा
करके चिचरे । असंयम जीवितव्य के लिये पापास्रव करे नहीं ऐसे
सुतपस्वी साधु धनधान्यादि आहार पाणी का सञ्चय न करे ।

॥ बोल चौबीसवां ॥

आप रो छान्दो रुंधे तेहिज धर्म । सा० सू०
उत्तराव्ययन अ० ४ गा० ८ वीं ।

॥ दोहा ॥

छान्दो रुंधे आपणो, तेहिज धर्म उदार ।

बहु वर्ष पूर्वा लगे, रोके स्वेच्छाचार ॥६९॥

पर छन्दे जिम अरुष लहै, योगपणो अवधार ।

तिम अममत्त पणे मुनि, लोपे नहीं गुरुकार ॥७०॥

(३६७)

शीघ्र पर्णें कर्म क्षय करी, पामे मोक्ष प्रधान ।

चौथा उत्तराध्ययन में, अष्टम गाथा जान ॥१०१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

छन्द निरोहेण इवेइ मोक्खं, आसे गहा सिखिये बम्म धारी ।

पुब्बाई वासाई चर अप्पमत्तो, तुम्हा मुणी खिण्ण मुवेइ मोक्खं ॥८॥

उत्तराध्ययन अ० ४ ।

॥ भावार्थ ॥

अपना छन्दा अर्थात् अपनी इच्छा का निरोध करने से मुक्ति हाती है । जैसे जातिवन्त अश्व (घोड़ा) सवार की इच्छानुसार रहने से योग्यता प्राप्त करके दुःखों से छुटकारा पाता है । वैसे ही मुनि पूर्व वा धर्मों पर्यन्त अपनी इच्छा (छन्दा) को रोक के गुर्वाज्ञा प्रमाण चलते अप्रमत्तपने विचरता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है ।

॥ बोल पच्चीसवां ॥

केवली प्ररुण्यो धर्म अहिंसा संयमो तवो कह्यो
सा० सू० दशवैकालिक अध्ययन १ गा० १ ली ।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, धुर अध्ययन मङ्गार ।

धुर गाथा केवली प्रणित, अहिंसा धर्म स्मार ॥१०२॥

अहिंसा संयम तपो, यह धर्म मङ्गलीक ।

तासु नमे सर्व देवता, जासु धर्म मन ठीक ॥१०३॥

(३६८)

॥ सूत्र पाठ ॥

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।

देवाधि तं नयं संति, जस्स धम्म सयामणो ॥१॥

दशवैकालिक अ० १।

॥ भावाथे ॥

अहिंसा संयम तप रूप धर्म उत्कृष्ट मङ्गल है, जिनका मन संदा धर्म में है। उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं।

॥ बोल छबीसवां ॥

अपछन्दा री प्रशंसा करै करावै करता ने भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो। सा० सूत्र निशोथ उद्देशे ११ वें।

॥ दोहा ॥

त्रिकरण प्रशंसा करे, अपछन्दा री सोय ।

प्रायश्चित्त मुनि ने कह्यो, निशीथ ग्यारहवें जोय ॥१०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खु अहङ्कन्दं पसंसइ पसंसं तं वा साइअइ ॥१८७॥

निशीथ उद्देशा अ० ११ वां।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अपछन्दा अर्थात् अपनी इच्छानुसार चलने वाला अविनीत की प्रशंसा करे करावै अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे।

(३६६)

॥ बोल सताबीसवां ॥

बाल मरण री प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे ११ वें ।

॥ दोहा ॥

सुनिवर बाल मरण तणी, करे प्रशंसा कोय ।
करतां प्रते अनुमोदियां, दंड निशीथ में जोय ॥१०५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

बाळ मरणाणि नर पसेसइ पसंतं तं वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा ११ वां

॥ भावार्थ ॥

बाल रमण अर्थात् बिना अनशन किये मिथ्यात सहित मरे उसकी प्रशंसा करे करावे और उसका अनुमोदन करे तो प्रायश्चित्त ।

॥ बोल अठाबीसवां ॥

जो साधु गृहस्थ ने अणतीर्थी ने १ असाण, २ पाण, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ पाय पुच्छण, ये आठ बोल देवै देवावै देता ने भलो जाएँ तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे १५ वें ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थी वा गृहस्थ ने, च्यार प्रकारे आहार ।

वस्त्र पात्र कम्बल बली, पाय पुच्छणो धार ॥१०६॥

ये आठ बोल देवे तसु, तथा देवावे ताय ।

देतां प्रते भलो जाणियां, दंड चौमासी आय ॥१०७॥

निशीथ उद्देशो पन्दरहवे, भाष्यो श्री जगतार ।

पक्षपात सह परिहरी, जोवो नयण उधार ॥१०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे मिक्खू अण्ण उत्थिण्ण वा, गारत्थिण्ण वा, असण्ण वा, पाण्ण

वा, खाइमं वा, साइमं वा, देयइ देयं तं वा, साइज्जइ ॥७८॥

जे मिक्खू अण्ण उत्थियेण वा, गारत्थिण्ण वा, वत्थं वा, पडिग्गहं

वा, कंवलं वा, पाय पुच्छणं वा, देयइ देयं तं वा साइज्जइ ॥७९॥

निशीथ उद्देशा १५ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को आहार पानी खादिम खादिम देवे देवावे देते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित्त । जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को वस्त्र पात्र कम्बल पाद (पग) पुच्छगा देवे देवावे देते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित्त ।

॥ बोल उनतीसवां ॥

जो साधु बूसी राई ने अबूसी राई कहै अबूसी राई ने बूसी राई कहै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे ।

सा० सू० निशीथ उ० १६ वां ।

॥ दोहा ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र तणो, धारक बूसी जेह ।

ते साधु गुण आगरा, तसु जे बूसी बदेह ॥१०९॥

विराधक ज्ञानादिक तणो, विषय लम्पटी जान ।

ते अबूसी राई ने बूसी कहै, प्रायश्चित्त तसु मान ॥११०॥

निशीथ उद्देशे सोलहवें, तेरम चवदम बोल ।

निन्दा करि गुणवन्त बी, गुण तेहना मत ओरल ॥१११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू बूसी रायइ अबूसी रायइयें वदइ वदं तं वा साइज्जइ ।

जे भिक्खू अबूसराइयं बूमराइयं वदइ वदं तं वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा १६ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु बूसीरायई अर्थात् ज्ञान दर्शन चरित्र गुणके धारक अपने से बड़े मुनिराजको अबूसी रायई कहे और अबूसी रायई जो विषय लम्पटी को बूसी रायई कहे तो चौमासी प्रायश्चित्त ।

॥ बोल तोसवां ॥

सरीखा साधु होकर सरीखा साधुवां ने स्थानक देवे नहीं. देवावे नहीं, देतां प्रते भलो जाणै नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें ।

॥ बोल इकतीसवां ॥

सरीखी साध्वी होकर सरीखी साध्वी ने स्थानक देवे नहीं, देवावे नहीं, देतां प्रते भलो जाणै नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें ।

॥ दोहा ॥

सरिखा साधु ने मुनी, थानक में ठहराय ।

निशीथ उद्देशे सतरहवें, प्रायश्चित्त कहवाय ॥ ११२ ॥

इमहिज सरखी साधवी, साध्वियां प्रते जान ।

प्रायश्चित्त आवे तसु, जो नहीं दे निज स्थान ॥ ११३ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिखू निगंगे निगंगस सरिसगस्त सं ते उवासे, अन्ते
उवासे, न देइ न देयं तं वा साइज्जइ । जे भिखूणि गिगंगी
गिगंगीए सरिसयाए, सं ते उवासे न तं वा साइज्जइ ।

सा० सू० निशीथ उद्देशा १७ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु निर्ग्रन्थ सद्गुरु निर्ग्रन्थ को अपनी निश्रा में उनके रहने
जैसी जगह हैं वे उनको नहीं देंगे, नहीं देवावे, और नहीं देने वाले को
अनुमोदना करे, तो प्रायश्चित्त आवे । जो साधवी अपने जैसी साधवियों
को अपनी निश्रा में रहा उपाश्रय नहीं देवे, नहीं देवावे, नहीं देते को
भला जाने, प्रायश्चित्त आवे ।

॥ बोल बत्तीसवां ॥

अन्य तीर्थी की ग्रहस्थ की बेयावच्च करे, करावे,
करतां प्रते भलो जाणें तो प्रायश्चित्त आवे । सा०
सू० निशीथ उ० ११ वां ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थी वा ग्रहस्थ की, वेयावच कियां है दंड ।
 भलो जाण्यां पिण दंड है, निशीथ ग्यारहवें मंड ॥११४॥
 तेलादिक मर्दन करे, मसले दाबे पाय ।
 धोवे रंगे प्रमाजें, बलि लोद्रवादि लगाय ॥११५॥
 तसु तन में देखी करी, गड़गुम्बड़ादिक कोय ।
 पूंजे धोवे मालिश करे, बलि छेदे अवलोय ॥११६॥
 रुधिर राध काढ़े तसु, तेल लेपादि लगाय ।
 धूपादिक देई करि, किमि आदि निकलाय ॥११७॥
 केश संवारे काट कर, दन्तादिक धोवाय ।
 घसे दांत मज्जन करे, कान नाक नूं मैल कढ़ाय ॥११८॥
 नेत्र रोग युत देख के, प्रक्षाली साफ करेह ।
 सुरमादिक घाले तसु, भौंह बाल संवारे तेह ॥११९॥
 पसीनादिक साफ करि, सात्ता दे उपजाय ।
 तृतीय उद्देशे जिम कह्या, पचपन बोल गिणाय ॥१२०॥
 यावत् विचरन्ता मुनी, अन्य तीर्थी प्रते देखि ।
 वा ग्रहस्थी प्रत देख कर, शिर ढांके सुविशेष ॥१२१॥
 इत्यादिक वेयावच कियां, बलि करायां ताह ।
 भलो जाण्यां पिण दंड कह्यो, सूत्र निशीथ रे मांह ॥१२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खु अण्ण-उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, पाये संवाहेज्ज

वा, पलि मदेज्ज वा, संवाहं तं वा, पलि मदे तं वा, साइज्जइ । एवं
जात्र तइयदे उद्देशो गमो खेषवो, अण्ण उत्थियस्स वा, गात्थियस्स
वा, अभित्तावो जाव जे भिक्खू गामाण्णुगाम दुइज्ज माणो, अण्ण
उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, सीस दुवारियं करेइ, करे तं वा
साइज्जइ ।

सू० निशीथ उद्देशा ११ वाँ

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अन्य तीर्थों का वा गृहस्थ का पग मसले मर्दन करे अथवा
करते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित्त । जिस प्रकार तीसरे उद्देशे में
५५ बोल कहे हैं उसी प्रकार यहां सर्व कहना यथा—१ अन्य तीर्थों को
वा गृहस्थ को प्रमार्जे २ मर्दन करे, ३ तेलादि मसले, ४ लोद्रादि लगावे,
५ धोवे, ६ रंगे, ७ ऐसे ही शरीर को प्रमार्जे, ८ मर्दन करे, ९ तेलादि
मसले, १० लोद्रादि लगावे, ११ धोवे, १२ रंगे, १३ शरीर के गड़गुम्ब-
ड़ादि होखे उन्हें प्रमार्जे १४ मर्दन करे, १५ तेलादि लगावे, १६ लोद्र-
वादि लगावे, १७ धोवे, १८ रंगे, १९ गुम्बड़ादिको छेदे, २० रक्त निकाले,
२१ पीप निकाले, २२ धोवे २३ छेप करे २४ मर्दन करे, २५ धूप देवे,
२६ गुदा की कृमि निकाले, २७ नख सुधारे २८ गुह्य स्थान के बाल छेदे,
२९ भौंहों के जंघा के कांख के दाढ़ों के मूँछ के मस्तक के कान के नाक
के आंख के इन नवों स्थानों के केश छेदे, ३० दांत घसे, ३१ दांत धोवे,
३२ दांत रंगे, ३३ ओष्ठ घसे ३४ ओष्ठों का मैल निकाले, ३५ ओष्ठ धोवे,
३६ खटाई देवे, ३७ रङ्ग चढ़ावे, ३८ लम्बे ओष्ठों को काटे, ३९ दीर्घ मूँछे
काटे, ४० आंख साफ करे, ४१ आंख का मैल निकाले, ४२ आंख धोवे,
४३ आंख शुद्ध करे, ४४ अश्विन सुरमादि डाले, ४५ भौंहों के केश सुधारे,
४६ आंख, कान, नाशिका, दांत, नखों का मैल निकाले, ४७ स्वेद
(पसीना) पोंछे, यावत् साधु मुनिराज ग्रामानुग्राम विचरते हुए अन्य

तीर्थो वा गृहस्थ को देखकर उनका मस्तक छत्र वल्गादि से ढाँकी
इत्यादि वैयावृत्य करे करावे, करते हुए की अनुमोदना करें, तो प्राय-
श्चित्त ।

॥ बोल तेतीसवां तथा चौतीसवां ॥

साधु आप रहता होय जिण स्थानकमें न्यातीला
वा अण न्यातीला. श्रावक वा अश्रावक ने आखी
रात वा आधी रात, राखे तो प्रायश्चित्त आवे । सा०
सू० निशोथ उद्देशे ८ वें बोल १२ वें ।

साधु रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा
अण न्यातीला, श्रावक वा अश्रावक, आखी रात वा
आधी रात रहै उणां ने नहीं निषेधे तो प्रायश्चित्त
आवे । सा० सू० निशोथ उद्देशे ८, बोल १३ वें ।

॥ दोहा ॥

साधु बसे तिण स्थान में. निज नाती प्रते जान ।
अथवा अण न्याती प्रते, राख्या दंड पिछान ॥१२३॥
श्रावक हो अथवा बलि, अश्रावक जो होय ।
सर्व वा अर्ध रात्रि में, राख्यां प्रायश्चित्त जोय ॥१२४॥
इमहिज रहता हुर्यां प्रते, नहीं निषेधै तास ।
निशीच उद्देशे आठवें, प्रायश्चित्त कह्यो जास ॥१२५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्षु यायगं वा अणायगं वा उवासयं वा अणुवासयं क,

अन्तो उवस्सयरस अद्ध वरायं, कसिण वरायं, सवसावेइ, संवसा वन्ताः
साइज्जइ ॥१२॥ जे भिक्खू तं न पडियाएक्खेइ न पडियाइक्खं तं वा,
साइज्जइ ॥१३॥

सू० निशीथ उद्देशे ८ वें ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ज्ञाती ने तथा अज्ञाती ने, श्रावक ने तथा अश्रावक ने,
आप जिस स्थान में रहते हैं उसी स्थान में सर्व रात्रि अथवा अर्द्ध
रात्रि उनके साथ रहे यावत् अनुमोदे तो प्रायश्चित्त । रहते हुए को न
निषेधे अर्थात् मना न करे तो प्रायश्चित्त आवे ।

॥ सोरठा ॥

एक स्थान इक कल्प रे, तिण में ग्रहस्थी ने मुनी ।
राख्यां प्रायश्चित्त जल्प रे, अर्द्ध तथा सर्व रात्रि तक ॥१२६॥
इक आंगण उपरान्त रे, सामायक पौषध ग्रही करे,
ते ठाम २ विरतन्त रे, सूत्र देख निर्णय करो ॥१२७॥

॥ बोल पैतीसवां ॥

सांवद्य दान की प्रशंसा करे तिण ने प्राणी
जीवां को बध बंछणहारो कखो । सा० सू० सूयग-
डांग अ० ११ वें गा० २० वीं ।

॥ दोहा ॥

दो सांसारिक दान री, करे प्रशंसा कोय ।
बध बंछे षट् काय नू, सूयगडांगे जोय ॥१२८॥

अध्ययन इग्यारहवां ने विषै, बीसमी गाथा मांहि ।
निषेधियां वर्त्तमान में, वृत्ति छेद कहाहि ॥१२६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जेव दास्य पसंसंति, वह मिच्छन्ति पाणिणो ।

जेययां पडि सेहंति, वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥१२७॥

॥ भावार्थ ॥

जो दान की प्रशंसा करे सो प्राणी जीवों का बंध बंधता है, और
जो वर्त्तमान में निषेध करे तो लेने वाले की वृत्ति का छेद करे ।

॥ सौरठा ॥

इहां को प्रश्न करेह रे, सावय शब्द नहीं पाठ में ।

समुच्चै दान कहेह रे, तसु उत्तर आगे सुणो ॥१३०॥

छहुं काय री घात रे, मुनि ने देतां नहिं हुवै ।

ते निरवय साक्षात् रे, तिणरी प्रशंसा बहु जगह ॥१३१॥

दान क्षील तप भाव रे, चार मार्ग यह मुक्ति रा ।

ते निरवय ठहराव रे, करे जिन आज्ञा सहित जो ॥१३२॥

शरीर अधिकरण नांहि रे, पीहर है षट् काय ता ।

यावज्जीव लग ताहि रे, मुनि रे हिंसा त्याग है ॥१३३॥

तसु दीधां पुण्य जान रे, अशुभ कर्म पिण क्षय हुवै ।

दियां सुपात्र दान रे, आवक रे व्रत बारमूं ॥१३४॥

दुर्लभ कछा जिनराय रे, शुद्ध दान दाता तिका ।

दीधां शुभ गति जाय रे, दशवैकालिक विषे कह्यो ॥१३५॥

सुमुखं प्रमुखं दश तांय रे, मुनि ने दान देई करी ।
 एकावतांरी थाय रे, केइक तिण भव मोक्ष में ॥१३६॥
 पञ्चम अङ्ग पिछाण रे, अष्टम शत उद्देश षट् ।
 तथा रूप मुनि ने जाण रे, आवक पडिलाभे तसु । १३७
 एकान्त निर्जरा होय रे, किञ्चित्मात्र पिण पाप नहीं ।
 पुण्य बन्ध अवलोय रे, ठाम ठाम सूत्रे कह्यो ॥१३८॥
 स्थानाङ्ग नवमे जोय रे, नव विधि पुण्य बन्धे कह्यो ।
 निर्वच्य नवों अवलोय रे, मुनि ने कल्पे ते कहा ॥१३९॥
 नमस्कार कियां जाहि रे, तेहने निर्दोष अन्न दियां ।
 पुण्य तणो बन्ध थाहि रे, नव ही सरीखा जाणिये । १४०
 ते मांटे इहाँ जान रे, निर्वच्य दान न लेखवो ।
 बीसमीं इकबीसमीं पिछान रे, गाथा देख निर्णय करो ॥
 अस्ति नास्ति ये दोय रे, पुण्य पाप नी नहीं कहे ।
 वर्त्तमान में जोय रे, पूछ्यां थी मुनि नहीं वदे ॥१४२॥
 तेम इहां अवधार रे, निवेधियां वर्त्तमान में ।
 करन्ति शब्दे धार रे, क्रिया तेह वर्त्तमान री ॥१४३॥
 कियां प्रशंसा सोय रे, बध बंछणहारो कह्यो ।
 प्रत्यक्ष ही अवलोय रे, सावद्य दान यह जाणवो । १४४
 ठाम २ जिन राय रे, कुपात्र दान तणा कहा ।
 फल कंडुआ अधिकाय रे पक्षपात तज सांमलो ॥१४५॥
 मृगां लोढा ने देख रे, गौतम जिनपै आय करि ।

दुःख विपाक में लेख रे, पूछ्यो किं दत्ता इणे ॥१४३॥
 सूत्र भगवती मांहि रे, अष्टम शतके देखलो ।
 छुट्टे उद्देशे ताहि रे, असंयती अविरतिने ॥१४७॥
 पाप एकान्त जे थाय रे, सचित्त अचित्त पड़िलाभियां ।
 निर्जरा किञ्चित नहिं रे, प्रत्यक्ष पाठ विषे कस्यो ॥१४८॥
 तथा सूयगडाअंगेह रे, नवम अध्ययन तेबीसमीं ।
 गाथा में इम लेह रे, साधु विन अनेरा प्रते ॥१४९॥
 दान देवो अवधार रे, कारण प्राप तणो तिको ।
 भ्रमण हेतु संसार रे, इत्यादिक बहु सूत्र में ॥१५०॥
 बलि आनन्द श्रावक जान रे, अन्य तीर्थी ने देण रा ।
 कीधा छे पचखान रै, सप्तम अंगे देखत्यो ॥१५१॥
 जो फल न कहे कदेह रे, सावध दान तणा अशुभ ।
 तो भवी किम जाणेह रे, सुपात्रकुपात्रज दान ने ॥१५२॥
 निषेधियां वर्तमान रे, अन्तराय लागे तसु ।
 बलि वृत्तिच्छेदक जान रे, दान लेण वाला तणी ॥१५३॥
 प्रशंसियां जे दान रे, प्राण घात बांछक कह्यो ।
 तो ते दीधां-दान रे, ते हिंसक किम नहीं हुवै ॥१५४॥
 मुनि विन अपर शरीर रे, अधिकरण बड़ काय नू ।
 तसु तीखों कियां सीर रे, हिंसादिक कारज तणो ॥१५५॥
 अव्रत मांहि देह रे, लेवे ते पिण अविरत में ।
 दूजो आसव सेवेह रे, तिण थी न हुवे पुण्य बंध ॥१५६॥

कोई कहे शुभ परिणाम रे, दान देण वाला तर्णी ।
 तिण सूं पुन्य बन्ध ताम रे, तैसु उत्तर हिये विचारिये ॥
 साता बंछी एक रे, धुर आस्रव सेवावियो ।
 दूजो बोल अलीकरे, दुःख दूजा रो मेंटियो ॥१५८॥
 तीजो चोरी कराय रे पर साता परिणाम से ।
 इक मैथुन सेवाय रे, साता रा परिणाम से ॥१५९॥
 इम परिग्रह रखवाय रे, हित बंछी भल भाव से ।
 यह पंचास्रव न्याय रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये ॥१६०॥
 धुर पंचम रे माहि रे, धर्म पुण्य जो होय तो ।
 विचला तीन में ताहि रे, धर्म पुन्य पिण जाणवो ॥१६१॥
 न हुवे शुभ परिणाम रे, पंचास्रव सेवावतां ।
 जिन आज्ञा बिन काम रे, कीधां थी धर्म पुण्य नहीं ॥
 तिणसूं लौकिक दान रे, प्रशंसवो नहीं मुनि भणी ।
 प्रशंसियां थी जान रे, इच्छक प्राणी बध नणु ॥१६३॥

॥ बोल छत्तीसवां ॥

विषय सहित धर्म बुरों, जिम ताल पुट जहर
 खायां, कुरीति से हाथ में शस्त्र लिया, कुविधि मन्त्र
 जपियां मरण पामें, तिम इन्द्रियों को विषय सहित
 धर्म ग्रहण ते धर्मा जन्म मरण बधावे । सा० सू०
 उत्तराध्ययन अ० २० वे गा० ४४

(३८१)

॥ दोहा ॥

जिम विष खायां तालपुटे, कुविधि शस्त्र हार्थ मभार ।
मन्त्र कुरीति जपियां थकां, पामे मरण तिवार ॥१६४॥
तिम विषय सहित जे धर्म छे, प्ररूपियां तंसु जान ।
दुःखदाई होवे घणो, जन्म मरण बहु मान ॥१६५॥
उत्तराध्ययन में जिन कह्यो, बीसमाध्ययन रे मांहि ।
चार चालीसवीं गाह में, हिंसा धर्म दुःखदाय ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

विशन्तु पीयं जह काल कूडं, हणइ सत्थं जह कुग्गाहियं ।

एसो विधम्नो विसत्रोव वन्नो, हणइ वेयालइवा विवन्नो ॥४४॥ :

उत्तराध्ययन अ० २० वें ।

॥ भावार्थ ॥

जैसे कालकूट जहर पीने से, कुविधि शस्त्र ग्रहण करने से, और कुरीति से वेतालादि मन्त्र जपने से, मृत्यु प्राप्त हो । वैसे इन्द्रिय विषय सहित धर्म प्ररूपना करने से जन्म मरणादि की वृद्धि हो तथा दुःखदाई हो ।

॥ बोल सैंतीसवां ॥

भाषा २ कही १. आराधक, २ विराधक । विराधक भाषा में औगुण ४ कहा यथा—१ असंयम, २ अविरति, ३ अपडियाई, ४ अपच्चेत्रखाणं पाप कर्म सा० सू० पन्नवणां पद ११ वें ।

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे जाणवी, भाषा जे बोलेह ।

आराधक प्रथमा कही, द्वितीय विराधक जेह ॥१६७॥

सउपयोग यथोक्त जे, ते आराधक जान ।

विराधक तेण पर अछे, बिन उपयोग अयुक्त पिछान ॥

अवगुण चार तिण में अछे, असंयम अव्रत अवलोय ।

अप्रतिहत अपचक्खाण इम पन्नवणा इग्यारहवें जोय ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चेयाइ भन्ते चत्तारि भासाज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विरा-
हए ? गीयमा इच्चेयाइं चत्तारि भासाज्जायाइं आउत्त भासमाणे आरा-
हए यो विराहए, तेषां पर असंजय, अविरय, अपडिहत, अपचक्खाय
पाव कम्मे ।

पन्नवण पद. ११ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

हे भगवान् यह चार भाषा जाति भाषते हुए आराधक है या
विराधक ? हे गौतम यह चार प्रकार की भाषा उपयोग सहित जैसे की
जैसे बोले तो •आराधक है, विराधक नहीं । इसके उपरान्त असंयम,
अविरत, अप्रतिहत, पाप कर्मों का अप्रत्याख्यान है ।

॥ बोल अड़तीसवां ॥

मिश्र भाषा बोलयां महा मोहनीय कर्म बंधे ।
सा० सू० दशाश्रुतसूत्र-अध्ययन ६ वें-बोल ६ वें ।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा बोल्यां थकां, महा मोहनीय बन्ध ।
नवमें बोले आत्रियो, श्रीदशाश्रुतस्कन्ध ॥१७०॥
जाणंतो परिपद विषे, सांच भूट बिहुं मेल ।
बोले कपट सहित जे, मिश्र बच कुकला मेल ॥१७१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जाण. भाषे परिपद, सच मोसाइ भासण ।

अनीण भूठे पुरिने, महा मोह पकुव्यड ॥६॥

दशाश्रुतस्कन्ध अ० ६ ।

॥ भावार्थ ॥

जो जानता है कि यह भूट है तो भी समा में बैठ कर मिश्र भाषा बोले, अर्थात् सत्य श्रुत का निर्णय न होवे ऐसी भाषा बोले सत्यासत्य भाषा बोले, कलेश की वृद्धि करे, सो महा मोहनीय कर्म उपार्जन करता है ।

॥ बोल उनचालीसवां ॥

मिश्र भाषा छोड़े छुड़ावे तिण ने समाधि कही ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अ० १० वें गा० १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

यचन गुप्ति प्राप्त मुनी, परम समाधिवन्त ।
छोड़े छोड़ावे मिश्र बच, शुभ लेश्या भर सन्त ॥१७२॥

घर छावे नहीं महा ऋषी, नहीं छावावे जेह ।

वर्जे संग स्त्री तणो, दशम सूयगडा अंगेह ॥१७३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

गुत्तोवई एय समाहि पत्तो, लेस समाहट्टु परिव्वयेजा ।

गिहं न छाये एवि छायेजा, समिस्स भाव पयहे पयासु ॥१५॥

॥ भावार्थ ॥

वचन गुप्तिवन्त अर्थात् सावद्य वचन गोपने वाले समाधि और शुभ
लेश्या के धारक अपने रहने के लिये घर छावे नहीं, अन्य से छावावे
नहीं, समभाव धारण करता हुआ मिश्र भाषा का त्याग करे ।

॥ बोल चालीसवां ॥

मिश्र भाषा तथा असत्य भाषा सर्व प्रकारे
छोड़नी कही, सत्य और व्यवहारनी भाषा बोलनी कही ।
सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गाथा १ लो ।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे असत्य, मिश्र, नहीं बोले मुनि बैण ।
सत्य व्यवहार ही भाषवे, च्यार भाषा में सैण ॥१७४॥
दशवैकालिक में कह्यो, ससमध्ययने खच्छ ।
पहली गाथा ने विषे, सीखे सविनय वच्छ ॥१७५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउयहं खलु भासाणं, परिसंखाए पएणवं ।

दोयहं तु विण्णयं सिक्खे, दो ण भासिज्जे सव्वसो ॥१॥

दशवैकालिक अ० ७ वा ।

(३८५)

॥ भावार्थ ॥

चार प्रकार की भाषा है जिसमें सत्य और व्यवहार तो विनय, पूर्वक सीखे, किन्तु असत्य और मिश्र भाषा सर्वथा प्रकारे नहीं बोलें ।

॥ बोल इकचालीसवां ॥

मिश्र भाषा रा धणी रो बचन अवक्तव्य कह्यो,
अणविमासो बोलनहार कह्यो, अज्ञानवादी कह्यो,
पूछ्यां रो जबाब देवा असमथे कह्यो, मिश्र धर्म
प्ररूपणो वालो आप रो मत थापवा भणी छलबल
मांडतो कह्यो । सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १२
चें गाथा ५ चीं ।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा प्राप्त थको, मिश्र नूं बोलनहार ।
बोले बिना बिचारियो, अज्ञान वादी धार ॥१७६॥
जाब देवा समरथ नहीं, पूछ्यां थी अवलोख ।
मिश्र धर्म प्रते स्थापवा, छल बल मांडै सोय ॥१७७॥
आत्म अक्रिया मान कर, फुन प्रकृति क्षय सुक्ति ।
इम इक पख इम दोय पख, सांख्य दर्शनी उक्ति ॥१७८॥
प्रथम सूयगडाअङ्गे कह्यो, द्वादशअध्ययने पेख ।
मिश्र वक्ता अवक्त हैं, पंठमी गाथा पेख ॥१७९॥

(३८६)

॥ सूत्र पाठ ॥

संमिस्स भावं व गिरा गहीए, से सुम्मुई होइ अणाणुवाई ।

इम दु पक्खं इममेग पक्खं, आहंसु वजाय तयां च कम्मं ॥५॥

प्र० सूत्र कृतांगे द्वादशमध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मिश्र भाव कौ प्राप्त होके, प्रश्न करने वाले को उत्तर देनेमें असमर्थ होते हैं, और मौन धारण करते हैं. वे अज्ञानवादी कभी क्या कहे, कभी क्या कहे, इस तरह से कभी एक पक्षी, कभी दो पक्षी होते हैं । और छल बल करके अपना मत स्थापन करते हैं ।

॥ बोल बयालीसवां ॥

साधु री आज्ञा बारे धर्म श्रद्धे तिण ने काम भोग में खूतो कह्यो, हिंसा रो करणहार कह्यो ।
सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ६ उद्देशो ४ थो ।

॥ दोहा ॥

साधु री आज्ञा बिना, श्रद्धे धर्म उदार ।

ते काम भोग में खूतियां, हिंसा रा करणहार ॥१८०॥

प्रथम आचारांगे कह्यो, षष्ठम अध्ययन मभार ।

चौथा उद्देशा विषे, सांभलज्यो विस्तार ॥१८१॥

ब्रह्मचर्य वसंता थकां, आण न मन मानेह ।

माननीय होऊं लोक में, इम धारी घर छांडेह ॥१८२॥

ते काम भोग गृद्धी छता, मूर्च्छित विषय मभार ।
समाधि मार्ग जिन भाषियो, ते नहीं सेवे लिंगार ॥१८३॥
आर्य व शुद्ध साधु तसु, शिक्षा दे किण वार ।
तो तेहनी निन्दा करे, वे द्विगुण मूर्ख इम धार ॥१८४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वसिता धमचेरंति आरां तं यो त्ति मयण माणा, अग्घायं तु
सौचाणि सम्म समणुत्ता जिविस्सामो, एगे शिक्खम्मते असम्मवेता
विडम्भमाणो कामेहि गिद्धा, अज्झो वयणा समाहि माधाए मज्झो
सयं ता सत्था मेव फरु सं वदन्ति । सील मता उअ सन्ता संत्ताए
रीयमाणा असीला अणुवय माणास्स वितिया मंदस्स बालया ।

प्र० आचारांगे षष्ठमध्ययने चतुर्थोद्देशे ।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक साधु होकर आज्ञा का अनादर करते हुए विषय लम्पटी
होकर उनमें लिप्त हो जाते हैं । मैं सब का माननोय होऊंगा ऐसा
विचार करके दीक्षा अंगाकार करते हैं, ब्रह्मचर्य धारते हैं, परन्तु गुर्वाज्ञा
प्रमाण मोक्ष मार्गमें नहीं चलते । काम इच्छा से सुखों में मूर्च्छित
होकर विषयों की ओर ध्यान दे गृद्धि हो तीर्थंकर भाषित जो समाधि
मार्ग है उसका सेवन नहीं करते, यदि उन्हें कोई अच्छी शिक्षा देवे तो
उनकी निन्दा करते हैं, गुर्वाज्ञा बिना अपने मनमाना हिंसा धर्म प्ररूपते
हुए सुखों से जीबें ऐसा विचार के भ्रष्ट हुए, वे बाल, मन्द बुद्धि वाले,
शुद्धाचार के पालने वाले साधुओं से द्वेषभाव रखके निन्दा करने में
तत्पर हैं अतः वे दुगुने मूर्ख हैं ।

॥ दोहा ॥

बलि तिणहिज उद्देशे कह्यो, धर्म कहे आज्ञा बाहर ।

प्राण जीव हिंसक तिका, असंयम अर्थी धार ॥१८५॥

अधर्मार्थी बाल ते, आरम्भार्थी जेह ।

हने हनावे प्राणी ने, भलो जाणता तेह ॥१८६॥

दुष्कर धर्म जिनवर कह्यो, ते पालन समर्थ नाहिं ।

तब तसु करे अवहेलना, तत्पर हिंसा माहिं ॥१८७॥

ते आज्ञा बाहिर थई, धर्म प्ररूपे एम ।

जिन आज्ञा नहीं मानतो, भ्रष्ट किया निज नेम ॥१८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अहमटी तुमंसि गाम बाले आरम्भटी अणुक्कय माखें हण पाखे
घायपाखें हण ओयावि तमणु जाण माखें घोरे धम्मे उदीरिए उव
हइएणं अण्णाणाए एस्स विसएण्णे वितट्ठे वियाहितेत्तिवेमि ।

प्र० आचार्यसूत्रे षष्ठमध्ययने चतुर्थदिशि ।

॥ भावार्थ ॥

संयम से भ्रष्ट हुए को सत्पुरुष इस तरह बोध देते हैं कि हे पुरुष
तू प्राणियों की हिंसा करता है हिंसा का उद्देश देता है अतः तू हिंसा
का चाहने वाला है अज्ञान है अधर्म का अर्थी है । तीर्थङ्करों ने तो
अहिंसा धर्म अराधना दुष्कर कहा है किन्तु तू आज्ञा बाहर होके आज्ञा
बाहिर धर्म प्ररूपता है धर्म की उपेक्षा करता है इसलिये तू मन्द
बुद्धि है ।

॥ बोल तीयालीसवां ॥

आज्ञा बाहर धर्म कहसी तिण रा तप अने
नियम भ्रष्टकह्या, तिण ने मूखे कह्यो, संसार से पार
पामतो नहीं कह्यो । सा० सू० आचारांग अध्ययन २
उद्देशो २ ।

॥ दोहा ॥

कहसी धर्म आज्ञा बिना, तिणरा तप अरु नेम ।
भ्रष्ट कह्या धुर अंग में, द्वितीय अध्ययने एम ॥१८६॥
दूजे उद्देशो देखल्यो, परिसह उपसर्ग पाय ।
आज्ञा बाहिर होयके, शिथिल थई मोह वर्तात ॥१८७॥
कहे मैं अपरिग्रही अछूं, पिण भोग मिल्यां भोगाय ।
तथा भोग मिलवा तणा, करत अनेक उपाय ॥१८८॥
ते भेष लजावे साधु नूं, सेवे काम विकार ।
बार २ मोह में फंस्या, जे नहीं पामे पार ॥१८९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए पुट्ठावि, णोणियट्ठं ति मन्दा मोहेण पाउडा, अपरि-
ग्गहा भविस्सामो समुट्ठाए लब्धे कामे अभिगार्हेति, अणाणाए सुणियो
पडिलेहन्ति, एत्थं मोहे पुणो पुणो सएणा णो पाराए ।

आचारांगे द्वितीयअध्ययने द्वितीय उद्देशो ।

॥ भावार्थ ॥

भक्तानी मूख जीव परीषह उपसर्ग आने से आज्ञा बाहिर होके

संयम से भ्रष्ट होते हैं, और कहते हैं हम अपरिग्रही हैं दीक्षा लेके मुनि का वेश लजाते हैं, काम भोग प्राप्त होने से अभिग्रहण करते हैं कामादि प्राप्त करने को उपाय करते रहते हैं इस तरह आज्ञा बाहिर धर्म कहने वाले जो हैं वे बार २ मोह में फंसे हुए संसारका पार नहीं पाते ।

॥ बोल चमालीसवां ॥

आज्ञा बारे उद्यम, आज्ञा मांहि आलस्य, ए दो बोल मत होज्यो, यह कुशल पुरुष भगवान् की श्रद्धा छै । सा० सू० आचारांग अ० ५ उ० ६ ।

॥ दोहा ॥

कुशल पुरुष महावीर नी, यह श्रद्धा है सार ।
 आज्ञा में उद्यम सदा, नहिं उद्यम आज्ञा बार ॥१६३॥
 उद्यम आज्ञा बाहिरे, आज्ञा में आलस्य ।
 यह दोनों मत होयज्यो, इम भाष्यो कुशलस्स ॥१६४॥
 धुर आचारांगे कह्यो, पंचम अध्ययने पेख ।
 छट्ठा उद्देशा विषे, जिन दर्शन इम लेख ॥१६५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए एगे सोवट्टाणे, आणाए एगे निरूबट्टाणे ।

एतं ते माहोउ, ए यं कुंसलस्स दंसयां ॥

[आचारांग पंचम अध्ययने षष्ठमोद्देशी ।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक आज्ञा बाहिर विपरीत प्रवृत्तिमें उद्यमी वर्तते हैं और कितने ही जिनाशानुकूल प्रवृत्ति में निरुद्यमी होते हैं अतः यह दोनों

अर्थात् आज्ञा में आलस्य और आज्ञा बाहिर उद्यम कभी न होवे, यही कुशल पुरुष भगवान् महावीर का दर्शन है ।

॥ बोल पैतालीसवां ॥

प्रवचन से विरुद्ध प्ररूपने वाला ने भगवान् निन्हव कह्यो । सा० सू० उववाई प्रश्न १६ वें ।

॥ दोहा ॥

प्रवचन विरुद्ध प्ररूपणा, करे ते निन्हव धार ।
सूत्र उववाई में कह्यो, उन्नीसवां प्रश्न मभार ॥१६६॥
'सप्त निन्हव प्रवचन तणा, भाष्या श्री जगतार ।
करता अशुद्ध प्ररूपणा, श्रद्धा तास असार ॥१६७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इचे दे सप्त पञ्चय णिण्डका ।

उववाई प्रश्न १६ वें ।

॥ भावार्थ ॥

यह सातों प्रवचन के निन्हव हैं ॥ इति ॥

॥ बोल छयालीसवां ॥

राग द्वेष दोनू पाप कहा दोनां से न्यारा रहे सो संसार में नहीं रहै । सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ३१ वें गाथा ३ रो ।

॥ दोहा ॥

राग द्वेष दो पाप हैं, अवर्त्तें पाप मभार ।

जे भिक्खू न्यारा रहै, ते न रुलै संसार ॥१६८॥

उत्तराध्ययने आखियो इक्कीसम अध्ययने जान ।

तीजी गाथा ने विषे, भाष्यो श्री भगवान ॥१६९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

राग दोसे य दो पावे, पाव कम्म पवत्तणे ।

जे भिक्खू रुम्भये निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥३॥

उत्तराध्ययन अ० ३१ वां ।

॥ भावार्थ ॥

राग द्वेष ये दोनों पाप है, पाप कर्म में ही प्रवर्त्तते हैं । अर्थात् किसी पै राग करने में भी पाप है और द्वेष करने में भी पाप है । इसलिये साधु राग द्वेष किसी पर भी न करें । वे संसार रुपी मंडल में भ्रमण नहीं करते हैं ।

॥ बोल सैंतालीसवां ॥

कोई इम कहै साता दियां साता होय, तिण
ऊपर भगवान छव बोल प्ररूप्या—१ आर्य माग से
वेगलो, २ समाधि मार्ग से न्यारो, ३ जिन धर्म री
हेलणा रो करणहार, ४ अमोच्च रो कारण, ५ थोड़ा
सुखां रे कारणे घणा सुखां रो हारणहार, ६ लोह

बाणिया नी परे घणो भूरसी । सा० सू० सूयगडांग ।
अ० ३ उद्देशो ४ गाथा छंठी ।

॥ दोहा ॥

साता दियां साता हुवे, इम को कहै अविचार ।
तिण ऊपर षट् बोल इम, भाष्या श्री जगतार ॥२००॥
शाक्यादिक इक एक जे, वा स्वतीर्थी जेह ।
परिषह थी डरता थका, ते जे इम भाषेह ॥२०१॥
साता से साता हुवे, एम कहै जे कोय ।
ते आर्य मार्ग से बैगला, समाधि से अलगा होय ॥२०२॥
बलि हेलण हार जिनि धर्म ना, ते अल्प सुखारें काज ।
घणां सुखां ने हारता, अछै अमोक्ष रो काज ॥२०३॥
लोह बाणिया नी परे, घणा भूरसी जेह ।
साता दियां साता हुवे, जे कोई एम वदेह ॥२०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इह मे मेउ भासन्ति, सात सातेण विजति ।
जे तत्थ आरिअं मग्गे, परमं च संभाहिए ॥६॥
भाएयं अव मज्जेता, अप्पेणं लुपहा चहुं ।
एतस्स अमोक्खाए, अय हारिव्व जूरह ॥७॥

॥ भावार्थ ॥

यही एक एक ऐसा कहते हैं, कि साता से साता होती है अर्थात्
सुख देने से सुख होता है ऐसा कहने वाले आर्य मार्ग से पृथक् हैं १,

धर्म समाधि का करने वाला जो जिन प्रणीत मोग है उससे दूर है २,
जिन मार्ग की निन्दा करने वाले हैं ३, अल्प सुखों के लिये बहुत सुखों
के हारने वाले हैं ४, अमोक्ष का कारण है ५, और वे लोह वर्णिक की
तरह बहुत पछतावेंगे ६ ।

॥ सौरंठां ॥

कोई कहै इम वाय रे, इहां मुनि निज तनु आश्रयी ।
उपसर्ग थी डरता ताय रे, कहै साता दियां साता हुवे ॥
तप लोचादि अनेक रे, करतां कष्ट हुवे घणो ।
भूख तृषादि विशेष रे, सह न सके तब इम कहै ॥२०७॥
पिण अन्य अन्य ने देख रे, अनुकम्पा आणी करी ।
भोजन वस्त्र सुविशेष रे, साता दियां साता हुवे ॥२०८॥
इम निज मन अनुसार रे, सूत्र विरुद्ध जो को कहै ।
तसु उत्तर अवधार रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये ॥२०९॥
क्षुधा निवारण काम रे, आहार उदक मुनि आचरे ।
वस्त्र कल्पनीक आम रे, पहिरे ओढे बावरे ॥२१०॥
अथवा निज तनु नी सार रे, व्यावच्च करावे शिष्य कने ।
देवे वस्त्र अरु आहार रे, अन्य मुनिनी वैयावच्च करे ॥२११॥
एम अनेक प्रकार रे, साधमीं साधू बनी ।
करता सार संभार रे, नव लघु वृद्ध मुनिवर तणी ॥२१२॥
ते साता अवधार रे, निरवच छे जिन आण में ।
करे करावे सार रे, दे आदेश अरु उपदिशे ॥२१३॥

मुनि बिन अपर शरीर रे, अधिकरण बट्काय नूं ।
 तसु तीखो कियां शरीर रे, हिंसादिक कारज तणो ॥२१४॥
 प्रथम उद्देशा मांहि रे, ससम शतके भगवती ।
 सामायक में ताहि रें, आवक आतम अधिकरण ॥२१५॥
 तो बिन सामायक जेह रे, ग्रहस्थी तणो शरीर जे ।
 ते अधिकरण कहेह रे, शस्त्र पृथ्व्यादि छहों तणो ॥२१६॥
 तसु तीखो करे कोय रे, अब्रत सेवावि करी ।
 तासु धर्म किम होय रे, इम सावद्य साता दियां ॥२१७॥
 सेवे अब्रत पाप रे, प्रथम करण ग्रहस्थी तिको ।
 देखो स्थिर चित्त थाप रे, दूजे करण सेवावियां ॥२१८॥
 धर्म पुन्य किम थाय रे, फुन अनुमोद्यां तृतीय करण ।
 हिये विचारो न्याय रे, जिन आज्ञा बिन धर्म नहीं ॥२१९॥
 षोडशमूं अनाचार रे, साता पूज्यां ग्रहस्थ नी ।
 दशवैकालिक अवधार रे, तीजे अव्ययने कह्यो ॥२२०॥
 मुनि ग्रहस्थ नी जान रे, तिणहिज अध्ययनने बिषे ।
 बैयावच्च कियां पिछान रे, अनाचार अठवीसमूं ॥२२१॥
 भूती कर्म करेह रे, ग्रहस्थ नी रक्षा निमित्त ।
 प्रायश्चित आवेह रे, निशीथ उद्देशे तेरहवें ॥२२२॥
 मार्ग बतायां दंड रे, सूत्र निशीथ मांहि कह्यो ।
 बतावे औषधादि सुमंड रे, ग्रहस्थ ने तो प्रायश्चित ॥२२३॥
 जीव संसार मभार रे, असाता बहु पावी रक्षा ।

स्व स्व कर्म अनुसार रे, इन्द्रिय विषय विकार थीं ॥२२४॥
 तिसु सेवावे भोग उपभोग रे, खाणो पीणा आदि दे ।
 त्यारो मिलायां जोग रे, दूजे करणें पाप है ॥२२५॥
 निज खाणो पीणो जेह रे, आवक अब्रत में गिणे ।
 तो पर ने खवाव्यां तेह रे, किम धर्म श्रद्धे समकिती ॥
 असंख्य एकेन्द्रिय जीव रे, मार असाता तसुं करे ।
 पंचेन्द्रिय ने साता अतीव रे, कियां धर्म किण विध हुवे ॥
 मोह अनुकम्पा आण रे, साता बछे निज पर तणी ।
 ते सावद्य ही पिछाण रे, जिन आज्ञा नहीं तेह में ॥
 उपदेशो त्याग कराय रे, घटावे अब्रत ग्रहस्थी नी ।
 तप चारित्र बढ़ाय रे, मुक्ति मार्ग साहमूं करे ॥२२६॥
 चिहुंगति भ्रमण मिटाय रे, दुख जन्म मरण मूकाय दे ।
 आत्म सुख प्रकटाय रे, निरवद्य साता इम हुवे ॥२२७॥
 ते माटे इहां जोय रे, सावद्य साता जाणवी ।
 स्व परनी अवलोय रे, बछ्या थी जिन धर्म नहीं ॥२२८॥
 सांसारिक उपकार रे, सांसारिक नूं मार्ग है ।
 जिन धर्म नहीं लिगार रे, जिन आज्ञा बिन कार्य में ॥
 तिण सूं कह्यो जिनराय रे, जे को इक इक इम बंदे ।
 सुख दियां सुख थाय रे, ते आर्य मार्ग से वेगला ॥२२९॥
 यावत् भूरसी तेह रे, लोह बाणिया नी परे ।
 सूत्रे जे भाषेह रे, तेह सत्य करि जाणवो ॥२३०॥

॥ बोल अडतालीसवां ॥

साधू होकर अनुकम्पा रे वास्ते त्रस जीवां ने बांधे बंधावे बांधतां ने अनुमोदे, तथा अनुकम्पा करि बंध्या जीवां ने छोड़े छोड़ावे छोड़तां प्रते भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित्त । सा० स० निशीथ उ० १२ वें बोल १ तथा २ रे ।

॥ दोहा ॥

मुनि अनुकम्पा आण कर, तस जीवां ने जोय ।
तृणादिक पाशो करी, बांधे बंधावे कोय ॥ २३५ ॥
अथवा बंधिया देख कर, छोड़े छोड़ावे तास ।
बांध्यां छोड्यां भलो जाणियां, प्रायश्चित्त चौमास ॥ २३६ ॥
निशीथ उद्देशे बारमे, पहले दूजे बोल ।
यह करुणा आज्ञा बाहर है, आंख हिया री खोल ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्षू कोलुण पडियाए, अणारियं तस पाण जायें ।
॥ तसुं पासणवा मुंज पासणवा, चम्म पासणवा रज्जु ॥
पासणवा सुत्त पासणवा, बंधइ बंध तं वा साइज्जइ ॥ १ ॥
जे भिक्षू वधैल्लयें वा, मुंजइ मुंज तं वा साइज्जइ ॥ २ ॥

निशीथ उद्देशे बारहवें ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अनुकम्पा के लिये अन्य त्रस प्राणियों की जाति अर्थात् त्रस जीवों को घास की डोरी से, चमड़े की डोरी से, रज्ज्व की डोरी से, इत्यादिक डोरियों से, बाँधे बंधावे बाँधते को अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त ॥१॥ ऐसे ही बंधे हुए त्रस जीवों को देख अनुकम्पा करके छोड़े छोड़ावे और अनुमोदे तो चौमासिक प्रायश्चित्त ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

शब्द अर्थ अज्ञ जेह रे, ते केइक इहां इम कहै ।
 कोलुण दीन भावेह रे, बांध्या छोड्यां दंड है ॥२३८॥
 ततोत्तर विज्ञ कह्यो एथ रे, दीन भाव इहां स्यूं हुवे ।
 त्रस प्रति बांध्यां तेथ रे, गरीब भाव होवे किण तणो ॥
 मुनिबर दीनज होय रे, त्रस बांधे किण कारणे ।
 कदा दीन त्रस जोय रे, तो साधू अनुकम्प करि ॥२४०॥
 तथा बांधिया प्रति देख रे, दीन पणो मुनि स्यूं करै ।
 जो दीन अनुकम्पा लेख रे, सावय तिण सूं प्रायश्चित्त कह्यो
 न्याय दृष्टि अवलोय रे, लघु चूर्णि जिन दास कृत ।
 तिहां कोलुण शब्दे जोय रे, कोलुणं अनुकम्प अर्थ ॥२४२॥

॥ जिनदास आचार्यकृत लघुचूर्णिका पाठ ॥

भिक्षू पुंस्व भणिओ कोलूणांति-कारणं अनु-
 कम्पा प्रतिज्ञाया इत्यर्थः ।

॥ सोरठा ॥

जो कहै कौतुहल काज रे, कोलुण शब्द तणो अरथ ।
 तो कोऊल कौतुहल बाज रे, तेह पाठ न्यारो अछै ॥
 ससदशम उद्देश रे. निशीथ सूत्र में देखिये ।
 बांधे वा छोड़ेश रे, कोऊल बड़ियाए तिहां शब्द है ॥
 तिहां कौतुहल निमित्त रे, मुनि अस प्राणी देख कर ।
 बांधे छोड़े इत्तरे, तो प्रायश्चित्त है मुनि भणी ॥२४५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खु कोऊल बड़ियाए अणण्यां तस पाणज्जाति तसा पास-
 यणवा जाव सुत्त पासयणवा बंधंति बंधं तं वा साइज्जइ ॥१॥ जे
 भिक्खु कोऊल बड़ियाए बंधेल्लयं वा मुयति मुयं त वा साइज्जइ ॥२॥
 निशीथ उ० १७ वें ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु कौतुहल निमित्त अन्य अस प्राणियोंको घास की डोरी
 से यावत् सूत की डोरी से बांधे बंधावे बांधते को अनुमोदे तो प्राय-
 श्चित्त ॥१॥ जो साधु कौतुहल के निमित्त अन्य अस प्राणियों को छोड़े
 छोड़ावे छोड़ते को अच्छा जानै तो प्रायश्चित्त ॥२॥

॥ सोरठा ॥

कौतुहल काज मुनिराज रे, बांध्यां छोड्यां अस प्रति ।
 दंड कथो जिनराज रे, सनरहवें उद्देश निशीथ में ।
 धारमा उद्देश मभार रे, कोलुण ते अनुकम्प करि ।

बांध्यां खोल्यां दंड धार रे, त्रस जीवां प्रति आखियो ॥
 इम बिहुं स्थाने जोय रे, पाठ शब्द छै जुजूआ ।
 कोलुण अनुकम्प होय रे, कोजल ते कौतुहल कह्यो ॥
 त्रस जीवां रे मांहि रे, मनुष्य तिर्यञ्च सहु आविया ।
 तसु अनुकम्पा ल्याहि रे, बांधे खोले मुनि तदा ॥२४६॥
 प्रायश्चित्त कह्यो तिहिवार रे, सूत्र वचन ते सत्य है ।
 ग्रहस्थ नी सार संभार रे, सावद्य जाण मुनि नहीं करे ॥
 ग्रहस्थ तणों जे काम रे, ते करवू कल्पे नहीं ।
 कदा अकल्पनीक ठाम रे, पाम्या ग्रहस्थ अनुकम्प करि ॥
 तेलादि मर्दन करेह रे, मुनि तनु शान्ति पमायवे ।
 यह दोष उपजेह रे, द्वितीय श्रुत स्कन्धे धुर अंगे ॥२५२॥
 तिहां पिण कोलुण ही शब्द रे, तसु अनुकम्पा अर्थ छै ।
 एम इहां पिण लब्ध रे, कह्यो कोलुण शब्द सारखो ॥
 तथा आजीविका निमित्त रे, अर्थ करे कौलुण तणो ।
 ते पिण है विपरीत रे, इहां मुनि ने काई आजीविका ॥
 किहां ही न सूत्र विषेह रे, कोलुण ते आजीविका ।
 जे सूत्रार्थ न जाणेह रे, ते मन कल्पित अर्थ करे ॥२५५॥
 बलि कहै इम वाय रे, अनुकम्प सावद्य न हुवे ।
 निर्वध्य ही कहिवाय रे, ततोत्तर न्याय विचारिये ॥२५६॥
 अनुकम्पा रे काज रे, देवकी ना षट् सुत प्रते ।
 सुलसां घरे समाज रे, कृत्या हरण गवेषि सुर ॥२५७॥

अनुकम्पा चित्त आण रे, डोहलो पूर्ण कियो देवता ।
 ज्ञाता सूत्र बखाण रे, अभय कुमार तणी तद्वा ॥२५८॥
 श्रीकृष्ण ईंट उपार रे, मेली वृद्ध तणे घरे ।
 अंतगढ़ सूत्र मंभार रे, अनुकम्पा करि तेहनी ॥२५९॥
 भोग प्रार्थना कीध रे, रयणा देवी जिन ऋषि प्रते ।
 ते अनुकम्पा करी प्रसिद्ध रे, ज्ञाता नवमाध्ययन में ॥
 इत्यादिक बहुत ठाम रे, अनुकम्पा करीने बहु ।
 कीधा सावध काम रे, ते सावध अनुकम्प हम ॥२६१॥
 सांसारिक उपकार रे, तेह थी मुनि न्यारा थया ।
 श्री जिन आज्ञा बार रे, कार्य कियां प्रायश्चित्त हुवे ॥२६२॥
 तेम इहां अवलोच रे, अनुकम्पा अर्थे मुनि ।
 अस बांधे मूके कोय रे, ती चौमासी प्रायश्चित्त ॥२६३॥

॥ बोल उनचासवां ॥

मोक्ष रो मार्ग जाणे नहीं तिण ने श्री भगवान्
 री आज्ञा रो लाभ नहीं । सा० सू० प्रथम आचारांग
 अ० ४ उ० ४ ।

॥ दोहा ॥

मोक्ष मार्ग जाणे नहीं, प्रथम आचारांग मांहि ।
 लाभ नहीं जिन आण ने, तूर्य अध्ययने ताहि ॥२६४॥

उद्देशा चौथा विषे, भाष्यो श्री जिनराय ।
 मोक्षाभिलाषी वीर ने, मार्ग विकट कहिवाय ॥२६५॥
 तिण सुं तप थी निज तनु, लोही मांस सुकाय ।
 ब्रह्मचर्य बसवें करी, माननीय कहवाय ॥२६६॥
 प्रथम इन्द्रियां वश करी, पिण मोह उदय ते बाल ।
 विषयासक्त होवां थकी, न सके बन्धन टाल ॥२६७॥
 बलि प्रपंच करे घणो, एहवो पुरुष अयाण ।
 मोह तिमिर में वर्त्ततो, किम पामे जिण आण ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुराण चरो मृगो, वीराणां अणियट्ट गामीणं, विणिं च मंस-
 लोणियं एस पुरिसे दवीए वीरे जायाणिज्जे वियाहिए जे घुणाति समु-
 स्सयं वसिता बम्भच्चरंमि, येत्तेहिं पल्लिच्चन्नेहिं आयाण सोय गढिए बाले
 अवोच्छिन्न बंधणो अणमिकंत संजोए । तमंसिं अविजाण ओ आणाए
 लम्भो णत्थि तिवेमि ।

श्री आचारांग सूत्रे प्रथम श्रुत स्कन्धे चतुर्थ अध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मुक्ति पाने वाले वीर पुरुषों का मार्ग बहुत ही कठिन है । इसलिये
 हे मुनि ! तपश्चर्यादि करके मांस रक्त को शुष्क कर । जो पुरुष सदैव
 ब्रह्मचर्य पूर्वक रह कर, तप से शरीर को दमते हैं वे मोक्ष प्राप्त करने
 वाले वीर पुरुष माननीय होते हैं । और जो पुरुष शुरुआत में कदाचित्
 इन्द्रियों को वश करके वर्त्तें हैं और पीछे मोह के जोश में आके विषयों में
 आशक्त हो गये हैं ऐसे बाल (अज्ञानो) पुरुष किसी बन्धन से नहीं

छूटते और प्रपञ्च रहित नहीं होते । अतः ऐसे अजान पुरुष को मोह मय अन्धकार में वर्तते हुए, भगवान की आज्ञा का लाभ नहीं होता है ।

॥ बोल पचासवां ॥

ब्राह्मण ने जिमायां तमतमा कही । सा० सू०
उ० अ० १४ गाथा १२ ।

॥ दोहा ॥

त्वप्र जिमाया तमतमा, कस्यो भृगु ना पुत्र ।
उत्तराध्ययने चवदमें, गाथा बारमी सूत्र ॥२६६॥
वेद भण्णां नहीं त्राण शरण, नहीं आत्म उद्धार ।
भोजन जिमायां तमतमा, पहुँचे नरक मझार ॥२७०॥
सुत जायां नहीं शिव गति, ते माटे अवधार ।
ग्रहस्थाश्रम नहीं रहा, हमें लेस्यां संयम भार ॥२७१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वैयां ग्रहिषा न भवन्ति तायां, भुत्ता दिया निति तमे तमेयां ।
जायाय पुत्ता न हवन्ति तायां, को याम ते अण मन्नेज यय ॥१२॥
उत्तराध्ययने अ० १४ ।

॥ भावार्थ ॥

वेद पढ़ने से ही त्राण शरण नहीं होता, भोजन देने से तमतमा में जाति है और पुत्रादि होने से संसार समुद्र नहीं तिरते, अतः अहो, तात-जी तुमारे बचनो को कैसे स्वीकारें ।

॥ सौरठा ॥

इहां कोई युक्ति लंगांय रे, कहे भृगु सुत तो ग्रहस्थं छौं ।
 तसु वच केम मनांय रे, वा तमतमा मिथ्यात हुवे ॥
 तसु उत्तर सुविचार रे, न्याय दृष्टि अवलोकिये ।
 इयारहवीं गाथा मभार रे, भगवन् गणधर इम कह्यो ॥
 बोले बचन विमास रे, तूर्य पदे इम आखियो ।
 तो मिथ्या वच किम तास रे, गणधर तास सरावियो ॥
 सांचो सुत वच मान रे, भृगु पिणसंयम लियो ।
 जिन मत सांचो जान रे, निज मत खोटो श्रद्धियो ॥२७५॥
 कहै हुवै मिथ्यात रे, धर्म श्रद्धी जिमावियां ।
 ते लेखे पिणा थात रे, पाप बन्ध भोजन दियां ॥२७६॥
 अवचूरी रे मभार रे, अन्धकारे अन्धकार छै ।
 रौरवादि नरक विस्तार रे तमतमा नूं अर्थ इम ॥२७७॥

॥ अवचूरि का पाठ ॥

भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति तम सोपियन्त
 मस्तरिमन् रौद्रे रौरवादिके नरकेण चाक्र्यालंकारे ।

॥ सौरठा ॥

तथा सूर्यगडांज्ज मभार रे, आर्द्र मुनि पिण इम कह्यो ।
 द्वितीय श्रुतस्कन्ध धार रे, अध्ययन छुटा नै विषे ॥२७८॥

स्नातक दोय हजार रे, विषयाशक्त विप्रां प्रते ।
जावे नरक मभार रे, भोजन जिमायां इम कद्यो ॥२७६॥
मांस लोलुपी जेह रे, एकान्त अर्थी खाण रा ।
घर २ भंमता तेह रे, पैट भराई कारणे ॥२८०॥
ब्रह्म क्रिया न पालेह रे, हिंसा धर्म प्रशंसता ।
बलि निषेधनाते करेह रे, प्रधान दया धर्म तेहनी ॥२८१॥
हीनाचारी एक रे, एहवा प्रते जे जीमांवतां ।
जावे नरक मभार रे, सुरावतार जिहां ही रह्यो ॥२८२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सिणाय गाणं तुओ वे सहस्ते, जे मोयए शित्तिए कुलाल याखं ।
से गच्छइ लोलुपा सम्पगाढे, तिन्वा मित्तावी शरगाहि सेवी ॥४४॥
दयावरं धम्म उगंछ माणो, वहावहं धम्म पसंस माणो ।
एगम्पि जे मोय अयइ असीलं शिषोणि संजाइ क ओ सुरेहि ॥४५॥
सूत्र कर्तांगि द्वि० श्रुत० षष्ठमध्ययने ।

॥ भावाथ ॥

आर्द्र कुमार मुनि को ब्राह्मणों ने कहा कि दो हजार विप्रां को जिमाने से पुण्य का स्कन्ध उपार्जन करके देवता होता है । तब आर्द्र कुमार मुनि ने उत्तर दिया कि जो दो हजार स्नातक आमिष्यार्थी ब्रह्म-धर्म क्रिया रहित घर २ में भिक्षा मांगने वाले कुपात्र ब्राह्मणों को जिमाने से महा तीव्र वेदना वाली नरक में जाते हैं । क्योंकि जो प्रधान दया धर्म है उसकी तो वे निन्दा करते हैं और हिंसा धर्म की प्रशंसा करते हैं ऐसे एक को भी भोजन कराने से सुरगति तो जहां ही रही परन्तु नरक गति प्राप्त होती है ।

॥ बोल इकावनवां ॥

साधु रे सर्व थकी अठारह पाप रा त्याग छै पिण
देश थकी नहीं । सा० सू० उववाई प्र० २१ वें ।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे त्यागिया, पाप अठारह जान ।
उववाई प्रश्न इकीसवें, साधु महा गुणखान ॥२८३॥
गामागर अरु नगर में, यावत् सन्निवेश ।
इक २ मनु एहवा अछे, सांभल जो सुविशेष ॥२८४॥
अणारम्भ अपरिग्रही, धार्मीक धर्म इष्ट ।
यावत् धर्म नी वृत्ति कल्प, सुशील सुव्रती शिष्ट ॥२८५॥
आनन्दकारी मुनि तिका, सर्व प्राणातिपात ।
यावत् सर्व परिग्रह थकी, निवृत्त तेह सुजात ॥२८६॥
क्रोध मान मायां अरु, लोभ थकी मुनि तेह ।
जाव मिथ्या दर्शन शल्य थी, प्रति विरत्या छै तेह ॥
सब आरम्भ समारम्भ बलि, करण करावण जाण ।
पचन पचावन तेहना, सर्वथा क्रिया पचखान ॥२८७॥
कूटन पीटण तर्जना, ताडन वध अने बंध ।
परि क्लेशों थी निवृत्त थया, छोड़ दियां सर्व धन्ध ॥
सर्व थकी न्यावा तणा, बलि मर्दन पीठी जान ।
तैल विलेपन आदि ना, छै तयारें पचखान ॥२८८॥

शब्द स्पर्श रस रूप गन्ध, माला ने अलंकार ।
 सर्व प्रकारें छांडिया, सावद्य योग व्यापार ॥२६१॥
 कष्ट परिताप पर प्राणि ने, होवे जेह उपाय ।
 यावज्जीव निवर्त्या तेह थी, ते अणगार कहाय ॥२६२॥
 इरिया भाषा समिति युत, निर्ग्रन्थ वचनज तंत ।
 तसु आगे करके मुनि, विचरे महा गुणवन्त ॥२६३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

१. से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवन्ति तंजहा—
 अणारम्भा, अपरिगहा, धम्मिया, धम्मिठा, जाव धम्मेषां चैव वित्ति कप्पे
 माणा, सुशीला सुर्वया सु पडियायां दा, सव्वा ओ पाणां इवाया ओ पडि
 विरया, जाव सव्वा ओ परिगहा ओ पडि विरया सव्वा ओ कोहा ओ
 माणा ओ माया ओ लोहा ओ भिच्छा दंसण सल्ला ओ पडि विरया, सव्वा ओ
 आरम्भ समारम्भा ओ पडि विरया, सव्वा ओ करण करावण ओ पडि
 विरया, सव्वा ओ पयण पयावणा ओ पडि विरया, सव्वा ओ कोट्टण
 पीट्टण तज्जण ताडण वह बन्ध परि किलेसा ओ पडि विरया, सव्वा
 ओ यंहाण मदण वणक विलेवने सद फरिस रस रूवं गन्ध मल्ला लंका-
 रातो पडि विरया जे पावण्यो तहप्पगारे सावज्ज जोगो वहिया कम्मन्ता
 पर पाण परियावण करा कज्जन्ति तत्तोवि पडि विरया, जावज्जीवाए, से
 जहा नामए अणगारा भवन्ति, इरिया समिया भासा समिया जाव इण
 मेव शिण्गथपावयणं पुराओ काओ विहरन्ति ।

॥ भावार्थ ॥

वे जो ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं तद्यथा:—
 सर्वथा छवों ही कार्यों के आरंभ रहित, सर्वथा मृषावाद रहित, सर्वथा
 अदत्त रहित, सर्वथा मैथुन रहित, सर्वथा धातु मात्र परिग्रह रहित होते
 हैं, जिन्हों को धर्म ही इष्ट है यावत् धर्म की ही वृत्तिकल्पते हुए विच-
 रते हैं, वे सुशील शुद्धाचारी सुव्रती अच्छा कार्य कर आनन्द मनानेवाले
 सर्व प्रकार तीन करण तीन योग से प्राणातिपात से निवृत्त हुए यावत्
 परिग्रह निवृत्त हुए तैसे ही सर्व प्रकार से क्रोध मान माया लोभ यावत्
 मिथ्या दर्शन शल्य से निवृत्त हुए, सब तरह आरम्भ समारम्भसे निवृत्त
 हुए एवं पचन पचावनादि क्रिया से निवृत्त हुए सब तरह से कूटन
 पीटन तर्जन ताड़न बध् बन्धन क्लेश से निवृत्त हुए एवं सब तरह से
 स्नान, पीठी मर्दन, तिलकादि विलेपन से निवृत्ते, शब्द स्पर्श रूप गन्ध
 माला अलंकार आदि से सर्वतः निवृत्त हुए और भी सावध काम
 योगोपाधि कर्म से अन्य प्राणी को परिताप होय ऐसे कार्य्य से याव-
 जीव पर्यंत सर्वथा निवृत्त हुए वे अणगार यानी साधू होते हैं, वे ईर्या
 समित्विन्त भाषा समित्विन्त यावत् जिन प्रणीत निग्रन्थ प्रवचन को
 आगे कर उनके अनुगामी बने विचरते हैं।

॥ बोलु बावनवां ॥

साधु रा भंड उपकरण परिग्रह में कहा नहीं
 मूर्च्छा राखे तो परिग्रह लागे इस कह्यो । सा० सू०
 दशवैकलिक अ० ६ गाथा २१ वीं ।

॥ दोहा ॥

बल पात्र ने कम्बल, पाय पूछणा आदि ।

संयम लज्जा अर्थ मूनि, धारे तज असमाधि ॥२६४॥

षड् जीव निकाये प्रते, हणे हणावे नाहि ।

अनुमोदे न हणतां प्रति, मन वच काया ताहि ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्छेहिं छर्णं जीव निकायाणं नेव सयं दंडं समारम्भेज्जा नेवचेहिं
दण्डं समारम्भेज्जा, दण्डं समारं भन्ते वि अत्तेन समणु जाणोज्जा जाव-
जीवाए तिविहेयां २ मणोयां वायाए कायेणं न करेमि न कारवेमि करं
तं पि अन्नं न समणु ज्जाणामि ।

दशर्वैकालिक अध्ययन ४ था ।

॥ भावार्थ ॥

इन षड् जीव निकायों का स्वयं आरम्भ करे नहीं अन्य से आरम्भ करावे नहीं और करने वाले को अच्छा जाने नहीं मन वचन काया से यावज्जीव पर्यंत वैसा करे नहीं अन्य से करावे नहीं करते को अच्छा जाने नहीं इस तरह नव कोटी पंचखान है ।

॥ बोल चौपनवां ॥

आचारज नी आज्ञा बिना आहार करे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो । सा० सू० निशीथ उ० ४ बोल २२ वां ।

॥ दोहा ॥

आचार्य नी आज्ञा बिना, अरु बिन दीर्घा आहार ।
जे साधु जो भोगवे, प्रायश्चित तसु धार ॥२६९॥

(४११)

इम कह्यो सूत्र निशीथ में, चौथे उद्देशो मभार ।
गुरु-आज्ञा बिन भोगव्यां, आख्यो दंड उदार ॥३००॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्षू आयरिय अदितं आहारं आहारन्तंवा साइजइ ।
निशीथ उ० ४ बोल २२ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु आचार्य के बिना दिखे चारों प्रकार का आहार करे करते
को भला जाने तो प्रायश्चित ।

॥ बोल पचपनवां ॥

पुन्य पाप से जीव ने पचतो दीठो कह्यो । सा०
सू० उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १५ वीं ।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप से जीव ने, पचतो देख्यो सोय ।
दशमें उत्तराध्ययन में, पनरमी गाथा जोय ॥३०१॥
भव संसारे संसरइ, शुभाशुभ कर्म प्रभाव ।
प्रमाद बहोल पणे करइ, न जाणे तिरण रो दाव ॥३०२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

एवं भव संसारे, संसारइ सुहा सुहेहि कर्मोह ।
जरीने पमाय बहलो, समयें गोयम भा पमाय ॥

उत्तराध्ययने १० वे ।

(४१२)

॥ भावार्थ ॥

ऐसे भव संसार में प्रमादी जीव शुभाशुभ कर्म करके परिभ्रमण करता है इसलिये हे गौतम ! समय मात्र भी प्रमाद मत कर ।

॥ बोल छप्पनवां ॥

पुन्य पाप ने खपावणा कहा । सा० सू० उत्त०
अ० २१ वें गाथा २४ वीं ।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप बेहूँ भणी, खपावणा सुविशाल ।
उत्तराध्ययने इकबीसमें, चौबीसमी गाथा न्हाल ॥३०३॥
द्विविध खपायां शीघ्र ते, पुन्य पाप असराल ।
अपुनरागम गतिलही, भवाब्धि तस्यो समुद्रपाल ॥३०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुषिर्हं खवे जय पुण्या पावं निरंगणो सन्वात्रो विष्णुमुक्ते ।
तरित्ता समुद्रं व महामवोधं, समुद्रपाले अपुणागमं गए तिवैमि ॥
उ० अ० २१ वें गा० २४ वीं ।

॥ भावार्थ ॥

पुन्य पाप दोनों का क्षय कर शैलेसी अवस्था को प्राप्त हो महा प्रभाविक भव समुद्र है उसे तैर कर पुनः वापिस न आना पड़े ऐसी जो सिद्ध गति है सो समुद्रपाल मुनि प्राप्त हुए ।

॥ बोल सतावनवां ॥

उसन्ना पासत्था अर्थात् ढीला शिथिलाचारी ने वन्दना करे प्रशंसा करे करावे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देश १३ बोल ४२-४३-४४-४५ ।

॥ दोहा ॥

जे मुनि पासत्था प्रते, वन्दना करे कराय ।
करतां ने भलो जाणियां, चौमासी प्रायश्चित्त आय ॥३०५॥
दोषी मूल उत्तर गुणे, ते उसन्ना कहवाय ।
तेहने पिण बांधा थकां, इमहिज दंड सुपाय ॥३०६॥
बलि पासत्था उसन्नातणी, करे प्रशंसा कोय ।
प्रायश्चित्त चौमासी तसु, निशीथ तेरहवें जोय ॥३०७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्षू पासत्थं वन्दइ वन्दतं वा साइज्जइ ॥४२॥
जे भिक्षू पासत्थं पसंसन्ति, पसंसं तं वा साइज्जइ ॥४३॥
जे भिक्षू उसणं वन्दइ वन्दतं वा साइज्जइ ॥४४॥
जे भिक्षू उसणं पसंसेइ पसंसं तं वा साइज्जइ ॥४५॥

निशीथ उ० १३ ।

॥ भावार्थ ॥

जो भिक्षु पासत्था अर्थात् शिथिलाचारी को वन्दे वन्दाने अनुमोदे तो प्रायश्चित्त ॥४२॥ जो भिक्षु शिथिलाचारी की प्रशंसा करे करावे अनु-

भोदे तो प्रायश्चित्त ॥४३॥ जो भिक्षु उसना यानी मूल उत्तर गुणों में दोष लगाने वाले को वन्दे वन्दावे अनुमोदे तो प्रायश्चित्त ॥४४॥ जो भिक्षु उसना की प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित्त ॥४५॥

॥ बोल अठावनवां ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करतां प्रते अनुमोदे तो प्रायश्चित्त । सा० सू० निशीथ उ० १२ वें बोल १७ वं ।

॥ दोहा ॥

ग्रहस्थ नी औषध करे, जो साधु मुनिराय ।
निशीथ उद्देशे बारहवें, दंड कछो जिनराय ॥३०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्षु गिहि तिगिच्छं करेइ करं ते वा साइज्जइ ॥१७॥

॥ भावार्थ ॥

जो साधु ग्रहस्थ की औषधि करे करावे करते को अनुमोदे तो प्रायश्चित्त ।

॥ बोल उणसठवां ॥

सामायक दो कहीं १ आगार सामायक २
अणागार सामायक । सा० सू० ठाणांग ठाणो २
उ० ३ रा ।

(४१५)

॥ दोहा ॥

सामायक दो विध कही, आगार अने अणगार ।
स्थानांग ठाणे दूसरे, तीजा उद्देशा मभार ॥३०६॥
आगार सामायक ग्रहस्थ रे, करे आगार सहित ।
अणागार अणगार रे, ते आगार रहित : ३१०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे सामाइए पयणते तंजहा — आगार सामाइए चेंव अणागार
सामाइए चेंव ।

स्थानांगे द्वितीय स्थाने ।

॥ भावार्थ ॥

दो प्रकार की सामायिक कही तद्यथा:— आगार सामायिक अर्थात्
ग्रहस्थ श्रावक के मुहूर्त्तादिक की मर्याद सहित सामायिक । दूसरी
अणागार सामायिक यानी साधु के जो महाव्रत रूप यावज्जीवन पर्यंत
है सो आगार रहित ।

॥ बोल साठवां ॥

चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणा-
गार चारित्र। सा० सू० स्थानांग ठाणे २ उ० १ ।

॥ दोहा ॥

चारित्र धर्म द्विविध कह्यो, आगार अणागार जाण ।
स्थानांग ठाणे दूसरे, पहले उद्देशे पिछाण ॥३११॥

(४१६)

॥ सूत्र पाठ ॥

चरित धम्मे दुविहे पयणते तंजहा :—आगार चरित धम्मे
चेव, अण्णागार चरित धम्मे चेव ।

सू० स्थानांग द्वितीय स्थाने ।

॥ भावार्थ ॥

चारित्र धर्म के दो भेद प्ररूपेतद्यथा:—आगार चारित्र धर्म सो ग्रहस्थ
सम्यक्त्व सहित स्थूलपने व्रत आदरे । अण्णागार चारित्र धर्म सो ग्रहस्था-
श्रम का सर्वथा त्याग कर पञ्च महाव्रत आदरे ।

॥ बोल इकसठवां ॥

धर्म दोय कहा—श्रुत धर्म १, चारित्र धर्म २
सा० सू० ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ ।

॥ दोहा ॥

दोय धर्म जिन आख्या, श्रुत चारित्र उदार ।
श्रुत ते आगम जिन कथित, चारित्र ते व्रत धार । ३१२ ।
स्थानांग स्थाने दूसरे, प्रथमा उद्देश मभार ।
बोल पच्चीसमां ने विषे, कह्यो धर्म विस्तार ॥ ३१३ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे पं० तं० सुअधम्मे चेव चरित धम्मे चेव ।

ठाणांग ठा० २ ।

॥ भावार्थ ॥

दुर्गति में पड़ते हुए को धार रखे वह धर्म दो प्रकार का कहा—
श्रुत धर्म द्वादशांग रूप १, चारित्र धर्म पंच महाव्रत रूप २ ।

॥ बोल बासठवां ॥

कर्म जपावा रो करणी दोय कही—संयम, और
तप । सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २८ वें गाथा ३६ वीं ।

॥ दोहा ॥

करणी कर्म खपायवा, दोय कही जिनराय ।
उत्तराध्ययन अठबीसमें, छत्तीसवीं गाथा ताय ॥३१४॥
पूर्व संचित कर्म ते, तप संयम थी खपाय ।
हीन करण सब दुःख तणों, महा ऋषि करणी कराय ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

खवेत्ता पुंश्च कम्पाङ्गं, संजमेण तवेण्य ।

संख दुक्ख पहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो तिवेमि ॥३६॥

उत्तराध्ययन अ० २८ वाँ ।

॥ भावार्थ ॥

सतरे प्रकार संयम से और चार प्रकार तप से पूर्व संचित कर्मोंको
क्षय करे और जन्म जरा मृत्यु रूप सर्व दुःखों से रहितार्थ महा ऋषि
करणी करे ।

॥ बोल तरैसठवां ॥

मार्ग दोय कहा—भगवान रो प्ररूप्यो मार्ग १,
और पाखंडिया रो प्ररूप्यो मार्ग २ । सा० सू० उ०
अ० ३३ वें गा० ६३ वीं ।

॥ दोहा ॥

दोय मार्ग हैं जगति में, इक पाखंडि कहाय ।
द्वितीय मार्ग है जिन कथित, तेह परम सुखदाय ।३१५।
उत्तराध्ययन तेबीसवें, केशी श्रमण पूछंत ।
तब गोयम इह विधि कह्यो, ते सुणिजो धरि खंत ।३१६।
कुप्रवचन पाखंडी ना, सर्व उन्मार्ग गछंत ।
सन्मार्ग जे जिन कह्यो, उत्तम मार्ग ते तंत ॥३१७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कु पव्वयण पासंडी, सव्वे उम्मग्ग पट्ठिया ।

सम्मगं तु जिणक्खायं एसमग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

॥ भावार्थ ॥

कुप्रवचन है सां पार्षदियों का कहा हुआ उन्मार्ग है उसमें जाने वाले सर्व कुमार्ग जा रहे हैं और जो जिनेश्वरों का कहा हुआ है सो सन्मार्ग है सोही उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ है ।

॥ बोल चौसठवां ॥

संबर गुण अने आस्रव गुण जुदा २ कहा ।
सा० सू० प्र० आचारांग अ० ४ उ० २ ।

॥ दोहा ॥

संबर गुण न्यारो कह्यो, आस्रव गुण कह्यो न्यार ।
प्रथम आचारांग चतुर्थ वें, बुद्धिवंत करो विचार ।३१८।

जेह आस्रव द्वार छै, रोक्यां संबर थाय ।

खोल्यां आस्रव होत है, इम गुण अलग कहाय । ३१६।

कर्म बंधना हेतु ते, प्रवर्त्या आस्रव होय ।

तसु त्याग कियां संबर हुवे, इम जुदा २ गुण जोय ॥

आस्रव नूं अणास्रव हुवे, अणास्रव नूं आस्रव ।

प्रणमें जिण २ भाव में, पृथक २ गुण सर्व्व ॥ ३२१ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे आसवा ते परिसव्वा, जे परिसव्वा ते आसवा, जे अणासव्वा
ते अपरिसव्वा जे अपरिसव्वा ते अणासव्वा ।

प्र० आचाराङ्ग अ० ४ उ० २ ।

॥ भावार्थ ॥

जो कर्म बाँधने के हेतु हैं वे कर्म छपाने के या रोकने के हेतु हो सकते हैं, जो कर्म क्षपाने के या रोकने के हेतु हैं वे कर्म बाँधने के हेतु हो जाते हैं, तथा जितने कर्म बाँधने के हेतु हैं वे रोकने के हेतु हो जाते हैं और कितने कर्म रोकने के हेतु हैं वे बाँधने के हेतु हो जाते हैं, अर्थात् जिन २ कारणों से कर्म बंधते हैं वे आस्रव द्वार हैं और उन्हीं का त्याग करने से वेही संबर हो जाते हैं—जैसे मिथ्या श्रद्धना मिथ्यात आस्रव द्वार है, हिंसा करना प्राणातिपात आस्रव द्वार है, और मिथ्या श्रद्धना का त्याग कर सम श्रद्धना सम्यक्त्व संबर द्वार है इसी तरह हिंसा का त्याग करें सो अहिंसा संबर द्वार है, तात्पर्य कर्म आने के जो द्वार हैं सो खुले द्वार हैं उनको बंध करे सो संबर है, इस प्रकार आस्रव और संबर का गुण अलग २ हैं ।

॥ बोल पैसठवां ॥

करणी च्यार कही—इह लोक रे हित १, पर-
लोक रे हित २, कीर्ति वर्ण शब्द व पूजा श्लाघा रे
हित ३, निर्जरा रे हित ४, इण च्यार प्रकार में से
एकान्त कर्म निर्जरा रे हित तप करणो कह्यो । सा०
सू० दशवैकालिक अ० ६ उ० ४ ।

॥ दोहा ॥

करणी च्यार प्रकार नी, कही दशवैकालिक मांहि ।
नवमां अध्ययन ने विषे, चौथे उद्देशे ताहि ॥३२२॥
इह लोक अर्थ तप नहिं करे, बलि नहीं परलोक ने हेत ।
वर्ण श्लाघा शब्दादि निमित्त, न करे तप संकेत ॥३२३॥
एकान्त निरजरा कारणे, तप करणो कह्यो सोय ।
समाधि हुवै चौथे पदे, तसु गुण श्लोके जोय ॥३२४॥
नित्य विविध गुण होत हैं, आश रहित तप आसक्त ।
निरजरा अर्थी पाप क्षय करे, तप समाधि सदा संयुक्त ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउविहा खलु तव समाहि भवइ तंजहाः—नो इह लोगट्टयाए
तव महि टिज्जा, नो परलोगट्टया ए तव महि टिज्जा, नो किति वण्ण
सद्द सिलोगट्टयाए तव महि टिज्जा, नन्नथ निज्जरट्टयाए तव महि टिज्जा,
चउत्थं पयं भवइ भवइ एत्थसिज्जोगो, विविह गुण तवोरण्ण निच्च,

भवइ निरासए निज्जरट्टिए, तव साधुणइ पुण्ण पावगं जुत्तोसया तव समाहिए ।

दशवैकालिक अ० ६ उ० ४ ।

॥ भावाथ ॥

छयार प्रकार तप समाधि कही—इस लोक के सुखों के लिये तप नहीं करे १, परलोक के सुखों के लिये तप नहीं करे २, कीर्त्तिवर्ण शब्द श्लाघा के लिये तप नहीं करे ३, एकान्त निरजरा का अर्थी होके तप करे ४, चतुर्थ पद जो निरजरार्थी होके तप करे जिसका गुण श्लोक में कहा सो कहते हैं—तप समाधि में सदा युक्त सांसारिक आशा रहित निरजरा का अर्थी, पूर्व कृत पापों का नाश करता है ।

॥ बोल छासठवां ॥

प्रज्ञा दोय कही—ज्ञान प्रज्ञा १, पच्चखान प्रज्ञा २, ज्ञान प्रज्ञा करी जाणै और पच्चखान प्रज्ञा करी पच्चखान करै । सा० सू० आचाराङ्ग प्र० श्रु० अ० १

॥ दोहा ॥

दोय प्रकारे वर्णवी, प्रज्ञा ते बुद्धि जान ।

जाणे ज्ञान प्रज्ञा करी, प्रत्याख्यान पच्चखान ॥३२६॥

धुर आचारांगे कह्यो, धुर अध्ययन मभार ।

द्विविध प्रज्ञा इधकार नूं, बुद्धिवंत करे विचार ॥३२७॥

समजी किया भेद प्रते, द्विविध प्रज्ञा थी जेह ।

समझ कर्म कारण भणी, दूर रहै मुनि गुण जेह ॥३२८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्स ते लोगं सि कम्म समारम्भा परिणया भवन्ति, से हु मुणी
त्तिवेमि ।

प्र० आचाराङ्ग अ० १ उ० १ ।

॥ भावार्थ ॥

समस्त वस्तुओं के जानने वाले भगवान केवलज्ञान से साक्षात् देखके उपरोक्त जो क्रियाओं के भेद बताये तथा दो प्रकार की प्रज्ञा बताई उन्हें अच्छी तरह समझ के कर्मों के कारणों से दूर रहै सो मुनि कहलाते हैं ।

॥ बोल सड़सठवां ॥

धर्म दोय कहा—आगार धर्म १, अणागार धर्म २, सा० सू० उववाई समवशरण अधिकार में ।

॥ दोहा ॥

धर्म दोय प्रकार नूँ, कह्यो उववाई मांहि ।

आगार ने अणगार रो, ते ब्रत में धर्म कहाहि ॥३२६॥

सर्व प्रकारे मुण्ड हो, आगार से अणागार ।

प्रवर्ज्या अंगीकार करि, अणागार धर्म धार ॥३३०॥

हिन्सा सर्व प्रकार से, मृषा सर्व प्रकार ।

चौरी मैथुन परिग्रह, सर्व प्रकार निवार ॥३३१॥

सर्व प्रकारे त्यागियो, रात्री भोजन जेह ।

अहो आयुष्यमान ते, अणागार सामाह कहेह ॥३३२॥

ये धर्म सीन्ध्या ऊठिया, निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थ नी जान ।
 ते आराधक जिन आण नां, इम भान्यो भगवान् ॥३३३॥
 आगार धर्म द्वादश विध, आन्यो श्री जिनराय ।
 पंच अणुव्रत तीन गुण, चार सिन्ध्या व्रत मांय ॥३३४॥
 हिन्सा भूट अदत्त फुन, मधुन परियह जान ।
 स्थूल धकी न्यागन क्रिया, ते पंच अणुव्रत मान ॥३३५॥
 द्विजि उपभोग परिभोग नीं, कीची जे मर्याद ।
 विरम्यां अनर्थ दंड से, यह तीन गुण व्रत लाभ ॥३३६॥
 सामाट देशावगामियं, योपह अनिधि मंविभाग ।
 चार सिन्ध्या व्रत यह हैं, सर्व द्वादश व्रत माग ॥३३७॥
 अपश्चिम मर्णान्त जे, सल्लक्षण भ्रमण करंत ।
 आगार सामाई धर्म ये अहो आयुषामन्त ॥३३८॥
 दण द्विज धर्म में ऊठिया, सीन्धयो यह व्रत धर्म ।
 विचरं श्रावक श्राविका, ते आज्ञा आराधक धर्म ॥३३९॥
 जे जे अविरत्ति निवृत्तिया, ते ते श्रावक धर्म ।
 धर्म नहिं आगार में, यह जिन जामन धर्म ॥३४०॥

॥ सूत्र पाठ ॥

धर्मं द्वाविं आरागन्ति तंजहा—आगार धर्मं च १, अणु-
 गार धर्मं च २, ताव इह गन्तु मय तो सब्यचाण मुंडे भविता आगा-
 रायो अणुगारायि पचाउ सउ, सब्ययो पाणाउ पायायो चेरमयां, सब्वायो
 मुयायायायो चेरमयां, सब्वायो अदिन्ना दाणायो चेरमयां, सब्वायो

[illegible]

॥ भावार्थ ॥

धर्म दो प्रकार का कहा सो कहते हैं - आगारिक धर्म सो गृहस्थान में रहता हुआ धर्म पाले है, अणानारिक धर्म गृहस्थान त्याग कर साधु धर्म पाले सो निश्चय कर के सर्वथा प्रकार मुण्ड होके आगार से अना-गार हो सर्वथा प्रकार प्राणानिपान से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार मृषायाद से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार चोरी से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार स्त्री मंग से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार परिग्रह से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार रात्रि भोजन से निवृत्ते, हे आयुष्यमान यह अणानार सामाह धर्म प्रकृत्या है, यहो धर्म सीखा है, इसी धर्म में उठे हैं साधु तथा साध्वी उपरोक्त पंच माताव्रत रूप धर्म पालते हुए विवर्गते हैं। आगार धर्म चार प्रकार का कहा है

सो कहते हैं—पञ्च अणुव्रत तीन गुण व्रत चार सिखा व्रत इस प्रकार द्वादश व्रत रूप धर्म कहा सो कहते हैं—स्थूल से प्राणातिपात से निवृत्ते १, स्थूल से मृषावाद से निवृत्ते २, स्थूल से चोरी कर्म से निवृत्ते ३, स्वः स्त्री से ही संतोष अर्थात् पर स्त्री के त्याग ४, स्थूल से परिग्रह से निवृत्ते ५, (उपरोक्त पंच अणुव्रत कहे) तीन गुण व्रत इस प्रकार—दिशि मर्याद अर्थात् दशों दिशा में मर्याद उपरान्त जाने का त्याग ६, उपभोग परिभोग की मर्याद ७, अनर्थ दण्ड परिहार ८, (चार सिखा याने चोटी समान व्रत इस प्रकार) सामायक एक मुहूर्त्त प्रमाण सावद्य जोगों के त्याग ९, देशावकासी काल की मर्याद करके इच्छा प्रमाण सावद्य जोगों को त्यागें १०, पोषह उपवास ११, अतिथिसं विभाग अर्थात् शुद्ध साध, साध्वियों को निदूर्षण चउदे प्रकार का दान दे १२, इस प्रकार द्वादश व्रत धर्म पालता हुआ मर्णान्ते संलेषणा संथारा दिक करे, व्रतों में कोई दोष लगा उसका प्रायश्चित्त लेके आराधक होना ऐसा व्रतमयी धर्म श्रावक श्राविकों से सीखा है, इसी धर्म में उठे हैं, इसी धर्म में विचरते हुए जिन आत्मा का आराधक होते हैं ।

सोरठा

पंच महाव्रत रूप रे, सुनि नूँ धर्म इहां कह्यो ।
 द्वादश व्रत सरूप रे, श्रावक धर्म जिन आखियो ॥३४१॥
 केइ कहै बारमूँ व्रत रे, अतिथि ते आयां प्रते ।
 देवे सचित्त अचित्त रे, ते पिण श्रावक धर्म है ॥३४२॥
 एम सूत्र विपरीत रे, अर्थ करे निज मन धकी ।
 तसु उत्तर सुबंदीत रे, बुद्धिवंत हिये विचारिये ॥३४३॥
 अव्रत घट्यां व्रत होय रे, तो अव्रत में देवतां ।

व्रत्ति धर्म किम जौय रे, अब्रत सेवायो थकां ॥३४४॥
 ठाम २ सिद्धान्त रे, बारमूं ब्रत आवक तणूं ।
 अमण निर्ग्रन्थ ने तंत रे, दान दे चउदे प्रकार नूं ॥३४५॥
 प्रासूक दोष रहित रे, मुनि प्रते प्रतिलाभतो ।
 विचरे छै इण रीत रे, ते बारमूं ब्रत सूत्रें कखो ॥३४६॥
 बलि देवगुरु धर्म काज रे, हिन्सा करै षटकाय नीं ।
 ते धर्म न कखो जिनराज रे, आमार धर्म विषे इहां ॥

॥ बोल अड़सठवां ॥

ध्यान च्यार कहा—आर्त्ति ध्यान, रौद्र ध्यान,
 धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान । सा० सू० उववाई समव-
 सरण अधिकार में ।

॥ दोहा ॥

च्यार ध्यान जिनवर कहा, आर्त्ति ने रौद्र ध्यान ।
 धर्म ध्यान है तीसरी, चौथो शुक्ल ध्यान ॥३४८॥
 समवसरण अधिकार में, तप वर्णन रे मांहि ।
 आर्त्ति रौद्र नहिं ध्यावणो, सूत्र उववाई ताहि ॥३४९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं ज्माणो ? ज्माणो चउविहे पन्नते तंजहा—अट्टे ज्माणो
 रूदे ज्माणो, धम्मे ज्माणो सुक्के ज्माणो ।

उववाई ।

(३२७)

॥ भावार्थ ॥

ध्यान कितने ? ध्यान चार प्रकार के प्ररूपे—आर्त्तध्यान १ रौद्र ध्यान २, धर्म ध्याव ३, शुक्ल ध्यान ४ ।

॥ बोल उणसत्तरवां ॥

साधु असंयती ने ऊभो रहै बैठ सो ऊभो रहै ।
आव जाव काम कर, इम न कहै सा० सू० दश-
वैकालिक अ० ७ गा० ४७ वीं ।

॥ दोहा ॥

असंयती ने नहिं कहे, ऊभो रहै वा बैस ।
सयन आव अरु जाव नूं, कार्य कर इम न कहैस ॥३५०॥
सावद्यकारी बचन इम, न कहे प्रज्ञावत ।
धीर वीर जे संयती, इम भाख्यो भगवत ॥३५१॥
दशवैकालिक आखियो, ससम् अध्ययन मभार ।
गाथा सैंतालीसमीं, बुद्धिवत करो विचार ॥३५२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तहेना संजयं धीरो, आसएहि करे हिवा ।

सय चिट्ठ वयाहित्ति, नेवं भासेज्ज पयणवं ॥४७॥

दशवैकालिक अ० ७ वें

॥ भावार्थ ॥

वैसे ही साधु असंयती को बैठो उठो आवो जावो अमुक कार्य करो, ऐसी सावद्य भाषा प्रज्ञावत न कहै ।

॥ दोहा ॥

ए गुणोत्तर बोलै इम, आख्या आगम मांय ।
लौकाजी संग्रह किया, तिण सूं लौका हुण्डी कहाय ॥
प्रगटे पंचम् अर्क में, भिक्षु महा गुणधार ।
श्री जिन आज्ञा शिर घरी, प्रगट कियो उजियार ॥३५४॥
यथा तथ्य ओलखावियो, यह प्रभु तेरापंथ ।
पाले महाव्रत पंच समिति, तीन गुप्त निर्ग्रन्थ ॥३५५॥
हिंसा धर्म उथापियो, दयामयी धर्म दिपाय ।
कहणी करणी एकसी, आगम न्याय बताय ॥३५६॥
श्री जिन धर्म अनादि रो, हुआ अनन्त अरिहन्त ।
जे जिम भाख्यो तिम कह्यो, निशंक सूं भिक्षु सन्त ॥
तसु पट भारीमालजी, तीजे पाट ऋषिराय ।
जयगणी चौथे पाट वर, पंडित प्रसिद्ध कहाय ॥३५७॥
मघवा सम मघवा गणी, पंचम् पट अवलोय ।
पाट छठे माणक भला, ससम् डाल गणीश्वर जोय ॥
वर्त्तमान शासन धणी, अष्टम पाटे जान ।
सुखदाता सुरतरु समा, कालूगणी गुणखान ॥३६०॥
दिन २ वृद्धि ज्ञान नी, चारित्र गुण इधकाय ।
दिन २ सुख सम्पति बढ़े, सुगुरु तर्णे सुपसाय ॥३६१॥

दिन २ ऋद्धि सम्पजे, वीर्य लद्धि प्रगटाय ।
 दिन २ सद्बुद्धि बठै, सिद्धि नेड़ी थाय ॥३६२॥
 समकित व्रत सुध पालियां, सीभे वाञ्छित काज ।
 दुःख दोहग दूरा टले, पामें अविचल राज ॥३६३॥
 भिक्षु फुन जयाचार्य कृत, ग्रन्थ मांहि इधकाय ।
 बारुं न्याय बताविधा, प्रगट पणें सुखदाय ॥३६४॥
 तसु अनुसारे में इहां, दोहा सोरठा मांहि ।
 न्याय कह्यो किञ्चित पणें, देख २ करि ताहि ॥३६५॥
 सूत्र पाठ जे जिम कह्या, ते तिम लिखा इण स्थान ।
 ओछा इधक आया हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं जान ॥३६६॥
 अक्षर लघु दीर्घादि नूं, नहिं सुभ ज्ञान विशेष ।
 लघु बुद्धि माफक रची, सोरठ दोहा कहेस ॥३६७॥
 तिण सूं पण्डित जन जिंके, बांचि न करस्यो हास्य ।
 गुण ग्राही गुणवन्त नूं, सदा अछूं में दास ॥३६८॥
 श्रमणोपाशक श्रमण नूं, श्री जिन मत में सीर ।
 समकित धर्म साधमीं फुन, आवक नूं लघु बीर ॥३६९॥
 श्री श्री कालू गणपति, प्रतपो जेम दिनन्द ।
 तसु अनुग्रह दिन दिन इधक, गुलाबचन्द आनन्द ॥
 शत उन्नीस तियांसिये, विक्रम सम्बत् येह ।
 जोड़ रची हुण्डी तणी, जयपुर नगर विषेह ॥३७१॥

॥ कलश ॥

(चाल गीतक छन्द)

गुण रयन वयन जिनेश केरा, अति भलेरा
 जानिये । जे कह्या, जे जिम सत्य तथ्य, सुअथ्य पथ्य
 बखानिये । धरि आसता प्रतीति रीति, विनीत केरी
 आनिये । सुगुरु वाचा सर्व सांचा, अधिक आछा
 मानिये ॥१॥ तज कपट लपट मिथ्यात नी, निज
 आथिनी सुध ल्याविये ॥ अब्रत घटावी ब्रत बढ़ावी,
 आतम भावे आविये ॥ सुख सम्पदा निज घर घणी,
 गुणवन्त नां गुण गाविये । कहै गुलाबचन्द आनन्द
 अति ही, सुगुरु सेयां पाविये ॥२॥



(४३१)

३०६ बोल की हुण्डी की जोड़ ।

॥ दोहा ॥

नमं वीर वर्द्धमान जी, त्यां सूत्र प्ररूप्या सार ॥
जे समदृष्टि जीवड़ा, त्यांरा वचन किया अंगीकार ॥१॥
कई अज्ञानी इम कहै अब्रत सेवायां धर्म ॥
बले धर्म कहै आशा बारणें ते भुला अज्ञानी भ्रम ॥२॥
अब्रत में नहीं जिण आगन्या, जिण आशां बिण धर्म न होय ॥
सूत्र साख दे वरणवू, सांभलज्यो सहुकोय ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ आ अणुकम्पा जिण अज्ञा में (एदेशी) ॥

श्रावकरो खाणों पीणो सरबं अब्रत में, पिणं
साधु रे अब्रत नहीं लिंगारो । ए दोनूई बोल उवाई
में चल्या, बले 'सूयगडांग' अठारमाध्ययन मभारो ।
आ श्रद्धा श्री जिणवर भाषी ॥ १ ॥ धर्म अधर्म मिश्र
तीनूई पक्ष चाल्या, सूयगडांग अठारमा अध्ययन
मभारो । धर्म पक्ष में साधु सरबं ब्रती अणारंभी, ए
आर्य मुक्त रो मारग सारो ॥ २ ॥ अधर्म पक्ष माहें
च्यार गुणठाणा, ते अब्रत आश्री आरंभी जाणो । बले
अब्रत आश्री एकंत अनार्य, पिण सम्यक्त निरजरा शुद्ध
बखाणो ॥ आ ॥ ३ ॥ मिश्र पक्ष माहें श्रावक ब्रता-

ब्रती, बले आरंभी अणारंभी जाणो । ते ब्रतां आश्री
 तो अणारंभी आर्य, ते सुक्कत रो मारग निर्मल ठाणो ॥
 आ ॥ ४ ॥ ए दोनूई स्थानक जू जूवा छै, ते धर्म अधर्म
 दोयां में तायो । साध श्रावक ब्रत आश्री धर्म आर्य,
 असंजती अब्रत आश्री अधर्म मांयो ॥ आ ॥ ५ ॥ अधर्म
 पक्ष ने अनार्य कह्यो छै, पिण सम्यक्कत निर्जरा अधर्म
 नाहीं । ज्युं श्रावक ने धर्म आर्य कह्यो छै, पिण अब्रत
 नाहीं धर्म आर्य मांही ॥ आ ॥ ६ ॥ जिन आज्ञा लोपी
 आप रै छांदै चालै, तिण ने ज्ञान-रहित कह्यो भग-
 वंत । आचारांग दूजा अध्ययन रे छट्ठे उदेशे, तो
 आज्ञा बारै धर्म कहै नाहीं संत ॥ आ ॥ ७ ॥ केवली
 आचरयो ते छद्मसत आचरै, केवली अणाचरयो ते
 आचरै नाहीं, आचारांग दूजा अध्ययने रे छट्ठे उदेशै,
 ए दोयां रो एक आचार छै ताही ॥ आ ॥ ८ ॥ धीर
 कह्यो आज्ञा मांहिलो धर्म मांह रो, आज्ञा बारै बोल
 बोलवो युक्तो नांही । ए उत्कष्टी चरचा कह्यो आचा-
 रंगे छट्ठे अध्ययने दूजा उदेशा माहीं ॥ आ ॥ ९ ॥ प्राण भूत
 जीव ने दुख नाहीं देणो, ए तीन काल रा तीर्थकर नी
 वाणी । ए सुधधर्म आचारांग चौथे, पहिला उदेशा
 सूं लीज्यो पिछाणी ॥ आ ॥ १० ॥ प्रमादी द्रव्यलिङ्गी
 पासत्थादिक, सगला छै जिणआज्ञा बारै । चौथे

अध्ययने आचारांग रै पहिले उदेशौ, पिण आज्ञा बारै धर्म नहीं छै लिगार ॥ आ ॥ ११ ॥ धर्म अधर्म री करणी जूई जूई छै, आचारांग माहिं भाष्यो अरिहन्त । चौथा अध्ययने रे दूजै उदेशौ, तीजी मिश्र री करणी न कही भगवंत ॥ आ ॥ १२ ॥ अबुद्ध ने धर्म कह्यो अणकह्यो सरीषो, ते हेत अहेत मारग नहीं जाणै । चौथाध्ययन आचारांग रै बीजै उदेशौ, जिण आज्ञा तो बुद्धवंत हुवै ते पिछाणै ॥ आ ॥ १३ ॥ च्यार तीर्थ जिण आगन्या ने वांछै, हिंस्या धर्मी अधर्मी रो संग निवारै । चौथाध्ययन आचारांग रै तीजै उदेशौ, तो धर्म कहो किम आज्ञा बारै ॥ आ ॥ १४ ॥ चौथाध्ययन आचारांग रै चौथे उदेशौ, ते जीव जिण आज्ञा तणा छै अजाण । तिणने सम्यक्त आवणी दुर्लभ कही छै, तो जिण आज्ञा ने करलेणी प्रमाण ॥ आ ॥ १५ ॥ तीर्थकर धर्म कह्यो तेहिज मोक्ष नो मारग, पिण अवर मुक्ति नो मारग नांही । पांचमाध्ययन रे तीजै उदेशौ, वीर कह्यो आचारांग मांही । ॥ आ ॥ १६ ॥ आज्ञा बारै उद्यम आज्ञा में आलस, ए दोय बोल शिष्य तोने म होय । आचारांग पांचमाध्ययन रे छठै उदेशौ, वीर ना बचन हियै अवलोय ॥ आ ॥ १७ ॥ छाड़वा आदरवा जोग वस्तु जाणी ने, जिण आगन्या लोपै नहीं साध ।

आचरङ्ग पांचमाध्येन रे छठै उदेशे, तो जिन आज्ञा
 ने लीजो आराध ॥ आ ॥ १८ ॥ उन्मार्ग खोटो सर्वथा
 छांडूं, मुक्ति मारग ने करूं अङ्गीकारो । चौथा अध्येन
 आवसग रे मांही, साधां छोड्यो ते जिण आज्ञा वारो ॥
 आ ॥ १९ ॥ ठाणा अङ्ग सूत्र रे नवमें ठाणै, नव
 प्रकारै पुण्य समचे बतायो । पिण असंजती ने दीधां
 पुण्य नाहीं, तिणरो थे न्याय सुणो चित्तलायो ॥ आ ॥
 २० ॥ असंयती ने निरदोषण दीधां, एकन्त पाप भग-
 वती रे मांह्यो । आठमां शतक रे छठै उदेशै, पुण्य
 कहै ते तो मूसवायो ॥ आ ॥ २१ ॥ अन्य तीर्थी ने
 च्यार आहार देवारा, आणन्दजीसूस किया जिन आगै ।
 उपासकदशा रे पहिले अध्येने, तो तिण ने दीधां पुण्य
 किसी पर लागै ॥ आ ॥ २२ ॥ पात्र ने देवै कुपात्र ने
 देवै, ए चौभङ्गी कही ठाणाअङ्ग मांय । चौथे ठाणै
 कुंपात्र कुक्षेत्र कहा छै, तिण ने पौष्यांसू पुण्य किसी
 पर थाय ॥ आ ॥ २३ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्थ ने देवो
 छोड्यो, ते संसार भमवा नो हेतु जाणी । सूयगडा
 अङ्ग ने नवमाध्येन, तेवीसमी गाथा वीर बखानी ॥
 आ ॥ २४ ॥ उत्तराध्येन चवदमारी बारमी गाथा,
 भगु प्रोहित ने बेटा बोल्या बिमासी । विप्र जिमायां
 तर्मतमा जावै, तो पुण्य कहै ते घणो दुःख पासी ॥

आ ॥ २५ ॥ ब्राह्मण पापकार्य क्षेत्र कहा है, ते
पांच आस्रव ना सेवणहारो । उत्तराध्येन हरकेसी
मुंहदैं यक्ष बोल्यो, बारमाध्येन री गाथा चवदमी
धारो ॥ आ० ॥ २६ ॥ कोई कहै ओ तो यक्ष देव
कह्यो है, पिण साधु री तो नहीं दीसै वाच, तो यक्ष
विप्रां ने क्रोधी मानी कहा है, ते सगळा बोल नहीं
है साच ॥ आ० ॥ २७ ॥ कोई कहै असंयती ने दीधां,
धर्म रो अंश तो नहीं लिगार । पिण पुन्य हुवै तिण
सूं सुरपद पावै, इम कहै ते पिण मूढ गिचार ॥ आ ॥
२८ ॥ आद्रकुमार ने ब्राह्मण बोल्यो, विप्र जिमायां
बंधै पुन्य भारी । तिण पुन्य थकी मोटो देवता थावै,
हिवै आद्रकुमार कहै है विचारी ॥ आ ॥ २९ ॥ दोय
सहंस सनातक विप्र जिमायां, नरकां तणा फल पामै
दाता । सूर्यगडाअङ्ग रे दूजै श्रुत खंधे, छठा अध्येन
चमालीसमी गाथा ॥ आ ॥ ३० ॥ दया धर्म दुगंछै
हिंसा धर्म थापै, शील रहित एहवा विप्र जीमावै ।
सूर्यगडाअङ्ग रे बावीसमाध्येन, पेटालीसमी गाथा में
नरक सिधायै ॥ आ० ॥ ३१ ॥ मास २ में दश लाख
गाय देवै है, कोई किंचित् मात्र देवै नहीं ताहि ।
संयम श्रेय दोयां ने ई भाव्यो, उत्तराध्येन नवमाध्येन
माहिं ॥ आ० ॥ ३२ ॥ जिण चोरी करवा रा. सूस न

कीधा, तिण ने चोर कह्यो छै दशमा अंगे । तिणने
 अन पागी देवै ते पिण चोर, तीजै अध्ययन जोवो मन-
 रंगे ॥ आ ॥ ३३ ॥ सचित खवायां उत्कृष्टे भांगै,
 च्यार चोरी ठाणाअंग अर्थ मांघ । तो वीर नी आज्ञा
 बिण सरब चोरी छै, पहिले ठाणा में भाख्यो जिनराय
 ॥ आ ॥ ३४ ॥ लोकिक रो दान माठो जाणी छोडवो,
 निरवद्य दान परूपणो सार । आचारांग छठाध्ययन रे
 पांचमै उदेशे, वर्तमान मौन सामै अणगार ॥ आ ॥
 ३५ ॥ देता लेता इसो वर्तमान देखी, साधु ने मून
 कही तिण कालो । सूगडाअंग इक्कीसमेध्ययन, छत्ती-
 समी गाथा जोय संभालो ॥ आ ॥ ३६ ॥ सावद्य
 दान प्रशंस्यां छःकाय री हिंसा, वर्तमानकाल निषेध्यां
 अंतराय । सूयगडाअंग रेइग्यारमाध्ययने, बीसमी गाथा
 भाखी जिनराय ॥ आ० ॥ ३७ ॥ ठाणाअङ्ग सूत्र रे
 दशमै ठाणै, दश शस्त्रां में अब्रत शस्त्र जाणो । ते
 शस्त्र तीखो कियां पुण्य परूपै, त्यांने पुन्य धर्म री नहीं
 छै पिछाणो ॥ आ ॥ ३८ ॥ कर्म ने मुकावा ने जीव
 हणै ते, नरक तणा फल पामै विशेष । तो धर्म हेते
 जीव हणै तो, आचारांग दूजाध्ययन रे दूजै उदेश ॥
 आ ॥ ३९ ॥ जन्म मरण मुकावाने जीव हणै तो सम-
 कित जावै ने आवै मिथ्यात । आचारांग पहिला

अध्ययन रे पहिले उदेशौ, बले नरक में पामै अनंती
घात ॥ आ० ॥ ४० ॥ धर्म हेते जीव हणै मंद बुद्धि,
अत्यन्त मूढ़ तिणने कहीजै । बले सत्त्व रहित माठी मत
तिणरी, प्रश्नव्याकर्ण पहिलेध्ययन जोय लीजै ॥ आ ॥
४१ ॥ उपासगदसारे सातमाध्ययन, गौशाला ने शक-
डाल बोल्थो वाय । ए पाट पाटीया बाजोट संधारो,
ते धर्म तप अर्थे देवूं नांय ॥ आ० ॥ ४२ ॥ गाय भैंस
चरावी करै आजीविका, तथा सतुकार ऊपर रहै
ताम । बले हाथी घोड़ा बलद मोर कुकड़ी इत्यादिक,
ऊपर रहै पौषण काम ॥ आ० ॥ ४३ ॥ उपासगद-
सारे पहिलेध्ययन, पनरेई कह्या छै विणज व्यापार ।
पइसो लेई ने असंजती पौषे, ते पनरमो असइजण
पोषणियाधार ॥ आ० ॥ ४४ ॥ पइसो लेई असंजती
ने पौषे, तिणरे कर्म बंधै तिण सूं कर्माज्ञान । तो पइसै
विना जे असंजती पौषे तिण में पिण धर्म कहै ते अज्ञान
॥ आ० ॥ ४५ ॥ अन्य तीर्थी गृहस्थ पास्तथादिकने, साधु
असणादिक देवै नांहि । दूजा आचारांग रे पहिलेध्ययन,
जोयलो पहिला उदेशा मांहि ॥ आ० ॥ ४६ ॥ सावध्य
दान देवै तिण में धर्म प्ररूपै, त्यानि छःकाय ना घाती
कहीजै । आचारांग सातमें अध्ययन, पहिला उदेशा
में जोय लीजै ॥ आ० ॥ ४७ ॥ मृगालोढा ने अशुभ

देखी ने पूछ्यो, इण कवण दियो कुपात्र दान । बिपाक
 रे पहिले अध्ययन गौतम पूछ्यो, तिणरा सांप्रत फल
 भोगवै छै अज्ञान ॥ आ० ॥ ४८ ॥ धर्म ना अवगुण
 अधर्म ना गुण बोलै, निशीथ इग्यारमें दंड चौमासी ।
 आज्ञा मांहि पाप आज्ञा बारै धर्म कहै ते, चिहुं गति
 मांहि घणो दुख पासी ॥ आ० ॥ ४९ ॥ जिण आज्ञा
 मिलै तिम तिम धर्म कहणो सूयगडाअङ्ग रे चवदमा
 मांय । सत्तावीसमी गाथा श्री जिण भाषी, आज्ञा बारै
 धर्म न कहै मुनिराय ॥ आ० ॥ ५० ॥ बारै व्रत आद-
 ख्या ते पहिलो विसरामो, १ सामाई २ पोसो ३ ने
 करै संथारो ४ । ए च्यार विआमां ठाणा अङ्ग चौथे, पिण
 आज्ञा विण धर्म नहीं छै लिगारो ॥ आ० ॥ ५१ ॥ तीन
 चाल्या आवक रा मनोरथ, ठाणा अङ्ग सूत्र रे तीजै
 ठाणै । परिग्रह छाडण री भावना भावै, पिण धन दीधां
 में पुन्य अज्ञानी ताणै ॥ आ० ॥ ५२ ॥ दश दान कह्या
 ठाणा अङ्ग दशमें, दश धर्म कह्या तिणरी कीजै पिछाण ।
 दश स्थविर कह्या ते पिण ओलख लेणा, यानें न्यारा
 न्यारा औलखै बुद्धिवान ॥ आ० ॥ ५३ ॥ हिंस्या करी
 जाणी ने भूठ बोले, साधु ने असणादिक अशुद्धवहि-
 रावै । भगवती पांचमें शतक रे छठै उद्देशौ, जिण
 कह्यो अल्प आउषो बंधावै ॥ आ० ॥ ५४ ॥ अफासु

अणेषणी साधु ने बहिरावै, तिणरे बहुत निर्जरा ने
 अल्प पाप । भगवती आठमें शतक रे छठे उद्देशे,
 तिण सूं मूढ करै अशुद्ध लेवा री थाप ॥ आ० ॥ ५५ ॥
 ए पाठ अजाण पणै मिलतो दिसै, पिण श्रावक तो शुद्ध
 जाण बहिरावै । अल्प पाप ते पाप तणो छै नकारो,
 चोखा परिणामा सूं बोहत निरजरा थावै ॥ आ० ॥ ५६ ॥
 इणन्याय ए पाठ मिलतो दिसै, ते पिण केवल ज्ञानी
 ने देणो भोलाय । टीका करणवाले पिण केवलियां ने
 भोलायो, पिण अशुद्ध लेवारी थाप न करणी काय ॥
 आ० ॥ ५७ ॥ आधाक्रमी भोगव्यां रूलै चिहूं गत में,
 छःकाय रो घाती कह्यो जिनराय । पहिलै शतक भग-
 वती रे नवमे उद्देशै, अशुद्ध दीधां बहुत निरजरा किम
 थाय ॥ आ० ॥ ५८ ॥ सनतकुमार नी पूछा चाली, ते
 वर्त्तमान काल आश्री आख्यो । तीजै शतक भगवती
 रे पहिले उद्देशै, पिण पाछिल भवरो तो नाम न भाष्यो
 ॥ आ० ॥ ५९ ॥ धर्म रे काजे हिंसा में करणी थापै,
 त्यानि अनार्य कहा भगवान् । चौधेव्ययन आचारांग रे
 दूजै उद्देशै, तो हिंसा में धर्म न कहै बुद्धिवान् ॥ आ०
 ॥ ६० ॥ सम्बत अठारा ने वर्ष असीये, वैशाख विद
 एकम बुधवार । ए सावय दान री करणी ओलग्गाव
 जोड़ कीधी सर गांव मभार ॥ आ० ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हिधैं निर्वद्य करणी ओलखायवा, संक्षेप कहूं विस्तार ।
 ते करणी करतां पुन्य नीपजै, पिण सावद्य सूं नहीं पुन्य लिगार ॥ १ ॥
 जिण आगन्यां माहिली करणी करै, शुभ जोग वर्त्तै तिणवार ।
 तिहां कर्म कटै पुन्य नीपजै, देखो सिद्धान्त मभार ॥ २ ॥
 केई अज्ञानी इम कहै, आज्ञा बारली करणी सूं पुन्य ।
 त्यांनि खबर नहीं-जिण धर्मनी, त्यांरी जाबक बात जबून्य ॥ ३ ॥
 शुभ कर्म बंधै जीवरे, आज्ञा माहिली करणी सूं जाण ।
 ठाम ठाम सिद्धान्त में जिण कह्यो, ते सुणज्यो सुमता आण ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

भवियण जिण आज्ञा सुखकारी (प देशी)

साधु ने सुभक्ता च्यारूं आहार बहिरावै, तो एकंत
 निर्जरा जाण । भगवती आठमें शतक छठे उदेशौ, शुद्ध
 निर्वद्य करणी पिछाण रे ॥ भवियण जोवो रे हृदय
 विचारी ॥ या निरबद्य करणी सुखकारी रे भवियण,
 तिण सूं पामै भवपारी ॥ १ ॥ हिंस्या भूठ दोनूं न
 सेवै, साधां ने शुद्ध आहार बहिरावै । भगवती पांचमें
 शतक छठे उदेशौ, दीर्घ आउखो बंधावै रे ॥ भवि ॥
 २॥ षले साधां ने वंदणा नमस्कार करी ने, मनोगम
 शुद्ध आहार बहिरावै । भगवती पांचमें शतक छठे
 उदेशौ, शुभ लांबो आउखो बंधावे रे ॥ भवि ॥ ३ ॥
 वंदणा कर नीच गोत्र स्रपावै, ऊंच गोत्र कर्म बंधायो ।

उत्तराध्येन गुणतीसमा माहिं, दश बोलां में श्रीवीर
दीपायो रे ॥ भवि ॥ ४ ॥ प्रवचन प्रभावना किणने
कहीजै, सिद्धान्त ना गुण दीपावै । उत्तराध्येन गुणतीस
में बोल तेवीसमो, तिण सूं पिण शुभ कर्म बंधावै रे ॥
भवि ॥ ५ ॥ व्यावच कीधां तीर्थकर नाम बंधै, ए बोल
तयालीसमो धार । उत्तराध्येन गुणतीसमें भाख्यो,
तिणरो बुद्धिवन्त न्याय विचारै रे ॥ भ ॥ ६ ॥ दश
प्रकार री व्यावच चाली, ठाणाअङ्ग दश में ठाणै, आ-
चार्य १ उपाध्याय २ स्थविर ३ तपसी री ४, रोगीने ५
नवो शिष्य ६ पिछाण रे ॥ भवि ॥ ७ ॥ एक आचार्य
ना शिष्य ने कुल कहीजै, दोय आचार्य ना शिष्य ने
गण जाण । घणा आचार्य ना शिष्य ने संघ कहीजै,
साधर्मी सर्व साध पिछाण रे ॥ भवि० ॥ ८ ॥ कोई
कहै संघ ते चतुर्विध तीर्थ, तिणरी सावद्य व्यावच में
धर्म । बले साधर्मी में आवक ने घालै, ते भूला
अज्ञानी भ्रम रे ॥ भवि ॥ ९ ॥ यां दशाईं बोलां में
श्री जिण आज्ञा, आवक री व्यावच में आज्ञा नांय ।
तिणरो शरीर छाःकाय रो शस्त्र, तिणने तीखो कियां
पुन्य किम थाय रे ॥ भवि ॥ १० ॥ सामायक माहें
आवक नी आत्मा, अधिकरण कही भगवान् । भगवती
सातमें शतक पहिले उदेशै, निर्णय करै बुद्धिवान् रे ।

॥ भवि ॥ ११ ॥ ग्रहस्थ री व्यावच करै करावै, करै
 * तिण ने भलो जाणै तायो । निशीथ रे इग्यारमें उदेशौ,
 चौमासी प्रायश्चित आयोरे ॥ भवि ॥ १२ ॥ तिणने
 भलो जाणै तो ही डंड कह्यो छै, पुन्य कहै किण
 न्याय । ए सावद्य काम संसार नो मारग, तिण में श्री
 जिण आज्ञा नांयरे ॥ भवि ॥ १३ ॥ बली सातमाशतक
 रे दशमें उदेशौ, अठारै पाप सेव्या सूं पाप ।
 अठारै पाप न सेव्या सूं पुन्य बंधै, ओ कह्यो जिणेश्वर
 आप रे ॥ भवि ॥ १४ ॥ ठाणाअङ्ग रे दशमें ठाणै, दश
 बोल थकी पुन्य बंधै, त्यां दशाई बोलां री श्री जिण
 आज्ञा, इम भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ भवि ॥ १५ ॥
 भगवती सातमें शतक रे छठै उदेशौ, अठारै पाप न
 सेवै कोय । तिण रे अकरकश वेदनी कर्म बंधै छै,
 सेव्यां करकश वेदनी होय रे भवि ॥ १६ ॥ तीर्थकर
 नाम कर्म बंधै बीस बोलां, ज्ञाता आठमाध्येन माह्यो ।
 ते महाबल अणगार सेव्या छै, तिण सूं थया तीर्थकर
 ताह्यो रे ॥ भवि ॥ १७ ॥ तिण में सतरमो बोल समा-
 हिय भाख्यो, इण बोल ने लीजो आराध । गुरु रो कार्य
 करी समाधि उपजावै, बले ज्ञानादि भाव समाध रे ॥
 भवि ॥ १८ ॥ कोई कहै सगला जीवां ने, द्रव्य साता
 उपजावै । श्रावक ने असणादिक खवावै, तो तीर्थक-

रादि गोत बंधावै रे ॥ भवि ॥ १९ ॥ इम कहै तिणने
 पूछा कीजै, ओ बोल चाल्यो किण ठाम । जब तो कहै
 ज्ञाता माहिं चाल्यो, सेव्यो महाबल अणगार ताम रे
 ॥ भवि ॥ २० ॥ महाबल अणगार सेव्यो कहै छै, ते
 तो हुंतो मोटो अणगार । ते सावद्य साता किम उप-
 जावै, ते जोवो अन्तरं नयण उघार रे ॥ भवि ॥ २१ ॥
 महाबल अणगार सेव्यो कहै छै, बले तिण मांहे थापै
 सावद्य साता । ते सावद्य साता में धर्म परूपै, ते
 मोहमिध्यात में राता रे ॥ भवि ॥ २२ ॥ बले विनो
 कियां तीर्थकर गोत बंधै, बलि व्यावच कियां जाण ।
 तिणमें आवक सावद्य विनो व्यावच थापै, ते पिण
 पूरा मूढ अयाण रे ॥ भवि ॥ २३ ॥ ए तीनूई बोल
 साधां आश्री कछा छै, तिण में श्री जिण आज्ञा जोय ।
 आवक री द्रव्य साता ने विनो व्यावच में, जिण आज्ञा
 नहीं छै कोय रे ॥ भवि ॥ २४ ॥ यां बोसाई बोलां में
 श्री जिण आज्ञा, ते सेव्या महाबल अणगारो । ते आवक
 रो विनो व्यावच किम करसी, ते बुद्धिवन्त न्याय
 विचारो रे ॥ भवि ॥ २५ ॥ सुवाहु कुमार री पूछा
 चाली, इण काई दियो शुद्ध दान । विपाक सूत्र रे पहिले
 अध्येन, ए पिण निर्वद्य करणी जाण रे ॥ भवि ॥ २६ ॥
 प्राण भूत जीवरी अणुकंपा कीधां, साता वेदनी नो

कह्यो बंध । भगवती सातमें शतकं रे छठै उदेशै,
 इणरी पिण आज्ञा देवै जिणंदरे ॥ भवि ॥ २७ ॥ भग-
 वती आठमें शतक रे नवमें उदेशै, आठ कर्म बंधण
 रो न्याय । तिणमें आठाई पाप कर्म री करणी, माठी
 कही जिनराय रे ॥ भवि ॥ २८ ॥ वेदनी आउखो नाम
 गोत ए च्याखूं, शुभ कर्म तणी शुद्ध करणी । निरवद्य
 ने आज्ञा मांह कही छै, तिण सूं जीवने आदरणी रे
 ॥ भवि ॥ २९ ॥ कोई कहै साधु आहार करै नींद लेवै,
 बले भोगवै उपाधि अनेक । त्यानि आज्ञा छै तोहि पाप
 बंधै छै, इम बोलै ते बिना विवेक रे ॥ भवि ॥ ३० ॥
 कोई कहै पंच प्रमाद कह्या छै, निद्रा लेवै ते प्रमाद
 मांय । इम कही आज्ञा माहें पाप थापै छै, तिणरो
 जाब सुणो चितलाय रे ॥ भवि ॥ ३१ ॥ निद्रा प्रमाद
 माहें ते तो भाव निद्रा, द्रव्य निद्रा प्रमाद नांय ।
 मिथ्यात अज्ञान रूप मोह कर्म उदा सूं, भाव निद्रा
 कही जिणराय रे ॥ भवि ॥ ३२ ॥ आचारांग तीजा-
 ध्ययन रे पहिले उदेशै, द्रव्य भाव निद्रा कही दोय ।
 मिथ्यादृष्टि भाव निद्रा में सूता, साधु सदा जागता
 सोयरे ॥ भवि ॥ ३३ ॥ द्रव्य निद्रा दर्शणावर्णी कर्म
 उदै सूं, तिण सूं पाप न बंधै कोय । पाप बंधै एक
 मोह कर्म उदै सूं, अवरं सूं पाप न होय रे ॥ भवि ॥

३४ ॥ ज्ञानावर्णीं सूं तो ज्ञान दबै छै, दर्शणावर्णीं सूं
 दर्शण दबाय । तिणमें थिणोदी निद्रा दर्शणावर्णीं
 उदै सूं, पाप न लागै ताय रे ॥ भवि ॥ ३५ ॥ तिण
 निद्रा में अर्ध वासुदेव नो बल छै, ते अन्तराय रो, क्षय-
 उपशम जाणो । तिणमें माठा कर्त्तव्य करै ते मोह
 कर्म उदासूं, तिण सूं पाप लागै छै आणो रे ॥ भवि ॥
 ॥ ३६ ॥ और निद्रा में माठो सुपनो आवै, ते पिण
 मोह कर्म उदै सूं जाणो । तिण निद्रा सूं तो पाप कर्म
 न लागै, माठा सुपना सूं पाप पिछाणो रे ॥ भवि ॥
 ॥ ३७ ॥ वेदनी उदै सूं साता असाता भोगवै, आउखो
 भोगवै उदै आय । गोत उदै थी गोत भोगवै, भली
 वस्तु आडी अन्तराय रे ॥ भवि ॥ ३८ ॥ नाम उदै सूं
 शुभ जोग चालै, त्यां सूं तो पुन्य लागै आण । एक
 मोह बिना पाप कर्म न लागै, समझो चतुर सुजाण रे
 ॥ भवि ॥ ३९ ॥ साधु आहार उपधि जिन आज्ञा सूं
 भोगवे, तिण रे पाप न लागै लिगार । ठाम ठाम
 सिद्धान्त में वीर कह्यो छै, तिणरो अल्प कहूं विस्तार
 रे ॥ भवि ॥ ४० ॥ जयणा सूं साधु अहार करै छै,
 तिण रे पाप न बंधे लिगार । दशवेकालिक रे चौथे
 अध्ययन, पाप कहै ते मूढ गिंवार रे ॥ भवि ॥ ४१ ॥
 निर्वद्य गोचरी ऋषेश्वरांरी, मोक्ष री साधन जिन

भाखी । सुध लेवे देवे ते सुध गति जावे, ते दशवै-
 कालिक साखी रे । भवि ॥ ४२ ॥ भगवती पहिले
 शतक रे नवमें उदेशे, आहार करतां तोड़े सात कर्म ।
 बलि कह्यो सातमा शतक रे पहिले उदेशे, आहार
 करे चलावाने धर्म रे । भवि ॥ ४३ ॥ साधु आहार
 करे संजम यात्रा निभावा, बले करणो कह्यो ठंढो
 आहार । उत्तराध्येने रे आठमें भाख्यो, इग्यारमी
 बारमी गाथा सार रे । भवि ॥ ४४ ॥ मूर्च्छा रहित
 संजम यात्रा निभावा, साधु ने करणो आहार । उत्तरा-
 ध्येन पैतीसमें सतरमी गाथा, पिण प्रमाद न कह्यो
 लिगार रे । भवि ॥ ४५ ॥ आचारङ्ग तीजा ध्येन रे
 दूजे उदेशे, संजम पालवा करणो आहार । प्रमाद सूं
 तो संजम यात्रा विणसै छे, बले हुवे संजम रो बिगार
 रे । भवि ॥ ४६ ॥ ठाणाअङ्ग रे नवमें ठाणै, पहिला
 छेहला तीर्थकर रो धर्म । मानोपेत उपधि ने पांच
 महाव्रत, तिण सूं लगै नहीं पाप कर्म रे । भवि ॥
 ४७ ॥ साधु ने परिग्रह रहित कह्यो छे, धर्म उपधि ने
 परिग्रह कह्यो नाहीं । दशमा अङ्ग रे दशमें अध्येने,
 पिण पाप नहीं तिण माहीं रे । भवि ॥ ४८ ॥ राग-
 द्वेष रहित उपधि भोगवै, तिण ने परिग्रह कह्यो नाही ।
 दशमाअङ्ग रे दशमेध्येने, परिग्रह कहै ते मूरख माहीं

रे । भवि ॥ ४६ ॥ दशवैकालिक रे छठे अध्येने,
 साधु रा उपधि परिग्रह नहीं । निज काया ऊपर पिण
 ममता न करणी । ममता करै तो परिग्रह माहीं रे ॥
 भवि ॥ ५० ॥ धर्म उपधि ढाली सर्व परिग्रह, तीजै ठाणै
 ठाणा अङ्ग मांय । उपगरण निपरिग्रही ठाणा अङ्ग चौथे
 भाख गया जिनराय रे । भवि ॥ ५१ ॥ साधु संजम
 पालवा उपधि राखै, ते नहीं परिग्रह माहीं । प्रश्न
 व्याकरण पांचमेध्येन, पिण श्रावकरा कहा नाहीं रे
 ॥ भवि ॥ ५२ ॥ मोक्ष मारग आडो आगल सरीषो,
 परिग्रह ने कह्यो भगवान् । प्रश्न व्याकरण रे पांचमें
 अध्येने, दियां पुन्य कहै ते अज्ञान रे ॥ भवि ॥ ५३ ॥
 बलि परिग्रह ने अनर्थ कह्यो छै, प्रश्न व्याकरण पंचमें
 जाणो, ते अनर्थ सेवायां में पुन्य परवै, ते पूरा छै मूढ
 अयाणो रे ॥ भवि ॥ ५४ ॥ उत्तराध्येन चवदमां री
 सोलमी गाथा, धन अनर्थ रो मूल जाणौ । धन सू धर्म
 रूपणी धुरा नहीं चालै, ते दीधां पुन्य कहै ते अयाणो
 रे । भवि ॥ ५५ ॥ साधु पचखाण करै तप रो प्रमाद
 ढालवा, भगवती पहिले शतक अर्थ मांय । तपरो प्रमाद
 कहीजै किणने, तिणरो न्याय सुणो चितलाय रे । भवि
 ॥ ५६ ॥ पचखाण कीधां तो तपस्या निषजै, नहीं करै
 तो तपस्या नाहीं । तप नहीं तिण सू तपरो प्रमाद

कह्यो छै, पिण नहीं सावद्य माहीं रे । भवि ॥ ५७ ॥
 प्रमाद रा फल तो कंडुवा कहा छै, प्रमाद में जिन-
 आज्ञा नांय । बले केवलज्ञानी पिण आहार करै छै,
 ते तो अप्रमादी जिनराय रे । भवि ॥ ५८ संजम रो
 गुण तो कर्म रोकवा रो, तपस्या सूं कर्म बोदा पार ।
 उत्तराध्येने गुणतीस में आख्यो, सतावीसमा बोल
 मभार रे । भवि ॥ ५९ ॥ उपधि तणा पचखाण कियां
 सूं, सभाय नो पलिमंथ न थाय । उत्तराध्येन गुणतीस
 में ध्येने, चौतीसमां बोल माय रे । भवि ॥ ६० ॥
 उपधि पडिलेहतां सभायनो पलिमन्थ, तिण सूं पाप न
 लागै कोय । पडिलेहणा करै जब पडिलेहणा रो धर्म,
 सभाय रो धर्म न होय रे । भवि ॥ ६१ ॥ ज्यूं आहार
 करै ते प्रमाद तपस्या रो, तिण सूं पाप न लागै कोय ।
 आहार करै तिण बेलां धर्म आहार रो पिण तपस्या रो
 धर्म न होय रे । भवि ॥ ६२ ॥ पडिलेहणा करै ते
 सभाय नो पलिमंथ, पिण तिण ने सावद्य कहिजै नाहीं ।
 पलिमंथ रो नाम सुणी ने, न थापणो सावद्य माहीं रे ।
 ॥ भवि ॥ ६३ ॥ ज्यूं आहार करै ते तो प्रमाद तपरो,
 पिण सावद्य नहीं छै लिंगार । तपस्या तणी प्रमाद
 सुणी ने, बोलणो नहीं बिना विचार रे ॥ भवि ॥ ६४ ॥
 ठाणाअंग रे पांचमें ठाणै, पांच अचेल कहा अरिहन्त ।

(४४६)

तिण में संभायनो पलिमंथ पड़िलेहण, पिण तिण में
पाप न कह्यो भगवन्तरे ॥ भवि ॥ ६५ ॥ मन वचन
काय उपगरण ए च्यारुं, शुद्ध प्रणिधान भला व्यापार ।
ए साध टाल औरां में नहीं पावै, ठाणाअङ्ग चौथे
ठाणै मभार रे । भवि ॥ ६६ ॥ मन वचन काया उप-
गरण ए च्यारुं, प्रणिधान सावद्य निरवद्य दीय । ए
सन्नी में पावै ठाणाअङ्ग चौथे, असन्नी में मन न होय
रे । भवि ॥ ६७ ॥ ए च्यारुं भला ते साधु रे कह्या
छै, पिण औरां रे भला न कह्या कोय । तो आवक रा
उपधि तो परिग्रह माहिं, ते सेवायां पुण्य किम होय
रे । भवि ॥ ६८ ॥ ए निर्वद्य दान करणी ओलखावा,
जोड़ कीधी रेहलाणा मभार । समत् अठारा ने वर्ष
असीये, वेशाख सुदी तीज शुक्रवार रे । भवि ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

हिबै अणुकंपा ऊपरै, संक्षेप कहं विस्तार ।
सूत्र साख दे वरणवूं, ते सुणज्यो अधिकार ॥ १ ॥
असंजती रो जीवणो, साधु बांछै नांह ।
सीह कर्म उदै सूं बांछियां, डंड कह्यो सिद्धान्त रे मांह ॥ २ ॥

॥ टाल ३ जी ॥

संस भणी निन्दवां तणो ॥ ए देशी ॥

अणुकंपा तस जीवनी, बांधै छोड़ै भलो जाणै

मन मांयकै । चौमासी डंड निशीथ में, बारमें उदेशै
 कह्यो जिनराय कै, भीणो ज्ञान जिनराज नो ॥ १ ॥
 सिंह बाघ हिंसक जीव देखने, मार न कहिणो तिण
 सूं द्वेष आण कै । मत मार न कहिणो राग आणने,
 सूयगडाअङ्ग एकवीसमें पिछाण कै ॥ २ ॥ दश बांछ
 करवी नहीं, दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग मांय कै । तिणमें
 जीवणो मरणो न बांछणो, तो पारको किम बांछै मुनि-
 राय कै ॥ ३ ॥ बाल अज्ञानी बांछै घणो जीवणो, ते
 पंडिन नहीं बांछै ताम कै । अचरंगध्येने पांच में,
 पहिले उदेशै प्रभु कह्यो आम कै ॥ ४ ॥ दशमें अध्येन
 सूयगडाअङ्ग में, चौवीसमी गाथा रे मांय कै । साधु
 जीवणो मरणो बांछै नहीं, ते असंयम जीतव्य बाल
 सरण छै ताय कै ॥ ५ ॥ सूयगडाअङ्ग रे तेरमें, वीसमी
 गाथा में विस्तार कै । जीवणो मरणो न बांछै साधजी,
 ए पिण असंयम जीतव्य धार कै ॥ ६ ॥ असंयम जीतव्य
 उपरांठो करै, निणने आदर नहीं देवै अणगार कै ।
 सूयगडाअङ्ग रे पनरमे, दशमी गाथा रो करो विचार
 कै ॥ ७ ॥ असंयम जीतव्य नहीं बांछणो, बाल मरण
 न बांछै धीर कै । सूयगडाअङ्गध्येने तीसरै, दूजै उदेशै
 कह्यो महावीर कै ॥ ८ ॥ बाल अज्ञानी जीवड़ा, असं-
 जम जीतव्य ना अर्थी जाण कै । सूयगडाअङ्ग रे पांच-

में पहिले उदेशै तीजी गाथा पिछाण कै ॥ ६ ॥ साधु-
 असंजम जीतव्य बांछै नहीं सूयगडाअङ्ग दशमाध्येन
 मांय कै । तीजी गाथा में देखव्यो, तो पारको किम
 बांछै मुनिराय कै ॥ १० ॥ उपसर्ग उपनां साधजी,
 असंयम जीतव्य बांछै नहिं कै । सूयगडाअङ्गध्येने-
 दूसरे, दूजे उदेशै सोलमी गाथा माहिं कै ॥ ११ ॥
 संजम जीतव्य बांछणो, ते जीतव्य वधारवा ने करणो:
 आहार कै । चौथै अध्येन उत्तराध्येन में, सातमी:
 गाथा साधु ने श्रीकार कै ॥ १२ ॥ सूयगडाअङ्गध्येने
 दूसरै, पहिले उदेशै आठमी गाथा धार कै । साधु
 असंजम जीतव्य बांछै नहीं, पंडित मरण करै अङ्गी-
 कार कै ॥ १३ ॥ संजम जीतव्य दोहिलो, और जीतव्य
 दोहिलो कह्यो नहिं कै । सूयगडाअङ्गध्येन दूसरे,
 पहिलै उदेशै पहिली गाथा माहिं कै ॥ १४ ॥ उत्तरा-
 ध्येन बावीसमें, उगणीसमी गाथा में नमिनाथ कै ।
 ए जीव हणै मुझ कारणे, तो सिरै नहीं मुझने ए
 बात कै ॥ १५ ॥ मिथिला नगरी बलनी जाण ने;
 साहमो न जोयो नमि ऋषिराय कै । उत्तराध्येन
 नवमें कह्यो, पिण असंयम जीतव्य बांछ्यो
 नाथ कै ॥ जी ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यच रे, विग्रह
 हुवै त्यां न बांछै हार जीत कै । दशवैकालिक सातमें

दीच पड़ै ते तो विपरीत कै ॥ १७ ॥ वायरो, वर्षा
 सी, तावडो, कलह, उपद्रव रहित सुकाल कै । ए
 साधु ने नहीं बांछणा, दशवैकालिक सातमें संभाल
 कै ॥ जी ॥ १८ ॥ केई भेष्यारी इसड़ी कहै, म्हे
 जंदरा ने बचावां भिन्की ने न्हसाय कै । तो उपद्रव
 रहित नहीं बांछणा, तो उपद्रव सहित किम करणो
 जाय कै । जी ॥ १९ ॥ दूजै आचारांगध्येन दूसरे, पहिले
 उदेशौ गृहस्थ लड़ै मांहो मांय कै । तो मार मतमार
 कहिणो नहीं, राग द्वेष करणो नहीं ताय कै ॥ जी ॥
 ॥ २० ॥ दूजै आचारांगध्येन दूसरे, पहिले उदेशौ गृह-
 स्थ हगै तेजकाय कै । तो अग्नि लगावा रो कहिणो
 नहीं, बुझावा रो पिण न कहै मुनिराय कै ॥ जी ॥
 ॥ २१ ॥ सूर्यगडाअङ्ग श्रुतखंध दूसरै, छठै अध्येने
 कह्यो आर्द्रकुमार कै । वीर धर्म कहै कर्म काटवा, बलि
 अनेरा ना तारण हार कै ॥ २२ ॥ उपदेश देई सम-
 भावणो, आ पैला री अणुकंपा जाण कै । चौथे
 ठाणैठाणाअंग में, ए चडभंगी लीज्यो पिछाण कै ।
 ॥ २३ ॥ हरणगवेषी देवता, देवकी रा पुत्रां ने म्हेल्या
 आण कै । सुलसारी अणुकंपा आणनें, अन्तगड़
 सूत्र में जिन बाण कै ॥ २४ ॥ ईंट उपाड़ी कृष्ण
 जी, तिण पुरुष तणी अनुकम्पा आण कै । अन्त-

गढ़ सूत्र माहें कथो, ए पिण सावद्य माहें जाण कै ॥
 २५ ॥ उत्तराध्येन रे धार में हरकेशी री यक्ष अणु-
 कम्पा आण कै । उंधा पाड्या ब्राह्मणा भणी, ए पिण
 सावद्य लीजो पिछाण कै ॥ २६ ॥ रेणादेवी री करुणा
 करी, जिन ऋषि सांहमो जोयो ताम कै । ज्ञाता रा
 नवमाध्येन में, निश्चै पाप बंधण रो ठाम कै ॥ २७ ॥
 निज गर्भ री अणुकम्पा करी. धारणी क्रिया मनग-
 मता आहार कै । ज्ञातारा पहिलाध्येन में, इण
 में पुन्य कहै ते मूढ गिंवार कै ॥ २८ ॥ असंजती
 री अणुकम्पा आणनें, सचित अचित देवै अणुकम्पां
 दान कै । दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग में, इणमें, पुन्य
 कहै ते घोर अज्ञान कै ॥ २९ ॥ अभयकुमार नी
 अणुकम्पा करी, धारणी रो डोहलो पूखो देव आय
 कै । ज्ञाता रा पहिलाध्येन में, इण में पुन्य कहै ते
 मूसावाय कै ॥ ३० ॥ गोशाला नी अणुकम्पा करी,
 भगवन्त शीतल लेश्या म्हेली ताम कै । भगवती पन-
 रमा शतक में टीका में कह्यो सराग प्रणाम कै ॥ ३१ ॥
 आचारांग नवमा अध्येन में, चौथे उदेशै आठमी गाथा
 धार कै । धीर पाप न कियो खोटो जाण ने, सर्व-
 साधां रो छै ओहिज आचार कै ॥ ३२ ॥ केह मूढ
 मिथ्याती इम कहै, गोशाला ने दीक्षा दीधी नांय कै ।

भगवन्त दीक्षा दीधी गोशाला भणी, पनरमा शतक
 भगवती मांह कै ॥ ३३ ॥ ए सावज अणुकम्पा कही,
 तिणरी आज्ञा नहीं दे जिनराय कै । हिवै निरवद्य
 अणुकम्पा कहूं, ते सांभलज्यो भवियण चित्तल्याय कै
 ॥ ३४ ॥ सुसला प्राण भूत जीव नी, हाथी अणुकंपा
 कर कियो प्रत संसार कै । ज्ञातारा पहिला अध्येन में,
 ते मरने हुवो छै मेघकुमार कै ॥ ३५ ॥ चित्त कह्यो केशो
 खाम ने, आप धर्म कहो तो प्रदेशी रे गुण थाय कै ।
 घणा दौपद चौपद पशु पंखियां भणी, राय प्रसेणी उपांग
 रे माह कै ॥ ३६ ॥ कोई कहै गुण जीवां तणो, पिण
 जीवां रे तो भाव गुण नहीं थाय कै । भाव गुण तो न
 जीवां तणो, इण द्रव्य गुण सूं तो मोक्ष नहीं जाय कै
 ॥ जी ॥ ३७ ॥ नमोत्थुणं कह्यो आवसग मभे, तिण में
 कह्यो संजम जीतव्य ना दातार कै । पिण असंजम
 जीतव्य कह्यो नहीं, असंजम में नहीं धर्म लिंगार कै ॥
 जी ॥ ३८ ॥ समदयाल चोर ने देखने, संजम लीधो
 वैराग मन आण कै । उत्तराध्येन रे इकबीस में, पिण
 ग्रंथ देई न छोडायो जाण कै ॥ जी ॥ ३९ ॥ गृहस्थ
 मारग भूलो उजाड़ में, तिणने जो मारग बतावै मुनि-
 राय कै । निशीथ उदेश्यै तेरमें, चौमासी डंड कह्यो
 जिनराय कै ॥ ४० ॥ भगवती शतक सात में, दश में

उदेशौ कह्यो दीन दयाल कै । घणो आरंभ अग्नि
 लगावियां, बुझायां थोड़ो आरम्भ निहाल कै ॥ ४१ ॥
 तीजै ठाणै ठाणाअङ्ग में, तीजै उदेशौ कह्यो जिनराय
 कै । हिंसा देखीने समभावणो, समभावणी न आवै
 तो रहिणो मुनसाभक कै ॥ ४२ ॥ समभावणो पिण आवै
 नहीं, अण बोल्यो पिण रह्यो नहीं जाय कै । तो एकन्त
 जायगा जावणो, पिण बिच में न पडणो कह्यो जिन-
 राय कै ॥ ४३ ॥ साधरी हरस छैदे तेहने क्रिया कही,
 पिण साधु रे क्रिया न कही भगवती मांय कै । तीजै
 उदेशौ शतक सोल में, वैद्य साधु रे पांडी धर्म अंतराय
 कै ॥ ४४ ॥ गृहस्थ री रक्षा निमते यंत्र करै, तो चौमासी
 डंड निशीथ रे मांय कै । तेरमे उदेशौ बोल बारमो,
 तो उंदरा नी रक्षा किम करै मुनिराय कै ॥ ४५ ॥
 साधु डरावै अनेरा जीवने, तो चौमासी डण्ड निशीथ
 में देख कै । इग्यार में उदेशौ बोल तेसठमो, बुद्धिवन्त
 हुवै ते करै विवेक कै ॥ ४६ ॥ तीजै अध्येन आचा-
 रांग में कह्यो, एक आत्मा तुल्य और मित्र न कोय
 कै । और सर्व मोहनो कारण कह्यो, आत्मा वश कियौ
 विण धर्म न होय कै ॥ ४७ ॥ सावद्य अणुकम्पा जिण
 आज्ञा बाहिरे, निरवद्य श्री जिण आज्ञा मांय कै । इअ
 सांभल उत्तम नरां, सावद्य निरवद्य ओलखो न्याय

कै ॥ ४८ ॥ ए अणुकम्पा ओलखायवा, जोड़ कौधी
रेहलाणा मेभार कै । समत् अठारा असीये, बैशाख
विद तीज शुक्रवार कै ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

नव तत्त्व ओलख्यां, बिना, सम्यक्त आवै नांय ।

छाम छाम सिद्धान्त मे जिन कह्यो, ते सुणज्यो चित्तलांय ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(देशी—पाखण्ड चधली आरै पंचमें रे)

च्यार संघ कह्या ठाणाअंग सूत्रमें रे, ते च्यारुं ही
गुणरत्नारी खाण रे । त्यांरा गुण ओलख ने निरणय
करो रे, साची सरध्यां सूं सम्यक्त जाण रे ॥ नव तत्त्व
ओलखियां बिन समकित नहीं रे ॥ १ ॥ तीजै ठाणै
ठाणाअंग सूत्रमें रे, पहिला ते भणवो नव तत्त्व ज्ञान
रे । तपस्या ने ध्यान दोनूं भणियां पछै रे, भणियां
बिण निरफल तपस्या ध्यान रे ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन
अध्ययन अठावीसमें रे, नव तत्त्व जाण्यां बिण सम्यक्त
नांय रे । भावे करी सरध्यां सूं समकिती हुवे रे, पन-
रमी गाथा कही जिनराय रे ॥ ३ ॥ ज्ञान पहिली ने
दया पाछै कही रे, दशवैकालिक रे चौथै जाण रे ।
दशमी गाथा देखो दिल खोलने रे, ज्ञान बिन सम्यक्त
नहीं पिछाण रे ॥ ४ ॥ जीव अजीव दोनूं ही जाणै

सूँ नहीं छै मोक्ष रै ॥ १२ ॥ तपस्या पिण अशुद्ध नहीं
 छै तेहनी रे, जे तपस्या कर गृहस्थ ने देवै जताय रे ।
 ते पूजा श्लाघा रा अर्थी थका रे, सूयगडा अङ्ग आठमा
 अध्यने मांय रे ॥ १३ ॥ आचाराङ्ग रे पांचम ध्यानमें रे,
 पांचमें उदेशै करो पिछाण रे । उंधी श्रद्धा कही छै
 छोडणी रे, शुद्ध श्रद्धा आदरणी नव तत्व जाण रे ॥ १४ ॥
 समकित बिण चारित्र निश्चय नहीं रे, चारित्र बिण
 मोक्ष म जाणो कोय रे । उत्तराध्ययन अध्यन अठा-
 वीस में रे, नव तत्व ओलखियां सम्यक्त होय रे ॥ १५ ॥
 दशमें ठाणै ठाणाअङ्ग देखल्यो रे, मिथ्यात तणा चाल्या
 दश भेद रे । एक बोल ऊंधो सरध्यां मिथ्याती कह्यो
 रे, तो नवतत्व ओलखो आण उमेद रे ॥ १६ ॥ तस
 थावर जीव अजीव जाणै नहीं रे, तिण त्याग किया ते
 दुपचखाण रे । सात में शतक भगवती सूत्र में रे,
 बीजै उदेशै करो पिछाण रे ॥ १७ ॥ तिण त्याग किया
 ते ब्रत नहीं निपजै रे, ते पिण संबर आश्री जाण रे ।
 शुभ जोग कर्तै छै मिथ्याती तणै रे, तिणरे कर्म निर्जरा
 शुद्ध बखाण रे ॥ १८ ॥ तिणरै निर्जरा हुवै तिणसूँ जिन
 आगन्यां रै, अशुद्ध कहै ते मूढ़ गंवार रे । ठाम २
 सूत्र में जिन कह्यो रे, मिथ्यातीरी करणी जिन आज्ञा
 मभार रे ॥ १९ ॥ आठ में शतक भगवती सूत्रमें रे,

देशमें उदेशौ दाख्यो चीर रे । ज्ञान नहीं पिण क्रिया
 सहित छै रे, तिण ने देश अमराधक कह्यो महावीर रे
 ॥ २० ॥ ए पिण निर्जरा आश्री जाणज्यो रे, तिण में
 निश्चोई श्रीजिन आज्ञा जाण रे । इण करणी ने जिन
 आज्ञा बारै कहै रे, ते तो पूरा छै सूढ अघाण रे ॥ २१ ॥
 मेघकुमर हाथी रा भव मभेरे, बले सुबाहुकुमर पाछिल
 भव मांहि रे । या मिथ्याती थकां दया शुद्ध दानसूं रे,
 परत संसार कियो छै ताहि रे ॥ २२ ॥ इत्यादिक परत
 संसार कियो तिहारै, जिनाज्ञा बले निर्जरा निरमल
 जोय रे । पिण सम्यक्त संबर त्यारै को नहीं रे, नव-
 तत्व ओलखियां सम्यक्त होय रे ॥ २३ ॥ नवतत्व में
 आस्रव तत्व पांचमों रे, तिणने जीव कह्यो तीर्थकर
 देव रे । सूत्र नी साख देई निर्णय कहूं रे, न-जाणै
 मिथ्याती तिणरो भेव रे ॥ २४ ॥ नव में ठाणै ठाणा
 अंग सूत्र में रे, श्रीजिन भाख्या नव तत्व सोय रे ।
 त्यां अर्थ मांही घणों विस्तार छै रे, त्यां आस्रव ने जीव
 कह्यो ते जोय रे ॥ २५ ॥ पांच में ठाणै ठाणा अङ्ग
 सूत्रमें रे, आस्रव ने कह्यो उघाड़ै द्वार रे । संबर ने
 कह्यो छै रुंध्या बारणा रे, तिण रो पिण बुद्धिबन्त
 करो विचार रे ॥ २६ ॥ उत्तराध्येन रै गुणतीसमें रे,
 ब्रतांरा छिद्र कहा आस्रवद्वार रे, तिणद्वार माहें

आवै ते कर्म छै रे, यां दोयां ने बुद्धिवन्त सरधी न्यार
 रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्येन अध्येन गुणतीसमें रे, पच-
 खाण सूं आस्रवद्वार रुंधाय रे । बली उत्तराध्येन गुण-
 तीसमें रे, ब्रतांरा छिद्र कछा आस्रव द्वार रे । तिणद्वार
 माहें आवै ते कर्म छै रे, यां दोयांने बुद्धिवन्त सरधी
 न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन गुणतीसमें रे,
 पचखाण सूं आस्रवद्वार रुंधाय रे । बली उत्तराध्ययन
 गुणतीसमाध्ययनमें रे, अप्रज्ञास्तद्वार आस्रव कह्यो ताय
 रे ॥ २८ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन तीसमें रे, आस्रव
 रूपीया नाला सोय रे । बली उत्तराध्ययन अध्ययन
 चौतीसमें रे, कृष्ण लेश्यारा लक्षण आस्रव जोय रे
 ॥ २९ ॥ भाव लेश्या ने तो कहै जीव छै रे, तो त्यांरा
 लक्षण किम हुबै अजीव रे । त्यां जीव अजीव दोनूं
 नहीं ओलख्या रे, त्यांरे मोटी मिथ्यात तणी छै
 नीव रे ॥ ३० ॥ छः भाव लेश्या संज्ञा दर्शण दिष्टने
 रे, यां ने अरूपी कछा भगवती मांय रे । बारमें
 शतक उदेशौ पांचमें रे, कोई बुद्धिवन्त जोय विचारो
 न्याय रे ॥ ३१ ॥ प्राणातिपातमें वर्ते तेहने रे,
 भगवतीमें जीव कह्यो जगनाथ रे । सातमें शतक
 उदेशौ दूसरै रे, तिणने अजीव कहै ते जड़ मिथ्यात
 रे ॥ ३२ ॥ प्राणातिपात वेरमण तेहने रे, भगवतीमें

जीव कह्यो जगदीश रे । चौथे उदेशौ शतक बारमें रे,
 इण न्याय संबर ने जीव कहीस रे ॥ ३३ ॥ कोई कहै
 आस्रव ने कह्यो खपावणो रे, आस्रव ते जीव खपावै
 केम रे । इण न्याय आस्रवने कर्म कहा अछै रे,
 तेहनो न्याय सूणो धर प्रेम रे ॥ ३४ ॥ अशुभ आस्रव
 माठा प्रणामने रे, खपावणा कहा ते मेटण जोय रे ।
 खपावण मेटण रो अर्थ एक छै रे, पिण माठा परिणाम
 अजीव न होय रे ॥ ३५ ॥ अप्रशस्त अशुभ माठा परि-
 णाम सूं रे, ज्ञान दर्शन चारित्र खपाय रे । अनुयोग
 द्वारमें अरिहन्त आखियो रे, तो ज्ञान दर्शन ते
 अजीव किम थाय रे ॥ ३६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तो
 जीव छै रे, ते माठा परिणामा सूं खप जाय रे । ज्युं
 माठा परिणाम ते आस्रव जीव छै रे, ते चोखा परि-
 णामा सूं मिट जाय रे ॥ ३७ ॥ जे कहै जीव खपायो
 खपै नहीं रे, तिणरे लेखै ज्ञानादिक पिण अजीव रे ।
 ए न्याय बतायां निरणो नहीं करै रे, त्यांरै मोह मिथ्यात
 तणी छै नीव रे ॥ ३८ ॥ बले द्रव्य जोग ने पिण
 आस्रव कहै रे, पिण द्रव्य जोग आस्रव नहीं ताम रे ।
 भाव लेखारा लक्षण ने आस्रव कहा रे, तिणसूं भाव
 जोग छै आस्रव जीव परिणाम रे ॥ ३९ ॥ जे साधुनो
 द्रव्य मन जोग चोखो हुवै रे, तो भावे पिण निरमल

सुध पिछाण रे । अनुयोग द्वार माहिं अधिकार छै रे,
 भावे मन छै ते आस्रव जाण रे ॥ ४० ॥ तीजै ठाणै
 ठाणाअंग तेह में रे, पहिले उदेशै देखो सोय रे ।
 कर्म क्षयोपशम वीर्य तेहने रे, जोग क्षयोपशम ते अव-
 लोण रे ॥ ४१ ॥ पहिले ठाणै ठाणाअङ्ग अर्थ में रे,
 जोय प्रणाम ते लेश्या जाण रे । ते लेश्या ने जोग
 सरीषा लेखव्या रे, भाव लेश्या ते जोग पिछाण रे ॥ ४२ ॥
 पहिले ठाणै ठाणाअंग पेखल्यो रे, आस्रव कर्म अवा-
 ना द्वारा रे । ते द्वार ने कर्म जू जुवा जाणज्यो रे,
 तिणरो मूढ़ न जाणै मूल विचार रे ॥ ४३ ॥ शतक
 तीजै भगवती सूत्र में रे, तीजै उदेशै दियो दृष्टान्त
 रे । जीव रूपी तो नावा जिन कही रे, आस्रव रूप
 छिद्र जल पंथ रे ॥ ४४ ॥ ते आस्रव रूपी छिद्र रुंध्यां
 थकां रे, ते साधु पामै शिव रमणी संग रे । पिण पाणी
 रूपियो तो आस्रव नहीं कह्यो रे, ए जूजुवा जाण्यां
 सम्यक्त रङ्ग रे ॥ ४५ ॥ नव तत्व ओलखियां बिण
 सम्यक्त नहीं रे, ते जोड़ी रहलाणा गाम मझार रे ।
 सम्बत अठारै असीयसमें रे, बैशाख बिद तीज ने
 शुक्रवार रे ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

हिबै समचै आचार साधु तणो, भाख्यो श्री भगवान ।

तिणरा भाव भेद प्रकट करुं, ते सुणो सूरत दे कान ॥ १ ॥

॥ ढाल ५ वीं ॥

(देशी—जिन बचने प्रति बुझो रे प्राणी)

साधु अर्थे करायो उपासरो, पुरषांतर बिन कल्पै
नांही रे । दूजै श्रुतखंध आचारङ्ग देखल्यो, दूजाध्येन
पहिला उदेशा मांही रे ॥ आचार सुणो साधु तणो
॥ १ ॥ साधु काजे आरम्भ कर जागां करी, त्यां रह्यां
कह्यो ग्रहस्थ भेषधारी रे । बली महा सावद्य क्रिया
कही, दूजा उदेशा मभारी रे ॥ २ ॥ उदेशिक जे उपा-
सरो, जो इक दिन भोगवै जाणी रे । मासिक दण्ड
निशीथ में, पांचमें उदेशौ पिछाणी रे ॥ ३ ॥ इम सपा-
हुडिय सेभा में रहे, साधु काजे लींघ्यो रेने छायो रे ।
मासिक दण्ड निशीथ में, पांचमें उदेशौ मंघ्यो रे ॥ ४ ॥
इम भीत करै बांसादिक बांधै आण ने, ते सपरिकम्भ
सेभ्या में रहै जाणी रे । मासिक दण्ड निशीथ में
पांचमें उदेशौ पिछाणी रे ॥ ५ ॥ आधाक्रमी साधु जाणी
भोगवे, तो चिहुंगत में दुःख थायो रे । भगवतीरा
पहिला शतक में, नवमें उदेशौ बतायो रे ॥ ६ ॥ दशमा
अंगरै आठ में, अठारह आदि थानक सीधा रे । ते

कल्पै साधु भणी, साधां काजे नहीं कीधा रे । ए मारग
 छै साधु-रो ॥ ७ ॥ दूजै श्रुतखंध आचारङ्ग अध्येन
 दूसरै, छट्टे उदेशौ तायो रे । एक काय हणयां हिंसा
 छःकायरी एक ब्रत भांगां - छट्टुं जायो रे ॥ ८ ॥ अठारा
 ठाणा मांहिलो, एक सेव्यां सुं भिष्ट थायो रे ॥ दशवै-
 कालिक छट्टां ध्येन मै, सातमो गाथा मांयो रे ॥ ९ ॥
 आचारङ्ग रे आठ में, पहिले उदेशौ मांयो रे । अकल्प-
 तो लेवै तेहने, चोर कह्यो जिनरायो रे ॥ १० ॥ पूनी-
 क्रम नो अंश भोगवै, तिण ने कह्यो ग्रहस्थ भेषधारी रे ।
 पहिला अध्येन सूयगडा अङ्ग में, तीजा उदेशा मभा-
 रीरे ॥ ११ ॥ कारण अशुद्ध लेणो कहै, निणने कह्यो
 बंधुल संसारीरे । आचारङ्ग छट्टा ध्येन में, चौथे उदेशौ
 विस्तारीरे ॥ १२ ॥ शरीर छांडै धर्म कारणे, पिण
 आधाक्रम्यादि लेणो नाहीं रे । आचाराङ्ग छट्टा ध्येन
 में, चौथा उदेशा मांही रे ॥ १३ ॥ पांचमां आरारो
 नाम ले, दोष लगांवै ते दुःख पासी रे । आचारङ्ग
 छट्टा ध्येन में, जोवो चौथो उदेशो विमासी रे ॥ १४ ॥
 क्रयं विक्रय में वर्तै तेहने, कह्यो साधां तणी पांत बारो
 रे । उत्तराध्येन पैतीसमें, देखी करो निस्तारो रे ॥ १५ ॥
 अर्चित वस्तु मोल लिरावियां, चौमासी दण्ड पिछां-
 णोरे । निशीथ उदेशौ उगणीस में तिणने निश्चेई

सांध म जाणो रे ॥ १६ ॥ मोल रो लियो पात्रो बहि-
 रियां, चौमासी चारित्र जायो रे । निशीथ उदेशौ चवद
 में, तिणने किम कहिये सुनिरायो रे ॥ १७ ॥ मोल
 लियो जो भोगवै, तो दशवैकालिक में अणाचारो
 रे । तीजै अध्येन गाथा दूसरी, तो लेवै ते नहीं अण-
 गारो रे ॥ १८ ॥ उदेशिक ने कृतगढ़ भोगवै, बले
 नित पिण्ड लेवै च्यारुं आहारो रे । दशवैकालिक रे
 तीसरै, दूजी गाथा में कह्यो अणाचारो रे ॥ १९ ॥
 नितपिण्ड उदेशिक कृतगढ़ लीये, ते हिंसारा अनु-
 मोदनहारो रे । दशवैकालिक छद्वा ध्ययन में, गुण
 पचासमी गाथा धारो रे ॥ २० ॥ उदेशिक कृतगढ़
 नितपिण्ड लीये, ते नरक तिर्यच रा जावणहारो रे ।
 उत्तराध्येन रे बीसमें, सैंतालीसमी गाथा मभारो रे
 ॥ २१ ॥ नितपिण्ड भोगविद्यां निशीथ में, मासिक
 दण्ड बतायो रे । दूजै उदेशौ बोल तेतीसमो, भाख
 गया जिनरायो रे ॥ २२ ॥ केई कहै नितपिण्ड लेणो
 नहीं, तो कारण पड़ियां ले किण न्यायो रे । ते सूत्र
 माहें तो खुल्यो नहीं, तिणरो न्याय सुणो चित्तलायो
 रे ॥ २३ ॥ पहिला पहोररो छेहले पहोर भोगवै, तो
 चौमासी प्रायश्चित आयो रे । मासिक प्रायश्चित नित-
 पिण्ड तणो, कह्यो निशीथ रे मांयो रे ॥ २४ ॥ गाढा

गाढा कारण पडियां थकां, पहिला पहोर रो आण्यो
 ओहारो रे । छेहले पहोर भोगवणो कह्यो, वृहत्कल्प
 सभारो रे ॥ २५ ॥ चौमासी प्रायश्चित्त वालो कारण
 पड्यां, लियां दोष नहीं एमोरें । ते मासिक दण्ड
 नितपिण्ड तणो, ते कारण पड्यां लियां दोष केमो रे
 ॥ २६ ॥ बले मास कल्पे रहिणो शेषें काणमें, पिण
 कारण पड्यां दोष नांही रे । ज्युं कारण पड्यां नित-
 पिण्ड लीये, तिण रो दोष नहीं दीसै काई रे ॥ २७ ॥
 ए तो बज्यो ढीला पड़ता जाणने, निणसूं कारण पड्यां
 दोष न कोयोरे, आधाक्रम्यादिक कारण पड्यां, लेणो
 नहीं छै सोयोरे ॥ २८ ॥ ग्रहस्थ ने साता पूछियां,
 दशवैकालिक में अणाचारो रे । तीजे अध्येन गाथा
 तीसरी, तो साता बंछ्यां न धर्म लिगारो रे ॥ २९ ॥
 ग्रहस्थरी विधावच क्रियां, अठावीसमो अणाचारो रे ।
 दशवैकालिक रे तीसरै, छट्टी गाथामें न्याय विचारो
 रे ॥ ३० ॥ ग्रहस्थने साधु कहै नहीं, आव जाव वेस
 कर कामो रे । दशवैकालिक सात में, सेतालीसमी
 गाथा में तामोरें ॥ ३१ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र सहित
 छै, तिणने साधु कह्यो जिनरायो रे । ते पिण थोड़ा
 लोकमें, दशवैकालिक सातमां मांयो रे ॥ ३२ ॥ पहिले
 उदेशौ वृहत्कल्प में, साधु ने रहिणो उघाड़ै द्वारोरे ।

साधवी ने जड़णो कह्यो, शीलादिक कारण विचारो रे
 ॥ ३३ ॥ पहिले उदेशै बृहत्कल्प रे, साधुने प्रतिबन्ध
 सेज्या न रहिणोरे । तिणने किंवाड़ कल्पै नहीं, ए
 परमार्थ लेणो रे ॥ ३४ ॥ बृहत्कल्प पहिले उदेशै
 कह्यो, घर मध्य निकाल पेसरो रे । तिहां पिण साधुने
 कल्पे नहीं, ओहिज परमार्थ धारोरे ॥ ३५ ॥ साधुने
 किंवाड़ जड़णों नहीं, ग्रहस्थरो धन चोर लेज्यायोरे ।
 जब हेला निन्दा हुवै साधु भणी, एह विचारो न्यायोरे
 ॥ ३६ ॥ तिण स्युं इसी जायगां साधुने रहिणो नहीं,
 साधवी ने रहिणो कह्यो वीरोरे । किंवाड़ जड़णो तेहने,
 ए न्याय विचारो धीरोरे ॥ ३७ ॥ मन करी किंवाड़
 न बांछणो, उत्तराध्ययन पैतीसमो साखी रे । तो हाथां
 स्युं जड़वो किहां थकी, चौथी गाथा वीर भाषी रे ॥
 ३८ ॥ आवसग चौथा ध्ययन में, थोड़ो उघाड्यां हिंसा
 रो दोषो रे । केई जड़ियां में दोष अछे नहीं, ते किण
 विध जासी मोखोरे ॥ ३९ ॥ सूने घर रह्यां साध ने,
 किंवाड़ न जड़णों तामोरे । तो दूजी ठोड़ पिण क्रिम
 जड़ै, सूयगडा अङ्ग दूजा ध्ययन आमो रे ॥ ४० ॥ कोई
 कहै ए जिन कल्पी तणो, तेरमी गाथामें आचारो
 रे । पिण जिणकल्पी थिवरकल्पी तणो, दोयां रो भेलो
 देख विचारो रे ॥ ४१ ॥ दूजै श्रुतखन्ध आचारङ्ग

पहिलाध्ययनमें, पांचमें उद्देशौ पिछाणो रे । कांटारी
 डाली अलगी करी, आज्ञा मांग गृहस्थ घर जाणो
 रे ॥ ४२ ॥ साधु रहै तिहां आवकं भणी आधी आखी
 रात बसावै रे । निशीथ उद्देशौ आठमें, चौमासी
 प्रायश्चित आवै रे ॥ ४३ ॥ जोरीदावे रहतां ने बरजे
 नहीं, तो पिण चौमासी प्रायश्चित पावै रे । तीजो प्राय-
 श्चित जोरी दावे रखां, तिण साथे बारै जावै पाछो
 आवै रे ॥ ४४ ॥ प्रमाण अधिको उपगरण धरै, तो
 चौमासी दण्ड पिछाणो रे । निशीथ उद्देशौ सोलमें,
 गुणचालीसमो बोल जाणो रे ॥ ४५ ॥ शंख दांत नहीं
 राखणो, काच मणि पाषाणो रे । प्रश्न व्याकरण द्वादमें
 कह्यो, चशमो राखे ते मूढ़ अयाणो रे ॥ ४६ ॥ थोड़ोई
 उपधि पड़िलेहै नहीं, तो मासिक प्रायश्चित आयो रे ।
 दूजै उद्देशौ निशीथ में, छेहलो बोल कह्यो जिनरायो रे
 ॥ ४७ ॥ छती शक्ति कल्प ह्युं अधिका रहै, तो मासिक
 दण्ड दिखारो रे । दूजा उद्देशा माहें कह्यो, सेंती-
 समो बोल सारो रे ॥ ४८ ॥ दूजै श्रुतखन्ध आचारङ्ग
 दूसरै, दूजै उद्देशौ कह्यो भगवन्तो रे । तो कल्प लोपी
 ने अधिको रहै, क्रिया लागै काला इकंतो रे ॥ ४९ ॥
 ऋतु बन्ध ग्रह्या पाट पाटला, ऋतुबन्ध जो देवै नहीं
 रे । मासिक दण्ड निशीथ में, दूजा उद्देशौ माहीं रे ॥

५० ॥ पांत बैठी त्यां ऊभो रहणो नहीं, पहिलेध्ययन
 उत्तराध्ययन मांछो रे । गाथा बत्तीसमी देखल्यो, अरि-
 हन्त अर्थ बतायो रे ॥ ५१ ॥ जीमणवार जाणी तिण
 मारगे, साधु ने जाणो नाहीं रे । पहिले उद्देशौ वृहत-
 कल्प में, मत राखो शङ्का मन माहीं रे ॥ ५२ ॥
 पूरव कानी जीमणवार जाण ने, पश्चिम कानी बहिरवा
 जाणो रे । दूजा आचारङ्ग पहिलाध्ययन में, दूजै उद्देशौ
 जिन बाणो रे ॥ ५३ ॥ आप सरीषा साधने, छती
 जायगां ऊभो रहिण दे नाहीं रे, चौमासी दण्ड निशीथ
 में, सातमां उद्देशा माहीं रे ॥ ५४ ॥ ज्ञान दर्शण पाछा
 मेल्या ते पासत्था ने, त्यांने बान्द्यां प्रशंस्यां दंड
 चौमासी रे । उसणो ते थाको संयम थकी, त्यांने
 बान्द्यां प्रशंस्यां दंड पासी रे ॥ ५५ ॥ तिणरो खोटो
 आचार ते कुशीलियो. नित बस्यां सूं नितियो संस-
 त्तो थावै रे । ते पासत्था माहें बसै, पिण लोकां
 में प्रियधर्मी देख्वावै रे ॥ ५६ ॥ सभाय सूकी विकथा
 करै, तिणने कहियो कह्यो जिनरायो रे । पास-
 णियो नटादिक देखतो फिरै, पमाइयो ते ममता मांछो
 रे ॥ ५७ ॥ जो गृहस्थ नो कारज करै, ते संपरा-
 इयो जाणो रे । यां सगलां ने बान्द्यां प्रशंसियां,
 चौमासी दण्ड पिछाणो रे ॥ ५८ ॥ निशीथ उद्देशौ तेरमें,

भाष्यो वीर जिणन्दो रे । तो पासत्थादिक री व्यावच
 क्रियां, धम्म कहै ते मति अन्धो रे ॥ ५६ ॥ बलि सेलक
 ने पासत्थो कह्यो, बले कह्यो हीणाचारी रे । एहनी
 विनय व्यावच क्रियां, किम हुवै धम्म लिगारी रे ॥ ६० ॥
 च्याखं आहार वल्ल पात्र काम्बलो, बले रजोहरण
 विचारो रे । ए आठ बोल देवै गृहस्थ भणी, तो दण्ड
 चौमासी धारो रे ॥ ६१ ॥ निशीथ उद्देशै पनरमें, जोय
 करो निस्तारो रे । तो गृहस्थ ने देवै पूंजणी त्यानि,
 किम कहिए अणगारो रे ॥ ६२ ॥ पूछ्यां कहै म्हे दीधी
 नहीं, म्हे तो परठ दीधी छै तायो रे । इम भूठ बोलै
 जाणने, तिण साधु रो भेष लजायो रे ॥ ६३ ॥ बले
 पासत्थादिक सगला भणी, ए आठ बोल लेवै देवै रे ।
 तो पिण चौमासी दण्ड छै, ते परमार्थ नहीं वेवै रे
 ॥ ६४ ॥ निशीथ उद्देशै पनरमें, श्रीजिन 'बचन
 सम्भालो रे । तो पन्थक असणादिक दियो सेलक
 भणी, तिण में धम्म कहै ते बालो रे ॥ ६५ ॥ पासत्था
 ना सरीषो आचार छै, तिणने कह्यो असणादिक बहिरी
 आणो रे । पछै भोगवस्यां आपे जू जुवा, तो पिण
 चौमासी प्रायश्चित्त जाणो रे ॥ ६६ ॥ चौथे उद्देशै
 निशीथ में, एक सौ त्यांलीसमो बोलो रे । तो पन्थक
 ने धम्म किहां थकी, आंख हिया री खोलो रे ॥ ६७ ॥

पसिन्धादिक कह्या तेहने, शिष्य देवै लेवै त्यां आगै रे ।
 चौथे उद्देशै निशीथ में, मासिक चारित्र भागै रे ॥६८॥
 जो सेलक ने पासत्थो कह्यो, पन्थक रह्यो तिण री
 व्यावच काजो रे । ते छान्दो छै आपरो, तिण री आज्ञा
 न दे जिनराजो रे ॥ ६९ ॥ पोता रे छान्दे बरतै तेहने,
 वान्दै प्रशंसे तायो रे । निशीथ उद्देशै इग्यारमें,
 चौमासी चारित्र जायो रे ॥ ७० ॥ तो पन्थकव्यावच
 करी सेलक तणी, ते सेलक छै आहाछन्दो रे ।
 तिणरी व्यावच कियां धर्म कहै, ते तो पूरा छै मति
 अन्धो रे ॥७१॥ सरीषी साध्वी छै तेहने, छती जायगां
 उतरने दे नाहीं रे । चौमासी दण्ड निशीथ में, सत-
 रमां उद्देशा माहीं रे ॥ ७२ ॥ शुद्ध साध सम्भोग करै
 साध स्युं, तिण में कहै कर्म बन्ध ठिकाणो रे । निशीथ
 उद्देशै पांचमें, मासिक प्रायश्चित्त जाणो रे ॥ ७३ ॥
 साध कहै बलि तेह स्युं, भेलो न करै सम्भोगो रे ।
 बलि पाप कहै सम्भोग में, त्यांर लागो जोग ने रोगो
 रे ॥ ७४ ॥ धाय नीं परे बालक रमाय ने, देवै असणा-
 दिक आहारो रे । चौमासी दण्ड निशीथ में, तेरमां
 उद्देशा मभारो रे ॥ ७५ ॥ साधु उतरिया तिण थानक
 विषै, करै पगथिया पग मेलण कामो रे । बलि पाणी
 काढ़वा ने खाल करै, बले छींका करै बस्त्र में तामो

रे ॥ ७६ ॥ मासिक दण्ड निशीथ में, बीजै उद्देशै अधि-
 कारो रे । तो पाणी काढवा ने खाल करै, त्याने किम
 कहिजै अणगारो रे ॥ ७७ ॥ बले कादो हुवै धानक मभे
 जब कांकरादिक न्हखावै रे । बले गृहस्थ रो कियो
 त्यांमें, साध पणो किम थावै रे ॥ ७८ ॥ राजा ने करै
 आपरो, हम प्रधान नगर अधिकारी रे । बले घाण्या
 रा अधिकारी भणी, आपरो करै तो दण्ड भारी रे
 ॥ ७९ ॥ बले सर्व ना अधिकारी भणी, बले देश तणे
 अधिकारी रे । यां सगलां ने करै आपरा, तो मासिक
 दण्ड विचारी रे ॥ ८० ॥ चौथे उद्देशै निशीथ में, इण
 रो न्याय हिये में धारीजै रे । बन्धो करावै गृहस्थ
 भणी, कहै म्हां आगैइज दीख्या लीजै रे ॥ ८१ ॥ बले
 कहै म्हे समझावियो. तिणरी राखे छै धणीयापो रे ।
 तिण गृहस्थ ने कियो आप रो, तिण स्यूं कर रह्या
 कुंगुरु बिलापो रे ॥ ८२ ॥ कोई दीख्या लेवै आचार्य
 कने, तिण शिष्य रा परिणाम पाड़ै रे । बले शिष्य
 ल्यावै त्यांरो चोर ने, बले आचार्य रो पिण मन उतारै
 रे ॥ ८३ ॥ जो पूरव कानी दीख्या लेवै छै, तो आचार्य
 ने मेलै पच्छिम कानी रे । च्याखुं बोल सेव्यां दण्ड
 चौमासी छै, निशीथ रे दशमें पिछाणीरे ॥ ८४ ॥ तो
 केई मांहो मांह साध सरघै छै, शिष्य काजे करै भगड़ा

राड़ा रे । बले अवर साधां ना अवंगुण बोलने, तिण
रा परिणाम देवै उतारो रे ॥ ८५ ॥ अनल संयम लायक
नहीं, तिणने दिख्या देवै करै तयारी रे । चौमासी दंड
निशीथ में, इग्यारमां उद्देशा मझारी रे ॥ ८६ ॥ बले
अनल तणी ब्यावच करै, तो पिण चौमासी दण्ड तिण
ठामो रे । तो दोषीला जाणी भेला रहै, बले ब्यावच
करै मांहो मांहि तामो रे ॥ ८७ ॥ मन बिना लज्या
स्यूं पालै तेहने, साध न कह्यो जिनरायो रे । सूत्र
न्याय पाल्यां स्यूं साधु कह्यो, जोवो आचारङ्ग मांह्यो रे
॥ ८८ ॥ तीजे उद्देशै तीसरे, जिन कह्यो जुगत लगायो
रे । तो अजाण ने मूंड मांहि लिये, त्याने किम कहिये
मुनिरायो रे ॥ ८९ ॥ दूजे आचारङ्ग ध्ययने पांचमें,
पहिलै उद्देशै प्रभु बाणो रे । च्यार पछेवड़ी कही साध्वी
भणी, बले ठाणा अङ्ग चौथे ठाणो रे ॥ ९० ॥ दुगञ्छ-
णीक कुल रो बहिरियो, चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे ।
निशीथ उद्देशै सोलमें, तोही बहिरै कलाल रो जायो
रे ॥ ९१ ॥ एक निकाल हुवै तिण गांव में, साध साध्वी
भेला न रहै तायो रे । पहिलै उद्देशै बृहत्कल्प रे,
तोहि एकण दरवाजे दिसां जायो रे ॥ ९२ ॥ मोल
लियो बझ भोगवै, तो चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे ।
निशीथ उद्देशै अठारमें, ते बिकलां ने खबर न कायो

रें ॥ ६३ ॥ पात्रों लेंवै स्हामो आणियो, तो चौमासी
 प्रायश्चित्त आयो रे । निशीथ उद्देशौ चवदमें, ते भोलनि
 खबर न कायो रे ॥ ६४ ॥ तीन घरां उपसन्त स्हामो
 आणियो, बले अंसणादिक च्यारुं आहारो रे । मासिक
 दण्ड निशीथ में, तीजा उद्देशा मभारो रे ॥ ६५ ॥
 आचार साधु नो ओलखायबा, जोड़ी पचेवड़ मभारो
 रे । समत अठारै असीयै समै, वैशाख बिद छट्ट
 सोमवारो रे ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

आदिनाथ आदैं करी, चौबीसमा वर्द्धमान ।
 त्यां अर्थ रूप बाणी बागरी, घाली मव जीवैं रे कान ॥ १ ॥
 त्यां सूत्र दिया साधां भणी, ते षिण मर्याद प्रमान ।
 षिण औरां ने सूत्र दिया नहीं, तिण रो न्याय सुणो बुद्धिवान ॥ २ ॥
 जे साधु मर्यादा सूं भणै, तिणने श्रीजिन आज्ञा सोय ।
 मर्यादा बिण साधु भणै, तिण ने षिण आज्ञा न कोय ॥ ३ ॥
 ते भणावणा साधु भणी, षिण औरां ने भणावणा नांहि ।
 केई सूत्र भणावै गृहस्थ भणी, जिन आज्ञा नहीं तिण मांहि ॥ ४ ॥
 साधु ने सूत्र भणावणा ठाम २ सिद्धन्त रे मांय ।
 गृहस्थ ने नहीं भणावणा, ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(देशी—चतुर विचार करी ने देखो)

गृहस्थ ने साधु सूत्र री बांचणी देवै, बलि बांचणी
 लेवै तिण आगै रे । निशीथ रे उगणीसमें उद्देशौ, तिण

रो चौमासी चारित्र भागै रे ॥ चतुर विचार करी ने
 देखो ॥ १ ॥ गृहस्थ ने कोई सूत्र सिखावै, तो साधु
 मन में पिण भलो न जाणै रे । भलो जाण्यां दण्ड
 आवै चौमासी, तिणरी बुद्धिबन्त रहिंस पिछणै रे ॥
 चतुर० ॥ २ ॥ साधु बंचावै तो दण्ड चौमासी, तो
 तिण ने बंचायां नही धर्मो रे । कोई धर्म कहै गृहस्थ
 ने बंचायां, ते भूल अज्ञानी भ्रमो रे ॥ ३ ॥ अन्यतीर्थी
 पासत्थादिक ने, सूत्र बंचावै तो दंड पावै रे । बलि
 पासत्था आगै बांचणी लेवै, तो पिण दंड चौमासी पावै
 रे ॥ ४ ॥ अन्यतीर्थी पासत्थादिक आगै, बांचणी लियां
 सूं हेला थावै रे । बले लघुताई हुवै जिन मारग री,
 पाखंडी री महिमा बधावै रे ॥ ५ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्थ
 सूं बात करै छै, तिण श्लोक कह्यो तिणवारो रे । ते
 धार लेवे साधु अपरी बुद्धि सूं, तिण रो दोष नहीं
 छै लिगारो रे ॥ ६ ॥ बले चरचा बारता करै गृहस्थ सूं,
 बलै करै पाखंडी सूं बादो रे । दिष्टन्त सुणै साधु तिण
 रो, ते सुणियां धारी लेवै साधो रे ॥ ७ ॥ इम धाख्यां
 सूं साधु ने दोष न लागै, जिन मत री हेला न थायो
 रे । साधु नी हेला पाखंडियां री महिमा होवे, तिण
 कारण न सीखणो जायो रे ॥ ८ ॥ गृहस्थ ने जो साधु
 सुणावै, ते सुणियां गृहस्थ लेवै धारो रे । जब साधुने

दोष न लागै, ते बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥६॥ केई
 मूढ़ मिथ्याती भारी कर्मा, ते धर्म कहै जिन आज्ञा
 बारो रे । ते कहै गृहस्थ ने साधु सूत्र बचावै, तो तिण
 में दोष न सरधै लिगारो रे ॥१०॥ भणावण वाला ने
 पिण आज्ञा नहीं, भणवा वाला ने पिण आज्ञा नहीं
 रे । भणै भणावै ते आपरै छान्दै, पिण धर्म नहीं तिण
 मांही रे ॥ ११ ॥ रसाकसा रूप जे सूत्र नी गाथा, ते
 श्रावक ने साध सीखायो रे । तिण रो दोष तो मूल न
 दीसै, तिण रो न्याय सुणो चित्त ल्यारो रे ॥ १२ ॥
 पहिला छेहला पहोर सूत्र कालिक कल्पै, और पहोर में
 कल्पै नहीं रे । पिण कसा रूप प्रश्न नो काम पड़ै
 तो, तीन प्रश्न कल्या सूत्र मांही रे ॥ १३ ॥ बले आव-
 शक सूत्र गृहस्थ ने भणावै, तिण रो पिण दोष न दीसै
 तायो रे । इणरी पिण अंश आज्ञा न दीसै, देख
 विचारो न्यायो रे ॥ १४ ॥ आचारङ्ग नवमो ध्ययन
 बांच्यां बिण, ऊपरला सूत्र बचावै जो साधो रे ।
 निशीथ उगणीसमें दण्ड चौमासी, सूत्र जोय छोड़े
 विषवादे रे ॥ १५ ॥ नव ध्ययन बांच्या बिण ऊपरला
 सूत्र बचावै, तिण साधु ने धर्म न थायो रे । तो गृहस्थ
 सूत्र बांच्या धर्म किहां थी, जोय विचारो न्यायो रे
 ॥ १६ ॥ अव्यक्त ने जो सूत्र बचावै, सोलै वर्षा पहिली

जाणो रे । तथा दीक्षा लियां तीन वर्ष न हुवा, तिण ने बंचायां दण्ड पिछाणो रे ॥ १७ ॥ अप्राप्त ने जो सूत्र बंचावै, तिण रे सूत्र री प्राप्ति नाहीं रे । व्यक्त प्राप्त ने नहिं जो बंचावै, तो दण्ड निशीथ रे माहीं रे ॥ १८ ॥ बले दोनूई शिष्य बरोबर सरिषा, विनय बुद्धि तुल्य जाणो रे । एकण ने बंचावै एकण ने न बंचावै, तो पिण दंड पिछाणो रे ॥ १९ ॥ आचार्य उपाध्याय आज्ञा दियां बिण, बाणी आचरियां दण्ड आयो रे । उगणीसमें उद्देशौ दण्ड चौमासी, कह्यो निशीथ रे मांयो रे ॥ २० ॥ अव्याक्तादिक साधु ने न भणावै, तो गृहस्थ ने केम भणावै रे । जो गृहस्थ भणै तो आपरै छान्दै, पिण साधु नहीं सरावै रे ॥ २१ ॥ भगवन्त वज्र्यो अवगुण जाणी ने, गुण जाणै तो बरजै नाहीं रे । साधु ने भणवारी विध भाषी पिण गृहस्थ रे न कही ताहि रे ॥ २२ ॥ ठाणा अङ्ग रै तीजै ठाणै, समीप रा बैसणहारो रे । त्यां तीना ने पिण बांचणी न देणी, ते सांभलज्यो विस्तारो रे ॥ २३ ॥ सूत्रार्थ रा देणहार ने, वन्दणा न करै जाणी रे । ते अवनीत ने बांचणी न देणी, आ श्री जिनवरजी नी बाणी रे ॥ २४ ॥ बले विषैरा लोलपी ने बांचणी वर्जी, बले क्रोधी ने पिण देणी न कायो रे । यां तीनां ने बांचणी बरजी तीर्थकर, बचन हिये

विमासी जौयो रे ॥ २५ ॥ चां तीनां ने भणावैते
 आज्ञा बारै, भणै ते पिण आज्ञा बारो रे । तो गृहस्थ
 सिद्धन्त भणै छै तिण में, जिन आज्ञा नहीं लिगारो
 रे ॥ २६ ॥ तो गृहस्थ तो कोधी मानी हुवै छै, बले
 स्त्रियादिकरो लोलपी थावै रे । इत्यादिक अनेक
 अवगुण गृहस्थमें, तो साधु सूत्र केम सीखावै रे ॥ २७ ॥
 बले प्रश्न व्याकरण रे सातमें ध्येने, सत्य वचन तणो
 विस्तारो रे । तिण में कह्यो ए सूत्र साधु ने इज दीधो,
 पिण औरां ने नहीं दीध लिगारो रे ॥ २८ ॥ साधु ने
 इज चीतराग नी आज्ञा, औरांने नहीं आज्ञा लिगारो
 रे । और जो सिद्धन्त भणै भणावै, ते श्रीजिन आज्ञा
 बारो रे ॥ २९ ॥ तीन वर्ष थया हुबै दीक्षा लियनि,
 कल्पै आचारङ्ग बले निशोथो रे । तीन वर्ष पहिलां
 निशीथ न भणवो, आ श्रीजिन मारगरी रीतोरे ॥ ३० ॥
 तीन वर्ष पहिली साधु ने नहीं भणवो, आ श्रीजिन
 आज्ञा सारो रे । तो गृहस्थ ने जिन आज्ञा किहांथी,
 न्याय ते चतुर विचारो रे ॥ ३१ ॥ सम्बत् अठारै ने
 वर्ष असीये, बैशाख बिद सातम शनिवारो रे । सूत्र
 भणवा ऊपर जोड़ कीधी, डगी गाम हुंदाड़ मभारो
 रे ॥ ३२ ॥

अथ खण्डा जौयणा ।

जम्बुद्वीप लाख जोजन लम्बो पहोलो; थालीके आकार, भालरके आकार तेलके पुड़लेके आकार । तेहने दोली जगती आठ जोजन ऊंची, बारै जोजन मूलमें पहोली, आठ जोजन बीचमें पहोली, च्यार जोजन ऊपरमें पहोली । ते जगती ऊपर एक जाली छै । दो गाऊ ऊंची पांच सौ धनुष पहोली जगती के ऊपर एक पदम्बर वेदिका छै । दो गाऊ ऊंची, पांचसौ धनुष पहोली । वेदिका ने बेहुं पासे दो बनखण्ड छै । देश ऊणा दो जोजन का चौड़ा, जगती प्रमाण लम्बा छै । तेह बनखण्ड में नाना प्रकार रत्नमणि ना वृक्ष छै, बावड्यां छै । तिहां वाणव्यन्तर देवता आवै, जावै, सुवै, उठै, बैठै, अनेक प्रकार की क्रीड़ा करै छै । तेह जगती ने विषै च्यार दरवाजा छै । दरवाजा ना नाम— पूर्वदिशि—विजय, दक्षिण दिशि—विजयन्त, पश्चिम दिशि—जयन्त, उत्तर दिशि अपराजित । च्यारुं दरवाजा आठ जोजन ऊंचा, च्यार जोजन पहोला, च्यार जोजन प्रवेश, नव-भूमिया महल, अनेक तोरण पुतली करी सहित शोभायमान छै । दरवाजे नाम देवता बसै

छै । तेह दरवाजे दरवाजे आन्तरो ७६०५२॥ मठेरो छै ।
ते जगती नी बाहारली परिधि ३१६२२७ जोजन, ३
कोस, १२८ धनुष, १३॥ आंगुल, १ जौ, १ जूं, १
लीख, ६ बालागर, ६ त्रीसरेणु जाभी ।

गाथा ।

खंडा जोयण वासा पन्वय कुडा तित्थ सेढीओ ।
विजह द्रह सलिलाओ पिंडए होइ संगहणी ॥

फहलो खण्ड द्वार ।

जम्बु द्वीपका भरत क्षेत्र जितना खण्ड करै, तो
१६० खण्डवा हुवै ते किम ? भरत एरवत क्षेत्रका
१-१, चुल हेमवन्त शिखरी परबत का २-२, हेमवय
क्षेत्रका ४-४, महा हेमवन्त रूपी पर्वत का ८-८, हरि-
वास रम्यकवास क्षेत्र का १६-१६, निषण्ड नीलवन्त
पर्वत का ३२-३२, महा विदेह क्षेत्रका ६४, सर्व १६०
खण्डवा थया ।

दूजो जोजन द्वार ।

जम्बुद्वीप का जोजन जोजन का टुकड़ा करै, तो
सात सौ नब्बे कोड़ छप्पन लाख, चोराणवे हजार, एक
सौ पचास जोजन १॥ कोस साडी पन्द्रह धनुष, बारै
आंगुल जाभी ७६०५६६४१५० जो० १॥ कोस १५॥
धनुष १२ आंगुल जाभी ।

तीजो वासा द्वार ।

वासा ७ तथा १० । सात हुवै, तो—भरत क्षेत्र
१ एरवत क्षेत्र २ हेमवय ३ अरुणवय ४ हरिवास ५
रम्यकवास ६ महाविदेह ७ ।

दश हुवै तो—भरत क्षेत्र १ एरवत क्षेत्र २ हेम-
वय ३ अरुणवय ४ हरिवास ५ रम्यक वास ६ देवकुरु
७ उत्तर कुरु ८ पूर्व महाविदेह ९ पश्चिम महाविदेह
१० ।

१ भरत क्षेत्र का दोय भेद । दक्षिण भरत १ उत्तर
भरत २ ।

१ दक्षिण भरतको विषम पणो २३८ जोजन ३ कला ।
तेहनी बाहा नथी । तेहनीजीवा ६७४८ जोजन
१२ कला । तेहनी धनुषष्ट ६७६६ जोजन
१ कला । तेहनो शर २३८ जोजन ३ कला ।

२ उत्तर भरत को विषम पणो २३८ जोजन ३
कला तेहनी बाहा १८६२ जोजन ७॥ कला ।
तेहनी जीवा १४४७१ जोजन ६ कला जाभी ।
तेहनी धनुषष्ट १४५२८ जोजन ११ कला ।
तेहनो शर ५२६ जोजन ६ कला ।

२ हेमवय क्षेत्र को विषम पणो २१०५ जोजन ५
कला । तेहनी बाहा ६७५५ जोजन ३ कला । तेहनी

जीवा ३७६७४ जोजन १६ कला मठेरी । तेहनी
धनुषष्ट ३८७४० जोजन १० कला । तेहनो शर
३६८४ जोजन ४ कला ।

३ हरिवास क्षेत्रको विषमपणो ८४२१ जोजन १ कला ।
तेहनी बाहा १३३६१ जोजन ६॥ कला । तेहनी
जीवा ७३६०१ जोजन १७॥ कला । तेहनी धनुषष्ट
८४०१६ जोजन ४ कला । तेहनो शर १६३१५
जोजन १५ कला ।

४ महा विदेह क्षेत्र को विषमपणो ३३६८४ जोजन ४
कला । तेहनी बाहा ३३७६७ जोजन ७ कला ।
तेहनी जीवा मध्य भाग में १००००० लाख जोजन ।
तेहनी धनुषष्ट बेहुं पासे १५८११३ जोजन १६
कला जाभेरी । तेहनो शर च्यारुं पासे पचास पचास
हजार जोजन ।

५ देवकुरु क्षेत्र को विषमपणो ११८४२ जोजन २ कला ।
तेहनी बाहा नथी । तेहनी जीवा ५३००० जोजन ।
तेहनी धनुषष्ट ६०४१८ जोजन १२ कला । तेहनो शर
११८४२ जोजन २ कला ।

भरत क्षेत्र जिम एरवर्त क्षेत्र जाणवो । हेमवय
जिम अरुणवय क्षेत्र जाणवो । हरिवास जिम रम्यक-
वास क्षेत्र जाणवो । देवकुरु जिम उत्तरकुरु क्षेत्र

जाणवो । पूर्व महाविदेह जिम पश्चिम महाविदेह
जाणवो ।

चौथो पर्वत द्वार ।

जम्बूद्वीप में २६६ पर्वत शाश्वता । ६ वर्षघर
पर्वत मेह ७ चित्त ८ विचित्त ९ जमक १० समक ११
दोय सौ कश्चन गिरि २११ च्यार गजदन्ता सोलह
बाख रा पर्वत, चौतीस लम्बा बैताढ़, च्यार बाटला बैताढ़,
सर्व २६६ पर्वत हुवा ।

१ चूल हिमवन्त, शिखरी ए दोय पर्वत १००० जोजन
ऊंचा, पचीस जोजन जमीन में ऊंडा । तेहनो विष-
मपणो १०५२ जोजन १२ कला । तेहनी बाहा
५३५० जोजन १५॥ कला । तेहनी जीवा २४६३२
जोजन ॥ कला । तेहनी धनुषूष्ट २५२३० जोजन ४
कला । तेहनो शर १५७८ जोजन १८ कला ।

२ महा हिमवन्त और रूपी ए दोय पर्वत २०० जोजन
ऊंचा, ५० जोजन जमीन में ऊंडा । तेहनो विषम-
पणो ४२१० जोजन १० कला । तेहनी बाह ६२७६
जोजन ६ कला । तेहनी जीवा ५३६३१ जोजन
६ कला । तेहनी धनुषूष्ट ५७२६३ जोजन १० कला ।
तेहनो शर ७८६४ जोजन १४ कला ।

- ३ निषद और नीलवन्त ए दोय पर्वत ४०० जोजन ऊंचा, १०० जोजन जमीन में ऊंडा । तेहनो विषमपणो १६८४२ जोजन २ कला । तेहनी बाहा २०१६५ जोजन २॥ कला । तेहनी जीवा ६४१५६ जोजन २ कला । तेहनी धनुषष्ट १२४३४६ जोजन ६ कला । तेहनो शर ३३१५७ जोजन १७ कला ।
- ४ मेरु पर्वत जम्बुद्वीप के मध्य भाग में एक लाख जोजन को । तिण में १००० जोजन जमीन में ऊंडो । ६६००० जोजन ऊंचो । जमीन में १००० जोजन छै तिण में २५० जोजन पृथ्वीमय २५० पृथ्वी हीरा मय २५० कठिन पृथ्वी मय २५० वज्र हीरामय । ६६००० जोजन ऊपर छै तिण में १५७५० जोजन स्फटिक रत्नमय १५७५० अंक-रत्न मय १५७५० रूपा रत्नमय १५७५० पीला सुवर्ण मय ३६००० जोजन जम्बु नद (राता) सुवर्ण मय । तेह मेरु पर्वत नीचे थकी १००६० जोजन, एक जोजन का इग्यारिया १० भाग को लम्बो पहोलो, सम्भुतले पासे १०००० जोजन लम्बो पहोलो । ऊपर इग्यारह जोजन लारै १ जोजन घटतां घटतां मेरु नो शिखर १००० जोजन लम्बो पहोलो तिगुणी जाझेरी परिधि पद्मवर वेदिका वनखगड करी सहित ।

ते मेरु पर्वत में च्यार बनखण्ड छै तेहना नाम—
भद्रशाल बन १ नन्दन बन २ सोमनस बन ३
पंडग बन ४ ।

१ भद्रशाल बन सम्भुतले पासे बाइस बाइस हजार
जोजन पूर्व पश्चिम लम्बो २५०-२५० जोजन
उत्तर दक्षिण लम्बो पद्मवर वेदिका बनखण्ड
सहित शोभनीक छै । तेह भद्रशाल बनमें मेरु
पर्वत सुं ५०-५० जोजन च्यार दिशा में जावै
तब च्यार सिद्धायतन छै ५० जोजन लम्बा, २५
जोजन चौड़ा, ३६ जोजन ऊंचा । अनेक थम्भा,
तोरण, पुतल्यां करी शोभायमान छै । तेह
सिद्धायतन के तीन तीन दरवाजा छै । ८ जोजन
ऊंचा ४ जोजन चौड़ा । तिणरे मध्य भाग में
एक मणिपीठिका ८ जोजन लम्बी पहोली च्यार
जोजन की जाडी सर्व रत्न मय छै । तिण मणि
पीठिका ऊपर देवछन्दो गुम्भारो छै ८ जोजन
लम्बो पहोलो ८ जोजन जाभेरो ऊंचो । तिण में
शाश्वती जिन प्रतिमा छै । मेरुपर्वत सुं ५०-५०
जोजन च्यार विदिशा में जावै जठै च्यार
महलायत छै । दक्षिण का दोय महल शक्रे-
न्द्र महाराजकी हृद में छै । उत्तरका २ महल

ईशान इन्द्र की हृद में छै । च्यारुं महलायत
 २५० जोजन लम्बा पहोला ५०० जोजन का
 ऊंचा छै । एक एक महल के च्यारुं दिशा में
 ४-४ बावड्यां छै । तिणरा नाम ईशाण कोण में
 बावड़ी ४ पद्मा १ पद्मप्रभा २ कुमुदा ३ कुमुद
 प्रभा ४ । अग्नि कोण में बावड़ी ४ उत्पला १
 गुम्मा २ निलना ३ उज्ज्वला ४ । वायुकोण में
 बावड़ी ४ लिंगा १ भिंग नामा २ अंजना ३
 अंजन प्रभा ४ नैऋत्य कोण में बावड़ी ४ श्री-
 कन्ता १ श्रीचन्दा २ श्रीमहिता ३ श्रीनलिता ४ ।
 ए सोलैही बावड़ी ५० जोजन लम्बी २५ जोजन
 चौड़ी १० जोजन ऊंडी । अनेक कमलां सौ
 पांखड़ियां, सहस्र पांखड़ियां कमलां करी शोभा-
 यमान छै । भद्रशाल बन में च्यार विदिशा में
 दहस्ती कूट छै । ५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन
 नीची लंबी पहोली ३७५ जोजन बीच में लंबी
 पहोली २५० जोजन ऊपर लंबी पहोली तिगुणी
 जाझेरी परिधि गौपूँछ संठाण छै ।

२ नन्दन बन, भद्रशाल बन सुं ५०० जोजन ऊंचो
 जावै जठै नन्दन बन छै । ५०० जोजन चौड़ो
 मेरु पर्वत के चौफेर चक्रवाल पहोलो पदमवर

वेदिका बनखण्ड करी सहित हैं । सिद्धायतन, महालयत, बावड़ी भद्रशाल बननी परै १ बल-कूट १००० जोजन ऊंची १००० मूलमें लम्बी पहोली ७५० जोजन बीचमें लम्बी पहोली ५०० जोजन ऊपर में लम्बी पहोली तिगुणी जाभैरी परिधि, बलनामें देवता बसै छै ।

३ सोमनसबन, नन्दनबनके तलासे ६२५०० जोजन ऊंचो जावै जठै सोमनस नाम बन छै । ५०० जोजन चौड़ा मेरुने चौफेर चक्रवाल पहोली सिद्धायतन महालयत बावड़ी भद्रशाल बननी परै, कूट नथी ।

४ पंडुक बन, सोमनस बनसुं ३६००० जोजन ऊपर जावै जठै मेरु पर्वतके शिखर ऊपर छै । ४६४ जोजन चौड़ा चूलकाने चौफेर चक्रवाल पहोली सिद्धायतन महालयत बावड़ी भद्रशाल बननी परै । कूट नथी । च्यार मोटी शिला छै तेहना नाम पूर्व पंडु शिला १ दक्षिण पंडु कमल शिला २ पश्चिम रक्तशिला ३ उत्तर रक्त कमल शिला ४ च्यारुं शिला ५०० जोजन लम्बी २५० जोजन पहोली ४ जोजन की जाडी । अर्द्ध चन्द्रके संठाण सर्व सोनामय छै । पूर्व पश्चिम की शिला ऊपर

दो-दो सिंहासन छै । उत्तर दक्षिण की शिलापर
 १-१ सिंहासन छै । छव सिंहासन ५०० धनुषका
 लम्बा २५० धनुष चौड़ा, तिण ऊपर श्रीतीर्थकर
 देवका जन्म अभिषेक आदि महोछव चौष्ट इन्द्र
 मिलने करै छै ।

५ मेरु पर्वत ऊपर एक मन्दिर चुलिका छै । ४०
 जोजन की ऊंची १२ जोजन मूलमें लम्बी
 पहोली ८ जोजन मध्यमें लम्बी पहोली ४
 जोजन ऊपर में लंबी पहोली तिगुणी जाभेरी
 परिधि तिण ऊपर घणो रमणीक भूमिभाग
 छै । तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १
 कोसकी लम्बी ॥ कोसकी पहोली देशूणा १
 कोसकी ऊंची अनेक थम्भाकरी शोभायमान
 छै । तिणमें शाश्वती जिन प्रतिमा छै ।

५ चित्त. विचित्त दोय पर्वत देवकुरु क्षेत्रमें निषद
 पर्वत सुं ८३४ जोजन एक जोजन का सातीया
 ४ भाग उत्तर जावै जठै सीतोदा नदीके देहुं
 पासे छै । इमही जमक, समक ए दोय पर्वत
 उत्तर कुरुक्षेत्रमें नीलवन्त पर्वत सुं ८३४ जोजन
 एक जोजनका सातीया ४ भाग दक्षिण सीता
 नदी के वेहुं पासे छै । ए च्यारुं पर्वत १०००

- जोजन का ऊंचा २५० जोजन जमीन में ऊंडा १००० जोजन मूलमें लम्बा पहोला ७५० जोजन मध्यमें लम्बा पहोला ५०० जोजन ऊपरमें लम्बा पहोला तिगुणी जाभी परिधि । पर्वत नामे देवता बसै छै ।
- ६ गजदन्ता पर्वत, निषढ नीलवन्त पर्वतसुं नीकल्यां मेरु पर्वत के आंगुलके असंख्यातमें भाग अलगा रखां तेहना नाम गंधमादन, मालवन्त, विद्युत्प्रभ, सोमनस । च्याखं पर्वत ३०२०६ जोजन ६ कला लम्बा निषढ नीलवन्त के पासे ४०० जोजन ऊंचा १०० जोजन जमीमें ऊंडा ५०० जोजन पहोला मेरुने पासे ५०० जोजन ऊंचा १२५ जोजन जमीमें ऊंडा, आंगुल के असंख्यातमें भाग पहोला हाथी दांतके संठाण ।
- ७ दोय सौ कंचनगिरि देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र में ५-५ द्रह छै । एक-एक द्रहने बेहुं पासे १०-१० कञ्चन गिरि पर्वत छै । सर्व २०० कञ्चनगिरि १०० जोजन ऊंचा २५ जोजन धरतीमें ऊंडा १०० जोजन मूलमें लंबा पहोला ७५ जोजन मध्यमें लंबा पहोला ५० जोजन ऊपर में लंबा पहोला तिगुणी जाभीरी परिधि । पर्वत नामे देवता बसै छै ।
- ८ सोलै बखारा पर्वत महा विदेह क्षेत्रमें तेहना नाम—

चित्र १ विचित्र २ निलन ३ एकसेल ४ त्रिकूट ५
 बेसमण ६ अंजन ७ मयंजन ८ अंकाभाई ९ पवमा-
 बाई १० आसीविष ११ सुहावह १२ चन्द्र १३
 सूर्य १४ नाग १५ देव १६ । सोलह बग़ारा पर्वत
 निषढ़ नीलवन्त सुं निकल्या सीतासीतोदा नदीने
 पासे रह्या सोलैही पर्वत १६५६२ जोजन लंबा
 निषढ़ नीलवन्तने पासे ४०० जोजन ऊंचा १००
 जोजन जमीन में ऊंडा ५०० जोजन का पहोला
 सीता सीतोदा पासे ५०० जोजन ऊंचा १२५ जोजन
 धरतीमें ऊंडा ५०० जोजन का पहोला ।

६ चौतीस लंबा वैताढ़ पर्वत महाविदेह क्षेत्र में ३२
 विजय छै तिण में ३२ वैताढ़ भरत क्षेत्रमें १ वैताढ़
 एरवर्त क्षेत्रमें १ वैताढ़ । तिणमें भरत एरवर्त क्षेत्र
 का वैताढ़ २५ जोजन ऊंचा ६ जोजन धरती में
 ऊंडा ५० जोजन पहोल पणै । तेहनी बाहा ४८८
 जोजन १६॥ कला तेहनी जीवा १०७२० जोजन
 १२ कला तेहनी धनुषष्ट १०७४२ जोजन १५ कला
 तेहनो शर २८८ जोजन ३ कला बतीस महाविदेह
 क्षेत्रका वैताढ़ २२१२ जोजन एक जोजन का
 आठिया ७ भाग लंबा, २५ जोजन ऊंचा ६। जोजन
 धरती में ऊंडा ५० जोजन का पहोला पलङ्ग के

आकार । चौतीसुं वैताढ़ में २-२ गुफां छै । तमस गुफा, खण्डप्रभा गुफा । द्रोणू गुफा ५० जोजन लंबी १२ जोजन पहोली ८ जोजन ऊंची । तिण गुफा में २-२ नदियां हैं उमंगजला, निगम जला । गुफा के दरवाजे सुं २१ जोजन जावै जठै उमंग जला नदी छै । १२ जोजन लंबी ३ जोजन पहोली । तिण में कूड़ो, कचरो, कलेवर पड़ जावै, तो तीन भुवाली देकर बाहर फेंक देवै । पाणी निरमलो रहवै । तिहां थी २ जोजन आगे जावै जठै निगमजला नदी आवै १२ जोजन लंबी ३ जोजन पहोली । तिण में कूड़ो, कचरो, कलेवर तीन भुवाली देकर भीतर बैठा लेवै । तिण नदी सुं २१ जोजन जावै जणा गुफा को उत्तर दरवाजे आवै । ते गुफा में कांगणी रत्न ४६ मांडला चक्रवर्ती करै तिणरो उज्जालो चक्रवर्ती को राज रहवै जठै ताई रहवे ।

१० वाटला वैताढ़ च्यार हेमवय अरुणवय हरिवास रम्यकवास क्षेत्र में । तेहना नाम—शब्दापाती १ विकटापाती २ गंधापाती ३ मालवन्त ४ । च्यारु पर्वत १००० जोजन ऊंचा २५० जोजन धरती में ऊंडा १००० जोजन लंबा पहोला । पायली ने संठाण । पर्वत नामे देवता बसै छै ।

पाँचवों कूंट द्वार ।

जम्बुद्वीप में ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूंट ते किम ? चौतीस वैताढ़, निषढ़, नीलवन्त, विद्युत्प्रभ, मालवन्त, नन्दन वन ए ३६ पर्वत ऊपर ६-६ कूंट छै ३५१ कूंट हुई । चूल हेमवन्त ऊपर ११ शिखरी पर्वत ऊपर ११ महा हेमवन्त ऊपर ८ रूपी पर्वत ऊपर ८ गन्ध मादन ऊपर ७ सोमनस गजदन्ता पर्वत ऊपर ७ सोलै बखारा पर्वत ऊपर ४-४ कूंट ६४ कूंट । सर्व मिली ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूंट छै । धरती ऊपर कूंट ५८ भद्रशाल वन में हस्ती कूंट ८ देवकुरु क्षेत्र में कूंट ८ उत्तरकुरु क्षेत्र में कूंट ८ चौतीस विजय में ऋषभ कूंट ३४ सर्व मिली ५२५ कूंट जम्बुद्वीप में छै ।

१ चौतीस वैताढ़ की कूंट ३०६ ते २५ गाऊ जंची २५ गाऊ मूल में पहोली १८॥ गाऊ मध्य में पहोली १२॥ गाऊ ऊपर में पहोली । तिगुणी जाभी परिधि, गौ पंठ संठाण ।

२ गजदन्ता की कूंट २ नन्दन वन की कूंट १ ए-३ कूंट १००० जोजन जंची १००० जोजन मूल में लम्बी पहोली ७५० जोजन मध्य में लम्बी पहोली ५०० जोजन ऊपर में लम्बी पहोली । तिगुणी जाभीरी परिधि ।

३ शेष पर्वत ऊपर १५८ कूट ५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन मूल में लम्बी पहोली ३७५ मध्य में लम्बी पहोली २५० जोजन ऊपर में लंबी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि है ।

४ धरती पर कूट ५८ तिणमें भद्रशाल बन की ८ हस्ती कूट ५०० जोजन ऊंची ५०० जोजन मूल में लम्बी पहोली ३७५ जोजन मध्य में लम्बी पहोली २५० जोजन ऊपर में पहोली । तिगुणी जाझेरी परिधि चौतीस ऋषभ कूट ३४ जम्बु पीठिका ८ सामली पीठिका ८ ए ५० कूट ८ जोजन ऊंची ८ जोजन मूलमें लम्बी पहोली, ६ जोजन मध्यमें लंबी पहोली ४ जोजन ऊपर लम्बी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि । मतान्तर ८ जोजन ऊंची १२ जोजन मूल में लम्बी पहोली ८ जोजन मध्य में लम्बी पहोली ४ जोजन ऊपर में लम्बी पहोली । तिगुणी जाझेरी परिधि ।

छुटो तीर्थ द्वार ।

जम्बुद्वीप में १०२ तीर्थ हैं । चक्रवर्त की ३४ विजय एक एक विजय में ३-३ तीर्थ तेहना नाम मागध, वर-दाम, प्रभास । तीन तीर्थ १२ जोजन लम्बा ६ जोजन का चौड़ा तीर्थ नामे देवता बसै है ।

स्वातंत्र्य श्रेणी द्वार ।

जम्बुद्वीप में १३६ श्रेणी ते किम ? चौतीस वैताड़ पर्वत ऊपर ४-४ श्रेणी छै ।

१. भरत क्षेत्र को वैताड़ २५ जोजन ऊंचो छै । तिण पर्वत ऊपर धरती सुं १० जोजन ऊंचो जावै जठे वेहुं पासे २ विद्याधरनी श्रेणी १० जोजन चौड़ी वैताड़ प्रमाण लम्बी तिहां नमि विनमि विद्याधर बसै छै । बसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर में ६० तिहां थकी १० जोजन ऊंचो जावै जठे वेहुं पासे २ अभियोगी देवतानी श्रेणी छै । १० जोजन चौड़ी वैताड़ प्रमाण लम्बी । तिहां अभियोगी देवता बसै छै । बसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर श्रेणी में ६०

२. एरवर्त क्षेत्र को वैताड़ इमहिज नगर उत्तर श्रेणी ५० दक्षिण श्रेणी ६० ।

३. महाविदेह का वैताड़ इमहिज । नगर वेहुं पासे ५५-५५ ।

आठवों विजय द्वार ।

जम्बुद्वीप में ३४ विजय ३४ नगरी ३४ राजधानी ३४ वैताड़ ३४ तमस गुफा ३४ खण्ड प्रभा गुफा ३४

नटमाली देवता ३४ कृत्माली देवता ३४ ऋषभ कूट ।
ते ऋषभकूट उत्तर भरत के बिचले खण्ड में म्लेछां के
मध्य भाग में हैं । तिहां चक्रवर्ती आपको नांव लिखै छै ।

नवमों द्रह द्वार ।

जम्बुद्वीप में १६ द्रह छै । छव पर्वतां ऊपर ६ द्रह
देव कुरुक्षेत्र में ५ द्रह उत्तर कुरुक्षेत्र में ५ द्रह ।

१ चूल हेमवन्त-पर्वत-ऊपर पद्मे द्रह पूर्व पश्चिम १०००
जोजन लम्बी उत्तर दक्षिण ५०० जोजन पहोली
१० जोजन ऊंडी छै । तिणमें श्री देवी बसै छै
बसना कमल १२०५०१२० कमल छै बीच १ मोटो
कमल छै । तेहने चौफेर १०८ भंडारी देवतां ना
१०८ कमल छै दूजी परिधिमें च्यार मेंहतर का देव्यां
का ४ कमल सात अनि कटक के देवता का ७ कमल
च्यार हजार सामानीक देवां का ४००० कमल छै ।
८००० अभिन्तर परिषदा के देवां का ८००० कमल
१०००० मध्य परिषदा के देवां का १०००० कमल
१२००० बाहरी की परिषदा के देवां का १२०००
कमल सर्व मिली ३४०११ कमल दूजी परिधि में छै
तीजी परिधि में १६००० आत्म रक्षक देवों का
१६००० कमल छै तीन मोटा कोट छै ३२०००००

कमलानो अभिन्तर कोट ४०००००० कमलानो मध्यम कोट ४८००००० कमलां ना वाह्य कोट सरब मिल १२०५०१२० कमल छै कमलां नो मान बीचै १ मोटौ कमल छै ते कमल १ जोजन लम्बो पहोलो आधा जोजन जाडो १० जोजन पाणीमें ऊंडो २ कोस पाणी सुं ऊंचो तिणरै मध्य भागमें १ कनीका आधा जोजन की लम्बी पहोली १ गाऊकी जाड़ी तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै । तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची अनेक थम्भा करी शोभायमान छै । तिणमें श्रीदेवी बसै छै । बारला कमलको मान परिधि धर परिधि आधा आधा जानना, पानीमें ऊंडा सरीषा जानना ।

२ शिखरी पर्वत ऊपर पुंडरिक द्रह, पद्मद्रह जिम जाणवो लच्छी देवी बसै छै ।

३ महाहेमवन्त पर्वत ऊपर महा पद्मद्रह रूपी पर्वत ऊपर महापुण्डरिक द्रह ए २ द्रह २००० जोजन पूर्व पश्चिम लम्बा १००० उत्तर दक्षिण पहोला १० जोजन ऊंडी महापद्म द्रहमें हरिदेवी महापुण्डरिक द्रहमें बुद्धि देवी बसै छै । बसवाना कमल १२०५०१२० कमलां नो मान श्रीदेवी थकी दूणा

दूणा जाणवा पाणीमें जंडा जंचा सरीषा जाणवा ।

- ४ निषढ पर्वत ऊपर तिगछ द्रह नीलवन्त पर्वत ऊपर
कैशरी द्रह ए २ द्रह ४००० जोजन पूर्व पश्चिम
लम्बा २००० जोजन उत्तर दक्षिण पहोला १०
जोजन जंडा तिगछ द्रह में धृती देवी केशरी द्रहमें
कीर्त्ति देवी बसै छै । बसवाना कमल १२०५०१२०
कमल छै । कमलांको मान हरिंदेवी थी दूणो दूणो
जाणवो । पाणीमें जंडा जंचा सरीषा जाणवा ।

- ५ देवकुरु क्षेत्रमें ५ द्रह छै तेहना नाम निषढ द्रह, देवकुरु
द्रह, सुरद्रह, सुलेसद्रह, वियुत्प्रभं द्रह, उत्तर कुरु-
क्षेत्रमें ५ द्रह तेहना नाम नीलवन्त द्रह, उत्तर कुरु
द्रह, चंद्रद्रह. एरवर्त द्रह, मालवन्त द्रह, ए १०
द्रह १००० जोजन लम्बा ५०० जोजन पहोला १०
जोजन जंडा द्रह नामे देवता बसै छै बसवाना
कमल १२०५०१२० कमल कमलानो मान श्री
देवीनी परें जाणवो ।

दृश्वर्को सुललिता द्वार ।

जम्बुद्वीपमें १४५६०६० नदी शाश्वती ।

- १ भरत क्षेत्रमें गङ्गा सिंधु ये २ नदी चूलहेमवन्त
पर्वत का पद्म द्रहसे निकली एरवर्त क्षेत्रमें रक्ता

रक्तवती ए २ नदी शिखरी पर्वतकी पुण्डरिक द्रह सुं नीकली । नदी नावें ४ कुण्ड १० जोजनका लम्बा पहोला १० जोजन का ऊंडा । तिणमें १ द्वीपो ८ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिणमें नदी नामे देवी परिवार सहित बसै छै ते नदी नीकलती ६। जोजन पहोली आधा गाऊ ऊंडी समुद्रमें मिली जठै ६२॥ जोजन पहोली १। जोजन ऊंडी १४०००-१४००० नदियां के परिवार सुं लूण समुद्रमें मिली ।

२ रोहिता रोहितंसा ये दो नदी हेमवय क्षेत्रमें सोवन कला रूपकला ये २ नदी अरुणवय क्षेत्रमें । रोहिता चूल हेमवन्त पर्वत के पद्म द्रह सुं नीकली । रोहितंसा महा हेमवन्त पर्वत के महा पद्म द्रह सुं नीकली । सोवनकला शिखरी पर्वत के पुण्डरिक द्रह सुं नीकली । रूपकला रूपी पर्वत के महा पुण्डरिक द्रहसुं नीकली । नदी नावें ४ कुंड १२० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिणरे मध्यमें १ द्वीपो १६ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो

२ कोस ऊंचो । तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै । तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची । तिणमें नदी नामे देवी परिवार सहित बसै छै । ते नदी नीकलतो १२॥ जोजन पहोली १ गाऊ ऊंडी समुद्र में मिली जठै १२५ जोजन पहोली २॥ जोजन ऊंडी २८०००-२८००० नदियाँके परिवारसुं परवरी लूण समुद्रमें जाय मिली ।

- ३ हरिकन्ता हरि सलीला ए २ नदी हरिवास क्षेत्र में नरकन्ता नारीकन्ता ए २ नदी रम्यकवास क्षेत्र में हरिकन्ता महा हेमवन्त पर्वत के महा पद्मद्रह सुं नीकली । हरिसलीला निषद पर्वत के तिगच्छ द्रह सुं नीकली । नरकन्ता रूपी पर्वत के महा पुण्डरिक द्रह सुं नीकली । नारीकन्ता नीलवन्त पर्वत के केशरी द्रह सुं नीकली । नदी नांव ४ कुण्ड २४० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण में १ द्वीपो ३२ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देश ऊंणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छै । ते नदी

नीकलती २५ जोजन पहोली २ गाऊ ऊंडी समुद्र में मिली जठै २५० जोजन पहोली ५ जोजन ऊंडी ५६०००-५६००० नदियां के परिवार सुं परवरी लूण समुद्र में मिली ।

४ सीता सीतोदा दोय मोटी नदी महाविदेह क्षेत्र में सीतोदा निषद पर्वत का तिगच्छ द्रह सुं नीकली । सीता नीलवन्त पर्वत के केशरी द्रह सुं नीकली । नदी नाम २ कुण्ड ४८० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण में १ द्वीपो ६४ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस पाणी सुं ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छै । ते नदी नीकलती ५० जोजन पहोली १ जोजन ऊंडी समुद्र में मिली जठै ५०० जोजन पहोली १० जोजन ऊंडी ५३२०००-५३२००० नदियां के परिवार सुं परवरी लूण समुद्र में मिली ।

१ ८४००० नदी देवकुरु क्षेत्र में मिली ।

२ ८४००० नदी उत्तरकुरु क्षेत्र में मिली ।

३ १६ गंगा १६ सिन्धु १६ रक्ता १६ रक्तवती ५

६४ नदी महाविदेह क्षेत्र में निषद नीलवन्त के पास ६४ कुण्ड छै तेह थकी नीकली तेह ६४ कुण्ड ६० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण रै मध्य भाग में १ द्वीपो द जोजन लम्बो पहोला १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो समो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छै तिण में सुं नदी नीकली छै । ते नदी नीकलती ६। जोजन पहोली आधा गाऊ ऊंडी १६५६२ जोजन २ कला लम्बी सीता सीतोदा में मिली जठै ६२॥ जोजन पहोली १। जोजन ऊंडी १४०००-१४००० हजार नदियां के परिवार सुं परवरी सीता सीतोदा में मिली ।

५ बारै अन्तर नदी महाविदेहक्षेत्र में निषद नीलवन्त धर्वत पासे कुण्ड थकी नीकली ते कुण्ड १२० जोजन को लम्बो पहोला १० जोजन को ऊंडो तिण में १ द्वीपो १६ जोजन लम्बो पहोला १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो समो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भाग में १ महलायत १ कोस

लम्बी आधा कोस पहोली देसूणी १ कोस ऊंची
तिण में नदी नावें देवी परिवार सहित बसे छै । ते
नदी नीकलती १२५ जोजन पहोली २॥ जोजन की
ऊंडी १६५६२ जोजन २ कला लम्बी सीता सीतोदा
में मिली ।

पूर्व पश्चिम	लाख जोजन मान ।	उत्तर दक्षिण	लाख जोजन मान ।
मेरू पर्वत	१००००	भरतक्षेत्र	जोजन कला
भद्रशाल वन दोनों तरफा	४४०००		५२६—६
८ बखारा पर्वत		चूल हेमवन्त पर्वत	१०५२—१२
५०० जोजन	४०००	हेमवय क्षेत्र	२१०५—५
६ अन्तर नदी १२५ जोजन	७५०	महा हेमवन्त पर्वत	४२१०—१०
१६ विजय २२१२ जोजन		हरिवास क्षेत्र	८४२१—१
१ जोजनका आठीया	३५४०६	निषद पर्वत	१६८४२—२
भाग ७		महा विदेहक्षेत्र	३३६८४—४
सीतोदा मुखवन	२६२२	नीलवन्त पर्वत	१६८४२—२
सीता मुखवन	२६२२	रम्यकवास क्षेत्र	८४११—१
	१०००००	रूपी पर्वत	४२१०—१०
		अरुणवयक्षेत्र	२१०५—५
		शिखरी पर्वत	१०५२—१२
		ररवर्त क्षेत्र	५२६—६
			१०००००

जीवके १४ भेदों की अल्पाधिक्य ।

- १ जीव के तेरहमें भेदवाला सर्व सूं थोड़ा ।
 - २ तेहथी जीवके १४में भेदवाला असंख्यातगुणा ।
 - ३ तेहथी जीवके १०में भेदवाला संख्यात गुणा ।
 - ४ तेहथी जीवके १२में भेदवाला विशेषाईया ।
 - ५ तेहथी जीवके ६ठे भेदवाला विशेषाईया ।
 - ६ तेहथी जीवके ८में भेदवाला विशेषाईया ।
 - ७ तेहथी जीवके ११में भेदवाला असंख्यात गुणा ।
 - ८ तेहथी जीवके ६में भेदवाला विशेषाईया ।
 - ९ तेहथी जीवके ७में भेदवाला विशेषाईया ।
 - १० तेहथी जीवके ५में भेदवाला विशेषाईया ।
 - ११ तेहजी जीवके ४थे भेदवाला अनन्तगुणा ।
 - १२ तेहथी जीवके ३जे भेदवाला असंख्यात गुणा ।
 - १३ तेहथी जीवके १ले भेदवाला असंख्यात गुणा ।
 - १४ तेहथी जीवके २जे भेदवाला संख्यात गुणा ।
-